सरगना

देवराज चौहान सीरीज

सनसनीखेज बैंक डकैती

अनिल मोहन

सूरमा

कार धूल से अटी पड़ी थी।

इस तरह कि उसका रंग पहचानना भी कठिन हो रहा था। शीशों का भी बुरा हाल था। धूल जमी होने के कारण उसके आर-पार देखने में कठिनाई हो रही थी।

स्पष्ट लग रहा था कि अच्छे-बुरे मौसम के बीच में कार लंबे सफ़र पर है।

देवराज चौहान कार की ड्राइविंग सीट पर मौजूद था।

जगमोहन पीछे वाली सीट पर उकडू सा लेता हुआ था। शायद वो नींद में था, क्योंकि आधे-पौने घंटे से वो कुछ नहीं बोला था। देवराज चौहान के गालों पर तीन-चार दिन की शेव बढ़ी हुई थी। बाल भी बिखरे हुए थे। होठों पर मूंछे लगा रखी थीं कि अचानक उसे कोई पहचान न पाए।

एकाएक देवराज चौहान को कार का बैलेंस अटपटा-सा लगा।

कार में कुछ गड़बड़ थी।

उसने फ़ौरन कार को साइड किया और इंजन बंद करते हुए बाहर निकला। पास से तूफानी रफ़्तार से कारों-वाहनों का आना-जाना जारी था। ये चंडीगढ़-दिल्ली हाईवे था। जहां दिन-रात वाहनों की रफ़्तार बनी रहती थी। देवराज चौहान ने कार के टायरों को चेक किया तो होंठ सिकुड़ कर रह गए।

पीछे का बाईं तरफ का पहिया बैठ रहा था।

यानी कि पंचर!

देवराज चौहान ने गहरी सांस लेकर इधर-उधर देखा। पास में कहीं भी आबादी न थी। सौ गज की दूरी पर सड़क किनारे एक आदमी किन्नू (संतरा) लेकर बैठा हुआ था। ढेर सारे किन्नू उसके पास थे और हाथ वाली जूस की मशीन भी पास ही लगा रखी थी। आते-जाते लोग वहां रुककर सफ़र की थकान से राहत पा लेते थे।

देवराज चौहान ने डिग्गी खोली।

भीतर स्टैप्नी मौजूद थी परन्तु वो भी पंचर थी।

देवराज चौहान ने डिग्गी बंद कर दी। आगे बढ़कर कार के भीतर जगमोहन पर निगाह मारी। वो नींद में था। देवराज चौहान सड़क के किनारे-किनारे उस तरफ बढ़ गया, जिधर किन्नू का ढेर लगाए आदमी बैठा उसे ही देख रहा था। उसकी पत्नी और दो छोटे बच्चे किन्नू के ढेर के पीछे मौजूद थे। बच्चे खेल रहे थे।

देवराज चौहान के पास पहुँचते ही किन्नू वाला बोला।

"गाड़ी खराब हो गयी साब जी?"

"हाँ, पहिया पंचर हो गया।" देवराज चौहान ठिठका।

"बदल लीजिये पहिया। मैं बदल दूं, पचास रुपये लूँगा।" वो जल्दी से बोला।

देवराज चौहान उसे देखकर मुस्कुराया।

"दूसरा पहिया भी पंचर ही डिग्गी में रखा है।"

"ये तो बोत गड़बड़ हो गयी।"

"यहाँ पंचर वाला किधर होगा?"

"पास में तो कोई भी नहीं है। एक किलोमीटर आगे जीरकपुर में है।"

"जीरकपुर?"

"वहां तो बहुत हैं।"

"वहां तक जाना कैसे होगा?"

"ये तो आप जानो। हाईवे पर कोई लिफ्ट भी नहीं देता। पेड़ों की छाँव में सड़क किनारे-किनारे निकल जाओ। बीस मिनट में पहुँच जाओगे। जूस पिलाऊं साब जी।" वो उठने का उपक्रम करता कह उठा।

देवराज चौहान ने पलटकर कार की तरफ देखा।

"उस कार में मेरा भाई सोया हुआ है, वो उठे तो उसे जूस पिलाना।"

जूस वाले ने कार की तरफ देखा, फिर देवराज चौहान से बोला।

"आप कहीं जा रहे हैं?"

"पंचर वाले को लेने।"

"समझा। सड़क के किनारे सीधे-सीधे चले जाईए, एक किलोमीटर की ही तो बात है।"

"सुनिए जी।" किन्नू के ढेर के पीछे बैठी औरत कह उठी – "रात के लिए डाल वगैरह नहीं है। साब जी जीरकपुर तो जा ही रहे हैं, पाव भर मूंग छिलका मंगवा लीजिए। रात का काम चल जाएगा। नहीं तो सुखी रोटी-अचार के साथ खानी पड़ेगी।"

"साब जी, पाँव भर मूंग छिलका की डाल....।" किन्नू वाले ने कहना चाहा।

देवराज चौहान तब तक आगे बढ़ चुका था।

"ये तो बहुत नकचढ़ा लगता है।" उसकी पत्नी मुंह बनाकर कह उठी।

"पैसे वाले लोग ऐसे ही होते हैं।" किन्नू वाला लापरवाही से कहकर दूसरी तरफ देखने लगा था।

□□

जगमोहन की आँख खुली।

कुछ पल वो छत को ही देखता रहा।

कार चल नहीं रही थी। इस बात का एहसास पाते ही वो तुरंत उठ बैठा। सड़क पर से तूफानी रफ़्तार से जाती कारों को देखा। आस-पास नज़रें दौडाई। देवराज चौहान कहीं भी नज़र न आया।

जगमोहन ने आँखें मली। कार से बाहर निकला।

फ़ौरन ही उसकी निगाह पीछे के पंचर पहिये पर पड़ी तो मामला समझ गया।

उसे कार से निकलते पाकर किन्नू वाला फुर्ती से जूस निकालने में लग गया।

"नमस्कार बाउजी।" किन्नू वाले ने पुकारा।

जगमोहन की निगाह उधर गयी, फिर वो उसकी तरफ चल पड़ा।

किन्नू वाला जूस निकालने में लगा था।

"नींद पूरी हो गयी बाऊजी?" उसके पास पहुँचते ही किन्नू वाला बोला।

"नींद!" जगमोहन के माथे पर, उसके सवाल से बल पड़े।

"वो आपके बड़े भाई साहब बता रहे थे कि आप नींद ले रहे हैं।"

"भाई साहब कहाँ गये?"

"जीरकपुर तक गये हैं। पंचर वाले को लेने।"

"जीरकपुर - वो कहाँ हैं?"

"उधर।" उसने हाथ से इशारा किया - "एक किलोमीटर ही तो है।" साथ ही उसने अपनी टूटी-फूटी कुर्सी जगमोहन की तरफ सरकाई - बैठो बाऊजी।"

जगमोहन बैठ गया। ठण्डी हवा पेड़ों से छनकर आ रही थी।

"आपके भाई साहब बता रहे थे कि पहिया और भी है लेकिन वो भी पंचर है।"

"हूँ।" जगमोहन ने जूस वाले को देखा - भाई साहब से दोस्ती गाँठ ली तूने।"

"वो तो यूँ ही, दो बात हो ही जाती है।" जूस वाले ने दांत फाड़े और जूस का गिलास जगमोहन की तरफ बढ़ाया - "लो जी। नंबर वन जूस है। बिना मिलावट का। पीते ही गर्मी और सुस्ती बाहर।"

"ये किस ख़ुशी में?"

"आपके भाई साहब कह गए थे।"

"क्या?"

"कि जब बाऊजी उठें तो जूस पिलाना।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली और गिलास थामा। घूँट भरा।

तभी सामने से सड़क पार करता पैंतीस-चालीस बरस का आदमी आता दिखा। जिसने खाकी पैंट और सफ़ेद कमीज़ पहन रखी थी। सिर पर सफ़ेद कपड़े की टोपी पड़ी थी।

जूस का घूँट भरते हुए जगमोहन की निगाह उस पर जा टिकी।

उस आदमी ने सड़क पार की थी कि जूस वाला चिल्ला उठा।

"आ भई बलबीर। दो दिन से तू दिखा नहीं।"

बलबीर सड़क पार कर आया था।

"छुट्टी पे था।" पास आते हुए बलबीर ठिठका।

"छुट्टी पर, खैर तो है?"

"बीवी-बच्चे को गाँव छोड़ने जाना था। तू फ़टाफ़ट पंद्रह गिलास जूस तैयार कर।"

"पंद्रह? खैर तो है?" उसके होंठो से निकला।

"सक्सेना साहब की सगाई हो गयी है। सबने उनको मुर्गा बना लिया। जूस पार्टी का प्रोग्राम बन गया।"

जूस वाला तेजी से जूस निकालने में लग गया।

"जूस पार्टी है तो पंद्रह गिलास कम है।"

"समझा कर, बाकी लोगों के लिए कॉकटेल पार्टी है रात को। जूस तो उनके लिए है, जो पीते-पाते नहीं।"

जूस वाला तेजी से जूस निकालता रहा।

जगमोहन ने जूस का गिलास खाली करके नीचे रखा। साथ ही उसकी निगाह हर तरफ घूम रही थी, परन्तु ऐसी

कोई जगह न दिखी, जो सक्सेना साहब की पार्टी के लिए फिट हो।"

"पार्टी कहाँ हो रही है?" आखिरकार जगमोहन ने पूछ ही लिया।

"बैंक में।"

"बैंक – यहाँ कहाँ बैंक है?" जगमोहन ने बलबीर को देखा – "यहाँ तो जंगल!"

"क्या बात करते हो बाऊजी, वो उधर बैंक भी है और बैंक की कॉलोनी भी।" कहकर बलबीर ने उधर नज़र मारी, फिर कह उठा – "आगे पेड़ों का झुरमुट है, इसलिए यहाँ से कुछ भी नज़र नहीं आ रहा।"

"बैंक की कॉलोनी भी है?"

"हाँ, पुरे एक सौ सत्तर फ्लैट हैं।" बलबीर बोला – "मेरे को भी वहां मुफ्त में रहने को मिला हुआ है। कई फ्लैट खाली पड़े हैं।"

"मतलब कि बैंक ने कर्मचारियों को मुफ्त में फ्लैट दे रखे हैं।"

"क्या बात करते हो। आजकल कोई भला मुफ्त में रहने को देता है।" बलबीर गर्दन को झटका देकर बोला – "वो तो बैंक के कर्मचारियों ने मिलकर अपनी सोसायटी बनायी और ठेकेदार से फ्लैट बनवा लिये। फाइनेंस किया बैंक ने। इस तरह बैंक कॉलोनी बन गयी। इधर तगड़ी ब्रांच की जरुरत थी, जो जीरकपुर का काम संभाल सके। सोसायटी में बहुत सारी जगह खाली पड़ी थी। बैंक के बड़े अफसरों ने जगह देखी और यहाँ बैंक बना डाला। वैसे भी धीरे-धीरे

जीरकपुर इधर ही बढ़ा आ रहा है। अब भी कौन-सा दूर है। एक किलोमीटर की दूरी पर तो है। लोग तो पेड़ों की छाँव में पैदल ही बैंक तक आ जाते हैं।"

"बैंक चलता तो नहीं होगा यहाँ।"

"लो, कर लो बात। आपकी तो बातें ही अजीब-सी हैं। बैंक क्यों नहीं चलेगा – जीरकपुर में कई छोटे-बड़े काम-धंधे हैं। इस बैंक से पैसा निकालकर करोड़ों रुपये तो हर महीने तनख्वाह में बाँटते हैं जीरकपुर वाले।"

"करोड़ों रुपये?" जगमोहन ने होंठ सिकोड़े।

"और नहीं तो क्या – कई बार तो मैं खुद थैलों और ट्रंकों में नोटों के पैकेट डालता हूँ और आप कहते हैं कि बैंक चलता नहीं होगा। कमाल की बात कह दी आपने!" बलबीर ने गर्दन को झटका दिया, फिर जूस वाले से बोला – "कम जूस न बना दियो। बारह को कहे कि पंद्रह हो गया।"

"पहले कभी कम निकला है।"

"निकला होगा, मुझे क्या पता।"

"गिलास नहीं हैं इतने।"

"पता है, तू थैलियों में बंद कर दे। बैंक में बहुत गिलास हैं।"

पंद्रह मिनट और लगे और बलबीर जूस की थैलियाँ ले गया।

जगमोहन ने पुनः पेड़ों के झुरमुट की तरफ नज़र मारी।

तेज हवा से जब पेड़ों के पत्ते जोरों से हिलते तो पीछे कुछ बने होने का एहसास होता। परन्तु स्पष्ट कुछ भी नज़र

नहीं आ रहा था। जगमोहन ने जूस वाले को देखा और कहा।

"मेरे को बेवकूफ समझता है। कहता है हर महीने करोड़ों रुपये बैंक में इधर-उधर होता है।"

"वो सच कह रहा था बाऊजी।" जूस वाला कह उठा – "बैंक बोत चलता है लेकिन आप क्यों इतना पूछ रहे हैं?"

"इतना – क्या मैं ज्यादा पूछ रहा हूँ बैंक के बारे में?" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"लगता तो है। आपको क्या, बैंक चले या न चले।"

"ठीक कहता है तू – मेरे को क्या?"

"जूस के पंद्रह रुपये हो गए बाऊजी।" जूस वाला कह उठा।

"पैसे पप्पू देगा।"

"पप्पू?" जूस वाले के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।

"पप्पू भाई साहब, जो तेरे को कह गए थे कि मुझे जूस पिला देना।"

"ओह! कोई बात नहीं। पप्पू भाई साहब भी आते ही होंगे। उनसे ले लूँगा।"

□□

जगमोहन वक़्त बिताने के अंदाज़ में धीरे-धीरे पेड़ों की छाँव में आगे बढ़ गया। जबकि उसका असली मकसद तो बैंक और बैंक कॉलोनी को देखने का था।

कुछ आगे पहुंचकर सड़क पार की और दूसरी तरफ पहुँच गया।

अब उसे पेड़ों के पीछे बनी इमारत नज़र आने लगी थी।

जगमोहन कुछ और आगे बढ़ गया सड़क के किनारे-किनारे।

आगे पहुंचकर ठिठका।

पेड़ों के झुरमुट ख़त्म हो गए थे और सामने ही बैंक कॉलोनी नज़र आने लगी।

गुलाबी रंग की चार-चार मंजिला फ्लैटों की छः इमारतें खड़ी थी। उनके बीच में ही सड़कें और बाग बने नज़र आ रहे थे। उनके आस-पास कारें खड़ी भी दिखीं। परन्तु ये सब हज़ार फीट दूर था। सड़क की तरफ सोसायटी की चारदीवारी का गेट था। गेट से कुछ हटकर एक तरफ उस चारदीवारी के भीतर ही भारत सरकारी बैंक की इमारत बनी हुई थी। यानी कि बैंक में जाने के लिए उस चारदीवारी के गेट की तरफ जाने की कोई जरूरत नहीं थी।

चारदीवारी से निकलता, सड़क की तरफ बैंक का मुख्य द्वार था।

एक चौकीदार सोसायटी के गेट के मुख्य द्वार पर था।

उससे कुछ हटकर बैंक के मुख्यद्वार पर एक गनमैन मौजूद था। बैंक के इस चौकीदार के हाथ में दोनाली न होकर गन थमी थी।

जगमोहन वहीं खड़ा बैंक का जायजा लेता रहा। बैंक के बाहर स्कूटर, मोटरसाइकिल और कई कारें खड़ी थीं। ठण्डी हवा चल रही थी। पास ही सड़क पर से तूफानी रफ़्तार से वाहन गुजर रहे थे। एकाएक जगमोहन आगे बढ़ा और बैंक के मुख्य दरवाजे के पास जा पहुंचा।

"बैंक कितने बजे बंद होता है?" जगमोहन ने गनमैन से पूछा।

"दो बजे। अभी आधा घंटा है बैंक बंद होने में।" गनमैन ने कहा।

"खुलता कितने बजे हैं?"

"साढ़े नौ बजे।"

जगमोहन बैंक के भीतर प्रवेश कर गया।

भीतर इस वक़्त पंद्रह से बीस कस्टमर मौजूद थे।

जगमोहन की निगाह हर तरफ फिरने लगी।

बैंक की भीतरी हालत बता रही थी कि वो काफी बड़ी शाखा थी और खूब चल रही थी। बैंक कर्मचारियों की संख्या डेढ़ सौ से ऊपर थी। मध्यम-सा शोर उठा हुआ था। हर कोई अपने कम में व्यस्त नज़र आ रहा था। स्टाफ के पीछे दीवार पर 'लॉकर्स' लिखा हुआ था और वहीं से सीढियाँ नीचे जाती महसूस हो रही थी।

यानी की लॉकर्स बेसमेंट में थे।

सब ठीक था।

सिर्फ एक बात को छोड़कर।

कि बैंक की इतनी बड़ी ब्रांच सुनसान जगह पर है।

जबकि हर महीने करोड़ों रुपये जीरकपुर वाले अपने स्टाफ को तनख्वाह देने के लिए निकालते हैं। यही सब बातें तो जगमोहन को आकर्षित कर रही थीं।

"आप यहाँ।"

आवाज़ सुनते ही जगमोहन पलटा।

बलबीर खड़ा था पास में।

जगमोहन मुस्कुराया।

"आपका भी खाता है बैंक में?" बलबीर ने एकाएक पूछा।

"नहीं. लेकिन सोच रहा हूँ की खुलवा लूं।"

"आप खाता खुलवायेंगे यहाँ?" वो हड़बड़ाकर कह उठा।

"तुम्हें एतराज है?"

"मुझे क्यों एतराज होगा। लेकिन आप तो यहाँ रहते नहीं!"

"जीरकपुर तो बगल में हैं।"

"जीरकपुर में रहते हैं आप?"

"हाँ!"

"बीवी-बच्चे भी वहीं हैं?"

दो पल के लिए जगमोहन सकपकाया फिर मुस्कुरा पड़ा।

"हाँ, पूरा परिवार है। धंधा भी जीरकपुर में हैं।"

"फिर तो आपको खाता खुलवा लेना चाहिए। खाते में गवाही के लिए किसी को ले आइएगा। मैं.....!"

"तुम्हारे होते हुए गवाही के लिए किसी की क्या जरुरत है। तुम ही खाता खुलवा देना।"

"गवाही जान-पहचान की होती...!" बलबीर ने कहना चाहा।

"तुम भी तो मेरी जान-पहचान के ही हो। बाहर, जूस की दुकान पर....।"

"मैं नहीं जानता आपको।" वो मुंह बनाकर कह उठा – "ज़माना बोत खराब है। आजकल लोग चेहरे से कुछ और दिखते हैं और होते कुछ ओर हैं। छः महीने पहले मल्होत्रा साहब फंस गए थे।"

"मल्होत्रा साहब?"

"हमारे कैशियर थे। बहुत बुरा हुआ उनके साथ। सस्पेंड हुए पड़े हैं। पुलिस और अदालतों के चक्कर में पड़े हैं।" बलबीर ने अफ़सोस भरे स्वर में कहा – "कसूर सिर्फ इतना था कि उन्होंने किसी को खाता खुलवाने में गवाही दे दी थी और उसने पुरे डेढ़ करोड़ का बैंक से फ्रॉड कर लिया और फंस गए मल्होत्रा साहब।"

"ओह! फिर तो उनके साथ बहुत बुरा हुआ लेकिन मैं क्या तुम्हें ऐसा दिखता हूँ?"

"अब किसी के मुंह पर तो लिखा नहीं होता, बुरा मत मानना साहब जी। जब से मल्होत्रा साहब फंसे हैं, तब से तो मैंने कसम ले ली कि किसी के खाता खुलवाने में अपनी गारंटी नहीं दूंगा।"

"मेरी भी नहीं!" जगमोहन मुस्कुराया।

"आप पागल तो नहीं है।"

"नहीं।" जगमोहन के होंठों पर मुस्कान थी।

"तो फिर मेरे पीछे क्यों पड़ गए कि मैं आपका खाता खुलवाने में गारंटी बनूँ? चपरासी हूँ बैंक का। शराफत से दो रोटी चल रही है। यही बहुत है और....।"

"बलबीर।" बैंक के कर्मचारियों में से किसी ने उसे ऊँचे स्वर में पुकारा।

"आया जोशी साहब।" बलबीर ने हाथ हिलाकर कहा, फिर जगमोहन से बोला – "अपने जोशी साहब बहुत अच्छे बंदे हैं। चंड़ीगढ़ में रहते हैं। रोज वहीं से आते हैं। पच्चीस-तीस मिनट का तो रास्ता है। इनकी पत्नी का आज जन्मदिन हैं। मेरे को बुलाये बिना मानेंगे नहीं।" बलबीर चला गया।

जगमोहन की निगाह बैंक में फिरती रही।

एक ही गनमैन था बैंक में, जो की बाहर था। उसने बलबीर को देखा, जो कि अपने काम में लगा किसी से बात कर रहा था। जगमोहन पलटा और बाहर आ गया।

"बैंक की वीकली छुट्टी कब होती है?" जगमोहन ने गनमैन से पूछा।

"रविवार को।" गनमैन ने बताया।

"यहाँ खाता खुलवाना है, तुम मेरे खाते की गारंटी दे दोगे?" जगमोहन बोला।

"यहाँ पर मेरा खाता नहीं है।" कहते हुए उसने मुंह घुमा लिया।

"तुम तो भीतर कह दोगे तो तब भी मेरा काम बन जाएगा।"

"मेरा काम भीतर का नहीं है, बाहर का है। मैं ऐसे कामों में नहीं पड़ता।" उसने दूसरी तरफ देखते हुए रूखे स्वर में कहा।

जगमोहन आगे बढ़ गया।

टहलता हुआ वापस पहुंचा।

देवराज चौहान अभी जीरकपुर से नहीं लौटा था।

"कहाँ चले गए थे बाऊजी?" जूस वाले ने पूछा।

"बैंक।"

"वो क्यों?"

"खाता खुलवाना था लेकिन गारंटी देने वाला नहीं मिल रहा।" जगमोहन लापरवाही से कहते हुए कुर्सी पर बैठ गया।

"खाता? लेकिन आप तो यहाँ रहते नहीं!"

"जीरकपुर में ससुराल है अपनी।"

"समझा, जूस बनाऊं क्या?"

"बना दे।"

वो फुर्ती से जूस बनाने में लग गया कि कहीं आर्डर कैंसिल न हो जाए।

जगमोहन की निगाह बैंक की तरफ थी, जो कि पेड़ों के झुरमुट की ओट में यहाँ से नज़र नहीं आ रहा था। सोचों में सिर्फ एक ही बात थी कि बैंक पर हाथ साफ़ किया जा सकता था।

□□

देवराज चौहान बीस-पच्चीस मिनट में ही जीरकपुर पहुँच गया था। पेड़ों की छाँव और ठण्डी हवा के साथ रास्ते का पता ही न चला था।

एक जगह पंचर की दुकान दिखी थी परन्तु पूछने पर पता चला कि पंचर वाला सुबह से ही दुकान खोलकर जाने कहाँ चला गया है। उसके बाद देवराज चौहान थोड़ा और आगे बढ़ा, तो जीरकपुर का एकमात्र काफी बड़ा तिराहा आ गया। पीछे अम्बाला से सड़क आ रही थी। आगे चंडीगढ़ जा रही थी और तीसरी सड़क लालबत्ती

से पंचकुला की तरफ मुड़ रही थी, जो कि आगे जाकर चंडीगढ़-शिमला हाईवे में जा मिलती थी।

वाहनों का तीनों तरफ से आना-जाना भारी मात्रा में जारी था।

तब तक देवराज चौहान की निगाह लकड़ी के उस खोखे पर पड़ चुकी थी, जो कि पेड़ के नीचे बना हुआ था। पेड़ की नीचे वाली डाल पर दो-तीन पुराने टायर लटके हुए थे। पेड़ के नीचे कुर्सी रखे एक आदमी बैठा था और टाँगे दूसरी कुर्सी पर रखी हुई थी। वो नींद में लग रहा था।

देवराज चौहान उसके पास आ पहुंचा। उसे पुकारने लगा कि ठिठक गया। वो व्यक्ति नींद में नहीं था। सिर एक तरफ लुढ़काए, एक आँख खोले उसे ही देख रहा था। नज़र मिलते ही उसने दूसरी आँख भी खोली।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

“गाड़ी कहाँ हैं?” दूसरी कुर्सी से टाँगे हटाता वो कह उठा।

“कौन-सी गाड़ी?” देवराज चौहान ने कश लिया और कुर्सी खींचकर बैठ गया।

पास ही सड़क से तेज रफ़्तार वाहन निकल रहे थे।

“जो पंचर हो गयी है।”

“तुम कैसे कह सकते हो कि गाड़ी पंचर हो गयी है?”

“सूरत से ही लग रहा है कि थकेहाल, परेशान से पंचर वाले को ढूँढने यहाँ पहुंचे हो। यहाँ तो रोज का ही काम है। आने वाले के चेहरे पर लिखा होता है कि गाड़ी पंचर हो गयी है।”

"ठीक कहा तुमने।"

"एक सिगरेट देना।"

देवराज चौहान ने उसे सिगरेट दी और सुलगा भी दी।

"सिगरेट पीने की आदत नहीं हैं, लेकिन जब सामने वाले को पीते देखता हूँ तो पीने की खुरक उठने लगती है।"

उसने कश लिया – "महँगी सिगरेट पीते हो। बहुत सोचता हूँ, लेकिन समझ नहीं पाता कि लोगों के पास इतना पैसा कहाँ से आ जाता है। जबकि वो करते कुछ भी नहीं हैं। गाड़ियों में घूमते हैं और बंगले में रहकर ऐश करते हैं।"

जवाब में देवराज चौहान खामोश रहा।

"गाड़ी कहाँ हैं?"

"इस तरफ। एक किलोमीटर का फासला होगा।"

"कहने को तो एक किलोमीटर होता है, लेकिन वो फासला बाद में पांच किलोमीटर का निकलता है। इसी बात पर ग्राहक से झगड़ा होता है।"

"उधर बैंक से पहले है या बाद में?"

"बैंक?"

"भारत सरकारी बैंक।"

"मुझे नहीं मालुम कि बैंक कहाँ हैं? लेकिन पास में एक किन्नू बेचने वाला है, उसी ने बताया था कि एक किलोमीटर आगे जीरकपुर है। वहाँ पर पंचर वाला मिलेगा। यहाँ तक आने में मुझे बीस मिनट पैदल के लगे हैं।"

"समझ गया, वो साला किन्नू वाला पहले तो मेरे पास ग्राहक भेजता है, फिर कमीशन मांगने आ जाता है।" उसने कश लेकर मुंह बनाकर कहा – "ले आओ गाड़ी, मुफ्त में पंचर लगा दूंगा।"

"क्या?" देवराज चौहान के माथे पर बल उभरे – "गाड़ी ले आऊँ!"

"अपना भाव बता रहा हूँ कि गाड़ी यहाँ लाओगे तो काम मुफ्त में कर दूंगा। गाड़ी तक चलना पड़ा तो खर्चा बहुत आएगा। मुझे झगडेबाजी नहीं चाहिए बाद में।"

"कितना खर्च आएगा?" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"पांच सौ रुपये लगेंगे। साथ में एक-एक गिलास किन्नू का जूस का....।"

"एक-एक गिलास!"

"हाँ, मेरे साथ लड़का भी चलेगा, जो पंचर लगाएगा। तो किन्नू के दो गिलास हो गए न।"

देवराज चौहान होंठ सिकोड़े उसे देखने लगा।

देवराज चौहान को इस तरह देखते पाकर वो मुस्कुराया फिर सकपकाकर मुंह फेर लिया।

"एक पंचर के पांच सौ और...!"

"मेरा भाव यही है। दूसरे के पास जाओगे तो वो तो हज़ार सात सौ पर आएगा।"

"ठीक है चलो।"

"चलो?" वो हड़बड़ाकर देवराज चौहान को देखने लगा।

"हाँ, पंचर लगाओ।"

"पांच सौ में?"

देवराज चौहान ने सहमति में सिर हिलाया।

"मुझे तुम पर विश्वास नहीं। पंचर लगवाकर, खाली-खाली लात मार दोगे। कई बार ये सब भुगत चुका हूँ।"

"एक पंचर के पांच सौ मांगोगे तो यही होगा।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"मतलब कि तुम भी मुझे लात मारने....!"

देवराज चौहान ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला और उसकी तरफ बढ़ाया।

उसने झपट्टा मारने वाले अंदाज में नोट पकड़ा फिर उसे ऊपर करके नोट को परखने वाली नज़रों से देखा – "असली है?"

"असली ही होगा। मैंने तो छापा नहीं।"

उसने नोट जेब में डालकर कश लिया।

"चलो।"

"लड़का आने वाला है, अभी चलते है। चाय पीनी हो तो बोलो।"

"मंगा ले।"

"ओ बावले।" उसने कुर्सी पर बैठे-बैठे गला फाड़ आवाज़ लगाई – "सुन रहा है?"

सड़क पार साइकिल ठीक करने वाले लड़के ने इधर देखा।

सड़क पर से वाहन बराबर आ-जा रहे थे।

उसने लड़के को हाथ की उँगलियों से दो चाय का इशारा किया तो वो लड़का पास में खड़ी रेहड़ी की तरफ

लपका, जहां चाय का सामान रखा था और फुर्ती से स्टोव जलाने में लग गया।

उसने जेब से पुराना सा रुमाल निकालकर चेहरे पे आये पसीने को पोंछकर देवराज चौहान को देखा, जो कि अब कहीं और देख रहा था।

"एक बात तो बता दो।" वो बोला।

"क्या?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"लोग पैसा कैसे कमाते हैं?"

"पता नहीं।"

"मत बताओ।" उसने थके स्वर में कहा – "लोग कार भी पालते हैं और बीवी भी पालते हैं। दबा के खर्चा करते हैं और माथे पर शिकन नहीं आती और मेरे लिए एक बीवी को पालना भी भारी हो रहा है। साली हर समय मुझ पर दौड़ी रहती है।"

"इस खोखे से तुम बीवी को पालने की सोच रहे हो।" देवराज चौहान बोला।

"सोच नहीं रहा, पाल रहा हूँ। साथ में उल्लू का पट्ठा भी है।" वो कुढ़कर बोला।

"उल्लू का पट्ठा?"

"बच्चा! वो पता नहीं कहाँ से हो गया।" उसने कड़वे स्वर में कहा – "कस्तूरी कहती है कि मजे लोगे तो बच्चा होगा ही। पता नहीं, ये कौन-सा क़ानून है। मैंने तो रातों को टपाने जे लिए शादी की थी। पहले ही रोटी-पानी नहीं चलती थी। जब से वो साला उल्लू का पट्ठा हुआ है, तब से तो सारा पैसा ही उस पर खर्च हो रहा है। मैं तो दुखी हो

गया हूँ। दिल करता है कि दिल्ली भाग जाऊं। रोज यहाँ बैठे, दिल्ली जाती बसों को हसरत भरी नज़रों से देखता हूँ।"

"दिल्ली!" देवराज चौहान मुस्कुराया – "वहाँ क्या है?"

"सुना है दिल्ली में सब ऐश करते हैं।" उसने देवराज चौहान को देखा।

"किससे सुना है?" देवराज चौहान बरबस ही मुस्कुरा पडा।

"बस, सुना है कि दिल्ली दिल वालों की है और...!"

"गलत सुना है।" देवराज चौहान मुस्कुरा रहा था – "दिल्ली में भी पैसा कमाना पड़ता है, आसमान से नहीं गिरता।

"मैनें एक बात सुनी है!" वो तनिक धीमे स्वर में बोला।

"क्या?"

"उधर दिल्ली में किसी का अपहरण कर लो और दो-चार लाख ले लो। बहुत फायदे वाला धंधा है। है क्या?"

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली फिर बोला – "दिल्ली की पुलिस के बारे में कुछ सुना है?"

"हाँ, कि वो सोती रहती है।"

"ये नहीं सुना कि सोते हुए भी एक आँख खुली रखती है और गर्दन से पकड़ती है।"

"सच!"

"डंडे ऐसे घुमा-घुमाकर मारती है – तब जीरकपुर बहुत याद आएगा।"

"ओह!" उसके चेहरे पर बेचैनी उभरी – "ये मुझे नहीं पता था।"

"जेल में डालने के बाद दिल्ली पुलिस साल-दो साल तक तो हाल भी नहीं पूछने आती।"

"उस्ताद जी चाय।"

बावला सड़क पार करके चाय लेकर आ पहुंचा था। हाथ में पकड़े छक्के में चाय के दो गिलास रखे थे। दोनों को एक-एक गिलास थमाकर जाने लगा तो पंचर वाला बोला – "तेरा बापू कहाँ हैं? दो चार दिन से नज़र नहीं आ रहा।"

"सूरतगढ़ में रेहड़ी लगाने लगा है। यहाँ दो बंदों काम नहीं है।"

"दो बंदे।' उसने मुंह बनाया – "तू कब से बंदा बन गया? मेरे सामने तो पैदा हुआ था।"

बावले ने दांत दिखाए और वापस सड़क पार करता चला गया।

"साबजी, तुम क्या करते हो दिल्ली में?"

"मैनें कब कहा कि मैं दिल्ली में कुछ करता हूँ।" देवराज चौहान बोला।

"तो?"

देवराज चौहान ने चाय का घूंट भरा और दूसरी तरफ देखने लगा।

तभी सामने से पच्चीस बरस का युवक आता दिखा। हाथ में पुराना-सा थैला थाम रखा था।

उसकी निगाह उस पर जा टिकी।

पास आते ही वो थैला उसके पास रखता हुआ बोला।

"अब नहीं जाया करूँगा तेरी बीवी के पास लंच लेने।" उसने उखड़े स्वर में कहा।

"क्यों?"

"तेरी बीवी मुझे ऐसे डांटती है, जैसे मेरे से उसने ब्याह कर रखा...!"

"जुबान संभाल के बात कर।"

"ठीक ही तो कह रहा हूँ। कहती है इतने पैसों से घर का खर्चा नहीं चलता। ज्यादा कमाया करो। बच्चे पर बहुत खर्चा होता है। होता है तो होता रहे। मेरा इन बातों से क्या मतलब? जो कहना है तुझे कहे।" उसने मुंह बनाकर कहा – "देख सूरमा। कस्तूरी को समझा दियो कि गोलू को कुछ भी कहने की जरुरत नहीं है।"

"गोलू, तू कस्तूरी की बात का बुरा मत माना कर। औरतें होती ही ऐसी हैं।"

"मुझे नहीं पता कि कैसी होती हैं। मैंने शादी नहीं की।" गोलू तीखे स्वर में बोला – "ये साहब कौन हैं?"

"इनकी कार पंचर हो गयी है।"

"तो पंचर लगा – बिठाकर चाय क्या पिला रहा है।"

"एक पंचर का पांच सौ रुपये दे रहे हैं।"

"पांच सौ!" गोलू अचकचाया – "खाई में गिरी पड़ी है कार क्या?"

"पास ही है भारत सरकारी बैंक के पास। पांच सौ एडवांस भी ले लिया है।" सूरमा ने उसे बताया।

"अच्छा किया।"

फिर सूरमा ने देवराज चौहान को देखा।

"दस मिनट लगेंगे। गोलू खाना ले आया है, खा ही लूं।"

देवराज चौहान ने चाय का गिलास खाली किया और उठते हुए बोला।

"लंच के बाद कार तक पहुँच जाना। ये तो समझ ही चुके हो कि कार किधर खड़ी है?"

"हाँ, फ़िक्र मत करो।"

देवराज चौहान सड़क पार दुकानों की तरफ बढ़ गया।

आधे घंटे बाद देवराज चौहान लौटा। दोनों हाथों में लिफ़ाफ़े थाम रखे थे। एक लिफ़ाफ़े में अपने और जगमोहन के लिए लंच पैक करा रखा था और दूसरे लिफ़ाफ़े में दालें भरी थीं।

सूरमा वैसे ही कुर्सी पर बैठा था।

"लंच कर लिया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"अभी कहाँ – गोलू दही लेने गया है। गर्मी बहुत है। तुमने पांच सौ रुपया दिया है, तो सोचा आज दही खा लें, वरना तो सुखी रोटी ही खानी पड़ती है।" सूरमा ने कहकर गहरी साँस ली।

देवराज चौहान ने दालों वाला लिफाफा नीचे रखते हुए कहा।

"आते वक़्त इस लिफ़ाफ़े को भी लेते आना।"

सूरमा ने सिर हिलाया।

"जल्दी आना।"

"तुम्हारे साथ ही पहुचुंगा। गोलू को दही तो लाने दो।"

देवराज चौहान लंच का लिफाफा थामे आगे बढ़ गया।

□□

देवराज चौहान वापस पहुंचा।

जगमोहन को कार की पीछे वाली सीट पर लेटे पाया। दरवाजा खुला हुआ था। दोनों टाँगे बाहर को लटक रही थीं। देवराज चौहान को आया पाकर वो फौरन उठ बैठा।

"बहुत देर लगा दी आने में?" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान उसे लंच का लिफाफा थमाते हुए बोला।

"दोपहर में पंचर वाला मिल नहीं रहा था।"

"अब मिला कि नहीं?"

"मिला, कुछ देर में आ जाएगा। तब तक हम लंच कर लेते हैं।"

जूस वाले की बीवी ने देवराज चौहान को आया पाकर अपने आदमी से कहा।

"देख लिया।" स्वर में तीखा भाव था।

"क्या?"

"खाली हाथ आया है। पाव भर दाल मंगवाई थी, वो भी नहीं लाया।"

"तो नाराज़ क्यों होती है। वो हमारा लगता ही क्या है?"

"ले आता तो क्या हम मुफ्त में रख लेते – पैसे नहीं देते क्या!"

"वो हमारा नौकर नहीं है। कार वाला है। वो भला हमारे लिए जीरकपुर से दाल क्यों लाएगा?"

"उधर जा रहा था, तभी लाने को कहा था। स्पेशल तो नहीं कहा था कि तू जीरकपुर जाकर दाल ला।"

"छुपकर, छुपकर! जो जूस पीने आता है, उसी से दाल मंगवाने लगती है।"

"तो क्या करूँ। तू तो किसी काम का है नहीं।"

"काम का नहीं हूँ। सारा दिन खड़ा जूस निकालता रहता...!"

"हाँ – हाँ, जैसे जूस पीने वालों की लाइन लगी रहती है यहाँ।" उसने हाथ नचाकर कहा –"दिनभर में दो सौ का भी जूस नहीं बेचता और कहता है, दिन भर जूस निकालता रहता है।"

"वो दाल नहीं लाया, तो तू उसका गुस्सा मुझ पर निकाल रही है।" जूस वाला भिनभिनाकर बोला।

"देख तो, वो उधर पेड़ के नीचे बैठ गए हैं। खाना लाया है जीरकपुर से। अपनी दाल में तो मक्खन डलवा के लाया होगा।"

"तुझे क्या, पैसे वाले लोग हैं। दाल खाएं या मक्खन खाएं। तू क्यों कलप रही हैं?"

"मैं क्यों कलपुंगी। कलपेगी मेरी जूती!"

खाने के दौरान जगमोहन ने देवराज चौहान को बैंक के बारे में सब कुछ बता दिया।

□□

लंच समाप्त करने के बाद देवराज चौहान जूस का गिलास खाली करता बोला।

"रहने दे। अभी किसी काम का मन नहीं है।"

"बहुत आसान टारगेट है। अलग-थलग बैंक है ये। पीछे बैंक वालों के फ्लैट हैं। बैंक टाइम के बाद बाहरी लोगों का इधर आना-जाना भी नहीं है। हर महीने की पहली तारीखों में करोड़ों का लेन-देन होता है।" जगमोहन ने पाने शब्दों पर जोर देकर कहा – "इस वक़्त हम फुर्सत में हैं। ये जगह भी शांत है। कुछ दिन यहीं बिताते हैं। पहली तारीख आने में दस दिन बाकी हैं।"

देवराज चौहान ने सड़क पार पेड़ों के झुरमुट की तरफ देखा जिसके पार बैंक था – परन्तु यहाँ से वो नज़र नहीं आ रहा था। तभी जूस वाला पास आ पहुंचा।

"जूस और बनाऊं क्या?" वो खाली गिलास उठाते हुए बोला।

"नहीं।"

गिलास लेकर वो पंद्रह कदम दूर अपने ठिकाने पर चला गया।

"बहुत आसान काम है।" जगमोहन पुनः कह उठा – "पहली तारीख में यहाँ से आसानी से बैंक के करोड़ों रुपयों पर हाथ डाला जा सकता है। कर लेते हैं ये काम।"

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर उसे देखा।

"तो तेरा मन है ये काम करने का।"

"हाँ!" जगमोहन भी मुस्कुराया – "बैंक पर मुद्दत से हाथ नहीं डाला।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और शांत स्वर में कह उठा।

“पहले बैंक के सारे सिस्टम को समझना होगा। उसके बाद ही कुछ सोचा जाएगा।”

“पहली तारीख आने में दस दिन बाकी हैं, जब बैंक में करोड़ों की रकमें होती हैं। इतने दिन में तो बहुत काम हो सकते हैं।” जगमोहन ने कहा – “बैंक के सिस्टम को समझने का काम तो दो दिन का है।”

“ज्यादा उतावला न बन।” देवराज चौहान उठते हुए बोला – “बैंक में कुछ हो सका तो जरूर करेंगे।”

जगमोहन ने मन ही मन चैन की सांस ली।

देवराज चौहान का इतना कहना ही उसके लिए बहुत था।

□□

दो घंटे बाद सूरमा और गोलू वहाँ पहुंचे।

दो पहियों वाले बजाज स्कूटर पर आये थे वो और स्कूटर की हालत देखने लायक थी। हैंडल किसी और स्कूटर का तो साइडों के कवर अलग-अलग रंगों के। आगे का मडगार्ड अन्य रंग का। ऐसा कोई रंग नहीं था, जो स्कूटर में मौजूद न हो। स्कूटर की हालत देखकर तरस आता था उसकी हालत पर। स्टेपनी गायब और आगे-पीछे के टायर खरबूजे की तरह गंजे नज़र आ रहे थे।

गोलू चला के लाया था।

“पहुँच गए जी।” सूरमा स्कूटर के पीछे वाली सीट से उतरता बोला। उसके हाथ में दालों वाला लिफाफा था तो दूसरे में अपने सामान का थैला – “लो, दालों वाला लिफाफा।”

"जूस वाले को दे आ।" देवराज चौहान ने कहा।

सूरमा पलटा और जूस वाले की तरफ बढ़ता कह उठा।

"बंटी, क्या हाल हैं तेरे? ये ले दालों के लिफाफा।"

"दालों का?"

"कार वाले ने भेजा है। तेरे को खबर थी दाल आ रही है?" सूरमा ने एकाएक पूछा।

किन्नू के ढेर के पीछे बैठी बंटी की बीवी कह उठी – "खबर क्यों न होगी। पैसे देकर सामान मंगवाया है, मुफ्त में नहीं आया ये।"

बंटी ने फ़ौरन दालों का लिफाफा पकड़ा और कह उठा – "इन कार वालों को मैनें तेरी दुकान का पता-ठिकाना बताकर भेजा था कि वहाँ सूरमा पंचर वाला...!"

"अब तू कमीशन मांगेगा।"

"मैंने ऐसा कब कहा?"

"फिर ठीक है।" सूरमा ने कहा और पलटकर कार की तरफ बढ़ गया।

"लाओ, दालें मुझे दो।"

बंटी ने दालों का लिफाफा अपनी पत्नी को थमा दिया।

"ओह, ये तो बहुत सारी दालें हैं।" उसकी पत्नी बोली – "इतने तो पैसे भी नहीं होंगे हमारे पास।"

"हमने तो पाव भर दाल मंगाई थी।" बंटी बोला।

"वो भी मूंग छिलके वाली। देखो जी, वो मुफ्त देता है तो रख लेना, नहीं तो वापस कर देना। कह देना हम एक साथ इतनी दालें नहीं लेते। दालों में कीड़ा लग जाता है।"

"वो मुफ्त क्यों देगा?"

"कार वालें हैं, दो-चार किलो दाल की क्या परवाह।"

"मुझे तो अपने जूस के पैसों की चिंता होने लगी है। क्या पता उन पैसों को दालों में बराबर न कर दें।"

"तुम्हें तो अपने दो गिलास जूस की चिंता...!"

"दो नहीं, पांच हो चुके हैं अब तक। पूरे पचहत्तर रुपये हो चुके हैं।"

"फिर तो दालें वापस ही कर देना।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ कमला।"

गोलू ने स्टैपनी में पंचर लगाया और हवा भरकर पहिया तैयार किया। फिर जैक लगाकर पंचर पहिया खोला और नया उसमें फिट कर दिया।

"लो जी, कार तैयार हो गयी।" सूरमा कह उठा।

"अभी कहाँ तैयार हुई?"

"हो तो गयी।"

"ये जो पंचर पहिया निकाला है, इसे तैयार नहीं करोगे?"

"हमारी तो एक पंचर की बात हुई थी।" सूरमा ने देवराज चौहान की तरफ इशारा किया।

"इसमें पूछना क्या है? दूसरे का भी पंचर लगा। पैसे ले लेना।"

"पैसे?" सूरमा सकपकाया – "पहले पंचर के भाव में ही?"

"और क्या – दो पंचरों के अलग अलग भाव में पैसे तो होंगे नहीं।"

"गोलू।" सूरमा बोला – "ठोक दे पंचर।"

"अभी लो।" गोलू पंचर पहिये के साथ भिड़ गया।

सूरमा, जगमोहन के पास पहुंचा।

"मुझे अपने यहाँ नौकरी दे दो।"

"नौकरी?" जगमोहन ने उसे देखा।

"हाँ, आजकल पंचर के काम में कमाई खत्म हो गयी है।" सूरमा ने मुंह बनाया।

"तो मैं क्या करूँ?"

"कहा तो, अपने यहाँ नौकरी दे दो। दो रोटी तो आराम से खा सकूँगा।"

जगमोहन ने सूरमा को घूरा।

"तू जानता है मेरे को?"

"नहीं।"

"और नौकरी माँग रहा है?"

"तो क्या गलत कर दिया।"

"मैं खुद नौकरी की तलाश में हूँ।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा।

"ओह, आपका भी क्या पंचर का खोखा है!"

"नौकरी न मिली तो, वह भी लगाना पड़ेगा।"

"जीरकपुर में खोखा मत लगाना। यहाँ गाड़ियाँ तो बहुत दौड़ती नज़र आती है, लेकिन पंचर का काम नहीं चलता।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली और सूरमा से परे हट गया। देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"क्या सोचा कि काम कैसे करना है?" जगमोहन ने पूछा।

"पहले तो कहीं पर रुकना है। उसके बाद ही बैंक के बारें में छानबीन हो सकेगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"रुकना कहाँ हैं?"

"जीरकपुर में ही रुकेंगे।"

दस मिनट में ही गोलू ने पंचर लगाकर हवा भर दी।

"लो, हो गयी चकाचक।" सूरमा बोला – "डिग्गी में रख दे।"

गोलू स्टैपनी डिग्गी में रखने लगा।

सूरमा जगमोहन के पास पहुंचा।

"काम हो गया।"

"अच्छी बात है।" जगमोहन बोला – "धन्यवाद!"

"धन्यवाद क्या, पंचर के पैसे और दो गिलास किन्नू का जूस।"

"किन्नू का जूस?" जगमोहन ने उसे घूरा।

"पहले बात हो गयी थी।"

"किससे?"

"तुम्हारे भाई से!"

"वो शरीफ बंदा है। मेरे से बात कर।" जगमोहन ने जेब से दस का नोट निकाला – "ये लो।"

"दस रुपये! य.. ये क्या है?" सूरमा सकपकाया।

"दूसरे पंचर के पैसे।"

"पांच सौ मिलने चाहिए।" सूरमा मुंह फाड़कर बोला।

"क्यों?"

"पहले के भी तो पांच सौ लिए थे।"

जगमोहन ने तुरंत झपट्टा मारकर उसके हाथ से दस का नोट वापस ले लिया।

"पांच सौ रुपये का पंचर, इतनी ज्यादा चोर-बाजारी! चल थाने, मैं...।"

"सूरमा।" गोलू जल्दी से कह उठा – "दूसरा पंचर मुफ्त में जाने दे। निकल चल।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ।" सूरमा ने खिसकने में ही भलाई समझी।

अगले दो मिनट में उन्होंने अपना सामान समेटकर थैले में डाला और सतरंगे स्कूटर पर बैठकर खिसकते बने। जगमोहन होंठ सिकोड़कर उन्हें जाता देखता रहा।

देवराज चौहान जूस वाले के पास पहुंचा।

"जूस बनाऊं?" बंटी ने दांत फाडकर पूछा।

"नहीं, कितने गिलास हुए तुम्हारे?"

"पांच। पचहत्तर रुपये हो गए।"

देवराज चौहान ने उसे सौ का नोट थमाया और कार की तरफ बढ़ गया।

बंटी ने नोट थामे, किन्नू के ढेर के पीछे बैठी कमला को देखा।

"दालों के पैसे भूल गया लगता है। तुम भी चुप रहना।" कमला ने कहा।

"उसे याद न दिलाऊं?" बंटी दबे स्वर में बोला।

"खबरदार।" कमला ने आँखें निकाली – "ज्यादा शरीफ बनोगे तो अचार से ही रोटी खाते-खाते मर जाओगे।"

तभी उनके कानों में कार स्टार्ट होने की आवाज़ पड़ी।

दोनों की गर्दनें घूमीं।

जगमोहन को ड्राइविंग सीट पर मौजूद पाया और देवराज चौहान को बगल वाली सीट पर।

देखते ही देखते कार आगे बढ़ गयी।

□□

वो कच्ची सी कॉलोनी थी। कॉलोनी की हालत देखकर लगता था कि कम कमाई वाले गरीब लोगों ने वहाँ बसेरा बना रखा है। किसी का प्लाट पचास गज का था तो कोई सौ गज का तो कोई दो सौ गज का भी था। दो-चार पक्के मकानों को छोड़कर अन्यों ने काम चलाऊ घर बना रखा था।

किसी का एक कमरा था और बाकी प्लाट खाली था। किसी ने कमरे की छत की जगह फूस-फास डालकर काम चला रखा था। गलियाँ धूल भरी मिट्टी की थी।

शाम के साढ़े चार बज रहे थे, जब सूरमा ऐसे मकान पर पहुंचा, जहां एक कमरा बना हुआ था। बाकी चार दीवारी थी – परन्तु ईंटो पर सीमेंट नहीं कर रखा था। चार दीवारी के भीतर एक तरफ दस-पंद्रह टायर कूड़े के ढेर की तरह पड़े हुए थे।

सूरमा ने उस कमरे में प्रवेश क्या। दरवाजा खुला ही हुआ था और परदे की जगह पुरानी-सी चादर लटक रही थी, जिसमें कई जगह छेद हुए पड़े थे।

भीतर प्रवेश करते ही सूरमा ठिठका।

सामने ही चारपाई पर कस्तूरी गहरी नींद में डूबी हुई थी। पास ही छोटा बच्चा सो रहा था। वक्ष अस्त-व्यस्त होकर जरुरत से ज्यादा बाहर झलक रहे थे।

सूरमा नींद में डूबी कस्तूरी को देखता रह गया।

छब्बीस बरस की थी वो। खूबसूरत चेहरा। छरहरा बदन। कद ठीक-ठाक। आँखों में भरी मासूमियत। सूरमा जानता था कि उसे इससे अच्छी पत्नी नहीं मिल सकती थी। मुकद्दर ही था कि कस्तूरी मिली और ब्याह हो गया, वरना शायद वो कभी ब्याह भी न कर पाता।

सूरमा ने गहरी सांस ली।

तभी एकाएक कस्तूरी की आँख खुली।

"तू...कब आया तू?" कस्तूरी कह उठी।

"अभी।" सूरमा कहते हुए आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठा – "दरवाजा बंद कर लिया कर।"

"दम घुटेगा। सांस नहीं आएगी। तूने कौन-सा पंखा लगा रखा है यहाँ।" कस्तूरी तीखे स्वर में बोली।

सूरमा ने मुंह बनाकर उसकी छातियों पर नज़र मारी।

"इधर क्या देखता है, तेरी औरत हूँ – बाहरी तो नहीं जो ऐसे...।"

"तू हर समय फाड़ खाने को क्यों पड़ती है?" सूरमा झल्लाया।

"दो ही बातें होती हैं।" कस्तूरी वक्षों को कमीज के भीतर डालकर उन्हें ठीक करती बोली – "या तो तू औरत को पेट भर के खिला, वरना औरत तेरे को खा जाएगी। क्या ध्यान रखता है तू मेरा। गर्मी में जान निकल रही है और

पंखा नहीं है। दो सूटों में एक सूट फट गया। बनियान तक नहीं है पहनने को। क्या करता है तू मेरा। मैं तो तेरे को सब कुछ देती हूँ। रोटी-पानी भी बनाती हूँ। तू क्या करता है?"

"जितना हो पाता है, वो तो करता ही हूँ।"

"खाक करता है तू।" कस्तूरी का खूबसूरत चेहरा तमतमा उठा – "बच्चे की जरूरतें तो पूरी नहीं कर पाता।"

"तूने पैदा कर दिया।" सूरमा ने गहरी सांस ली – "मैंने....!"

"अपने आप पैदा नहीं हो गया ये।" कस्तूरी तीखे स्वर में कह उठी – "तू मेरे से ब्याह किया। मजे लिए, तो अब मजे को भुगत। दुनिया में कुछ भी मुफ्त में नहीं मिलता तो तू मुफ्त में मजे कैसे ले लेगा। भुगतेगा नहीं।"

"भुगत तो रहा हूँ।"

"तेरी किस्मत अच्छी थी, जो मैं अपने आशिक के साथ घर से भाग निकली और बाद में तेरे पल्ले पड़ गयी। तूने मेरे से ब्याह कर लिया। वरना तेरी शादी तो कभी भी न होती। कौन करेगा पंचर वाले से शादी।"

सूरमा ने आहत भाव से उसे देखा।

"तू ये बात मुझे पच्चीसवीं बार कह रही है।" सूरमा की आवाज़ में शिकायत के भाव थे।

तो गलत क्या कह रही हूँ।"

"मत भूल, जब तुम अपने आशिक के साथ घर से भाग आई थी, तो वो तेरे पैसे-गहने लेकर भाग गया था। तब तू जीरकपुर के चौराहे पर खड़ी रो रही थी और लोग तेरे को पटाने के चक्कर में थे। हर कोई हमदर्दी दिखा रहा था,

जबकि किसी को तेरे से हमदर्दी नहीं थी। तब मैंने ही तेरे को आने वाली मुसीबतों से बचाया था। नहीं तो जाने तू कहाँ होती।" सूरमा ने जैसे याद दिलाया।

"वो वक़्त तो तेरा ख़ुशी का था।" कस्तूरी ने उसे घूरा।

"क्यों?"

"मुफ्त की बीवी मिल गयी तुझे। जाने क्या सोचकर मैंने तेरे से ब्याह कर लिया।"

"तूने इसलिए मेरे से ब्याह किया कि तब तू घर नहीं जा सकती थी और तेरे को तब किसी का सहारा चाहिए था।"

"हाँ, यही बात थी।"

"अब तो तूने मेरा बच्चा भी जन दिया। अब तो शान्ति से रह ले।"

"देख सूरमा।" कस्तूरी ने स्पष्ट कहा – "मुझे पैसे चाहिए।"

सूरमा ने उसी पल जेब से पांच सौ का नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"क्या करूँ इसका?"

"तू पैसों के लिए कह रही थी।"

"ये एक नोट को तू पैसे कहता है।" कस्तूरी ने कड़वे स्वर में कहा – "मुझे ढेर सारे नोट चाहिए। नोटों की गड्डियां चाहिए।"

"तेरी ये हसरत मेरे साथ रहते तो पूरी न हो सकेगी।"

"क्यों नहीं पूरी हो सकती।"

"कहाँ से लाऊं तेरे लिए नोटों की गड्डियां?" सूरमा ने थके अंदाज में गहरी सांस ली।

“चोरी कर। डकैती डाल।”

“पागल हो गयी है तू?” सूरमा उखड़ा – “कैसा काम तू मुझे करने को कह रही है?”

“मत कर।” कस्तूरी का चेहरा कठोर हो गया – “जहां से भी ला, मेरे को नोटों की गड्डियां लाकर दे। मैं ऐसी ज़िन्दगी नहीं जी सकती, जहां टूटे-फूटे कमरे में पंखा भी न हो और...।”

“पंखा लगवा देता हूँ।”

“भाड़ में गया पंखा।” कस्तूरी का स्वर भी सख्त था – “नोटों की गड्डियों की बात कर।”

“तूने आज तक नहीं बताया कि तू कहाँ की रहने वाली है। तेरे माँ-बाप किधर हैं।” सूरमा ने पूछा।

“क्या करना है तूने जानकर।”

“उनसे नोटों की गड्डियां ले आते...।”

“क्या बतायेगा मेरे घर वालों को कि मैं पंचर लगाता हूँ और उनकी भगोड़ी बेटी से मैंने शादी कर रखी है। घर में खाने-पीने को दाने नहीं है और मैं दाने मांगने आया हूँ।”

सूरमा के चेहरे पर उखड़ापन आ गया।

उनके बीच कुछ पल ख़ामोशी रही।

“अगर...।” कुछ देर बाद कस्तूरी शांत स्वर में बोली – “मुझे वहाँ से मिलने की आशा होती, तो कब का ले आती।”

“है नहीं उनके पास?”

“है, लेकिन मुझे देखते ही मेरी जान ले लेंगे, क्योंकि मैं घर से भाग निकली थी।”

सूरमा उसे देखता रहा। फिर बोला – "अफ़सोस तो होगा ही घर से भागने का?"

"नहीं, अब नहीं है – पहले था। बच्चा पैदा करके बड़ी हो गयी हूँ। सोचने का ढंग बदल गया है। इतना तो समझ में आ ही गया है कि माँ-बाप सारी उम्र साथ नहीं देते।" कस्तूरी ने लम्बी सांस ली – "सोचती हूँ, अच्छे घर में पैसे वाले के साथ ब्याह हुआ होता और उसका काम-धंधा बरबाद हो गया होता तो क्या होता। यही होता, जो अब हो रहा है। पैसे-पैसे को मोहताज होती। वक़्त पर किसी का जोर नहीं चलता सूरमा।"

"मैं पैसा कमाना चाहता हूँ। कौन नहीं कमाना चाहता लेकिन ये सब मेरे बस का नहीं है।" सूरमा उठ खड़ा हुआ।

"मुझे देख।"

सूरमा ने कस्तूरी को देखा।

"मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि इस कॉलोनी की सबसे खूबसूरत औरत हूँ मैं।" कस्तूरी बोली – "इस गली से जिन लोगों का रास्ता नहीं हैं, वो भी यहाँ से निकलते हैं – मेरे को देखने के वास्ते।"

"क्या कहना चाहती है तू?"

"अगर तू चाहता है कि तेरी औरत बनी रहूँ तो कुछ कर। मेरे को नोटों की गड्डियां लाकर दे।"

सूरमा के चेहरे पर गुस्से के भाव आ ठहरे।

"नहीं तो क्या करेगी तू – भाग जाएगी किसी के साथ। ये तो तेरी पुरानी आदत है, भाग जा।" सूरमा उठ खड़ा हुआ।

कस्तूरी मुस्कुराई।

"हरामज़ादी मुस्कुराती है।"

"इस हरामज़ादी को नोट लाकर दे, नहीं तो मै तेरे पास टिकने वाली नहीं।"

"कुँए में मर।" सूरमा खा जाने वाले स्वर में बोला और पांव पटकते हुए कमरे से बाहर निकलता चला गया।

□□

"क्या हुआ?"

सूरमा जब वापस खोखे पर पहुंचा तो गोलू उसका तमतमाया चेहरा देखकर पूछ बैठा।

गुस्से से भरा सूरमा कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"हरामज़ादी कहती है कि उसे नोटों की गड्डियां चाहिए।"

"क्या – भाभी कहती है?" गोलू चौंका – "नोटों की गड्डियां!"

"हाँ!"

"तूने कहा नहीं कि वो तो मेरे बाप ने कभी नहीं देखी, तो मैं कहाँ देखूंगा।"

"धमकी देती है।"

"जान से मारने की?"

"नहीं, किसी के साथ भाग जाने की। कहती है, उसके घर के चक्कर लगाने वाले बहुत हैं।"

"ऐसा बोलती है।" गोलू ने मुंह फाड़ा – "मुझे तो गड़बड़ नज़र आ रही है।"

"क्या?"

"औरत तभी मुंह फाड़ती है, जब उसकी पीठ पर किसी का हाथ होता है।"

"तेरा मतलब कि आशिक उसने सेट कर रखा है।"

"तभी तो ये सब कहा।"

"फिर तो ये सब कहने की जरूरत ही नहीं थी। आशिक है तो भाग जाती उसके साथ।"

दोनों खामोश रहे।

एक-दूसरे को देखते रहे।

गोलू बोला – "सारी गलती तेरी ही है।"

"मेरी?"

"तेरे को उससे शादी नहीं करनी चाहिए थी।"

सूरमा ने दांत भींच लिए।

"तूने सोचा तब कि खूबसूरत है, अकेली है, अच्छे घर की है। बातों में लेकर फंसा लेता हूँ शादी हो जायेगी – दुबारा तो दूसरी हाथ नहीं लगनी।" गोलू ने सिर हिलाया।

"तो मेरा सोचना बुरा क्या था?"

"यही बुरा था कि तूने ये नहीं सोचा कि अच्छे घर की है, खूबसूरत है तो उसके खर्चे भी तो वैसे ही होंगे।"

"हाँ, तब ये नहीं सोचा।"

"तो अब भुगत।"

"मेरा तो दिमाग खराब हो गया है, इस सारे चक्कर में।"

"तेरा किया सामने आ रहा है। कभी अपने को उसकी जगह पर रखकर सोच।"

"क्या सोचूँ?"

"यही कि वो कहाँ आ फंसी है। पंचर लगाने वाले के पास, जो कभी दिन में बीस कमाता है, तो कभी सौ। उसमें से भी गोलू अपने खर्चे के लिए ले जाता है। इतने में तो दो बंदों की रोटी न चले और अब तो बच्चा भी पलना है। कमाई न होते हुए भी मूंछे फड़काता रहता है। वो तो ठीक मांगती है नोटों की गड्डियां।"

"तो कहाँ से लाऊं?"

"कहीं से भी ला।"

"यही तो कहती है कस्तूरी कि चोरी करूँ, डाका डालूं, लेकिन उसे नोट लाकर दूं।"

"तो गलत क्या कहती है?"

"गोलू।" सूरमा परेशां सा बोला – "चल भाग चलते हैं।"

"कहाँ?" गोलू ने माथे पर बल डालकर उसे देखा।

"दिल्ली।"

"दिमाग तो खराब नहीं हो गया तेरा। दिल्ली में क्या होगा?"

"पंचर का ही काम कर लेंगे। वहां बहुत गड्डियां हैं। खूब काम चलेगा।"

"तो तू क्या समझता है कि दिल्ली में कोई पंचर वाला नहीं है। जहां गुड़ होता है, मक्खियाँ पहले ही आ जाती हैं। दिल्ली में इतने पंचर वाले होंगे कि वो भी फुर्सत में बैठे रहते होंगे। तू तो सोचता है, जैसे दिल्ली में लोग पंचर पहिए उठा-उठा के पंचर वाले को ढूंढते फिर रहे होंगे। साली, अक्ल ही मारी गयी है तेरी।"

"सच में – मेरा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा।"

सूरमा सच में परेशान था।

गोलू सोच भरी नज़रों से सूरमा को देखने लगा।

शाम हो रही थी। पास ही सड़क पर से कारों और बसों का काफिला आ-जा रहा था। इंजनों के शोर की आवाजें, हॉर्न पर हॉर्न, कान और दिमाग फटता-सा लग रहा था।

परन्तु सूरमा और गोलू पर इस शोर का कोई असर नहीं हो रहा था। उनके लिए तो ये रोजमर्रा की बात थी। अब तो जैसे शोर पड़ने पर ही तनाव से मुक्ति मिलती थी।

"तेरे को परेशान होने की जरूरत नहीं।"

"तो?"

"कस्तूरी भाभी दो-चार दिन में खुद ही भाग जाएगी।"

"तू क्यों भाग जाने की सोचता है।" गोलू बोला – "अगर तू भाग गया, तो जो एक कमरे का मकान बना रखा है, वो भी हाथ से जाएगा। आज साठ-सत्तर हज़ार तो कीमत है उस मकान की। पांच साल पहले तीन हज़ार में तूने वो प्लाट खरीदा था। लोगों की ईंटों को चुरा-चुरा के तूने कमरा भी डाल दिया। दोबारा नहीं बना पायेगा मकान।"

"तू ठीक कहता है, मगर कस्तूरी न भागी तो?"

"भाग जायेगी। जान छूटेगी तेरी – फिर मैं भी पहले की तरह उसी कमरे में तेरे साथ आकर रहने लगूंगा। जब से तेरी शादी हुई है, तब से मैं टेम्पो स्टैंड के तख़्त पर ही रात बिताता हूँ।" गोलू ने मुंह बनाकर कहा – "कस्तूरी ने तो आकर मेरा ठिकाना ही छीन लिया।"

दोनों ने फिर चुप्पी छा गयी।

सूरमा सोच भरे स्वर में बोला।

"गोलू, मुझे लगता है कि मेरे पीछे से घर पर कस्तूरी का कोई आशिक आता होगा।"

"ये तूने कैसे सोचा?" गोलू उसे देखने लगा।

"तभी तो साली ने मुंह फाड़ा कि भाग जायेगी।"

"पता चला कि उसके माँ-बाप कहाँ रहते हैं?"

"साली कुछ बताती नहीं।" सूरमा ने उखड़े स्वर में कहा।

"अमीर घर की लगती है।"

"वो तो है ही।" सूरमा ने लम्बी सांस ली – "ख़ुशी-ख़ुशी मैं कस्तूरी को पांच सौ का नोट देने चला गया। नोट देखकर कहने लगी कि उसे नोटों की गड्डियां चाहिए। कुतिया, हरामज़ादीकहीं की!"

गोलू हंस पड़ा।

"क्यों हंसा साले?" सूरमा ने खा जाने वाले स्वर में पूछा।

"मैंने शादी नहीं की, इसलिए।"

"मेरी फंसी पे हँसता है।"

"नहीं, बल्कि अपनी बची पे हंस रहा हूँ। मैंने भी शादी कर ली होती तो मैं भी रो रहा होता।"

"तेरे को लड़की देगा कौन?"

"चमनलाल कह रहा था कि मेरे लिए अपनी बेटी के बारे में सोच सकता है।"

"वो साला, जो उधर पेड़ के नीचे अंडे बेचता है।"

"हाँ, वो ही।"

"उसकी लड़की का तो दो बार ब्याह हो चुका है। दोनों बार लड़-झगड़कर वापस आ गयी हैं।"

"मालुम है।" गोलू दांत फाड़कर हंसा – "इसलिए तो कभी-कभी सोचता हूँ कि चमनलाल की लड़की से ब्याह कर लूं।"

"तू पागल तो नहीं हैं।"

"मैं अक्लमंद हूँ – जानता हैं क्यों?"

"क्यों?"

"मेरे से ब्याह करके दो-चार महीने में लड़-झगड़कर वो अपने बाप के पास वापस चली जायेगी। ऐसे में दो-चार महीने तो बढ़िया कटेंगे। अब तो वैसे भी सर्दियाँ आने वाली हैं।"

"तू बोत घटिया बंदा है गोलू।" सूरमा ने मुंह बिगाड़कर कहा।

"क्यों?"

"मैं बीवी से पीछा छुड़ाने की सोच रहा हूँ और तू शादी करने की सोच रहा है।"

"बेटे, तू शादी के लड्डू खा चुका है और मैनें नहीं खाए।"

"देख रहा है न अब कि मेरी क्या हालत हो रही है।"

"मैं देखना नहीं चाहता, बल्कि खुद महसूस करना चाहता हूँ। खुद तो लड्डू खा लिए, जब मेरे खाने की बारी आई तो कहता है – मत खा, लड्डू कड़वे हैं। मैं तो खाने के बाद बताऊंगा कि कड़वे हैं या मीठे।"

“खा ले, खा ले।” सूरमा शांत स्वर में बोला – “लेकिन याद रख, शादी के लड्डू कभी भी मीठे नहीं होते।”

“कितना भी कह ले, मैं तेरे बरगलाने में नहीं आऊंगा।”

□□

दो दिन बाद

देवराज चौहान और जगमोहन होटल महक पैलेस में ठहरे थे, जो कि जीरकपुर से पंचकुला की तरफ मुड़ने पर एक किलोमीटर आगे सड़क के किनारे बना था। वो तीन मंजिला था। हर मंजिल पर दस-दस कमरे थे। उन्हें पहली मंजिल पर बारह नम्बर कमरा मिला था।

बीते दो दिनों में जगमोहन ने मस्ती मारी।

जबकि देवराज चौहान व्यस्त रहा। सुबह नाश्ते के पश्चात जाता और शाम होने पर ही वापस आता। जगमोहन जानता था कि देवराज चौहान बैंक के काम पर ही लगा है।

दूसरी शाम जब देवराज चौहान लौटा तो जगमोहन ए.सी. चलाये बेड पर लेटा था।

“पता किया?” जगमोहन सीधा होकर बैठता कह उठा – “काम हो पाएगा कि नहीं?”

“हो जाएगा।” देवराज चौहान कुर्सी पर आ बैठा।

जगमोहन का चेहरा चमक उठा।

“कितना माल हाथ आएगा?”

“दस-बारह करोड़। अगर बैंक के स्ट्रांग रूम में भी हाथ मारा जाए, तो वो पैसा अलग।”

"सब काम करना है तो स्ट्रांग रूम में हाथ मारने में क्या समस्या है?" जगमोहन बोला।

"स्ट्रांग रुम को खोलने में समस्या है।"

"खोलने में?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

"हाँ!"

"और जो दस-बारह करोड़ पर हाथ डाला जाएगा, वो क्या स्ट्रांग रुम में नहीं होगा?"

देवराज चौहान कुछ पल खामोश रहा, फिर कह उठा।

"मै तुम्हें सिलसिलेवार सारी बाद बता देता हूँ।"

जगमोहन ने सिर हिला दिया।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई। कश लिया, फिर कुछ देर चुप रहकर बोला।

"बैंक में एक से दस तारीख तक दो या तीन बार में दस से बारह करोड़ तक की रकम आती है, जिसे कि जीरकपुर और आस-पास के उद्योगपति ले जाकर अपनी फैक्ट्रियों के कर्मचारियों को तनख्वाह बाँटते हैं। इनमें गोल्डन शूज की कंपनी प्रमुख है। हर महीने सात करोड़ अपने स्टाफ को चुकाती है।"

"इतने ज्यादा?"

"जीरकपुर में गोल्डन शूज कंपनी का हेडक्वार्टर है। यूँ तो ऊपर के स्टाफ को चेक द्वारा ही तनख्वाह दी जाती है, परन्तु गोल्डन शूज कंपनी के अस्सी प्रतिशत कर्मचारी अनपढ़ हैं और बैंक से परहेज करते हैं। उन्हें तनख्वाह नकद ही दी जाती है। ये सारा पैसा जीरकपुर में ही नहीं बांटा जाता।"

"तो?"

"गोल्डन शूज कंपनी की ब्रांचें आस-पास हर जगह फैली हुई है, जैसे कि चंडीगढ़ में ही तीन जगह फैक्ट्री है। उसके पास रोपड़ में दो ब्रांचें हैं। एक लुधियाना में है। इस तरफ पंचकुला इंडस्ट्रियल एरिया में गोल्डन शूज की दो फैक्ट्रियां हैं।"

"ओह!"

"उससे आगे पिंजौर नालागढ़ रोड पर बददी इंडस्ट्रियल एरिया में तीन फैक्ट्री है। ऐसे में हर महीने इन सब जगहों पर लेबर को तनख्वाह के लिए पैसा जीरकपुर यानी कि गोल्डन शूज कंपनी के हेडक्वार्टर की ही तरफ से भेजा जाता है और ये पैसा गोल्डन शूज वाले जीरकपुर की भारत सरकारी बैंक की शाखा से निकलवाते हैं।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"इसी प्रकार यहाँ और भी कई फैक्ट्रियां हैं जो हर महीने तनख्वाह के लिए बैंक से मोटी-मोटी रकमें निकलवाते हैं। ये पैसा बैंक के हेडक्वार्टर से करीब दो बार में बैंक में लाया जाता है। अक्सर तो ये होता है कि दोपहर बाद बैंक में पैसा आया और अगली सुबह बैंक, लेनदारों के हवाले कर देता है।"

"ये तो गड़बड़ है।" जगमोहन बोला।

"क्या?"

"तुमने बताया कि पैसा दो बार में बैंक तक लाया जाता है और अगली सुबह बैंक उस पैसे को पार्टियों के हवाले कर देता है। यानी कि दस-बारह करोड़ एक ही बार में बैंक

में नहीं आता – टूटकर आता है। ऐसे में अगर हम रात में बैंक पर हाथ डालते है, तो हमें पांच-सात करोड़ से ज्यादा हाथ नहीं लगेगा।"

"हाँ, ये समस्या है। इस समस्या को ठीक क्या जा सकता है। मैंने इस पर भी सोचा है।"

"कैसे ठीक करोगे?"

"है एक प्लान। फिर बताऊंगा। अब की बात सुनो।"

"कहो।"

"ये सोचकर चलो कि एक ऐसी रात आती है कि वो सारा पैसा बैंक में पड़ा है।"

जगमोहन की आँखें सिकुड़ी। वो समझ गया कि देवराज चौहान सब कुछ तय कर चुका है, सारी योजना प्लान कर चुका है। अब सिर्फ अंजाम देना ही बाकी है।

"उस रात हम बैंक में हाथ डालते हैं और सारा पैसा हासिल कर लेते हैं।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन ने पहलु बदला।

"लेकिन समस्या ये आती है कि वो सारा पैसा नकद है। अगर हम सारा पैसा ले भागने की चेष्टा करते हैं तो इसके लिए हमें किसी वैन का इंतजाम करना होगा और वैन आने का मतलब है कि उसी वक़्त ये बात खुल जानी है कि बैंक में डकैती हो गयी है।"

"ये कैसे हो सकता है!"

"रात को बाहरी वैन आएगी तो सबको पता चलेगा। यूँ तो ये सुनसान हाईवे है परन्तु ऐसी जगह पर बैंक होने की वजह से बैंक पर रात को भी पहरा रहता है। बैंक के बाहरी

गेट पर सिर्फ एक गनमैन पहरे पर रहता है। उससे पचास-सौ कदम हटकर बैंक कॉलोनी के गेट पर एक वॉचमैन मौजूद रहता है। वो अकेला नहीं होता। बैंक कॉलोनी के भीतर रात भर चार वॉचमैन डंडा लेकर घूमते रहते हैं – यानी किसी भी तरह की गड़बड़ होने पर वे सब मिनट भर में इकट्ठा हो सकते हैं।"

जगमोहन देवराज चौहान को देखे जा रहा था।

देवराज चौहान ने कश लिया।

"क्या कहना चाहते हो कि रात को अगर हमने बैंक से पैसे निकाल लिए तो उनका क्या करेंगे – क्योंकि तुम्हारी सोच के हिसाब से ढेर सारे नगद रुपये को...!" कहते-कहते जगमोहन ठिठका फिर बोला – "एक मिनट, अगर हम डकैती के समय रातों-रात वैन में पैसा लादकर वहाँ से निकल भागते हैं तो क्या फर्क पड़ता है। हमारे सामने हाईवे हैं, हम कहीं भी भाग सकते हैं। घंटे भर में कहीं के कहीं पहुँच जायेंगे।"

"इस बार ये आसान नहीं होगा।"

"क्यों?"

"रात के आठ बजे कम से कम छः पुलिस बैरियर लग जाते हैं।"

"छः पुलिस बैरियर!" जगमोहन की आँखें सिकुड़ी।

"हाँ! ये छोटी जगह है, बड़ा शहर नहीं कि हम काम करके शहर की गलियों में गुम हो जायेंगे और किसी को पता भी नहीं चल पाएगा।" देवराज चौहान ने गंभीर स्वर में कहा – "जबकि काम करके हमें इस तरह निकल जाना

है कि किसी को पता ही न चले कि काम कब हुआ और करने वाले कहाँ गए?"

जगमोहन देवराज चौहान को देखता कह उठा।

"पुलिस बैरियरों की पोजीशन क्या है?"

"पहला बैरियर तो बैंक के सामने सड़क पर जीरकपुर की तरफ ढाई सौ कदम दूर है। उस बैरियर पर मौजूद पुलिस वाले रात को भी आने-जाने वाली गाड़ियों को रोकते, उन्हें चेक करते हैं और जरूरत पड़ने पर उनका कार नम्बर और उनका नाम-पता भी नोट करते हैं। ऐसे में रात को बैंक से पैसा ले चलना आसान नहीं।"

"हम चंडीगढ़ की तरफ भी निकल सकते हैं।" जगमोहन बोला।

"चंडीगढ़ पुलिस बहुत तेज आँखें रखती हैं। रात के वक़्त हम करोड़ों रुपये नकद के साथ चंडीगढ़ में प्रवेश करेंगे, तो कहीं भी रोके जा सकते हैं। खामख्वाह का खतरा मोल लेना अच्छा नहीं होगा।"

"तो?"

"पहले पुलिस बैरियरों की पोजीशन सुन लो। बैंक के पास पुलिस बैरियर के अलावा जीरकपुर की लाल बत्ती से पहले भी एक बैरियर है। उसके आगे लाल बत्ती पार करके अम्बाले की तरफ निकलो तो उस तरफ दो बैरियर और वहां मौजूद पुलिस वाले आने-जाने वाले गाड़ियों को यदा-कदा चेकिंग के नाम पर रोकते रहते हैं और उस रात उनके द्वारा रोकी गयी गाड़ी हमारी हुए तो क्या होगा? हम फंस जायेंगे। मेरा उसूल है कि क़ानून से सुरक्षित रहने का

पहला कदम तो ये है कि कभी भी पुलिस वाले पर हाथ न उठाओ। उससे झगड़ा न करो। पुलिस की पकड़ से आज़ाद होने के लिए पुलिस पर हमला न करो।"

जगमोहन पहलू बदलते कह उठा – "हम पंचकुला की तरफ निकल सकते....!"

"नहीं।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया – "वहाँ दो पुलिस बैरियर हैं। एक तो हमारे इसी होटल से कुछ पहले लगता है और दूसरा रेल लाइनों के पार है।"

एकाएक जगमोहन के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।

"क्या हुआ?"

"मानी तुम्हारी बात – अब असल बात पर आओ।"

"असल बात?" देवराज चौहान भी मुस्कुराया।

"तुम्हारी बातों से ये तो स्पष्ट है कि तुम तय कर चुके हो कि काम कैसे करना है। वो सब कुछ बताओ।"

देवराज चौहान ने कश लिया। चुप रहा।

"कॉफ़ी मंगवाऊं?" जगमोहन ने पूछा।

देवराज चौहान के सिर हिलाने पर जगमोहन ने इंटरकॉम पर आर्डर दिया।

"सबसे पहले तो हमें उसी बैंक कॉलोनी में एक फ्लैट किराए पर लेना होगा।"

"बैंक कॉलोनी में?" जगमोहन चौंका।

"हाँ, हम वहीं रहेंगे। वहीं रहकर काम को अंजाम देंगे और बैंक से वो सारा करोड़ों रुपया निकालकर कहीं दूर न ले जाकर उसी फ्लैट में रखेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"ये कैसे हो सकता है!" जगमोहन के होठों से निकला।

"ये ही होगा।" देवराज चौहान ने गंभीर स्वर में कहा – "परन्तु उस बैंक कॉलोनी में हमें आसानी से फ्लैट किराए पर नहीं मिल सकता। वहां पर फ्लैट किराए पर लेने के लिए किसी की पहचान जरुरी है कि कोई हमें वहाँ फ्लैट किराए पर दिलाए और इसके लिए ये भी जरुरी है कि हम परिवार वाले दिखें।"

"परिवार वाले?" जगमोहन अचकचा उठा।

"हाँ, पूरी गृहस्थी होनी चाहिए। पत्नी भी, बच्चे भी। एक-आध बुजुर्ग भी साथ में।"

"ये नहीं हो पाएगा।"

"हो जाएगा।"

"क... कैसे? कहाँ से लाओगे पत्नी-बच्चे-बुजुर्ग?"

"कोई तो इन्तजाम करना होगा।"

जगमोहन कुछ न कह सका।

देवराज चौहान ने कश लिया और सिगरेट ऐश-ट्रे में डाल दी।

जगमोहन परेशान सा देवराज चौहान को देखे जा रहा था।

तभी वेटर कॉफ़ी के दो प्याले रख गया

दोनों ने कॉफ़ी का एक-एक प्याला ले लिया। देवराज चौहान ने घूँट भरा।

"तुम बहुत भारी खतरे वाली बात कर रहे हो।" जगमोहन बोला।

"क्या?"

"मान लो हमने इस तरह के परिवार का इंतजाम कर लिया परन्तु जो लोग हमारे साथ हमारे रिश्तेदार बनकर रहेंगे, वो तो समझ ही जायेंगे कि हम बैंक लूटने के फेरे में हैं।" जगमोहन ने बेचैनी से कहा।

"हाँ, उनका मुंह हम नोटों से बंद करेंगे।"

"वो मान जायेंगे।"

"नोटों को देखकर बड़े-बड़े चुप हो जाते हैं।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

जगमोहन ने कॉफ़ी का घूँट भरा। वो गंभीर नज़र आ रहा था।

"और उस समस्या का हल कैसे निकलेगा कि बैंक में दस-पंद्रह करोड़ की वो रकम एक ही दिन पहुंचे। बंट=बंट के अलग अलग दिनों में न पहुंचे।"

"इसके लिए हमें थोड़ा- सा टेढ़ा काम करना पड़ेगा।" देवराज चौहान ने कॉफ़ि का घूँट भरा।

"कैसा टेढ़ा काम?"

"एक अपहरण करना होगा।"

"अपहरण?"

"बैंक मैनेजर के बच्चे का।" देवराज चौहान का स्वर शांत था – "तभी तो बैंक में पैसा एक ही दिन आएगा और वो दिन हमारी मर्जी का होगा। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं।"

"बैंक मैनेजर मानेगा?"

"मानेगा, उसकी एक ही औलाद है। उसे सलामत रखने के लिए वो हमारी बात अवश्य मानेगा। वैसे भी हमें एक

आदमी ऐसा चाहिए, जो बैंक के भीतर का हो, ताकि भीतर का काम और जानकारी उससे ले सकें और ऐसा आदमी बैंक मैनेजर से बढ़िया कौन होगा।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"मुझे शक है कि बैंक मैनेजर अपने ही बैंक में डकैती डालने में हमारी सहायता करेगा।"

"औलाद की खातिर करेगा।"

"कौन है बैंक मैनेजर?"

"गोपाल चाँद डोडा...।" और इसके साथ ही देवराज चौहान जगमोहन को डकैती की सारी योजना बताने लगा।

करीब बीस मिनट बाद देवराज चौहान खामोश हुआ।

जगमोहन ने कुछ ज्यादा ही लम्बी सांस ली।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पहले तो मुझे कितना आसान लग रहा था बैंक पर हाथ डालना।"

"डकैती छोटी हो या बड़ी – मेहनत बराबर ही लगती है। छोटे-बड़े हर पहलू पर गैर करना पड़ता है। सिर्फ एक जगह चूक जाने से पूरी की पूरी प्लानिंग बेकार हो जाती है और ख़तरा बढ़ जाता है।"

"क्या ये जरूरी है कि हम ये दर्शाएँ कि बैंक लूटने वाले चंडीगढ़ की तरफ भाग गए हैं।"

"बहुत जरूरी है। इससे पुलिस का सारा ध्यान चंडीगढ़ की तरफ लग जाएगा। चंडीगढ़ की सड़कों पर रेड अलर्ट लग जाएगा। गाड़ियों की तलाशी शुरू हो जाएगी। सप्ताह तक ये ही सब कुछ चलता रहेगा और हम आराम

से नोटों के साथ बैंक कॉलोनी में ही टिके रहेंगे। हर मामले में सप्ताह ही लगता है जोर-शोर से भागने के लिए, उसके बाद पुलिस अपने बचाव के रास्ते सोचने लगती है कि ऊपर वालों को या फिर अखबार वालों को क्या सफाई दी जाए। यानी कि सप्ताह बाद हम नोटों के साथ निकलने की आसान प्लानिंग कर सकते हैं। तब पुलिस भी इतनी सतर्क नहीं रहेगी।"

जगमोहन ने कॉफ़ी का घूँट भरा। चेहरे पर सोचें रही।

"कुछ बात है तो बताओ?" पूछा देवराज चौहान ने।

"सूरमा पर भरोसा है तुम्हें कि वो ईमानदारी से हमारा साथ देगा।" जगमोहन बोला।

"हाँ, वो शार्टकट रास्ते से पैसा कमाना चाहता है।"

"क्या पता, वो हमारे साथ काम करने की काबिलियत न रखता हो।"

"मेरे कहे काम उसने कर दिए तो समझूंगा कि वो काबिल है। नहीं तो दूसरे को तलाश करूँगा।" देवराज चौहान ने गंभीर स्वर में कहा – "इस अनजान शहर में हमें ऐसे लोकल बंदे की जरुरत है, जो हमारे काम कर सके। हम सोची-समझी योजना पर काम कर रहे हैं। ये राह चलती डकैती नहीं है कि हथियार लेकर बैंक में घुसे और जो हाथ लगा ले भागे।

हमने बैंक के भीतर रखे पैसे उठाने हैं, वो भी इस तरह कि बैंक खुलने से पहले किसी को भनक न लग सके।"

"मुझे बताओ, मेरे लिए करने को क्या है?" जगमोहन ने पूछा।

"बता दूंगा।"

"सूरमा से कब बात करोगे?" जगमोहन ने पूछा।

"शायद आज ही। कुछ देर बाद सूरमा के पास जाऊँगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने कॉफ़ी का प्याला टेबल पर रख दिया।

□□

गोलू पास ही एक दुकान के बाहर खड़ी कार का पंचर लगाकर लौटा और बीस रुपये सूरमा को पकड़ा दिए, जो टूटी-सी कुर्सी पर धंसा बैठा था।

गोलू भी सामने पड़ी कुर्सी पर जा बैठा। औजार खोखे में रख दिए थे।

शाम हो रही थी।

"आज कितना कमाया?"

"अस्सी रुपये।" सूरमा बेमन से बोला।

"कुछ भी नहीं हुआ ये। इससे ज्यादा तो फेरी लगाकर सब्जी बेचने वाला कमा लेता है।"

"तो तू सब्जी की रेहड़ी लगा ले।" सूरमा जल-भूनकर कह उठा।

"सच बात तो ये है कि यहाँ पर हम दो का काम नहीं है सूरमा।" गोलू ने गंभीर स्वर में कहा – "तू मेरा बचपन का यार है, इसलिए तेरे साथ इस काम में लग गया। यहाँ से तो एक घर की ही कठिनता से रोटी निकल सकती है।"

"क्या कहना चाहता है तू?"

"ये काम तू संभाल, मैं कुछ और काम देखता हूँ।"

सूरमा गोलू को घूरने लगा।

"क्या देखता है?"

गोलू चुप रहा।

"इतना बड़ा त्याग तू किस ख़ुशी में दे रहा है?" सूरमा ने चुभते स्वर में पूछा।

"देख सूरमा।" गोलू का स्वर पहले की तरह गंभीर था – "तू अब परिवार वाला हो गया है। पत्नी है, बच्चा है – तेरे अपने खर्चे हैं। मैं इस पंचर के काम में तेरे साथ लगा रहूँगा, तो तू अपने परिवार को पाल नहीं सकेगा।"

"मतलब कि...।" सूरमा व्यंग से बोला – "तू मेरे काम से परे हट जाएगा तो मेरे को इतना बच जाएगा कि मैं कारों पर घूमने लगूंगा। बंगला खरीद लूँगा।"

"कुछ तो बेहतर होगा तेरे घर का हाल।" गोलू मुस्कुरा पड़ा – "दो दिन से मैं यही सोच रहा हूँ कि तूने कठिनता से अपना घर बसाया है। कस्तूरी भाग गयी तो तेरा दिल टूट जाएगा।"

"भाड़ में जाए कस्तूरी। मैं उसकी परवाह नहीं करता।"

"तू बेशक न करे, लेकिन मैं तो करता हूँ – आखिर वो मेरे यार की बीवी है।"

सूरमा ने गोलू को घूरा।

"साली ऐसे ही बोलती है।" सूरमा खार खाए स्वर में बोला – "दो दिन हो गए, अभी तक नहीं भागी। वहीं पर बैठी है। घर जाते हुए यही सोचता हूँ कि वो भाग गयी होगी – लेकिन वहीं बैठी मिलती है।"

"इन दो दिनों में कस्तूरी ने और क्या...?"

"वो मुंह फुलाए बैठी है।"

“और तू?”

“मैंने भी मुंह फुला लिया। उसे मनाने के लिए गाना तो गाऊंगा नहीं। बड़े घर की है तो होगी। मैं तो पंचर वाला हूँ। जो कमाई होगी, उसी में गुजर-बसर करना है तो करे। नहीं तो भाग जाए।”

“वैसे तो ज्यादती है कस्तूरी के साथ। इस तरह के रहन-सहन की आदत नहीं है उसे। साल तो उसने निकाल ही लिया। अब बच्चे के साथ परेशान...।”

“तो मैं क्या करूँ।” सूरमा झल्लाया – “तेरे से क्या छिपा है मेरा।”

“मैं भी तेरे लिए कुछ नहीं कर सकता।”

“कोई भी कुछ नहीं कर सकता। कस्तूरी को नोट नहीं, नोटों की गड्डियां चाहिए। शानदार ज़िन्दगी चाहिए। वो भी मेरे से। ये नहीं हो सकता। घर का रोटी-पानी चल जाए, ये ही बहुत है।”

“तेरी बात भी गलत नहीं। अगर तू कहे तो एक बार दिल्ली किस्मत आजमाएं...।”

“दिल्ली – वहाँ क्या खाली हाथ जाएंगे। रहने को जगह नहीं, सिर पर छत नहीं, खाने को रोटी नहीं।”

“ऐसे लोग ही वहाँ जाकर जमते हैं। कही झुग्गी डाल ली। कुछ भी काम कर लिया। [पहले तीन महीने तो पेट भरते हुए ये देखा जाता है कि क्या काम करना ठीक रहेगा। उसके बाद तो गाड़ी चल पड़ती है।”

“कितनी बार गाड़ी चलाई है तूने दिल्ली जाकर।”

“एक बार भी नहीं।”

"फिर ऐसे क्यों कह रहा है कि जैसे बहुत बार दिल्ली जाकर काम-धंधा कर आया हो।" सूरमा ने सोच भरे स्वर में कहा – "वैसे तेरी बातों में से एक बात मुझे जंच रही है।"

"क्या?"

"तू दिल्ली जा। अपने पैर जमा। कुछ ठीक रहे तो मुझे भी बुला लेना।"

"तू साथ ही चल मेरे।"

"कस्तूरी को अकेली छोड़ना ठीक नहीं। क्या पता पीछे से क्या गुल खिला दे।"

"ये भी ठीक है, कब जाऊं दिल्ली?"

"विचार कर ले।"

"भानु प्रताप से पूछता हूँ।"

"वो तोते वाला ज्योतिषी, जो उधर पीपल के पेड़ के नीचे बैठता है।" सूरमा ने मुंह बनाकर कहा – "तेरा बेडा गर्क कर देगा।"

"फिर भी पूछने में क्या जाता है। मेरे से पैसे तो लेगा नहीं। मांग भी ले तो कौन से पास में रखे हैं कि दे दूंगा।"

गोलू उठता हुआ बोला – "मैं जरा भानु प्रताप से अपना भविष्य जानकर आता हूँ।"

"उसका तो तोता भी अब बूढ़ा होकर सठिया गया है। तो तेरा बचा-खुचा भविष्य भी खराब कर देगा।"

गोलू हाथ हिलाता हुआ वहाँ से दूर होता चला गया।

सूरमा ने आँखे बंद कर लीं।

पांच-सात मिनट ही बीते होंगे कि पास में कार रुकने की आवाज़ आई। सूरमा ने आँखें खोली।

कार में से देवराज चौहान को निकलते पाकर चेहरे पर अजीब से भाव उभरे। वो सीधा होकर बैठ गया। नज़रें कार के पहियों पर गयीं, जो कि सेहतमंद नज़र आ रहे थे।

□□

"सब ठीक तो है!" सूरमा मुस्कुराकर कह उठा, जब देवराज चौहान उसके पास पहुंचा।

"यहाँ से निकल रहा था।" देवराज चौहान कुर्सी पर बैठते हुए बोला – "तुम्हें देखा तो सोचा मिल लूं।"

"मुझसे मिल लो?" सूरमा ने आँखें फैलाईं।

"हाँ!"

"अजीब बात है। भला मैं तुम्हारा कौन लगता हूँ, जो खासतौर से मुझसे मिलने आ गए। हैरानी है।"

"चाय नहीं पिलाओगे?"

"छः रुपये लगते हैं चाय के। खामख्वाह चाय पिलाना मेरी औकात से बाहर है।"

देवराज चौहान ने जेब से पांच सौ का नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"ये क्या?" सूरमा के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।

"मुझे चाय पिलाओ और जो बच जाए, तो तुम रख लेना।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

सूरमा ने फ़ौरन पांच सौ का नोट झपट लिया।

"ओ बावले।" सूरमा ने गला फाड़कर आवाज़ लगाई।

सड़क पार बैठे लड़के ने सूरमा को देखा तो सूरमा ने दो ऊँगली का इशारा कर दिया।

लड़का साइकिल की दुकान से उठा और पास ही चाय की रेहड़ी पर पहुँच गया।

सूरमा नोट को जेब में डालता हुआ बोला।

"तुम हर रोज चाय पीने आ जाओ तो मेरी नैया पार हो जाए।"

देवराज चौहान ने आस-पास देखा।

"तुम्हारा दोस्त गोलू नज़र नहीं आ रहा।"

"गोलू तोते वाले ज्योतिषी भानु प्रताप से अपना भविष्य पूछने गया है।"

"तोते वाले ज्योतिषी से?"

"हाँ, तोता भविष्य निकालकर देता है तो भानु प्रताप पढ़ता है। वो उधर पेड़ के नीचे बैठा है।" सूरमा ने हाथ से दिशा की तरफ इशारा किया – "तुम भी अपना भविष्य पढ़वा लो।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

"गोलू अब दिल्ली जाएगा।"

"दिल्ली?"

"हाँ, तभी तो भानु प्रताप के पास कोई अच्छा सा मुहूर्त निकलवाने गया है कि कौन-सी तारीख को दिल्ली के लिए रवाना हो तो यात्रा उसे फले और दिल्ली पहुँचते ही करोड़पति बन जाए।" सूरमा ने मुंह बनाकर कहा – "इधर तो अब काम-धंधा बचा नहीं है। दिल्ली में अपने पैर जमाकर वो मुझे भी बुला लेगा।"

"बढ़िया है।"

"मैं तो बहुत परेशान हो गया हूँ।" सूरमा ने मुंह लटकाकर कहा।

"क्यों?"

"इधर काम-धंधा नहीं है और उधर, घर में कस्तूरी बोलती है कि कहीं से भी नोट लाऊं। चोरी करूं, डकैती मारूं – परन्तु नोटों की गड्डियां लाकर उसे दूं। अब तुम ही सोचो, ऐसा भी कभी होता है। कहती है कि अगर मैनें नोटों की गड्डियां लाकर उसे न दी तो वो किसी के साथ भाग जाएगी।"

मुस्कुराया देवराज चौहान।

"मुस्कुरा क्यों रहे हो?"

"शादी से पहले तुमने तोते वाले ज्योतिषी, भानु प्रताप को शादी की जन्मकुंडली दिखाई थी?"

"नहीं।"

"तभी तो शादी फल नहीं रही।" देवराज चौहान मुस्कुराता रहा।

बावला छक्के में चाय के दो गिलास रखे ले आया।

दोनों ने चाय के गिलास थामे।

"तुम्हें पैसे चाहिए?" देवराज चौहान ने घूँट भरा।

"बहुत जरुरी चाहिए। नोटों की गड्डियां चाहिए।"

"नोटों की गड्डियां तो मेहनत करने पर ही मिलती हैं। कुछ नोट चाहिए तो मैं दे देता हूँ।"

"लाओ।" सूरमा फ़ौरन कह उठा।

देवराज चौहान ने कमीज के ऊपर की जेब से पांच सौ के नोट निकाले और उसकी तरफ बढ़ा दिए। सूरमा ने तुरंत

नोट लपक लिए कि कहीं नोट देने का उसका इरादा न बदल जाए।

"ये तुम... मुझे दे रहे हो?" सूरमा के स्वर में अविश्वास के भाव थे।

"हाँ!"

"कि... कितने हैं?"

"गिन लो।"

सूरमा जल्दी से नोटों को गिनता रहा।

देवराज चौहान के चेहरे पर शांत भाव थे।

देवराज चौहान के चेहरे पर शांत भाव थे।

"बाईस... बाईस नोट हैं!" सूरमा ने देवराज चौहान को देखा – "यानी की ग्यारह हजार रुपये!"

देवराज चौहान मुस्कुराया।

"ज... जेब में रख लूं?"

"रख लो।"

सूरमा ने फ़ौरन नोटों को जेब में रखा। चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

देवराज चौहान ने चाय का घूँट भरा।

"ये तुमने मुझे क्यों दिए?" सूरमा की आवाज़ में अजीब-सी खरखराहट आ गयी थी।

"ये समझाने के लिए कि नोटों में बहुत ताकत होती है।" देवराज चौहान ने मुस्कुरा कर कहा – "जिसके पास नोट होते हैं, उसकी पत्नी किसी दूसरे के साथ नहीं भागती। शानदार जिंदगी बिताता है वो।"

सूरमा देवराज चौहान को देखता रहा।

"तुम्हारी पत्नी ठीक कहती है कि तुम्हें नोट कमाने चाहिए।" देवराज चौहान पुनः बोला।

"वो तो ठीक है।" सूरमा ने बेचैनी से पहलू बदला – "लेकिन तुम मेरी बीवी और मेरे बीच कैसे आ गए?"

"ये पैसे तो तुम दस-बीस दिन में खर्च कर दोगे।"

"तो?"

"उसके बाद क्या करोगे?"

"कुछ नहीं!"

"तो तुम्हें ऐसा कोई काम करना चाहिए कि पैसा ख़त्म ही न हो।"

"मुझे क्या पता कि ऐसा कौन-सा काम है। तुम ही मेरा मार्ग-दर्शन करो। मैनें तो पहले ही तुम्हें कहा था कि मुझे बताओ, नोट कैसे कमाए जाते हैं। क्या तुम जानते हो ऐसे किसी काम को।" सूरमा कह उठा।

"कैसा काम तुम करना चाहते हो?"

"कैसा भी।"

"चोरी-डकैती जैसा चलेगा?" देवराज चौहान मुस्कुराया।

सूरमा चौंका।

"चोरी-डकैती!"

"क्यों – क्या हुआ?"

"पुलिस पकड़ लेगी।"

"बच भी तो जाओगे। सौ में से सिर्फ दस ही फंसते हैं, नब्बे तो ऐश करते हैं।"

"सच कहते हो।"

"मेरे ख्याल में तो ऐसा ही होता है।"

सूरमा ने व्याकुलता से पहलू बदला।

"लेकिन मैं ये काम नहीं कर सकता। पहले मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"मैं सब बता दूंगा।"

"तुम?"

"हाँ!"

"तुम क्या हो?" क्या तुम चोरी-डकैती करते हो?"

देवराज चौहान मुस्कुराया। चाय का गिलास खाली करके नीचे रखा और सिगरेट सुलगा ली। सूरमा, एकटक अजीब-सी नज़रों से देवराज चौहान को देखे जा रहा था।

"हो सकता है कि एक ही बार में तुम इतना पैसा बना लो कि फिर कभी तुम्हें ऐसा काम करने की जरूरत न पड़े। आराम से कोई शराफत का धंधा करके ज़िन्दगी बिता दो।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुमने बताया नहीं कि तुम क्या करते हो?" सूरमा ने पुनः पूछा।

देवराज चौहान ने कश लिया और बोला।

"तुमने मेरी बातें सुनीं। समझी?"

"हाँ!"

"सोचना कि क्या ऐसा काम तुम करना चाहोगे? इस काम में तुम्हें खतरा तो होगा ही, परन्तु वो सिर्फ एक बार का होगा। इस काम को करके कुछ ही दिनों में तुम करोड़ से ऊपर की रकम बना सकते हो।"

"ख.. खरोड़!" सूरमा के गले से फंसा-सा स्वर निकला।

"खरोड़ नहीं।" देवराज चौहान मुस्कुराया – "करोड़।"

सूरमा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। देवराज चौहान को देखे जा रहा था वो।

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"ब.. बैठो, तुम कुछ कह रहे हो। अभी बात पूरी कहाँ हुई है।" सूरमा हड़बड़ाकर बोला।

"आज के लिए इतना ही काफी है। मेरी बातों पर गौर करके सोचो कि क्या खतरा उठाकर तुम करोड़ से ऊपर की रकम कमाना चाहोगे।" देवराज चौहान बोला।

"लेकिन काम – काम तो पता चले।"

"तुमने काम का क्या करना है, वो तो मैनें ही करना है। तुम तो मेरे साथ ही काम करोगे।"

"लेकिन काम का पता तो चले कि...!"

"तुम्हारा काम सिर्फ सोचना है – हाँ या न। बाकी बातें उसके ही होंगी।"

"इसमें सोचना क्या है?"

"तो तुम काम करने को तैयार हो?" देवराज चौहान बोला।

"म... मैनें ये तो नहीं कहा।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"तुम्हें अभी सोचने की जरुरत है सूरमा। जो मैनें कहा है, उस पर सोचो और फैसला करो। कल मुझे बताना।"

"कल?"

"मैं आऊंगा तुम्हारे पास।"

सूरमा, देवराज चौहान को देखता रहा।

देवराज चौहान पलटा और कार की तरफ बढ़ गया।

"ये... ये ग्यारह हज़ार तो खर्च कर लूं - मेरे हैं न?"

पीछे से सूरमा हड़बड़ाए स्वर में बोला।

"ये तुम्हारे ही हैं।" देवराज चौहान कार का दरवाजा खोलते हुए बोला – "वापस नहीं मांगूंगा।"

उसके देखते ही देखते देवराज चौहान कार के साथ नज़रों से ओझल हो गया

हक्का-बक्का-सा बैठा रहा सूरमा वहीं पर।

□□

शाम अब अँधेरे में बदलने लगी थी धीरे-धीरे।

गोलू वापस लौटा।

गोलू का चेहरा उत्तेजना से चमक रहा था। उसकी चल में भी तेजी थी। सूरमा कुर्सी पर बैठा सोचों में डूबा बेचैनी भरे अंदाज में गोलू को करीब आते देखता रहा।

पास आकर गोलू कुर्सी पर बैठते हुए कह उठा।

"मैं दिल्ली नहीं जाऊँगा।"

"क्यों?" देवराज चौहान की बातों में उलझा सूरमा बोला।

"तोते वाले ज्योतिषी ने दिल्ली जाने को मना कर दिया है।" गोलू अड़ने वाले ढंग में कह उठा – "तोते ने मेरा भविष्य निकाला। उस पर लिखा था कि जहां हैं, वहीं टिका रह। बहुत जल्द तुझे करोड़ों रुपया मिलने वाला है। यहाँ से कहीं और गया तो ज़िन्दगी भर पछताएगा।"

"खरोड़ों रुपया!"

"खरोड़ों नहीं करोड़ों।" गोलू ने शब्दों को सुधारा।

"और तूने मान ली ये बात।" जबकि सूरमा के मस्तिष्क में उथल-पुथल मच गयी थी।

"मैंने कौन से उसे पैसे दिए हैं। गलत भी निकली बात तो क्या फर्क पड़ता है।"

सूरमा ने गहरी सांस ली।

"तू चला जा दिल्ली।" गोलू बोला।

"मैं?"

"हाँ, भाभी की रखवाली के लिए मैं कमरे के बाहर बिस्तरा लगा लिया करूँगा कि वो किसी दूसरे का हाथ न पकड़ ले। आखिर दोस्त ही तो दोस्त के काम आता है।" गोलू कह उठा।

"औरत की रखवाली ऐसे की जाती है?"

"हाँ, मैनें देखा है बहुतों को – वो औरत की रखवाली ऐसे ही करते हैं।"

"उसने तेरे को दही लेने भेज दिया तो पीछे से तू कैसे रखवाली करेगा।" सूरमा मुस्कुराया।

"हाँ, ये बात तो तूने ठीक कही – लेकिन मैं दिल्ली नहीं जाऊँगा।"

"जाने की जरुरत भी नहीं है।"

"क्यों?"

"अभी वो आया था, जिसका दो दिन पहले पंचर लगाया था हमने। वो-वो पप्पू भाई साहब।"

"किन्नू वाले बंटी के पास?"

"हाँ, उसी की बात कर रहा हूँ।"

"वो क्यों आया?"

सूरमा चुप-सा हो गया।

"बता, वो क्यों आया? क्या पंचर लगवाने आया था?"

"कह रहा था कि अगर मैं करोड़ों रुपया कमाना चाहता हूँ तो बता दूं।"

"करोड़ों!" गोलू का मुंह खुला का खुला रह गया।

"हाँ!"

"लेकिन....!" गोलू की सांस उखड़ गयी – "करना क्या होगा?"

"चोरी-डकैती जैसा कुछ काम...!"

"हे भगवान! चोरी-डकैती?" गोलू का दिल धाड़-धाड़ बजने लगा।

सूरमा, गोलू को देखता रहा।

"फिर तूने क्या कहा?"

"कुछ नहीं कहा। ग्यारह हज़ार रुपये दे गया है कि मैं नोटों को इस्तेमाल करके देख लूं कि पैसा खर्च करने में कितना मजा आता है। जवाब लेने कल आएगा।" कहकर सूरमा ने जेब से नोट निकाले और दो नोट उसकी तरफ बढ़ाए।

"ये... क्या?"

"ले ले। हजार रुपया है। ग्यारह में तेरा भी तो हिस्सा बनता है।"

गोलू ने नोट लेकर अपनी जेब में डाल लिए।

दोनों एक-दूसरे को देखते रहे।

"कल तूने उसे मना कर दिया तो वो ग्यारह हज़ार वापस मांगेगा।" गोलू कह उठा।

"नहीं मांगेगा। बात हो गयी है।"

"वो करना क्या चाहता है?" गोलू ने बेचैनी से पूछा।

"मालुम नहीं। पूछा था, लेकिन उसने जवाब नहीं दिया। बोलता है कि पहले मैं सोचूं कि ये सब मुझे करना है कि नहीं?"

"पप्पू भाई साहब खतरनाक लगे तुझे?"

"जो करोड़ों रुपये की लूट-डकैती की बात कर रहा है, वो खतरनाक तो होगा ही।" सूरमा बोला।

"रिवाल्वर थी उसके पास?"

"मैनें नहीं देखी!"

"बात करते हुए वो गाली-वाली भी दे रहा था।"

"नहीं।"

"मैनें तो सुना है बदमाश लोग पहले गाली देते हैं, फिर बात करते हैं।"

"पप्पू भाई साहब ऐसे नहीं हैं। पढ़ा-लिखा बदमाश लगता है।"

"मुझे तो ये सब बहुत अजीब-सा लग रहा है। तूने क्या सोचा। कल क्या कहेगा उसे?"

"कुछ समझ नहीं आता।"

"ऐसा न हो कि तू इंकार करे और वो तुझे गोली मार दे।"

"डराता है मुझे।"

"सच बात कह रहा हूं।"

"दुकान बंद कर। अँधेरा हो गया है।" सूरमा सोचों में उलझा हुआ था।

"लेकिन कल कहेगा क्या उसे?"

"कुछ समझ में नहीं आता।"

"देख।" गोलू समझाने वाले स्वर में कह उठा – "चोरी-डकैती हम जैसे लोगों का काम नहीं है। शरीफ लोग हैं हम। थोड़ी-बहुत हेराफेरी तो कर सकते हैं, लेकिन चोरी-डकैती नहीं।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ।"

"कल पप्पू भाई साहब आयें तो मना कर देना।"

"ये ही सोच रहा हूँ।"

"करोड़ों के चक्कर में जेल पहुँच गए तो बूढ़े होकर ही बाहर निकलेंगे।" गोलू ने हाथ हिलाकर कहा – "पप्पू भाई साहब जाने कौन हैं। हम तो उसे जानते नहीं। कहीं पहले से ही पुलिस उसके पीछे न हो।"

"मैं एक बात और सोच रहा हूँ।"

"क्या?"

"पप्पू भाई साहब की बातों में आकर, उनका कहा काम करके सफल हो जाते हैं तो कितना मजा आएगा। हमारे पास करोड़ों रुपये से भी ज्यादा के नोट होंगे। मजे ही मजे होंगे। हमारे और तब हम...।"

"पुलिस वालों को भूल गया?" गोलू ने टोका।

"सोच कि पुलिस से हम बच गए तो?"

गोलू ने सूरमा को घूरा।

"क्या देखता है?"

"सोच कि पुलिस से न बचे तो?"

"तू ऐसा क्यों सोचता है?"

"क्योंकि तेरे सिर पर नोटों का भूत चढ़ गया है और मेरे सिर पर नहीं।"

"ये बात नहीं है।"

गोलू सूरमा को देखता रहा।

सूरमा व्याकुलता में डूबा चुप था।

"कल तूने पप्पू भाई साहब को गैरकानूनी काम के लिए मना करना है।"

"दुकान बंद कर।" सूरमा सोच में डूबा बोला – "मैंने यही सोचा है कि हम कोई गलत काम नहीं करेंगे।"

□□

सूरमा घर पहुंचा।

कमरे से बाहर पीली-सी रौशनी आ रही थी। प्लाट के बाकी के हिस्से पर अँधेरा छाया हुआ था। आस-पास के मकानों में भी रौशनी थी। आज स्कूटर गोलू ले गया था। सूरमा पैदल ही घर तक आया था। दस मिनट का तो रास्ता था। इस दौरान वह देवराज चौहान की बातों को लेकर सोचों में डूबा रहा था और सोच जब करोड़ों तक पहुँचती, घबराकर वहीं पर सोचने का काम छोड़ देता।

सूरमा गेट वाली जगह से भीतर दाखिल हुआ और कमरे की तरफ बढ़ गया। दरवाजे पर फटी चादर रूपी पर्दा नहीं लटक रहा था।

सूरमा भीतर आया दरवाजे से।

कस्तूरी को चारपाई पर बैठे पाया। पास ही बच्चा लेटा था। कमरा दिन भर की गर्मी से तप रहा था। आज पहली बार उसे महसूस हुआ कि सच में इतनी गर्मी में रहना दूभर है।

कस्तूरी ने गर्दन घूमाकर सूरमा को देखा, फिर मुंह घुमा लिया।

वो अभी भी सूरमा से नाराज़ थी कि उसे नोटों की गड्डियां लाकर नहीं देता। दो दिनों से उसने सूरमा से बात तक नहीं की थी। रोटी-पानी बनाके रख देती और सूरमा खा लेता।

परन्तु आज तो सूरमा की जेब में दस हज़ार की गर्मी थी।

"बस-बस, ज्यादा अकड़ मत दिखा।" सूरमा कह उठा – "चल तेरे को गोल गप्पे खिलाकर लाता हूँ।"

कस्तूरी ने तीखी निगाहों से उसे देखकर कहा।

"मेरे से बात तब करना, जब नोटों की गड्डी...!"

"ले आया हूँ।" सूरमा मुस्कुराया।

कस्तूरी के कान खड़े हुए।

"दिखा।"

सूरमा ने जेब से पांच सौ के नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाए।

"चार नोटों को तू गड्डी कहता...।"

"ये चार नोट नहीं हैं। पांच सौर के पुरे बीस नोट हैं। यानी कि दस हज़ार रुपये। सौ के नोटों की गड्डी हुई की

नहीं।" सूरमा नोटों को उसकी आँखों के सामने लहराकर बोला।

"पांच सौ के नोटों की गड्डी नहीं ला सकता था।"

"मेरे बाप की नोट छपने वाली मशीन नहीं लगी, जो गड्डियां छापकर लाता रहूँ।"

"तो ये क्या अपनी माँ की चक्की से लाया है जो...।"

"देख, मुंह संभालकर बात कर। माँ तक नहीं जाना।"

कस्तूरी उसे देखने लगी।

सूरमा कुर्सी पर जा बैठा।

कस्तूरी एकाएक उठी। कमरे में रखे घड़े से पानी का गिलास भरकर उसे दिया और उसके हाथ से नोट लेकर चारपाई पर बैठते हुए गिनने लगी। बच्चा पास लेता हाथ-पांव मार रहा था। पानी पीकर सूरमा उठा और बच्चे को उठा लिया। बाप के पास आकर बच्चा और खुश हो उठा।

"रोज इतने लाया कर।" कस्तूरी नोट गिनकर हटी।

"रोज?" सूरमा सकपका उठा।

"हाँ रोज। मेरी बात सुनकर तेरी माँ क्यों मर गयी?"

"तू पागल है जो रोज की बात करती हैं। आज ले आया हूँ, ये ही बहुत है।"

"लाएगा। तू और भी लाएगा।" कस्तूरी मुस्कुरा पड़ी।

सूरमा को वो बहुत खूबसूरत लगी मुस्कुराते हुए। पलों के लिए उसे ऐसा लगा, जैसे उसके घर में हुस्न का खजाना दबा हुआ है और उसे खबर तक नहीं।

"तूने ये नहीं पूछा कि कहाँ से लाया मैं दस हज़ार?"

"मेरी बला से, कहीं से भी ला – लेकिन ला। गोलू को भी कुछ दिया होगा।"

"हज़ार दिया। टोटल ग्यारह था।"

"उसे हज़ार देने की क्या जरुरत थी। पांच सौ में काम चल जाता।" कस्तूरी गर्दन हिलाकर बोली, फिर नोटों में से दो नोट उसकी तरफ बढ़ाती बोली – "ये लो दो नोट, बच्चे के लिए सामान लाना है, जो कि पांच सौ में आ जाएगा। समझा क्या?" कहते हुए कस्तूरी के होंठों पर मुस्कान उभरी।

सूरमा ने दोनों नोट थामे।

"दूसरे नोट का क्या लाना है?" पूछा सूरमा ने।

"अंग्रेजी की बढ़िया सी बोतल और खाने का सामान।"

"अंग्रेजी?" सूरमा सकपका उठा।

"हाँ, आज मैं भी तेरे साथ पीऊँगी।" कस्तूरी ने मुस्कुरा कर कहा।

"तू पिएगी?" सूरमा अभी भी बुरेहाल था।

"तो दस हज़ार कमाकर लाया है, घर में पार्टी होनी चाहिए की नहीं?"

"ह... हाँ!"

"तो ले के आ।"

"त...तू पीती है, पहले नहीं बताया।" सूरमा अभी भी बुरेहाल में था।

"क्या बताती? कभी सौ लाया तो कभी पचास। मेरी तो हिम्मत ही नहीं होती थी तेरे को कहने की।" कहते हुए

कस्तूरी ने एक पांच सौ का नोट और उसकी तरफ किया – "ये अभी रख ले।"

"ये... किसलिए?"

"पैसे कम पड़ गए तो क्या दौड़ा-दौड़ा घर आएगा। एक ही बार में पूरा सामान लेकर आ। कुछ पता है कि अंग्रेजी कौन-सी लानी है, कोई सड़ी हुई मत उठा लाना।"

सूरमा साल भर बीतने के बाद पहली बार कस्तूरी का ये रूप देख रहा था।

"पता है। अंग्रेजी के बारे में सब पता है।"

"तो जा, ले के आ।"

सूरमा ने नोट जेब में डाले। बच्चा कस्तूरी को थमाया।

"सुन, मैं तेरे से बहुत प्यार करती हूँ।" कस्तूरी बोली।

"तू तो किसी और के साथ भागने को कह रही थी।"

"वो तो तेरे को डराने के लिए कह रही थी। यहाँ से भागती नहीं मैं।" कस्तूरी हंसी।

सूरमा आज कस्तूरी का नया ही रूप देख रहा था।

"आज की रात मैं तेरे को बादशाह बना दूंगी। नोट पास में हो तो इंसान क्या से क्या बन जाता है। सुबह मेरे को बताइयो कि एक रात का बादशाह बनकर कैसा लगता है।" कस्तूरी हंसी।

"तू मेरे को बादशाह बनाएगी?"

"हाँ!"

"कैसे?"

"आज रात तू और मैं होंगे। अंग्रेजी हमारे अन्दर होगी और तेरे सामने मैं होऊँगी। अपने हाथों से तेरे को पिलाऊंगी। पुचकारकर, दुलारकर और...।"

सूरमा का सिर भिन्नाने लगा।

"बस कर।" सूरमा ने हाथ उठाकर कहा – "आगे मत बढ़।"

"क्यों?" कस्तूरी ने हैरानी से उसे देखा।

"कहीं मैं पंचर लगाने न भूल जाऊं।" सूरमा ने गहरी सांस ली

कस्तूरी खिलखिला उठी।

"भूलेगा। कम-से-कम आज रात तो तू दुनिया भूल जाएगा। एक बात बता, कहाँ से लाया तू दस हज़ार?"

"दिया किसी ने।"

"कौन देगा तेरे को?"

"पप्पू भाई साहब ने दिया।" सूरमा कुछ विचलित दिखा।

"क्यों दिया?"

सूरमा पहले तो हिचकिचाया, फिर सारी बात कस्तूरी को बताता चला गया।

कस्तूरी ने गंभीरता से सारी बात सुनी।

"हूँ।" बात ख़त्म होने पर कस्तूरी बोली – "तो तूने क्या सोचा?"

"मैं गलत काम नहीं करूँगा। फंस जाऊँगा।" सूरमा ने स्पष्ट कहा।

"अंग्रेजी ला। ये बातें अंग्रेजी के साथ करेंगे।" कस्तूरी सोच भरे गंभीर स्वर में कह उठी।

"मैनें पप्पू भाई साहब के बारे में कोई बात नहीं करनी।" सूरमा ने मुंह बनाकर कहा और बाहर निकल गया।

□□

अंग्रेजी की बोतल खुली हुई थी।

सूरमा और कस्तूरी अब सरूर में नज़र आने लगे थे। नशे में कस्तूरी का खूबसूरत तमतमाया चेहरा और भी खूबसूरत हो उठा था। कमरे में बल्ब रोशन था। खुले दरवाजे से रात की हवा भीतर आ रही थी। साथ में मुर्गा रखा हुआ था। मस्ती के तगड़े दौर से गुजर रहे थे दोनों – और तो और कस्तूरी ने इस वक्त ब्लाउज और पेटीकोट पहन रखा था, जो कि घुटनों से ऊपर तक उठा हुआ था और ब्लाउज को भी पेट तक ढीला कर रखा था। ये नज़ारा देखना तो सूरमा की किस्मत में ही था।

डबल नशे की वजह से सूरमा मदहोश हुआ जा रहा था। रह-रहकर उसकी निगाह कस्तूरी के शरीर पर फिर रही थी। कस्तूरी इसी बात को स्पष्ट तौर पर महसूस कर रही थी। जब भी सूरमा उसकी तरफ बढ़ने की चेष्टा करता, कस्तूरी उसे ये कहकर रोक देती कि अभी तो पूरी रात पड़ी है।

बच्चे को दूध पिलाकर कस्तूरी ने पहले ही सुला दिया था।

बोतल आधी होने को नज़र आ रही थी।

"यार कस्तूरी।" सूरमा की आवाज़ में नशा था – "तू बोत मस्त है।"

"मस्त?" कस्तूरी हंसी।

"हाँ, मस्त-मस्त चीज है। ये तो मुझे आज पता चला। तूने पीना कब शुरु किया?"

"अट्ठारह साल की उम्र से।" कस्तूरी भी तरंग में बह चुकी थी।

"अट्ठारह साल की उम्र से पीना शुरु कर दिया! अच्छा, माँ ने आदत डाली के बाप ने?"

"बाप तो तभी मर गया था, जब मैं पांच साल की थी।"

"ओह, मुझे नहीं पता था – वरना मैं पहले ही अफ़सोस कर देता। फिर तो अपनी माँ के साथ पीती होगी?"

"वो तो साली बोत घटिया औरत थी। जब मैं सत्रह की थी तो उसने मुझे बेच दिया था।"

"बेच दिया!" सूरमा ने पलकें झपकाई – "किसे बेच दिया?"

"चंडीगढ़ की औरत है मनप्रीत। बीस हज़ार में बेचा मनप्रीत को।"

"बीस हज़ार में! हूँ, तो मनप्रीत तेरे से घर का काम लेती होगी।"

कस्तूरी खिलखिलाकर हंसी।

"वो तो मुझे रानी बनाकर रखती थी। बढ़िया कपड़े, बढ़िया मेकअप, बढ़िया खाना-पीना – कारों में घूमना।"

"क्या मतलब?"

"अरे, चकला चलाती थी वो। धंधा कराती थी मेरे से।"

"धंधा?" सूरमा ने पलकें झपकाई। कस्तूरी को देखा।

"नशा उतर रहा है?" कस्तूरी हंसी।

"हाँ, गिलास भर।"

"ले।" कस्तूरी ने बोतल उठाई और सूरमा का गिलास भर दिया – "चढ़ा जा।"

गिलास होंठो से लगाकर सूरमा ने एक ही बार में आधा खाली किया।

"तो तू धंधा करती थी पैले?"

"मैं कहाँ करती थी, वो हरामज़ादी मनप्रीत कराती थी। पहले पहले मैं मना करती तो वो मेरी पिटाई करती। बाथरूम में बंद कर देती। सारा-सारा दिन रोटी-पानी कुछ भी न देती। बुरा हाल कर देती थी मेरा। आखिरकार मुझे उसकी बात माननी ही पड़ी। न मानती तो मेरा बुरा हाल कर देती।"

"समझा!"

"कभी ग्राहक उसके घर पर आते तो कभी ग्राहकों के पास जाना पड़ता। साथ में पीना-पिलाना भी चलता। ग्राहक को खुश करने के लिए उसके साथ पीनी भी पड़ती। कई साल यही सब चलता रहा।"

"फिर तू जीरकपुर कैसे पहुंची?"

"भाग आई उसके यहाँ से। चंडीगढ़ में बस पर बैठी, जो जीरकपुर में खराब हो गयी थी तो यहीं उतर गयी।"

"तो आशिक के साथ भागने वाला सब ड्रामा था?"

"सब ड्रामा था।" कस्तूरी हाथ हिलाकर मस्ती में कह उठी।

"तू तो बोत चालु है।"

"चालू-वालू कुछ नहीं, मुसीबत में फंसा इंसान तो झूठ भी बोल देता है।"

"मेरे से शादी तूने क्या सोचकर की?"

"यही सोचकर कि उस नरक से तो ये ही ज़िन्दगी भली। हर रोज नया मर्द। कोई मूंछों वाला, कोई बिना मूंछो वाला तो कभी दाढ़ी वाला। मैं तो तंग आ गयी थी कपड़े उतार-उतारकर – भाग आई वहां से।"

"अच्छा किया, सुन ये बात किसी दूसरे को न बताना कि तू पहले क्या करती थी।"

"पागल है तू, मैं क्यों बताउंगी। साल भर छिपाकर रखी ये बात लेकिन अब बता दी। बताना जरुरी भी तो था। कोई ग्राहक कभी मुझे पहचान जाए तो गड़बड़ हो जायेगी। इसलिए तेरे को...।"

"कोई पहचाने तो तू मत मानना कि तू वो ही है।"

"पता है मुझे।" कस्तूरी ने कहा और बोतल उठाकर अपना गिलास भरा।

"अंग्रेजी का मजा ही कुछ और है।" सूरमा कह उठा।

"हाँ, तू तो कमाता नहीं – तो मैं कैसे कहती कि अंग्रेजी ला। देख ले आज नोट आये तो तू राजा बन गया। अभी तो राजा तेरे को बनाउंगी। पूरी रात पड़ी है।" कस्तूरी ने नशे में हंसकर कहा।

"तू तो न जाने कितनों को राजा बना चुकी है।"

"वो सब किराए के थे। आए और गए – तू तो परमानेंट है, ये क्यों भूलता है।"

"अब तो पिछला काम नहीं करेगी?"

"नहीं।"

"लगा कानों को हाथ।"

"ये ले।" कस्तूरी ने अपना गिलास रखा और दोनों कान पकड़ लिए – "तेरी कसम, बीते धंधे से तो मैं बहुत ही परेशान थी। सच मान तेरे साथ रहकर तो मैं बहुत खुश हूँ। बस एक ही कमी है।"

"पैसे की।"

"हाँ!" कस्तूरी ने कान छोड़कर अपना गिलास उठाते हुए कहा – "पैसों का इन्तजाम कर।"

"फ़ालतू की बात मत बोल। मैं पैसे का इन्तजाम नहीं कर सकता। शरीफ आदमी हूँ।"

"वो क्या बदमाश होते हैं, जो पैसों का इन्तजाम करते हैं?"

सूरमा ने घूँट भरा। मुर्गा उठाया और चबाने लगा।

कस्तूरी ने गिलास खाली किया और उसने भी मुर्गा उठा लिया।

"चंडीगढ़ में कृपाल सिंह का मेरे पास आना-जाना बहुत था। उसी ने मुझे मुर्गा खिलाना सिखाया।"

"चंडीगढ़ की बात मत कर।" सूरमा ने मुंह बनाया।

"क्यों?"

"मन खराब होता है। तू जीरकपुर में है और यहीं की बात कर।"

"जीरकपुर की बात करूँ?"

"कर।"

"यहाँ तो मुझे एक ही बंदा नज़र आता है, जिसकी बात कर सकती हूँ।"

"गोलू?"

"किसका नाम ले लिया।" कस्तूरी बोली – "मैं तो पप्पू भाई साहब की बात कर रही हूँ, जिन्होंने तेरे को आज नोट दिए हैं।"

"पप्पू भाई साहब?" सूरमा के होंठो से निकला – "मेरे को वो बंदा ठीक नहीं लगा।"

"क्यों?"

"करोड़ों की बात करता है। कहीं हाथ मारने की सोच रहा है। मुझे अपने साथ लेना चाहता है।"

"तो लग जा उसके साथ।"

"फंस जाऊँगा। मैं जेल नहीं जाना चाहता।"

"सूरमा।" कस्तूरी प्यार से कह उठी – "तू नहीं जानता कि मैं तेरे को कितना प्यार करती हूँ। अगर तू जेल चला गया तो मैं हर रोज तेरे को जेल में मिलने आया करूँगी।"

"हर रोज?" सूरमा ने नशे भरी आँखों से उसे देखा।

"हां, तेरी कसम।"

"जो भी हो, मैं फंसना नहीं चाहता। पप्पू भाई साहब के साथ काम नहीं करूँगा।"

"वो कह रहा था, करोड़ों से ऊपर की रकम मिलेगी तेरे को इस काम में।"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"मुझे तो चाहिए। सोच, उन पैसों से कितनी ऐश करेंगे हम। कहीं बड़ा मकान बना लेंगे। तू बढ़िया-सी दुकान

डाल लेना। सारी ज़िन्दगी इसी तरह हम बैठकर अंग्रेजी पिया करेंगे और...!"

"ये बातें मत कर।"

"गिलास इधर ला। ये जो बोतल में पड़ी है, ये भी गिलास में डाल ले। तब तेरे को मेरी बात समझ में आएगी।"

रात जवान होती रही।

रंगीन होती रही।

कस्तूरी ने अपने जलवे दिखाए और राजा बना दिया सूरमा को। राजा बनने के बाद जब सोने को हुआ तो पप्पू भाई साहब के साथ काम करने को तैयार हो चुका था।

मर्द को लाइन पर लाना कस्तूरी के बाएं हाथ का खेल था।

सूरमा को भी कस्तूरी ने अपनी ऊँगली पर नचा दिया था।

सूरमा को अंग्रेजी का नशा उतना नहीं चढ़ा, जितना कि कस्तूरी का नशा चढ़ गया था।

□□

अगले दिन सूरमा की आँख खुली तो नौ बज रहे थे।

कमरे की पूरी तरह सफाई हुई पड़ी थी। न बोतल, न मुर्गा, न गिलास। रात को जो महफ़िल सजी थी, उसका नामो-निशान भी बाकी नज़र न आ रहा था।

बाहर बर्तन खड़कने की आवाज़ आ रही थी।

सूरमा समझ गया कि कमरे के बाहर लगी टूंटी पर बर्तन धो रही है।

"चाय बना दे।" सूरमा चारपाई पर नींद में डूबे बच्चे पर निगाह मारकर बोला।

बाहर बर्तन खड़कने की आवाज़ थम गयी। फिर दरवाजे पर कस्तूरी दिखी। कस्तूरी की तरह ही दमक रहा था उसका चेहरा। सूरमा को लगा जैसे एक रात में ही वो खूबसूरती के सागर में डुबकी लगा आई हो। आज उसे कस्तूरी नयी लग रही थी।

"क्यों?" कस्तूरी ने आँखे नचाई – "इस तरह आँखें फाड़-फाड़कर क्या देखता है?"

"तेरे को।" सूरमा ने गहरी सांस ली।

"मैं क्या नयी हूँ तेरे लिए। रोज तो देखता है तू मुझे।"

"आज जाने क्यों, तेरे को देखने में अच्छा लग रहा है।" सूरमा भी मुस्कुरा पड़ा।

"तो ये बात है। रात की अंग्रेजी अभी तक सवार है।"

"नशे की बात नहीं है। होश की बात है।"

"हाथ-मुंह धो ले। चाय बनाती हूँ।" कहकर कस्तूरी वापस पलट गयी।

कमरे की दूसरी दीवार के साथ सटाकर स्टोव रखा हुआ था। चाय-खाना उसी पर तैयार होता था।

सूरमा उठा और कमरे से बाहर निकला।

चारदीवारी के पार सड़क पर एक आदमी जा रहा था, जो कि उचक-उचक कर इधर ही देख रहा था। सूरमा की निगाह सीधी उस पर पड़ी तो उसकी हरकत देखकर उबाल खा उठा।

“क्यों बे – क्या झांकता है, हरामी के।” सूरमा गुर्रा उठा।

“व...वो!”

“तेरी माँ की, हरामी के।”

वो व्यक्ति तेजी से वहां से खिसक गया।

“उल्लू का पट्ठा।” सूरमा ने दांत भींचकर कहा।

कस्तूरी हंस पड़ी।

सूरमा ने झल्लाकर उसे देखा।

“तू क्या दांत फाड़ती है।”

“किस-किस से झगड़ा करोगे। ऐसे लोग तो जगह-जगह मिलते हैं।”

“मुंह मत फाड़। चाय बना।”

“अब तेरी आवाज़ से लग रहा है कि रात का नशा उतर गया है।” कस्तूरी व्यंग से बोली।

सुबह-सुबह उस साले हरामी ने दिमाग ख़राब कर दिया।” कहने के साथ ही सूरमा ने पास ही भरे पड़े पानी के ड्रम में से पानी निकालकर मुंह पर छींटे मारे। कुल्ला किया।

स्टोव के पास बैठी, चाय बनाती कस्तूरी उसे ही देख रही थी।

“आज तो तू बदला-बदला लग रहा है। शहजादे जैसा।” कस्तूरी कह उठी।

“रोज अंग्रेजी पीने को मिलेगी तो तेरे को मैं ऐसा ही लगूंगा।”

"मिलेंगी, रोज अंग्रेजी मिलेगी। मुर्गा मिलेगा और... और मैं भी मिलूंगी मेरे राजा।"

सूरमा ने गहरी सांस लेकर कस्तूरी को देखा, फिर मुस्कुराया।

"तू सच में बोत मस्त है।"

"मानता है न?"

"वो बात किसी को मत बताना चंडीगढ़ वाली, गोलू को भी नहीं। नहीं तो तू खामख्वाह बदनाम हो जायेगी।"

"मैं क्यों बताउंगी किसी को? तेरे-मेरे बीच की बात है।"

"अंग्रेजी बची है कि ख़त्म हो गयी।"

"फ़िक्र क्यों करता है, आज और ले आना। मुर्गा भी।"

"पैसे ख़त्म हो जायेंगे।"

"नहीं होंगे। पप्पू भाई साहब हैं न देने वाले।"

सूरमा अचकचाकर उसे देखने लगा।

"याद है सब कुछ या अंग्रेजी उतारते ही सब कुछ भूल गया।

"याद है।" सूरमा ने गहरी सांस ली – "मैं जेल चला गया तो बहुत बुरा होगा।"

"फ़िक्र मत कर। मैं रोज तेरे को मिलने जेल में आया करुँगी।"

सूरमा, कस्तूरी को देखता रहा।

"क्या देखता है अब।" कस्तूरी ने चाय बनाकर गिलास में डाली।

सूरमा वहीँ, पास ही नीचे बैठ गया।

“कस्तूरी।” सूरमा चाय का गिलास थामता बोला – “पप्पू भाई साहब वाली बात रहने दे।”

“क्यों?” कस्तूरी के माथे पर बल उभरे।

“जाने क्यों, डर लगता है।”

“सारी उम्र पंचर ही लगाता रहेगा।” कस्तूरी दोनों हाथों को हवा में लहराकर बोली – “आगे नहीं बढ़ना है क्या? कुछ करेगा तो आगे बढ़ेगा। अब तो पप्पू भाई साहब तरक्की का रास्ता दिखा रह हैं, फिर ऐसा कोई नहीं मिलेगा।”

सूरमा ने आहत भाव से कस्तूरी को देखा और घूँट भरा।

“मुंह क्यों लटकाता है?”

“पप्पू भाई साहब को भूल जा। रहने दे ये सब।”

“ठीक है।” कस्तूरी हाथ नचाकर बोली – “रात को अंग्रेजी और मुर्गा लाने की कोई जरुरत नहीं। खोखा बंद करके सीधा घर आना। पानी में मूंग की दाल मिलेगी खाने को। मेरे से बात भी मत करना और..।”

“तू तो नाराज़ हो गयी कस्तूरी।”

“बात ही तू ऐसी करता है। रात तेरे को राजा बनाकर समझाया था कि तेरे को ये काम करना बहुत जरुरी है। तभी तो हमारी ज़िन्दगी बनेगी। हमारा बच्चा अच्छी तरह पलेगा – लेकिन तेरी समझ में तेरी बात आ नहीं रही। अब फिर उल्टी बात करने लगा। तेरी बात का तो कोई भरोसा नहीं। कभी कुछ कहता है तो कभी कुछ।”

“नाराज़ मत हो। पप्पू भाई साहब आये तो मैं ‘हाँ’ कर दूंगा।”

"हाँ, इसी बात पर टिके रहना सूरमा। सब ठीक रहेगा।" कह उठी कस्तूरी – "कल को पुलिस के हाथ लग जाए तो ये मत कह देना कि तेरी बीवी को पता था कि तू क्या कर रहा है। ऐसा कहा तो पुलिस मुझे भी पकड़ लेगी। घबरा मत, ऐसा कुछ होगा नहीं – वो तो मैं यूँ ही तेरे को समझा रही हूँ।" साथ ही मुस्कुरायी कस्तूरी।

सूरमा उसे देखता रहा।

"चाय पी, ठण्डी हो रही है।"

सूरमा ने चाय का घूँट भरा।

"पप्पू भाई साहब तेरे से जो करने को कहें, वो मुझे जरुर बताना। मैं तेरे को बढ़िया सलाह देती रहूंगी। मेरी मान तो पप्पू भाई साहब से मुझे मिलवा दे। मैं सब कुछ ठीक कर दूंगी।"

"तुझे क्यों मिलवाऊं?" उखड़ पड़ा सूरमा।

"ठीक है – ठीक है, मत मिलवा पप्पू भाई साहब से। मैं तो इसलिए कह रही थी कि औरत साथ हो तो बड़ी-बड़ी समस्या भी हल हो जाती है। मेरे में दिमाग है, ये तो तू भी मानता है।"

"चुप हो जा, वरना मैं पप्पू भाई साहब के साथ काम नहीं करूँगा।"

□□

सूरमा खोखे पर पहुंचा।

खोखा खुला हुआ था, परन्तु गोलू कहीं न दिखा। सूरमा वहीं कुर्सी पर बैठ गया। दिन के ग्यारह से ऊपर का वक़्त हो रहा था। धुप और गर्मी जैसे पल-प्रतिपल तेज होती जा

रही थी। आज वो हवा भी न के बराबर ही चल रही थी। बत्ती भी गुल थी। सामने तिराहे पर लालबत्ती न जलने की वजह से ट्रैफिक पुलिस वाले हाथों से वाहनों को जाने की लिए दिशा दे रहे थे।

तभी उसने देखा बावला सड़क पार करके इधर आने की चेष्टा कर रहा है।

सड़क पर वाहन पर वाहन तेज रफ़्तार से जा रहे थे।

कठिनता से बावले ने सड़क पार की।

वो पास आया तो सूरमा कह उठा।

"तू किसी दिन गाड़ी के नीचे आ जाएगा।"

"क्या करूँ, पेट की खातिर सब करना पड़ता है।" बावले ने दांत दिखाए।

"पेट की खातिर? तेरे पेट को क्या हो गया, जो...।"

"उस्ताद आठ चाय तुम पर हो गयी है। पुरे चौबीस रुपये।"

"समझा।" सूरमा मुस्कुराया। जेब से सौ का नोट निकाल उसकी तरफ बढ़ाया।

"छुट्टा नहीं है पैसा।"

"रख ले।"

"क्या?" बावला हड़बड़ाया।

"रख ले। हिसाब होता रहेगा।"

उलझन में फंसे बावले ने नोट थाम लिया, बोला - "नोट ज्यादा आ गए हैं क्या?"

"धंधा तो चलता नहीं, नोट कहाँ से आयेंगे।" सूरमा ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा – "सौ का नोट मैंने तेरे को

इसलिए दिया है, तू पेट की खातिर बार-बार सड़क पार न करे। वरना कार के नीचे आ जाएगा।"

"समझ गया। चाय लाऊं क्या?"

"अभी नहीं, तेरे बापू का क्या हाल है?"

"चंडीगढ़ में है। वहीं रेहड़ी लगा रहा है। अभी टेम लगेगा, उसे सेट होने में।" कहकर बावला चला गया।

कुछ ही देर में गोलू आ गया। हाथों में पकड़े टूल को खोखे में रखता कह उठा।

"तू कब आया।"

"अभी।"

"ये लो, चालीस रुपये की कमाई तो आज सवेरे-सवेरे ही हो गयी।"

सूरमा ने नोट लेकर जेब में डाले।

सूरमा ने नोट लेकर जेब में डाले।

गोलू कुर्सी खींचकर पास ही बैठता हुआ बोला – "सूरमा तेरे से बात कहनी है।"

"क्या?"

"वो ही, पप्पू भाई साहब के बारे में।" कहते हुए गोलू कुछ हिचका।

सूरमा ने घूरकर उसे देखा।

"बात बोल।"

गोलू कुछ चुप रहकर धीमे स्वर में कह उठा।

"रात भर मैं पप्पू भाई साहब के बारे में सोचता रहा। मेरे को उसकी बात में कोई बुराई नज़र नहीं आई। एक बार

किस्मत आजमाकर देख लेने में क्या हर्ज है। शायद कोई कमाल हो ही जाए।"

"जेल में पहुँचने का कमाल हो गया तो?" सूरमा ने गंभीर स्वर में कहा।

"तेरा कहना तो ठीक है।" गोलू ने बेचैनी से हाथ मले – "लेकिन हो सकता है कि पुलिस से बच निकलें।"

"तेरे ख्याल से पप्पू भाई साहब की बात मान लेनी चाहिए।"

"क्या बुरा है? वरना सारी ज़िन्दगी इसी सौ-पचास में निकल जायेगी।"

सूरमा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"एक बात समझ नहीं आ रही।" सूरमा बोला।

"क्या?"

"पप्पू भाई, साहब हमें ही अपने साथ क्यों मिलाना चाहते हैं?"

"ये बात तू पप्पू भाई साहब से ही पूछना कि... वो आ गया।"

सूरमा की निगाह भी उसी तरफ घूमी।

देखते ही देखते कार पास आकर रुकी। स्टेयरिंग सीट पर देवराज चौहान बैठा दिखा।

"पप्पू भाई साहब आ गए।" गोलू उठता हुआ बोला – "मेरी बात समझ गया कि तूने पप्पू भाई साहब की बात मान लेनी है। करोड़ों रुपया कम नहीं होता सूरमा। ज़िन्दगी संवर जायेगी।"

सूरमा ने गोलू को देखा।

गोलू उसे उतावला दिखाई दिया।

सूरमा गहरी सांस लेकर रह गया।

देवराज चौहान कार से निकलकर पास आ बैठा।

"आइये-आइये पप्पू भाई साहब।" गोलू ने दांत फाड़े और हाथ से ही कुर्सी साफ़ करता कह उठा – "बैठिये, मैं तो कब से आपका इन्तजार कर रहा था कि आप आएं और मैं चाय पिलाऊँ।"

देवराज चौहान कुर्सी के पास खड़ा हो गया।

"समझ गया। मैं अभी चाय लेकर आता हूँ।" कहने के साथ ही गोलू सड़क पार करता बावले की तरफ चला गया। इसी बीच दो बार उसने गर्दन घुमाकर पीछे देखा था।

देवराज चौहान कुर्सी पर बैठ गया।

सूरमा ने बेचैनी से पहलु बदला।

"क्या सोचा?" देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

"बहुत कुछ सोचा पप्पू जी।" सूरमा गहरी सांस लेकर कह उठा – "अब बोलो तुम क्या चाहते हो?"

"मैनें कल तुम्हें बताया...।"

"कुछ भी स्पष्ट नहीं बताया था, इशारा दिया था।"

सूरमा बोला – "करना क्या चाहते हो?"

"कोई ऐसा काम कर रहा हूँ जीरकपुर में कि दस-पंद्रह करोड़ हाथ आएगा और...।"

"दस-पंद्रह खरोड़...!"

"खरोड़ नहीं, करोड़।"

सूरमा ने गहरी सांस ली।

"उसमें से तुम्हें भी एक-डेढ़ करोड़ मिल जाएगा।"

"म...मुझे!" सूरमा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी – "करना क्या होगा?"

"मुझे एक ऐसा बंदा चाहिए, जो मेरी यहाँ की जरूरतें पूरी कर सके।"

"कैसी जरूरतें?"

"वक़्त आने पर पता चल जाएगा।"

पुनः पहलू बदला सूरमा ने।

"तुम करना क्या चाहते हो?"

"डकैती।"

"ड-कै-कैती?" सूरमा सिर से पाँव तक कांप उठा – "तुम मुझसे डकैती करवाओगे!"

"नहीं, वो तो मैं करूँगा। तुम सिर्फ मेरी जरूरतें पूरी करोगे।"

"क्या?"

"तुम सवाल बहुत पूछ रहे हो।" देवराज चौहान ने कश लिया – "अभी मैं तुम्हें इससे ज्यादा नहीं बता सकता, जितना बताया है। तुम्हारी 'हाँ' होने के बाद ही बात आगे बढ़ेगी।"

"हाँ करके बाद में मैं पीछे हट जाऊं तो?"

"तो तुम्हारा गला काट दूंगा।" देवराज चौहान सख्त स्वर में मुस्कुरा पड़ा – "इसलिए सोच-समझकर ही हाँ करना।"

सूरमा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"तुमने मुझे ही क्यों चुना?"

"क्योकि तुम अमीर बनने के रास्ते तलाश रहे थे। अगर तुम्हें अमीर नहीं बनना तो मैं किसी और को...।"

"अमीर तो बनना है मुझे।" सूरमा जल्दी से कह उठा।

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"पुलिस का भी डर होगा तुम्हारे काम में?"

"पुलिस का पूरा का पूरा डर है, तुम जेल भी पहुँच सकते हो और पुलिस का जरा भी डर नहीं। किसी को हवा भी नहीं लगेगी कि हुआ क्या है – अगर तुम अपने मुंह से नहीं बताओगे।"

"मैं क्यों बताऊंगा। लेकिन पहली बार काम करने की सोच रहा हूँ तो डर लगता ही है।"

"हाँ बोलते हो के ना?"

"गो.. गोलू भी मेरे साथ काम पर रहेगा।"

"ये तुम्हारी सिरदर्दी है मेरी नहीं।"

"ठीक है, मैं काम करने को तैयार हूँ। बोलो मुझे क्या करना होगा?"

"पीछे हटे तो जान से जाओगे।"

"नहीं हटूंगा। कितने दिन का काम है?"

"ज्यादा से ज्यादा दस-पंद्रह दिन तैयारियां करनी है।"

सूरमा ने सिर हिला दिया।

तभी गोलू छक्के में दो चाय रखे वहां पहुंचा।

"लो जी पप्पू भाई साहब। अपनी देख-रेख में चाय बनाकर लाया हूँ। पीने में मजा आ जाएगा। दूध ज्यादा डलवाया तो बावला कह रहा था – इस चाय के पांच रुपये लूँगा। मैनें घुड़क दिया साले को।"

गोलू ने दोनों को चाय थमाई।

"गोलू।" सूरमा बोला – "मैनें हाँ कह दी।"

"अच्छा किया। ऐसे मौके बार-बार तो मिलते नहीं। क्यों पप्पू भाई साहब।" गोलू ने दांत फाड़े – "वैसे भी पप्पू भाई साहब कोई बेवकूफ तो है नहीं – जो भी काम करेंगे, सोच-समझकर ही करेंगे। वैसे क्या कर रहे हैं?"

"अभी बताएँगे, तू यहीं बैठ जा।"

गोलू फौरन नीचे ही बैठ गया।

"एक बात और सुन ले गोलू!" सूरमा कह उठा – "अब हम पीछे हटे तो पप्पू भाई साहब हमें मार देंगे।"

"ऐसे ही मार देंगे। हम पीछे हटेंगे ही नहीं। भला क्यों हटेंगे?" गोलू सिर हिलाकर बोला।

देवराज चौहान ने चाय का घूँट भरा।

सूरमा के चेहरे पर घबराहट नाच रही थी।

"पप्पू भाई साहब।" गोलू कह उठा – "आप फ़िक्र मत करो। सब काम टना-टन करेंगे, जो भी बोलोगे। कोशिश करना कि हमें आसान-आसान काम बोलो।"

सूरमा ने भी घूँट भरा।

"अब तो बता दो कि कहाँ हाथ मारना है?" सूरमा ने कहा।

देवराज चौहान ने चाय का गिलास खाली किया तो गोलू ने फ़ौरन खाली गिलास पकड़ लिया।

"आप क्यों तकलीफ करते हैं पप्पू भाई साहब।" गोलू मुस्कुरा कर बोला – "मैं नीचे रख देता हूँ।"

"बैंक डकैती करनी है।"

"बैंक डकैती?" सूरमा हक्का-बक्का कह उठा।

"पप्पू भाई साहब ने तो मेरे साते फट्टे हिला दिए सूरमे!"

गोलू हड़बड़ाकर कह उठा।

देवराज चौहान की निगाह दोनों पर फिरती रही।

"ये तो बोत खतरनाक काम है। कोई छोटा-मोटा काम नहीं है।" सूरमा सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कह उठा।

"छोटे काम से करोड़ों नहीं मिलते।"

सूरमा ने गोलू से कहा।

"तू क्या बोलता है?"

"सूरमे, छोटा काम होता और पकड़े जाते तो साल-दो-साल की लगकर छूट भी आते। डकैती के मामले में पकड़े गए तो बूढ़े होने पर ही वापसी होगी। अच्छी तरह सोच ले।"

"पप्पू भाई!" सूरमा बोला – "तुमने पहले कभी डकैती की है?"

"बहुत।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"बहुत तो ऐसे कह रहा है, जैसे उम्र भर यही काम करता आ रहा है।" गोलू ने गर्दन को झटका दिया।

"तुमने कभी डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम सुना है?" सूरमा बोला – "असली डकैती मास्टर तो वो है।"

"उसकी हर डकैती की खबर को मजे से पढ़ते हैं। क्या डकैती करता है वो!"

"तुम जानते हो देवराज चौहान को?" गोलू ने देवराज चौहान से पूछा।

"हमें अपनी बात करनी चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

"सूरमे!"

"हाँ!"

"हम तैयार हैं बैंक डकैती करने को!"

"सोच ले।"

"सोच लिया, या तो करोड़ आयेंगे या फिर जेल जायेंगे। तोते वाले ज्योतिषी ने मेरा भविष्य देखकर कहा था कि इसी जगह से मुझे करोड़ों मिलेंगे। वो ही होने जा रहा है।" गोलू बोला।

"सोचने का वक़्त लेना चाहो तो...।" देवराज चौहान ने कहना चाहा।

"जब काम करना ही है तो सोचना क्या – क्यों गोलू?"

"ठीक बोला तू।"

सूरमा की निगाह देवराज चौहान पर टिक गयी।

"कौन-सा बैंक लूटना है?"

"जहां गाड़ी पंचर हुई थी। भारत सरकारी बैंक।"

"ओह!" गोलू के होंठों से निकला।

"कैसे लूटोगे?"

"काम कैसे होगा, ये मुझ पर छोड़ दो।"

"तुम्हारे छोटे भाई साहब कहाँ हैं, जो उस दिन कार में थे?" गोलू ने पूछा।

"वो भी साथ ही है मेरे।"

"बैंक लूटने में मुझे क्या करना होगा?" सूरमा बोला।

“मेरी प्लानिंग के हिसाब से तैयारी।” देवराज चौहान ने कहा – “उस बैंक के पीछे बैंक कॉलोनी के फ्लैट हैं।”

“हाँ!”

“वहाँ एक फ्लैट किराये पर लेना है।”

“समझा।”

“बैंक कॉलोनी में फ्लैट लेना आसान नहीं। लोकल गारंटर चाहिए।”

“गारंटर तो हम दिलवा देंगे। क्यों गोलू?”

“हाँ-हाँ, चाचा को बोल देंगे। उधर हार्डवेयर की खासी दुकान है उसकी। जीरकपुर में सब जानते हैं। उसका तो खाता भी उसी बैंक में हैं। क्यों सूरमे, चाचा गारंटी देगा?”

“देगा, वो नहीं तो कोई और भी है। इसके अलावा हमारी जरूरत क्या है?”

“उस फ्लैट में हमने परिवार लेकर जाना है कि कोई शक न करे।”

“परिवार!”

“हाँ!” देवराज चौहान ने सिर हिलाया – “बीवी, बच्चा और साथ में बुजुर्ग भी। इससे ये होगा कि पड़ोसी लोग किसी भी तरह का शक नहीं कर सकेंगे। फ्लैट भी आसानी से किराये पर मिल जाएगा।”

“ये बात भी ठीक है।” सूरमा बोला।

“कैसे ठीक है?” गोलू कह उठा।

“क्यों?” सूरमा ने उसे देखा।

“जो भी पप्पू भाई साहब के साथ रहेंगे, वो ये बात तो जान ही जायेंगे कि पप्पू भाई साहब किसी चक्कर में है।”

"ओह... ये तो मैनें सोचा नहीं।"

"गोलू ठीक कह रहा है।" देवराज चौहान बोला – "जो साथ रहेंगे, वो जान ही जायेंगे कि बैंक लूटने का मामला चल रहा है। हो सकता है, बैंक से पैसा निकालकर हम अपने पास फ्लैट में ही रखें।"

"अपने पास फ्लैट में?" गोलू चौंका।

"पकड़े जायेंगे।" सूरमा कह उठा।

"कुछ नहीं होगा। कोई सोच भी नहीं सकेगा कि बैंक में से रुपया निकालकर पीछे ही बैंक कॉलोनी के बने फ्लैटों में रखा गया होगा। पुलिस बैंक लूटने वालों को हर जगह तलाश करेगी, लेकिन उन फ्लैटों में नहीं।"

"जिगरे वाली बात है!" सूरमा ने गहरी सांस ली।

"वैसे भी मेरी प्लानिंग में ऐसा इंतेजाम है कि पुलिस को लगेगा, बैंक लूटने वाले चंडीगढ़ की तरफ भाग निकले हैं। बैंक के आस-पास तो डकैती के बाद पुलिस फटकेगी भी नहीं।"

"चंडीगढ़ वाली प्लानिंग क्या है?"

"पहले परिवार पैदा करो। बीवी-बच्चा और कोई बुजुर्ग, बाकी की बात बाद में।" देवराज चौहान बोला।

"हम अभी से कोशिश शुरु कर देते हैं। फ्लैट का भी पता करते हैं बैंक कॉलोनी में।"

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"मेरे साथ में रहने के लिए औरत, बच्चा और बुजुर्ग जो भी लो, वो भरोसे के होने चाहिए। गलती मत कर देना।"

"पुरे भरोसे के होंगे।" सूरमा गंभीर स्वर में बोला।

"उन्हें भी तो कुछ देना पड़ेगा।" गोलू ने देवराज चौहान को देखा।

"अगर सारा काम ठीक से निपट गया तो पचास-पचास लाख उन दोनों को मिलेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"पचास-पचास लाख..!" गोलू हड़बड़ाया।

"चुप कर। करोड़ों की बात हो रही और तू लाखों पर हिले जा रहा है।"

"मैं कल इसी वक़्त आऊंगा।"

सूरमा ने सहमति में सिर हिलाया।

"इन बातों का ढोल मत पिटते रहना, वरना पुलिस तुम दोनों को डकैती से पहले ही पकड़ लेगी।"

"ह... हम क्यों किसी को बताएँगे?" गोलू हड़बड़ाकर बोला।

उनके देखते ही देखते देवराज चौहान कार में बैठा और चला गया।

सूरमा और गोलू की निगाहें मिली।

दोनों के चेहरों पर गंभीरता थी।

"काम खतरनाक है।"

"साथ में करोड़ों रुपया भी तो है।"

"तेरे को ये पप्पू भाई साहब काबिल बंदा लगा या बातें ही बातें हांक रहा है।"

"काबलियत उसके चेहरे पर नहीं छपी हुई कि हमें पता चल जाएगा। ये तो काम होने पर पता चलेगा।"

"कहीं फंस न जाएँ।"

"पता नहीं क्या होगा?"

“एक सिगरेट पिला।”

“मेरे पास किधर है, जो...।”

“वो उधर टूल किट के पीछे रखी थी, पांच-छः दिन पहले, वो ला।”

गोलू उठा और खोखे की तरफ बढ़ गया।

कुर्सी पर बैठे सूरमा की निगाहें सड़क पर दौड़ती कारों पर जा रही थी। वो सोच रहा था कि सफल होगा कि नहीं? कहीं पुलिस के चक्कर में तो नहीं फंस जाएगा – लेकिन अब काम तो करना ही था। उधर कस्तूरी भी कह रही थी और इधर गोलू भी काम करने की सोचे बैठा था।

गोलू सिगरेट लाया। सूरमा ने सुलगा ली।

“बैंक लूटने के बारे में सोचकर सांस रुकने लगती है।” गोलू कह उठा।

सूरमा ने कश लिया।

“धीरे-धीरे ठीक हो जाएगा। शुरू-शुरू में ऐसे ही होता है। मुझे भी हो रहा है।”

“तीन काम करने हैं हमने।” गोलू बोला – “बैंक कॉलोनी में फ्लैट किराये पर लेना है। दूसरा किसी औरत और बच्चे का इन्तजाम करना है। तीसरा किसी बुजुर्ग को तलाश करना है।”

“बैंक कॉलोनी में फ्लैट के बारे में तो चाचा इन्तजाम कर देगा। मैं अभी उससे बात करता हूँ।”

“क्या कहेगा उसे?”

“बोल दूंगा मेरे साले और ससुर को चाहिए। ये भी कह दूंगा कि वो अमीर लोग हैं।”

"ये ठीक रहेगा – सुन सूरमे, वो बुजुर्ग, अपना वो हैं न चांदीलाल।"

"वो हरामी।" सूरमा के होंठों से निकला।

"हरामी ही तो चाहिए हमें।" गोलू हंस पड़ा – "साला समझदार बहुत हैं।"

"उसे तो शराब पीने की लत है। काम ख़राब कर देगा।"

"बोला तो। वो समझदार है, काम खराब नहीं करेगा।" गोलू कह उठा – "तू चाचा से फ्लैट की बात करके आ, उसके बाद चांदीलाल के पास चलेंगे।"

आधे घंटे में लौटा सूरमा।

"हो जाएगा काम।"

"कैसे – तैयार हो गया चाचा?"

"तैयार क्यों नहीं होगा। मेरी बात से इंकार कर सकता है भला। मैनें कह दिया कि चाचा मेरी इज्ज़त का सवाल है, ससुराल वालों के सामने – तो चाचा कहने लगा, मेरी नाक नीची नहीं होने देगा। दिन के बारह बजे उसने बैंक जाना है। कह रहा था, तभी पूछेगा खाली फ्लैट के बारे में।"

"बढ़िया रहा। चाचा जुबान वाला है। हाँ, कहा है तो काम अवश्य करा देगा।"

दोनों की नज़रें मिलीं।

"चांदीलाल के पास चलें?" बोला गोलू।

"सोच ले – चांदीलाल इस काम के लिए क्या ठीक रहेगा?" सूरमा बोला।

"एकदम फीट रहेगा। चिंता क्यों करता है। जब उसे पता चलेगा कि इस काम के लिए पचास लाख मिलने हैं, तो उसका रंग देखना।"

"साले को पीने के अलावा और कुछ तो सूझता ही नहीं। चल, मिलते हैं उससे।"

□□

लाल बत्ती वाला तिराहा पार करके दोनों पांच-सात मिनट पैदल चले और सड़क के साथ लगती चौड़ी गली में प्रवेश कर गए।

बीस फीट चौड़ी गली थी। खडंजा लगा हुआ था।

किनारों पर पानी की निकासी के लिए छोटी-छोटी नालियां थीं। उस लम्बी गली में दो-तीन कारें और दो-तीन ट्रैक्टर ट्राली खड़ी थी। धुप और गर्मी से झुलस रही थी गली। एक-आध व्यक्ति ही आता-जाता दिखाई दे रहा था।

गली में मिले-जुले कच्चे-पक्के मकान थे। कोई दो मंजिला बना हुआ था, तो कहीं कच्चा-सा कमरा डाला हुआ था। सबने अपनी जरुरत के मुताबिक़ बना रखा था। गली में कुछ भैंसे भी बंधी नज़र आ रही थीं। कुछ आगे गली में लगे पेड़ की छाया में दो-तीन व्यक्ति बैठे थे।

"चांदीलाल घर में होगा?" सूरमा ने पूछा।

"जाना कहाँ हैं उसने।"

कुछ आगे जाकर एक मकान की दीवार के पास जाकर रुके, जहाँ गेट की जगह तो थी परन्तु गेट नहीं लगा था। दोनों भीतर प्रवेश कर गए।

पीछे दो कमरे बने हुए थे। आगे काफी खुला आँगन था, जहां नीम का फैला हुआ पेड़ लगा था। उसी पेड़ की छाया में तख़्त पर वो साठ वर्षीय व्यक्ति बैठा था, जो कि चांदीलाल ही था। उसके सिर के बाल चांदी की तरह सफ़ेद हुए चमक रहे थे। भरा हुआ चेहरा। आँखों के किनारों पर झुर्रियां थीं। चेहरा लाल-सा, तपने जैसा था।

उन दोनों को देखते ही चांदीलाल के चेहरे पर मुस्कान उभरी।

"कैसे हो चांदीलाल?" गोलू मुस्कुराया।

"तुम दोनों बच्चे इधर कैसे?" चांदिलाल कह उठा – "कोई ग्रह तो जरुर भारी हैं, जो राहू-केतु इधर आ गए हैं।"

"सारे ग्रह ठीक हैं चांदीलाल।"

दोनों उसके पास तख़्त पर जा बैठे।

"पानी पीना है तो तो घड़ा रखा है।" चांदीलाल ने छाँव में रखे घड़े की तरफ इशारा किया।

"आज सूखे-सूखे कैसे बैठे हो? नावां ख़तम हो गया लगता है।"

"पेंशन आती है हर महीने। खाने वाला सिर्फ मैं, बेटी ब्याह दी। नावां क्यों ख़त्म होगा।"

"घूँट नहीं लगा रखा।"

"गर्मी बहुत है। पीने का मन नहीं कर रहा था। बीयर महँगी बहुत आती है।"

"हमारे होते हुए तो महँगी-सस्ती की फ़िक्र क्यों करता है।" सूरमा ने मुस्कुरा कर कहा और जेब से पांच सौ का

नोट निकाल गोलू की तरफ बढ़ाया – "जा चांदीलाल के लिए बियर ले के आ।"

"चांदीलाल के लिए?" गोलू ने नोट थामते हुए सवालिया नज़रों से सूरमा को देखा।

"हम भी पी लेंगे। तू पांच सौ की ले आ, जितनी आती है।"

गोलू तख़्त से उतरा तो चांदीलाल बोला।

"वो उधर छोटा वाला बोरा रखा है, ले जा। हाथ में बोतलें नहीं आएँगी।"

गोलू उधर रखा बोरा उठाकर बाहर निकल गया।

चांदीलाल ने मुस्कुराकर सूरमा को देखा।

सूरमा भी मुस्कुराया।

"आजकल खूब नोट पीट रहे हो बच्चू।" चांदीलाल मुस्कुराया।

"कहाँ चांदीलाल। ये तो कुछ नोट कल सड़क पर पड़े मिल गए थे। उसी से ऐश हो रही है।"

"मेरे को तो सड़क पर से नोट कभी नहीं मिले।"

"वो तेरी किस्मत। मुझे तो कल सड़क पर पड़े नोट मिले। तभी तो तुझे बियर पिला रहा हूँ।"

"कितने मिले?"

"कितने क्या, आज तो वो सारे ख़त्म हो जायेंगे। एक-दो ही बचे हैं। जूते भी खरीदने हैं।"

चांदीलाल सूरमा को देखने लगा।

"क्या देख रहा है?"

"भरी दोपहरिया में खामखाह आना और मुझे बियर पिलाना, बात तो कुछ है।"

सूरमा सकपकाया, फिर कह उठा।

"ठीक है, मैं अभी गोलू को आवाज़ लगाके बुला लेता हूँ।"

"रहने दे, गोलू को तू क्यों तकलीफ देता है। मेरा कोई बेटा होता तो तेरे जैसा होता आज।"

सूरमा समझ गया कि चांदीलाल मक्खन लगाने पे उतर आया है।

"धंधा कैसा चल रहा है?"

"बेकार। मैं तो दिल्ली जाने की सोच रहा हूँ। वहीं कुछ करूँगा।"

"दिल्ली में तो और भी बुरा हाल है।"

"यहाँ तो रोटी चलानी कठिन हो रही...।"

"यहाँ जो सामान पांच रुपये में खायेगा, वो वहाँ पचास में मिलेगा। तू नहीं जानता दिल्ली को। मेरी मान तो यहीं पर कोई दूसरा काम कर ले। बहू-बच्चा कैसे हैं?"

"बहुत बढ़िया हैं।"

"बहू को लेकर आना कभी।"

"लाऊंगा।" सूरमा बोला – "तुम खाली बैठे रहते हो, काम करो कुछ – दो पैसे ज्यादा आ जाएंगे।"

"क्या करने हैं मैनें पैसे?"

"अपनी बेटी को दे देना। वो सुखी हो जायेगी।"

"मेरे लायक अब काम ही क्या बचा है।"

"तू कहे तो मैं दिला दूं काम।"

"क्या काम?"

"नाटक मण्डली में काम करेगा। बाप बन जा, बीस-चालीस लाख तो मिल ही जायेंगे।"

चांदीलाल ने सूरमा की आँखों में झाँका।

सूरमा मुस्कुराया।

"सीधी-सीधी बात कर। मैं कोई पराया तो हूँ नहीं तेरे लिए।"

सूरमा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"जिस बात के लिए आया है, कह डाल। सोचता क्या है?"

"एक नकली परिवार का बड़ा बनना है कुछ दिन के लिए। पचास लाख मिलेंगे।"

"पचास लाख!"

"पुरे पचास लाख। कड़कड़ाते हुए असली नोट। बैंक की मुहर लगी होगी गड्डियों पर।"

"एक बार फिर बता – सारी बात तो बता।"

"पूरी बात सुनकर तू पीछे हटा तो पप्पू भाई साहब तेरे को जिंदा नहीं छोड़ेंगे, मार देंगे।"

"पप्पू भाई साहब! ये कौन हैं?"

"वो ही जो बैंक में डकैती डाल रहा है – जो मेरे को करोड़ और तेरे को पचास लाख देगा।"

"अबे चुप कर। धीरे बोल – किसी ने सुन लिया तो घर में डकैती डलवा देगा।" चांदीलाल हड़बड़ाकर कह उठा – "बैंक डकैती पड़नी है या पड़ गयी?"

"पड़नी है।"

"कौन डालेगा?"

"पप्पू भाई साहब।"

"तू मुझे सब कुछ बता दे।"

"सुनकर किसी को बतायेगा तो नहीं?"

"ससुरे, पचास लाख मेरे को मिलेंगे तो मैं क्यों बताऊंगा। चल बता – ये पप्पू भाई साहब है कौन?"

सूरमा धीमे स्वर में चांदीलाल को सारा मामला बताने लगा।

□□

गोलू बोरे में बियर की बोतलें ले आया।

तब तक सूरमा ने सारी बात चांदीलाल को बता दी थी और चांदीलाल के सिर के भीतर पचास लाख की घंटी खड़क चुकी थी।

बियर ठण्डी थी। गोलू ने एक-एक बोतल खोलकर उन्हें पकड़ाई और तीसरी खुद के लिए खोली। पास बैठने लगा तो चांदीलाल कह उठा।

"ये बोतलों का बोरा भीतर रख आ। पास रही तो खत्म हो जायेगी।"

"तो क्या हो गया? ख़त्म ही तो करनी है।" गोलू बोला।

"ये बोतलें सूरमा ने मेरे लिए मंगवाई हैं या अपने लिए?" चांदीलाल घुड़ककर बोला।

"तुम्हारे लिए।"

"तो फिर इन्हें खत्म भी मैं ही करूँगा। भीतर रख के आ।"

गोलू बिना कुछ कहे बियर की बोतलों का बोरा भीतर रख आया।

बोतल मुंह से लगाकर वो बियर के घूँट भरने लगे।

“समझा मामला क्या है?” सूरमा बोला।

“सब बता दिया इसे?” गोलू कह उठा।

“हाँ!”

“जवाब में क्या कहता है?”

“अभी कहेगा।”

“मतलब कि मुझे नकली परिवार का बुजुर्ग बनकर कुछ दिन बैंक कॉलोनी के उस फ्लैट में रहना होगा।” चांदीलाल बोला।

“हाँ, आसान काम है।”

“पुलिस का खतरा कितना है इसमें?” चांदीलाल ने बियर का घूँट भरा।

“कुछ भी नहीं। तू खुद ही बता बुजुर्ग बनकर रहने में खतरा है क्या?”

“बुजुर्ग की औलादें जब गड़बड़ वाला काम करेंगी तो खतरा होगा ही।”

“ऐसा कुछ नहीं है, विश्वास कर। काम ख़त्म होते ही यहाँ आ जाना। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि वो बुजुर्ग चांदीलाल था। साथ में पचास लाख तेरे पास होंगे। मजे ही मजे हैं।” सूरमा ने हवा दी।

“इस बुढ़ापे में तू मुझे जेल के फेरे में डालेगा।”

“चांदीलाल तो कुछ ज्यादा ही आगे बढ़ रहा है सूरमे।” गोलू कह उठा।

“ये तो चिंता में पड़ गया लगता है।”

“डकैती होगी कैसे?”

“ये करना पप्पू भाई साहब का काम है। हमें अपने हिस्से के काम पुरे करने हैं।”

चांदीलाल ने बियर का घूँट भरा। सूरमा को देखने लगा।

“सूरमे, चांदीलाल के पेट में मरोड़ उठ रहे हैं। दूसरे अंकल के पास चलते हैं। वो फ़ौरन तैयार हो जाएगा।”

“चुप कर।” चांदीलाल ने पुनः घुड़की दी – “मेरे सामने ड्रामा मत कर।”

“मैं ड्रामा कर रहा हूँ।”

“पचास लाख मिलेगा?” चांदीलाल ने पूछा।

“पक्का।”

“न मिला तो?”

“मेरी गारंटी। विश्वास कर, पक्का मिलेगा लेकिन काम को ठीक ढंग से पूरा होना चाहिए।”

“पप्पू भाई साहब डकैती न कर सका तो...।”

“देख चांदीलाल, हर काम में दो बातें होती हैं – काम होगा या तो नहीं होगा। इनमें से एक बात तो होगी ही। पप्पू भाई साहब को हम भी ठीक से नहीं जानते। नयी-नयी पहचान है लेकिन वो डकैती करने को कह रहा है तो कुछ तो उसने भी सोचा होगा। हम तो यही सोचकर चल रहे हैं कि वो सफल हो। सफल होगा तो तेरे को पचास लाख मिलेंगे ही। उसमें कोई हेरा-फेरी नहीं। वैसे पप्पू भाई साहब शरीफ बंदा है।”

“मतलब कि काम शुरू करो, फिर देखते हैं कि क्या होता है?” चांदीलाल बोला।

"ये ही बात, ठीक बोला तू।" गोलू ने फ़ौरन सिर हिलाया।

तीनों की बोतलें खाली होने को आ रही थी।"

"एक नोट निकाल।" चांदीलाल बोला।

"नोट?" सूरमा सकपकाया – "इसमें नोट की बात कहाँ से आ गयी?"

"पांच सौ का पत्ता निकाल।"

"क्या हो गया तुझे? हम तो काम की बात कर रहे....।"

"जो कहा है, वो कर। जल्दी, देर लगाई तो गड़बड़ हो जायेगी।"

उलझन में फंसा सूरमा जेब से पांच सौ का नोट निकाल बैठा।

चांदीलाल ने हाथ बढ़ाकर नोट उसके हाथ से लिया और अपनी जेब में डाल लिया।

"ये क्या?" सूरमा के होंठों से निकला।

"शगुन है।"

"शगुन?"

"जब मुझे पचास लाख मिले तो ये पांच सौ और बियर के पैसे काट लेना।" चांदीलाल मुस्कुराया।

"कमीनापन गया नहीं।" गोलू मुंह बनाकर बोला।

"पचास लाख मिलेगा तो कमीनापन जाएगा।" चांदीलाल मुस्कुराया।

सूरमा ने गहरी सांस ली और बोला।

"पांच सौ की बात छोड़ मतलब कि तू काम के लिए तैयार है?"

"एकदम तैयार।"

"मौके पर तू पीछे हट गया तो?"

"मलेरिया हो गया तो बात अलग है, वैसे मैं पीछे हटने वाला नहीं।"

"बात फीट।" गोलू ने बोतल खाली करके एक तरफ सरका दी।

"काम कब शुरु करना है?"

"मेरे ख्याल में दो-तीन दिन में। शायद कल तक पप्पू भाई साहब बता दे। अभी काम बहुत हैं। एक औरत और बच्चे का इन्तजाम भी करना है। यानी तेरी बहू का – नकली बहू।"

"तो इसमें दिक्कत क्या है?" चांदीलाल बोला – "अपनी बहू भी है घर में और बच्चा भी।"

"तेरी बहू?" गोलू अजीब से स्वर में कह उठा।

"मेरी नहीं, अपने सूरमा की।"

गोलू ने चौंककर सूरमा को देखा।

"मेरी बीवी!" सूरमा अचकचाया।

"हाँ, उसी की बात कर रहा हूँ।" चांदीलाल मुस्कुराया –

"उसे भी तो पचास लाख मिलेगा। वो सारा तेरी जेब में ही जाएगा। बात भी बाहर नहीं जायेगी। समझाकर उसे इस काम में लगा ले।"

"नहीं।" सूरमा उखड़ा।

"क्यों नहीं?"

"मेरे होते हुए वो किसी और की बीवी बने – ये बात मैं...।"

"नकली बीवी बनना है। क्या तुझे अपनी औरत पर विश्वास नहीं? फिर मै भी तो हर वक़्त उसके पास रहूँगा। उसकी अपनी मर्जी हो तो जुदा बात है, वरना कोई उसे हाथ नहीं लगा पायेगा।"

गोलू सूरमा को देखने लगा था।

सूरमा कुछ व्याकुल-सा दिखा।

"परेशान क्यों हो गया तू?" चांदीलाल कह उठा।

"तू अपने काम की तरफ ध्यान दे।" सूरमा उठता हुआ बोला – "बाकी काम मैं निपटा लूँगा। तू तैयार है न?"

"कितनी बार हाँ कहूं।"

"चल गोलू।"

"तू तो खामखाह नाराज हो गया लगता है। चांदीलाल ने गहरी सांस ली।

"नाराज़ नहीं, मेरे पास काम बहुत है। काम पुरे नहीं करूँगा तो नोट कहाँ से मिलेंगे। तब पप्पू भाई साहब ने अपना रास्ता बदल लेना है। मुझसे मिलना तक नहीं उसने।"

"पप्पू भाई साहब से मुझे भी तो मिलवा दे।" चांदीलाल बोला।

"जब काम होगा, मुलाक़ात हो जायेगी। इतनी फुर्सत नहीं है पप्पू भाई साहब को कि हर किसी से मिलते रहें।"

"अच्छा।" चांदीलाल व्यंग्य से कह उठा – "तू तो बहुत तीसमारखां हो गया है।"

"चल सूरमा।" गोलू बोला।

दोनों बाहर की तरफ बढ़े।

पीछे से चांदीलाल ने कहा।

"काम की खबर करते रहना कि मुझे कब तैयार रहना है।"

□□

दोनों वापस खोखे पर पहुंचे।

खाना ढाबे से पैक कराते लाये थे।

दोनों ही सोचों में गुम थे।

पेड़ के नीचे बैठकर खाना खाने लगे। बियर का मध्यम सा सुरूर सवार था उन पर।

"सूरमे।"

"हाँ!"

"चांदीलाल कहता तो ठीक है।"

"क्या?"

"किसी बाहरी औरत को तलाश करने से बेहतर है, इस काम में अपनी बीवी यानी भाभी को ले ले।"

"नहीं।"

"क्यों नहीं?"

"मैं नहीं चाहता वो ज्यादा लोगों से मिले।"

"तुझे भाभी पर विश्वास नहीं?"

"प... पूरा विश्वास है।" सूरमा बेमन से कह उठा – "लेकिन मैं उसे इस मामले से दूर रखना चाहता हूँ।"

"बेवकूफ है तू। घर आता पचास लाख तू किसी दूसरे को देना चाहता है और काम भी कुछ नहीं करना।"

सूरमा ने गोलू को घूरा।

“कस्तूरी अगर पप्पू भाई साहब के साथ भाग गयी तो?”

“वो क्या बेवकूफ है।”

“बेवकूफ नहीं है, तभी तो कह रहा हूँ। वो साली बहुत दूर तक सोचती है।”

“वहम है तेरा। मुझे तो भाभी ऐसी नहीं लगती।”

“उसकी बात छोड़। किसी और के बारे में सोच की इस काम में किसे हम ला सकते हैं।”

“अभी तो ध्यान में नहीं है। सोचता हूँ, शायद कोई ध्यान में आ जाए।”

दोनों ने खाना समाप्त किया।

“सिगरेट पिला। खोखे से पैकेट ही ले आ।”

गोलू ने पैकेट लाकर दिया तो सूरमा ने सिगरेट सुलगा ली।

“चाचा के पास चलो। बैंक हो आया होगा वो। शायद वहाँ खाली फ्लैट का भी पता कर लिया हो।”

“शाम को चलेंगे। अभी सुस्ती आ रही है।”

गोलू ने कुछ नहीं कहा।”

तभी एक व्यक्ति पंचर हुई कार के साथ वहां रुका।

“पंचर लगाना है।” वो व्यक्ति कार से बाहर निकलता कह उठा।

“सौ रुपया लगेगा।” गोलू बोला।

“पचास रुपये की बियर ख़राब हो जायेगी, जो पेट में डाली है। उसका सारा नशा उतर जाएगा। बाकी बचे

पचास तो इतनी गर्मी में कमाया के, पचास में से।" गोलू ने बैठे-बैठे कहा।

"ठीक है, पंचर लगा। सौ रुपये ले लेना।"

गोलू पंचर लगाने के काम में व्यस्त हो गया।

तभी सूरमा उठते हुए बोला - "अभी आता हूँ।"

"किधर चला?"

"घर, थोड़ी सुस्ती आ रही है। पांच बजे तक आ जाऊँगा।" सूरमा आगे बढ़ गया।

"शाम को चाचा के पास जाना है, भूलना मत।" पीछे से गोलू ने कहा।

□□

सूरमा घर पहुंचा।

गर्मी में कमरा तप सा रहा था।

सूरमा ने महसूस किया कि यहाँ गर्मी में रहना वास्तव में हिम्मत का काम है। कमरे में प्रवेश करते ही सूरमा ठिठका। बच्चा सो रहा था, कस्तूरी हाथ के पंखे से बच्चे को हवा दे रही थी। खुद पसीने से भरी हुई थी। आधे से ज्यादा नज़र आती छातियों में पसीना भरा हुआ था।

"अब तुम आये हो खाना लेने। कब से तैयार कर रखा है।" कस्तूरी कह उठी।

"गोलू जब हर रोज खाना लेने आता है तो तू ऐसे ही बैठी होती है?" सूरमा ने चुभते स्वर में पूछा।

"हाँ, तो क्या क्या हुआ?"

"ये सब उसे भी दिखाती है?" सूरमा ने छातियों की तरफ इशारा किया।

कस्तूरी हंस पड़ी।

"पागलों वाली बातें करता है। वो देख लेगा तो मेरा क्या घिस जाएगा। बेकार की बातें मत किया कर।"

"ये बेकार की बातें हैं।" सूरमा कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"और क्या?" वो पंखा रखकर उठी और मटके से पानी का गिलास भरकर उसे दिया – "ले, पानी पी। दिमाग को ठण्डा कर। धुप से आया है, गर्मी में खामखाह ही गरम हुआ जा रहा है।"

"तू बोत बोलने लगी है।"

"तेरी बातें ही ऐसी हैं। ऐसी कौन-सी औरत है, जो हर वक़्त सिर से पाँव तक ढकी रहती है। थोड़ा-बहुत तो राह चलते भी देख लेते हैं। इस तरह के ख्याल रखेगा तो दुनिया में कहाँ रह पायेगा?"

सूरमा ने पानी पीकर गिलास उसे थमाया।

"खाना लगा दूं?"

"खा लिया है।"

"जेब में नोट हैं, बढ़िया होटल से खाया होगा।" कस्तूरी मुस्कुरा पड़ी।

"मैं गोलू की बात कर....।"

"वहम मत कर। वो मेरे भाई जैसा है। उसे लेकर मन में कोई बुरा ख्याल मत रख। वो भी मेरी इज्ज़त करता है।"

सूरमा गहरी सांस लेकर रह गया।

"पप्पू भाई साहब आये थे?" कस्तूरी ने उसे देखा।

"हाँ, बहुत खतरे वाला काम है।"

"क्या?" कस्तूरी की आँखें चमकीं और चारपाई पर बैठकर वो बच्चे को पुनः हवा करने लगी।

"बैंक लूटने की बात कर रहा है।"

"बैंक डकैती?"

"हाँ!"

"ये पप्पू भाई साहब तो बहुत हौसले वाले हैं। बैंक लूटने की सोचना भी मामूली बात नहीं है।"

सूरमा कस्तूरी को देखने लगा।

"क्या हुआ?"

"तेरे मुंह से किसी दूसरे की तारीफ़ सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"छोटी-छोटी बातों की परवाह मत किया कर। वक़्त पर गधे को बाप बनाने वाली बात है, तारीफ़ की बात नहीं है। तू मुझे ये बता कि और क्या बता रहा था। कैसे कर रहा है बैंक में लूट। बताया कुछ उसने?"

"थोड़ा-थोड़ा।"

"वो ही थोड़ा-थोड़ा बता। एकदम तो तेरे को वो सब कुछ बता नहीं देगा।"

सूरमा ने कस्तूरी को सारी बात बता दी।

"हूँ।" कस्तूरी सोच भरे स्वर में बोली – "बैंक के पिछवाड़े बनी बैंक कॉलोनी में वो फ्लैट लेकर वहाँ नकली परिवार के साथ रहना चाहता है ताकि बैंक लूटने में आसानी रहे।"

"ठीक समझी तू।"

"वो तेरे को बोला बैंक कॉलोनी में फ्लैट का इन्तजाम करने को?"

"हाँ, वहां पर बिना जान-पहचान के तो फ्लैट मिलेगा नहीं। मैनें हार्डवेयर वाले चाचा से कहा है कि वहां पर किराये का कोई फ्लैट दिलवा दे। उसकी बहुत पहचान है, दिलवा देगा। बोला उसे मैंने कि मेरे ससुराल वाले वहाँ रहने को आ रहे हैं।" सूरमा की निगाह कस्तूरी पर थी।

"तो वो फ्लैट का इन्तजाम करवा देगा?"

"हाँ, मेरी बात नहीं टालेगा वो। पुराना जानता है। शाम को जाऊँगा उसके पास, शायद कोई इन्तजाम कर भी दिया हो। नहीं तो मैं कोई दूसरा रास्ता देखूंगा। दूसरा कोई जुगाड़ भिड़ाऊँगा।"

"और क्या किया तूने?"

"चांदीलाल से बात की कि नकली परिवार का बुजुर्ग वो बन जाए। पचास लाख आता देखकर वो तुरंत तैयार हो गया। हाँ करते-करते साले ने हज़ार रुपये की ठोक दी।" सूरमा ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"ये चांदीलाल वो ही न, जिसने एक बार घर आकर मुझे सौ रुपया शगुन का दिया था।"

"हाँ, वो ही।"

कस्तूरी कुछ चुप रही।

"अब दिखावे के लिए उस परिवार में बहू और बच्चे की जरुरत है।"

"हाँ!" सूरमा ने उसे देखा।

"उसे भी पचास लाख मिलेंगे?"

सूरमा ने सहमति में सिर हिलाया।

"तो ये काम मैं करूँगी।"

"क्या?"

"उस नकली परिवार की नकली बहू मैं बन जाऊँगी।"

"नहीं, तू ये काम नहीं करेगी।"

"क्यों?"

"बस, मैंने बोल दिया कि तू नहीं करेगी।" सूरमा ने तेज स्वर में कहा।

"मेरे द्वारा इस काम को करने के दो फायदे हैं पतिदेव जी।" कस्तूरी एक-एक शब्द चबाकर कह उठी – "जैसा कि तुझे पप्पू भाई साहब ने कहा कि बैंक लूट की रकम वो फ्लैट में रखेंगे।"

"तो?"

"सारी रकम पर मेरी नज़र रहेगी। कहीं हमें धत्ता देकर सारी रकम न ले भागे। बाद में तुम खोखे पर ही बैठे न रह जाओ और दूसरी बात है कि इस काम के पचास लाख भी मैं झटक लूंगी।"

सूरमा उसे देखता रहा।

"बाहर से कोई औरत तलाश करोगे और वो बेवकूफ हुई तो सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा। उस औरत के द्वारा बात बाहर निकल गयी तो हम सब फंस जायेंगे।" कस्तूरी समझाने वाले स्वर में कह रही थी – "जितने कम लोगों को ये बात पता चले, उतना ही अच्छा रहेगा।"

सूरमा ने बेचैनी से पहलु बदला।

"क्या सोच रहा है?"

“मुझे तेरे पर भरोसा नहीं।”

“क्यों?”

“तू तो मेरे को छोड़कर किसी और के साथ भागने को कहती है। कल को वहाँ रहकर पप्पू भाई साहब के साथ भाग गयी तो तेरे साथ-साथ मेरा पैसा भी हाथ से निकल जाएगा फिर....।”

“कल रात को तेरे को राजा बनाया ना? मेरे प्यार में कोई कमी देखी, नहीं ना? वो तो मैंनें उस दिन तेरे को गुस्से में कह दिया था कि तू ज्यादा नोट कमाए। क्या तेरा मन नहीं करता कि तू मुझे हर तरह का आराम दे।”

“करता है।”

“इसी तरह मेरा मन करता है कि तू अच्छे-अच्छे कपड़े डाले। मैं तेरे को बढ़िया-बढ़िया खाने को बनाकर दूं। मेरे बच्चे को हर चीज मिले और ये सब तभी होगा, जब तू नोट लाएगा। अब तूने मेरी बात मानी। नोटों की गड्डियां लाने की कोशिश में लग गया – मेरे लिए ये ही बहुत हैं।”

“अगर नोटों की गड्डियां न मिली तो... हम असफल रहे तो?” सूरमा बोला।

“वो भगवान की मर्जी, लेकिन कोशिश तो कर रहे हैं न हम। मेरे दिल को चीरकर देख कि मैं तेरी कितनी इज्ज़त करती हूँ। तूने मेरे को सहारा दिया, मेरे से ब्याह किया, मेरे साथ परिवार बसाया – तो क्या मैं तेरे को छोड़कर किसी और के साथ भाग जाऊँगी? ये तूने सोच भी कैसे लिया?”

“तूने ही...।” सूरमा ने कहा – “कहा था।”

"वो तो मैंने यूँ ही गुस्से में कह दिया था। कल रात को मैंने तेरे को इतना प्यार किया, वो भूल गया। तेरे को राजा बना कर

अपने सिर पर बिठा लिया था।"

सूरमा उसे देखता रहा।

"तेरी बादशाहत में तो हर कोई राजा ही होता है।" सूरमा ने उसे घूरा।

"अब वो वक़्त नहीं रहा। सब छोड़ चुकी हूँ। उस धंधे में तो मज़बूरी में धकेल दी गयी थी और मौका मिला तो भाग निकली। तू बता, साल भर में तेरे को शिकायत का मौका दिया है?"

"मुझे क्या पता – मैनें तो तेरे पे विश्वास किया है।"

"तेरे विश्वास को धोखा दिया?"

"मुझे क्या पता, मैं हर वक़्त तेरे पास तो बैठा नहीं रहता। मेरे पीछे तू क्या करती है, मैं देखता तो नहीं।"

"ये सब तो विश्वास पर ही होता है मेरे राजा। कोई किसी की रखवाली नहीं कर सकता। आगे तेरी मर्जी। तू कहेगा तो पप्पू भाई साहब के साथ नकली परिवार बनाकर कुछ दिन के लिए रह लूंगी। नहीं कहेगा तो नहीं रहूंगी। वैसे भी मैं वहाँ अकेली तो हूंगी नहीं। चांदीलाल भी होगा। हम सबका मकसद बैंक में डकैती डालना होगा। तू क्या समझता है कि ऐसे में वहाँ इश्क चलता रहेगा।"

सूरमा चुप रहा।

"आज तेरा ये हाल है तो कल को करोड़ आ जाने पर तेरा क्या हाल होगा। तू तो मेरे गले रस्सी बाँध देगा।"

"तू पुरानी हो जायेगी तो धीरे-धीरे तुझ पर विश्वास आ जाएगा।"

"आज से ही मुझे पुरानी मान ले। तेरे लिए औरत नयी चीज हो सकती है, मेरे लिए मर्द पुरानी चीज है। किसी को देखकर मेरा दिल नहीं डोलता। मुझे सिर्फ नोट चाहिए, वो भी तेरे से।"

"अगर तूने कोई गड़बड़ की तो?" सूरमा सोच भरे स्वर में कह उठा।

"तो चांदीलाल की ड्यूटी लगा देना कि मुझ पर नज़र रखे। इससे ज्यादा और क्या कहूं तेरे को। मुझे तो शर्म आने लगी कि तुझे मुझ पर विश्वास नहीं। ऐसे में तो हमारी गाड़ी लम्बी नहीं चलेगी।"

सूरमा मुस्कुराया।

"क्यों मुस्कुराता है?"

"अगर तेरी नियत नेक है तो हमारी गाड़ी बहुत लम्बी चलेगी।" सूरमा उठता हुआ बोला – "नकली परिवार की बहू तू ही बनना। वहां सब ध्यान रखना कि पप्पू भाई साहब हमसे कोई हेरा-फेरी न कर ले।"

"फ़िक्र मत कर। इसी वास्ते तो वहां रहूंगी मैं।"

"रात कौन-सी अंग्रजी लाऊं?"

"कल की बढ़िया था, वो ही ले आना – लेकिन मुर्गा अच्छा नहीं था।" कस्तूरी मुस्कुरा उठी।

"आज बढ़िया मुर्गा तैयार करवा के लाऊंगा।"

"अभी कहाँ जाता है, बैठ ना।"

"बैठा तो बहुत देर हो जायेगी। रात को अंग्रेजी के साथ बैठूँगा।" सूरमा ने आगे बढ़कर कस्तूरी का गाल मसला और कमरे से बाहर आ गया। शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी बाहर फैली हुई थी।"

□□

"जल्दी वापस आ गया?" गोलू उसे देखते ही कह उठा।

"मैं तेरी बात पर सोच रहा था कि कस्तूरी को बहू के तौर पर परिवार में सेट कर दूं।"

"मैंने तभी तो तेरे को ये बात कही थी कि ये मुझे मन ही मन जंची थी।"

"इस तरह कस्तूरी पप्पू भाईसाहब पर नज़र भी रख लेगी कि वो सारे नोट लेकर भागे नहीं।"

"ठीक कहा। फिर तो सारे काम हो गए।" गोलू ने कहा – "चांदीलाल परिवार का बुजुर्ग बन जाएगा। कस्तूरी भाभी बहू बन जायेगी। पप्पू भाईसाहब घर के जवान मरद।"

"साथ में पप्पू भाई साहब का छोटा भाई भी तो है।"

"तो क्या हुआ? वो छोटा भाई बनकर रहेगा। संयुक्त परिवार ऐसे ही होते हैं। कुछ ही दिनों की तो बात है, उसके बाद तो सबने नोट लेकर अपने-अपने रास्ते पर चलते बनना है।" गोलू मुस्कुरा पड़ा।

"कस्तूरी अभी बच्ची है, दो-दो मर्दों के साथ कैसे उस फ्लैट में रहेगी?" सूरमा बोला।

“ऐसी भी बच्ची नहीं है, भाभी समझदार है। आदमी को अपनी औरत वैसे ही बेवकूफ लगती है। तू बेकार की बातें मत सोच। कुछ दिन के लिए सब इकट्ठे हो रहे हैं उसके बाद ख़त्म।”

सूरमा ने सिर हिलाया।

“मैं हार्डवेयर वाले चाचा के पास होकर आता हूँ।”

“मैं भी चलूँ?”

“तू यहीं बैठ, ये बात चाचा से मुझे ही करने दे।” कहकर सूरमा आगे बढ़ गया।

□□

घंटे बाद सूरमा वापस लौटा।

“काम हो गया।” सूरमा कुर्सी पर बैठते हुए कह उठा – “चाचा कहता है, आज बैंक में जाकर बात कर ली थी। उधर विनायक साहब अकाउंटेंट हैं। रहते तो वो चंडीगढ़ में हैं – लेकिन बैंक कॉलोनी में उनका फ्लैट खाली पड़ा है, उसे वो किराए पर देना चाहते हैं।”

“तो काम कैसे होगा?”

“कल पप्पू भाई साहब के साथ बैंक जाकर विनायक साहब से मिलूँगा। चाचा ने कहा मेरा जिक्र कर देना। विनायक किराया भी कम लेगा और हर तरफ से ध्यान रखेगा।”

“पप्पू भाई साहब के साथ तू अकेला जायेगा।”

“तो?”

“अरे बेवकूफ, साथ में औरत हो तो सामने वाला ज़रा संभलकर बात करता है। वैसे भी उसे दिखना चाहिये कि

हम लोग घर-परिवार वाले इज्जतदार-शरीफ लोग हैं।" गोलू मुंह बनाकर बोला।

"तो क्या करूँ?"

"घर जा। भाभी को ब्यूटी पार्लर का फेरा लगवा और कहीं दाढ़ी-मूंछ है तो साफ़ करवा दे और भी यहाँ पर जो कुछ होता है, वो भी करवा। भाभी को एकदम चकाचक बना दे। बढ़िया-सी साड़ी लेकर दे। नोट तो अभी हैं तेरे पास। चमकने के लिए और भी जिस चीज की जरूरत होती है, भाभी से पूछ लेना।"

सूरमा गोलू को देखने लगा।

"क्या देखता है?"

"बहुत समझदार हो गया है तू।"

"ये साधारण बात है। इसमें समझदारी वाली कोई बात नहीं है – और तू अभी अपने लिए एक-दो कमीजें और पैंट वगैरह खरीद ले। बैंक वाले विनायक को नहीं लगना चाहिये कि तू पंचर वाला है। रौब जमा के रखना है।"

"बात तो तू ठीक कहता है।"

"तो जा, शाम हो रही है।"

"कौन से ब्यूटी पार्लर ले के जाऊं कस्तूरी को?"

"वो चौधरी की दूध की डेयरी है ना...।"

"हाँ... वो..।"

"उसके पीछे ही माधुरी ब्यूटी पार्लर है। चौधरी की बहू ने ही ये काम खोल रखा है। सुन, वहाँ दूध के वक़्त मत जाना। भीड़ होती है तब – औरतें दूध लेने आती हैं और दाढ़ी-मूंछ भी लगे हाथ साफ़ करवा लेती हैं। फुरसत

के टाइम जाना। दिन में वो खाली बैठी रहती अहि ब्यूटी पार्लर वाली।"

"पर मुझे तो अब ही जाना है।"

"हाँ, ठीक है तू ले जा। वो औरतों के लिए है। आदमियों का भीतर जाना मना है। तेरे को बाहर भैंसों के पास बिछे तख़्त पर ही बैठकर भाभी के बाहर आने का इन्तजार करना होगा। चौधरी की बहू को बोल दियो कि मेरी बीवी को बिना श्रृंगार की चकाचक दुल्हन बना दे।"

सूरमा ने उसे घूरा।

"तू इतना ज्यादा क्यों खुश हो रहा है?"

"करोड़ से ऊपर के नोट आने वाले हैं, खुश क्यों न होऊँ! भाई-भाभी के माल में से कुछ तो अपने को मिलेगा।"

उसके बाद तो सूरमा, कस्तूरी के साथ रात तक व्यस्त रहा।

दो घंटे बाद कस्तूरी पार्लर से बाहर निकली। तब तक अँधेरा हो चुका था। उसके बाद दो साड़ियाँ खरीदी कस्तूरी के लिए और सोने का पानी चढ़े दो हार खरीदे। कस्तूरी जो कहती रही, खरीद होती रही।

रात के नौ बजे जब वापस घर पहुंचे तो साथ में व्हिस्की की बोतल और मुर्गा था।

और रात को कस्तूरी ने सूरमा को फिर राजा बना दिया।

□□

अगले दिन ग्यारह बजे देवराज चौहान खोखे पर पहुंचा।

सूरमा नयी पैंट-कमीज और शेव किये एकदम तैयार खड़ा था। उसकी हालत ऐसी लग रही थी, जैसे बरात में आया हो। गोलू काम करने वाले पुराने कपड़ों में ही था।

इससे पहले कि देवराज चौहान कार से बाहर निकलता, सूरमा पास जा पहुंचा।

"सब काम हो गये।"

"सब काम?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"हाँ, तुम्हारा बाप भी मिल – मेरा मतलब है नकली परिवार का बुजुर्ग तैयार कर लिया है। पुरानी पहचान वाला है, चांदीलाल और तुम्हारी नकली पत्नी और बच्चा भी फिट कर दिया।"

"सब भरोसे के होने चाहिये।"

"मैं कोई काम कच्चा नहीं करता।"

"औरत कौन है?"

"मेरी बीवी। रात को ब्यूटी पार्लर का फेरा लगवा लाया था उसे। नयी साड़ी खरीद दी। खुबसूरत वो है ही। किसी अच्छे खानदान की बहू लगती है। पहले चंडीगढ़ रहती थी। पढ़ी-लिखी भी है।" सूरमा ने कहा।

"ऐसी बीवी तुझे कहाँ मिल गयी?"

"मिल गयी। कहीं दिखी और उठा लाया।" हंसा सूरमा।

"और फ्लैट?"

"वो भी हो गया। चलकर देख लेते हैं।"

"कैसे हुआ?"

"इधर मेरा चाचा है, हार्डवेयर वाला। उसका उसी बैंक में खाता है। चाचा को बताया कि मेरे ससुराल वाले जीरकपुर में बसना चाह रहे हैं। उन्हें बैंक कॉलोनी में फ्लैट ले दे, तो चाचा बैंक में बात कर आया। उधर विनायक है, बैंक में। उसका वहाँ फ्लैट है, वो किराए पर उठाना चाहता है।" सूरमा ने बताया – "वहाँ जाकर फ्लैट देखने का बहाना करना है।"

"चल बैठ।"

सूरमा कार के साथ घूमकर उस तरफ पहुंचा और भीतर बैठ गया।

"पहले मेरे घर चलना होगा। गली के बाहर ही कार रोक देना।"

"क्यों?"

"कस्तूरी तैयार बैठी होगी। फ्लैट देखने जा रहे हो तो घर की लक्ष्मी को भी साथ होना चाहिये। औरत साथ हो तो ठीक रहता है। सामने वाला आदमी दबा-दबा-सा महसूस करता है। संभल के बात करता है।"

देवराज चौहान मुस्कुराया।

"ये बात तेरे को किसने कही?"

"गोलू ने!"

"ठीक कहा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने कार आगे बढ़ा दी।

सूरमा रास्ता बताने लगा।

"तुम मेरे साले और कस्तूरी तुम्हारी पत्नी। विनायक नहीं जानता कि मैं पंचर लगाने का काम करता हूँ। उसे बताने

की जरूरत नहीं है। अगर पता चल जाए तो दूसरी बात है।"

"पता कैसे चलेगा?"

"बैंक का चपरासी बलबीर जानता है मेरे को। वो मुझे देखेगा तो विनायक को जरूर बतायेगा मेरे बारे में।"

कुछ देर बाद सूरमा के कहने पर देवराज चौहान ने गली के मोड़ पर कार रोकी।

"तुम रुको, मैं अभी कस्तूरी को लाया।" कहकर उतरा सूरमा और गली में प्रवेश कर गया।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और कश लेने लगा।

दिन बढ़ने के साथ-साथ गर्मी बढ़ती जा रही थी।

सिगरेट समाप्त हुई।

करीब बीस मिनट बाद सूरमा आता दिखा। साथ में कस्तूरी थी।

चाँद का टुकड़ा लग रही थी कस्तूरी। नीले प्रिंट वाली साड़ी उसे ऐसी जँच रही थी कि देखते ही बनता था। होंठों पर साड़ी से मैच करती नीली लिपस्टिक, आँखों पर भी मेकअप कर रखा था। नाक में फंसे कोके का नग हीरे की भाँती चमक रहा था। बालों को पीछे करके ऊपर को उठता हुआ डिजाइनर जूडा बाँध रखा था। कानों में लम्बे झुमके लटक रहे थे।

साड़ी के नीचे पांवों में ऊँची हील वाले सैंडल पहने हुए थे। बच्चे को गोद में उठा रखा था और ठुमक-ठुमककर चल रही थी।

इस वक़्त कम-से-कम वो सूरमा की पत्नी किसी भी सूरत में नहीं लग रही थी।

उसके साथ सूरमा कार के पास पहुंचा।

"नमस्ते पप्पू भाई साहब।" कस्तूरी अदा के साथ कह उठी – "मैं तो कब से आपसे मिलने को चाह रही थी। जब से आपके बारे में सुना, तभी से मैं सूरमा से कहने लगी कि आपसे मिलवा दे, वो...।"

"चुपकर। ये काम का वक़्त है।"

"तो मैं कौन-सा काम खराब कर रही...।"

"अन्दर बैठ।" सूरमा ने दरवाजा खोला।

कस्तूरी ने मुंह बनाकर सूरमा को देखा।

"मैं आगे बैठूंगी।"

"पीछे बैठ। मुझे पप्पू भाई साहब से बहुत बातें करनी है। बैंक यूँ ही नहीं लूटा जाता।"

कस्तूरी उखड़े अंदाज में पीछे वाली सीट पर जा बैठी। सूरमा ने दरवाजा बंद किया और आगे देवराज चौहान की बगल में जा बैठा। देवराज चौहान ने कार आगे बढ़ा दी।

"आप तो बहुत हिम्मत वाला काम कर रहे हैं।" कस्तूरी कह उठी – "सूरमा बता रहा था कि इस काम के मुझे भी पचास लाख मिलेंगे।"

"अगर सफल हुए तो।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"हाँ-हाँ वो ही।" कस्तूरी ने गर्दन हिलाई – "सफल क्यों न होंगे। आप जो कर रहे हैं, सोच-समझ के ही कर रहे

होंगे। क्या आईडिया है। पहले बैंक कॉलोनी में नकली परिवार को ठहराना और फिर बैंक लूटना।"

"चुपकर।" सूरमा उखड़ा।

"शादी हो गयी आपकी?"

"तेरे को इस बात से क्या लेना-देना कि शादी हो गयी कि नहीं?" सूरमा स्पष्ट तौर पर उखड़ पड़ा।

"तुम चिढ़ते क्यों हो?"

"चिढ़ुंगा क्यों मैं? मैं तो ये कह रहा हूँ कि' काम की बात कर, फ़ालतू नहीं।"

"रात तेरे को राजा बनाया था ना?" कस्तूरी मुंह बनाकर कह उठी।

सूरमा सकपकाया।

"त – तो... इसमें राजा वाली बात किधर से आ गयी। घर चलियो, तब बात करेंगे।" सूरमा कहने के पश्चात मुस्कुराकर देवराज चौहान से बोला – "ये ऐसे ही बोलती रहती है, इसकी बातों पर मत जाना।"

"काम समझा दिया इसे?" देवराज चौहान कार ड्राइव करते बोला।

"हाँ, एक बार तुम्हारे सामने भी समझा देता हूँ।" सूरमा गर्दन घुमाकर कस्तूरी को देखकर बोला – "अब हम बैंक कॉलोनी में किराए के लिए फ्लैट देखने जा रहे हैं। उधर तू पप्पू भाई साहब की बीवी होने का दिखावा करेगी, सिर्फ दिखावा और पप्पू भाई साहब मेरे साले होंगे वहाँ!"

"समझ गयी।"

"तुम लोग पंजाब के नवांशहर से इधर सैटल होने की सोच रहे हो।"

"ठीक है, ठीक है – ज्यादा मत समझा।"

सूरमा सीधा होते देवराज चौहान से कह उठा।

"समझा दिया।"

□□

बैंक के बाहर देवराज चौहान ने कार रोकी तो सूरमा बाहर निकलता बोला।

"मैं भीतर विनायक से बात करके आता हूँ, तुम लोग यहीं रहो।" फिर वो कस्तूरी से कह उठा – "तू पीछे वाली सीट पर बैठना। आगे बैठने की जरुरत नहीं है। पप्पू भाई साहब से ज्यादा बात करने की जरुरत नहीं है।"

"तेरे को रात राजा बनाया...।"

"भाड़ में जा।" सूरमा ने खा जाने वाले स्वर में कहा और बैंक की तरफ बढ़ गया।

दो मिनट बाद ही पचास वर्षीय के साथ बाहर निकला।

देवराज चौहान उन्हें देखते ही बाहर निकला।

"ये मेरे साले साहब पप्पू भाई साहब हैं।" पास आकर सूरमा परिचय कराता कह उठा – "और ये विनायक साहब हैं, बैंक में काम करते हैं। पीछे बैंक कॉलोनी में इन्हीं का फ्लैट है। चाचा जी इन इनसे कल ही बात कर ली थी।"

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर विनायक से हाथ मिलाया।

"मैं आज फ्लैट की चाबी साथ ही ले आया था। इसके चाचा हरबंस ने कल बात की थी मेरे से। मैं अभी चाबी

के साथ चपरासी को भेजता हूँ, वो आपको फ्लैट दिखा देगा।"

"चपरासी की क्या जरुरत है, हम खुद ही देख...।" सूरमा ने चपरासी का जिक्र आते ही कहना चाहा।

"आप क्यों तकलीफ करते...।"

तभी कार का दरवाजा खोलकर कस्तूरी बाहर निकली।

बच्चा गोद में था।

क्या खुबसूरत लग रही थी वो। होंठ पर दिलकश मुस्कान।

"ये....!" सूरमा ने खुद को संभाला – "ये पप्पू भाई साहब की पत्नी...।"

"नमस्कार जी।" विनायक हाथ जोड़कर बोला – "फ्लैट आपको बहुत पसंद आएगा। मै भी आप जैसे शरीफ लोगों को ही फ्लैट किराए पर देना चाहता था। मेरी तरफ से तो चाबी बेशक अभी ले लीजिये। ड्रोज में रखी है भीतर। चपरासी को भेजता हूँ। वो आपको फ्लैट दिखाता है।" कहकर वो वापस पलट गया।

सूरमा उखड़े स्वर में कह उठा।

"साला, वो चपरासी बलबीर न हो।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"क्यों बलबीर तेरे को काटता है?" कस्तूरी ने उसे देखा।

"चुप कर। इस वक़्त तू मेरी बीवी नहीं है। इस तरह मेरे से बात न कर।"

कुछ देर बाद ही बलबीर वहाँ पहुंचा। सूरमा को देखते ही बोला।

"तूने कब से प्रॉपर्टी डीलर का काम शुरू कर दिया।"

"चुपकर।" सूरमा ने दबे स्वर में घुड़का – "ये मेरा साला।"

"साला?"

"फिर ऊँचा बोला।"

"ओह!"

"चल फ्लैट दिखा।"

"आओ जी आओ – आपको फ्लैट दिखाता हूँ।" बलबीर सूरमा के साथ पचास फीट दूर नज़र आ रहे गेट की तरफ बढ़ गया। गेट पर एक वर्दीधारी वॉचमैन खड़ा दिख रहा था।

पीछे देवराज चौहान और कस्तूरी सामान्य चाल से आ रहे थे।

"ये तेरा रिश्ते का साला है?" बलबीर ने पूछा।

"असली है, रिश्ते का नहीं है।"

"कार वाला है?"

"हाँ!" सूरमा चिढ़ा।

"पैसे वाला लगता है।"

"करोड़पति है।"

"फिर तो तूने बहुत बड़ा हाथ मारा। करोड़पति की लड़की से कैसे ब्याह कर लिया तूने?"

"प्यार-व्यार का चक्कर था।"

तभी गेट आ गया।

वॉचमैन ने पहले ही गेट खोल दिया, क्योंकि बलबीर साथ था।

गेट से भीतर प्रवेश करके सामने बने फ्लैटों की तरफ वे बढ़े।

"मतलब कि तू लड़की को भगा ले गया।"

"हाँ!"

"फिर शादी कर ली?"

"हाँ, अब ज्यादा सवाल मत कर।"

"पूछने दे यार। उत्सुकता है, वो भी तो शांत करनी है। ये बता कि जब तू लड़की को भगा ले गया। उससे ब्याह कर लिया तो ससुराल वालों ने तेरे हाथ-पाँव नहीं तोड़े?"

सूरमा ने गर्दन घुमाकर बलबीर को घूरा।

"बता यार।" बलबीर ने दांत फाड़े।

"नहीं तोड़े।"

"शरीफ-खानदानी लोग होंगे।"

"दो-तीन दिन पहले मैंने सामने बंटी जूस वाले के पास इनकी कार पंचर देखी थी।"

"हाँ, तब वो मेरे पास ही आ रहे थे।"

"तब तेरे साले की बीवी नहीं थी साथ में।"

"वो कल ही नवां शहर से आयी है।"

"ओह, तो नवां शहर में है तेरी ससुराल।"

चलते-चलते बलबीर ने पीछे देखा।

"आगे देख, पीछे क्या देखता है?"

"तेरे ससुराल वालों ने तुझे नावां नहीं दिया कि तू कोई ढंग का धंधा कर सके?"

"अब देंगे। जीरकपुर में ही रहेंगे अब।"

"तभी अपने साले की सेवा में लगा है।"

"उल्लू का पट्ठा।"

बलबीर हंसा फिर बोला।

"एक बात बताऊँ?"

"क्या?"

"तेरे साले की बीवी तोप चीज है।"

सूरमा सकपका उठा।

"तोप?"

"हाँ!"

"चुपकर, वो मेरी....!" सूरमा कहते-कहते रुक गया।

"क्या तेरी?"

"वो मेरी रिश्तेदार है। उसके बारे में ऐसा मत कह।"

"ये तो तेरी बात गलत है। देख तो कैसी सजी-धजी पड़ी है। ये तो पुरानी कहावत है कि औरतों को दिखाने का शौक होता है और मर्दों को देखने का। वो तभी तो सजी-धजी है कि मरद उसे देखें और उसकी तारीफ़ करें। वो ही मैं कर रहा हूँ। आजकल वो ज़माना गया, जब औरतों अपने आदमियों के लिए सजती थीं।"

"क्या बकवास कर रहा है?" सूरमा ने उखड़े स्वर में कहा।

"कुछ गलत तो नहीं बोला।" कहने के साथ ही बलबीर ने पुनः पीछे देखा।

"आगे देख, बार-बार पीछे क्या देख रहा है?"

"कयामत है, क़यामत तेरे साले की बीवी। कम-से-कम जी भर कर तो देख लेने दे।"

"शर्म नहीं आती तेरे को?"

"शर्म नहीं आती तेरे को?"

"क्यों आएगी? तू फिल्म की हिरोइन को देखता है तो क्या तेरे को शर्म आती है?"

"वो बात दूसरी है।"

"तो ये बात भी तीसरी है। साली हिरोइन से भी ज्यादा पटाका है।"

सूरमा ने दांत भींचकर बलबीर को देखा।

"तू क्यों तड़प रहा है?"

"वो मेरी रिश्तेदार है। साले की बीवी। नाजुक रिश्ता है। उन्होंने सुन लिया तो...।"

"ऐसे कैसे सुन लिया। कानों में बात करने में मैं एक्सपर्ट हूँ। बैंक में काम करता हूँ, रोज ढेरों बातें इधर की उधर करनी पड़ती है। यार दिल करता है तेरे साले की बीवी को देखकर आँखें सेंकता रहूँ।"

"तू मानेगा नहीं।"

"होंठ पर क्या बैंगनी रंग की लिपस्टिक लगाई है। एकदम सेक्सी लग रही है। क्या लम्बाई है, चलती है तो एक-एक अंग छलकता है, गालों पर जैसे रसभरी बिठा रखी हो।"

"इतने कम समय में तूने ये सब देख लिया?"

"बैंक का चपरासी हूँ। मेरा काम किसी जासूस से कम नहीं होता। तेरे को क्या पता कि बैंक में चपरासी को जासूसी ज्यादा और काम कम करने होते हैं।" बलबीर ने छाती फुलाकर कहा।

"अब तू मेरी साले की बीवी के बारे में कुछ मत कह।"

"क्यों?"

"मुझे अच्छा नहीं लगता।"

□□

देवराज चौहान, कस्तूरी के साथ चलता बैंक की छोटी-सी इमारत को पार कर आया था। उस इमारत के पिछवाड़े की तरफ लोहे का दरवाजा नज़र आया जो कि बंद था। उस पर सफ़ेद रंग का पेंट किया हुआ था। देवराज चौहान समझ गया कि ये दरवाजा जरुरत पड़ने पर इस्तेमाल होता है।

"पप्पू भाई साहब।" कस्तूरी बोली – "आपका परिवार कहाँ है। बीवी-बच्चे और...।"

"काम की तरफ ध्यान दो। मेरे में दिलचस्पी मत लो।"

"मैं तो यूँ ही आपका डील लगाने के लिए...।"

"मेरे दिल की फ़िक्र मत करो और मेरे से फ़ालतू बात न हो। काम के दौरान मैं सिर्फ काम ही करता हूँ।"

"आपकी मर्जी जी..। मैं आपसे बैंक लूटने के बाद ही बात करूँगी आपके परिवार के बारे में। वो तो मैं इसलिए पूछ रही थी कि अब हमने पैसे वाले हो जाना है तो दीवाली पे मिठाई का डिब्बा लेकर आ जायेंगे। इससे सम्बन्ध पक्का होता है।"

देवराज चौहान कुछ न बोला।

"वो आपके छोटे भाई साहब भी हैं। सूरमा ही बता रहा था। वो कहाँ है?"

तब तक देवराज चौहान ने सूरमा और बलबीर की एक फ्लैट के पास रुकते और बलबीर को जेब से चाबी

निकालते देख लिया था। देवराज चौहान ने फ्लैट की लोकेशन पर नज़र मारी।

आगे का फ्लैट था।

नीचे का फ्लैट था।

लोकेशन बेहतर था।

देवराज चौहान ने गर्दन घुमाकर बैंक की तरफ देखा।

सौ डेढ़ सौ कदम दूर था और बैंक का बंद दरवाजा इसी तरफ था।

सब बेहतर था।

जब वे पास पहुंचे तो बलबीर तब तक फ्लैट का दरवाजा खोल चुका था।

"आइये भाभीजी।" बलबीर मुस्कुराकर कस्तूरी से बोला – "मैं आपको फ्लैट दिखाता हूँ। मर्दों ने घर क्या देखना। घर तो औरत का ही होता है। आदमी तो सुबह गया, फिर रात को सोने ही आता है।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

सूरमा ने तीखी नज़रों से बलबीर को देखा।

बलबीर कस्तूरी के साथ भीतर प्रवेश कर गया।

फिर देवराज चौहान और सूरमा ने भीतर प्रवेश किया।

पहला कमरा हॉल था। तीन बेडरूम थे। सफेदी ताज़ी कराई लगती थी। साफ़-सुथरा और अच्छा फ्लैट था। बलबीर कस्तूरी से कह उठा।

"भाभी जी, इस फ्लैट की सफेदी मैंने ही करवाई थी।

"बहुत बढ़िया काम करवाया था। आप रहेंगी तो पता चल ही जाएगा। आइये, मैं आपको किचन दिखाता हूँ।"

बलबीर कस्तूरी को किचन की तरफ ले गया।

देवराज चौहान बंद खिड़कियाँ खोलने लगा। हॉल की एक खिड़की ठीक बैंक की तरफ खुलती थी और बैंक के पिछवाड़े का बंद दरवाजा नज़र आ रहा था। उसी खिड़की से बाहरी गेट और वहाँ खड़ा वॉचमैन भी स्पष्ट नज़र आ रहा था। वो इधर-उधर नज़रें दौड़ता रहा।

हवादार और मौके का फ्लैट था। यहाँ रहकर हर तरफ नज़र रखी जा सकती थी।

देवराज चौहान ने दूसरी खिड़की खोली तो वहाँ दूसरी तरफ का नज़ारा दिखा। इस खिड़की से दूसरी बिल्डिंग के फ्लैट नज़र आ रहे थे।

सूरमा की गर्दन घूमी तो कस्तूरी को बलबीर के साथ किचन में पाया। उनकी बातों की आवाजें आ रही थी। सूरमा तुरंत हड़बड़ाकर आगे लपका और पास पहुंचकर किचन में झांका।

किचन बड़ी और खुली थी।

बलबीर कह रहा था।

"भाभीजी, आप जो परफ्यूम लगाती हैं, वो तो सामने वाले को मदहोश कर देता है। क्या महक है! वैसे मैं आपको एक खास परफ्यूम दूंगा। मेरा पड़ोसी पिछली बार पकिस्तान गया था मैच देखने, वहाँ से मेरे लिए लाया था। अब मैनें क्या परफ्यूम लगाना है, वो मैं आपको दूंगा। दे दूं भाभी जी?"

"जरूर! परफ्यूमों का तो मुझे बहुत शौक है।"

“ओह! इस बार तनख्वाह मिलेगी तो आपको खरीदकर भी दूंगा।”

“चंडीगढ़ से खरीदना, जीरकपुर में सारा सामान नकली मिलता है।” कस्तूरी ने मुंह बनाकर कहा।

“आप फ़िक्र मत करो भाभी जी, स्विट्ज़रलैंड का एकदम असली परफ्यूम दूंगा। मेरे को परफ्यूमों की बहुत बढ़िया पहचान है। देखना आप तो...!”

तभी सूरमा ने भीतर प्रवेश किया तो बलबीर कह उठा।

“इस किचन में बहुत शानदार खाना बनाएंगी आप। आइये मैं आपको पीछे वाले कमरे की खिड़की दिखाता हूँ, जब भी वो खिड़की खोलेंगी तो सामने मेरे फ्लैट की बालकनी दिखेगी। घर में अकेले रहते जब कभी भी बोरियत हो तो वो खिड़की खोलकर बैठ जाइए तो उधर कभी-कभार मैं दिख जाऊँगा।”

“तेरे को देखकर इनकी बोरियत मिट जायेगी?” सूरमा कुढ़कर बोला।

“क्या पता?” बलबीर ने दांत दिखाए – “मिट भी जाए।”

“मैं लालाजी को खिड़की पर बिठा दूंगा।” सूरमा ने खा जाने वाले स्वर में कहा।

“लालाजी?” बलबीर बोला – “ये कौन है?”

“इनके ससुर है। ससुर चांदीलाल जी।”

“ओह! वो भी साथ रहेंगे?” बलबीर के होंठों से निकला।

“न रहें।”

"अब मैं कौन होता हूँ इस बारे में कुछ कहने वाला।" बलबीर ने गहरी सांस लेकर कहा।

"किचन से बाहर चलो।"

कस्तूरी फ़ौरन बाहर निकल गयी।

"तू सीधा हो जा।" सूरमा धीमे स्वर में बलबीर पर गुर्राया।

"म... मैनें क्या किया है?"

"तू उसे परफ्यूम देने को कह रहा...।"

"वो लेने को तैयार थी तो मैं क्यों नहीं दूंगा।"

"बहुत मार खायेगा तू।" सूरमा ने दांत पीसकर कहा और किचन से बाहर निकल आया।

सामने देवराज चौहान था। सूरमा को देखते ही उसने शांत स्वर में कहा।

"हमें फ्लैट पसंद है।"

"तो फिर देर किस बात की।" सूरमा तुरंत बोला – "विनायक साहब से बात कर लेते हैं।"

"हाँ-हाँ जरूर।" पीछे से बलबीर कह उठा – "विनायक साहब नोट आते देखकर खुश हो जायेंगे।"

वापसी पर विनायक साहब से बात फाइनल हो गयी।

पांच हजार के हिसाब से दो महीने का दस हजार किराया एडवांस में दे दिया। फ्लैट की चाबी मिल गयी। एक-दो दिन में सामान ले आने की बात भी हो गयी।

चलने का वक़्त आया।

बलबीर हाथ जोड़कर कस्तूरी से बोला।

"अच्छा भाभी फिर मिलूँगा। वो खिड़की याद है ना। जब भी खुद को अकेला महसूस करें तो वो खिड़की खोल कर बैठ जाइयेगा – सामने वाली बालकनी में कभी-कभार मैं नज़र आ जाऊंगा। वैसे वो फ्लैट मेरा नहीं है। माथुर साहब का है, मुझे रहने के लिए यूँ ही दिया हुआ है।"

"अच्छा जी।" कस्तूरी ने हाथ जोड़कर कहा।

"वो परफ्यूम स्विट्ज़रलैंड वाला, वो मैं आपको जरुर लाकर दूंगा।"

"जरुर जी। परफ्यूम मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।" कस्तूरी ने प्यार से कहा।

सूरमा खा जाने वाली निगाहों से कभी कस्तूरी को देखता तो कभी बलबीर को।

विनायक भीतर जा चुका था।

वो भी कार में बैठे। कार चल दी।

बलबीर वहीँ खड़ा कार को हाथ हिलाता रहा।

सूरमा ने झुंझलाकर कस्तूरी से कहा।

"तेरे को परफ्यूम लेने की क्या जरुरत थी?"

"मैनें कहाँ लिया? वो देने को कह रहा था, मैंने हां कह दी।"

"हाँ कहने की भी क्या जरुरत थी?"

"वो कौन-सा दे रहा है। यूँ ही बात चल रही थी।" कस्तूरी ने तीखे स्वर में कहा।

"तेरे को वो खिड़की भी बता गया कि वहाँ से वो नज़र आता है।"

"तो मैं कौन-सा खिड़की पर बैठ गयी।" कस्तूरी ने उसी स्वर में कहा।

"वो हरामी तेरे पर फ़िदा हो गया है।"

"तो क्या मैं अपना मुंह काला करके घूमने लगूं? अब मेरी फिदायी शक्ल है तो इसमें मेरी क्या गलती है।"

"फिदायी शक्ल?" सूरमा ने उसे घूरा।

"इंकार क्यों करता है, जो है वो तो है ही।"

सूरमा कुछ कहने लगा कि देवराज चौहान ने टोका।

"तुमने अपने काम बहुत अच्छी तरह पुरे किये।"

"ह.. हाँ!"

"अब तुमने घर का पुराना सामान इकट्ठा करना है, जो...।"

"पुराना सामान?"

"हाँ, जैसे सोफा, अलमारी, बेड – यानी कि देखने वालों को लगे कि एक घर से दूसरे घर सामान शिफ्ट किया गया है। पुराना सामान कई जगह से मिल जाएगा। एक-दो दिन में तुम इकट्ठा कर लोगे सूरमा।"

"हाँ, लेकिन पैसे लगेंगे।"

देवराज चौहान ने एक जेब में हाथ डालकर नोट निकाले।

"ये बीस हज़ार हैं और जरुरत पड़े तो और भी मिल जायेंगे।"

"तुम कहाँ ठहरे हो पप्पू भाई साहब?" कस्तूरी कह उठी – "बता दो, कभी देर-सबेर में जरुरत पड़....।"

"मैं खुद हाज़िर हो जाऊँगा। मेरा पता जानने की जरूरत नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"फोन नम्बर ही बता...!"

"तेरे को क्या जरूरत पड़ी है जानने की।" सूरमा ने गर्दन घुमाकर तीखे स्वर में कहा – "जब भी किसी को देखती है, अपनी डायरी खोलकर नम्बर पूछने लगती है।"

कस्तूरी ने मुंह बनाया और खिड़की के बाहर देखने लगी।

"तुम्हारा प्लान क्या है, बता दो।" सूरमा बोला।

"तुम्हें जानने की जरूरत नहीं और दुबारा मत पूछना।"

"मेरे लिया और कोई काम?"

"काम है, लेकिन वो अभी नहीं बताऊंगा। पहले दूसरा काम करना है।"

"दुसरा काम?"

"मेरा छोटा भाई कर रहा है। उसके पूरा होने पर तेरे को अगला काम बताऊंगा। तब तक तू घर शिफ्ट करने की तैयारी कर। घर तभी शिफ्ट होगा, जब घर का सामान होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं आज ही से घर का सामान इकट्ठा करना शुरु कर देता हूँ।" कहते हुए सूरमा ने जेब थपथपाई, जहां बीस हज़ार रखे थे।

□□

देवराज चौहान उन्हें छोड़कर चला गया था।

सूरमा ने कस्तूरी को कमरे में छोड़ा। जाने लगा तो कस्तूरी ने टोका।

"बैठ, तेरे से बात करनी है।" कहते हुए कस्तूरी ने बच्चे को चारपाई पर लिटा दिया। वो नींद में था।

"क्या?" सूरमा ने ठिठककर उसे देखा।

कस्तूरी ने गंभीर निगाहों से सूरमा को देखा।

ये पप्पू भाई साहब मुझे बहुत खतरनाक लगे हैं।"

"खतरनाक लगे हैं! वो कैसे?" सूरमा के माथे पर बल पड़े।

"ये तो मैं नहीं बता सकती, लेकिन मुझे खतरनाक लगे हैं।"

"बेकार की बात न कर। तू तो...।"

"सूरमा।" कस्तूरी शांत-गंभीर स्वर में कह उठी – "मर्दों को पहचानने का मेरा पुराना तजुर्बा है। तू तो जानता ही है कि जितना मैं अपने को जानती हूँ, उससे ज्यादा मैं मर्दों को जानती हूँ।"

सूरमा कस्तूरी को देखता रहा, फिर आगे बढ़कर कुर्सी पर जा बैठा।

"तो तेरे को पप्पू भाई साहब खतरनाक बंदा लगा है।" सूरमा सोच भरे स्वर में बोला।

"हाँ!"

"तो तेरे को क्या लगता है – वो क्या करेगा?"

"क्या पता?" कस्तूरी के चेहरे पर भी सोच के भाव थे – "पप्पू भाई साहब से सतर्क रहना होगा।"

"क्या वो हमारे पैसे नहीं देगा? दबाकर खिसक जाएगा?"

"इन बातों का मैं क्या जवाब दूं। मेरे को वो खतरनाक लगा तो तेरे को बता दिया।"

"तू उसके साथ ही रहेगी उस फ्लैट में।"

"तो?"

"उस पर नज़र रखना, खासतौर से तब नज़र रखना – जब डकैती सफल हो जाए तो...।"

"वो तो ठीक है, परन्तु नज़र रखने के अलावा मैं कुछ नहीं कर सकुंगी। अगर वो सारा पैसा ले भागने के फेर में होगा तो मैं उसे न रोक पाउंगी।"

"तब की तब देखेंगे।" सूरमा उठा – "मेरे को तो पप्पू भाई साहब अभी तक ठीक बंदा लगा है।"

"ये तो वक़्त बतायेगा।" कस्तूरी बोली – "उसके साथ काम पे लग तो चुके ही हैं। तू अब क्या करेगा?"

"घर का पुराना सामान इधर-उधर से इकठ्ठा करूँगा। जाता हूँ।"

"सुन।"

सूरमा ठिठका।

"अंग्रेजी लाएगा रात को? आज फिर राजा बना दूंगी।" कस्तूरी जानलेवा अंदाज में मुस्कुराई।

"साली, जान ले के ही रहेगी।" सूरमा ने कहा और बाहर निकल गया।

सूरमा खोखे पर पंहुचा।

गोलू बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

"क्या हुआ फ्लैट का?" गोलू ने पूछा।

"बात बन गयी। किराया दे दिया, चाबी ले ली।"

"ये तो बढ़िया रहा।" गोलू गर्दन हिलाकर कह उठा – "पप्पू भाई साहब ने तेरे को कुछ और करने को कहा?"

"हाँ! घर का पुराना सामान इधर-उधर से इकठ्ठा करना है और उसी सामान को लादकर उस फ्लैट में पहुंचाना है, ताकि देखने वाले को पप्पू भाई साहब मध्यम दर्जे के बंदे लगे।"

"समझ गया। सामान तो शाम तक ही हम बहुत खरीद लेंगे। पैसे हैं?"

"बीस हज़ार दिए पप्पू भाई साहब ने।"

"बीस हज़ार में क्या आएगा?" गोलू ने मुंह बिगाड़ा – "बेशक पुराना सामान ही खरीदना है, वो भी बहुत महंगा आता है। बीस हज़ार में तो दो बेड, डाइनिंग टेबल और दो चार स्टूल ही आ सकते हैं।"

"जो आता है, वो ले लेते हैं। कल पप्पू भाई साहब आयेंगे तो और पैसे ले लेंगे। वो कह भी रहे थे कि और पैसे की जरूरत पड़े तो कह देना।" सूरमा ने कहा।

"ठीक है, आज बीस हज़ार का सामान खरीद लेते हैं। ये खोखा बंद कर दें।" गोलू बोला।

"क्यों?"

"काम नहीं करना तो खामख्वाह खोले रखने से क्या फायदा?"

"हमने खोखा न खोला तो आस-पास वाले क्या सोचेंगे कि सूरमा और गोलू कहाँ गए। खोखा क्यों नहीं खोल रहे। आज कल क्या काम कर रहे हैं। जबकि हम इन्हें यहीं घूमते

दिखेंगे। कई तरह के सवाल पहचान वाले हमसे पूछेंगे और हम झूठा जवाब देंगे।”

“ये बात तो ठीक है।” गोलू ने सिर हिलाया।

“खोखा खुला रहा और यहाँ पर न दिखें तो सब यही सोचेंगे कि हम पास ही में कहीं होंगे।”

“ठीक बात। तो खोखा खुला रहने देते हैं। हमें भी तो फुर्सत पाकर बैठने का ठिकाना चाहिए। मिलने का पॉइंट भी तो हो हमारा। खोखा खुला ही रहेगा, फाइनल।” गोलू ने हाथ हिलाकर कहा।

“वो साला बलबीर आज बहुत तंग कर रहा था।” सूरमा ने हाथ हिलाकर कहा।

“बैंक का चपरासी?”

“हाँ!”

“मुझे बता क्या तंग कर रहा था?”

“कस्तूरी की खूबसूरती की तारीफ़ किये जा रहा था।”

“तेरे सामने?”

“तब उसे क्या पता था कि कस्तूरी पप्पू भाई साहब की नहीं, मेरी बीवी है।” सूरमा ने झुंझलाकर कहा – “मेरा तो दिल कर रहा था कि बलबीर का सिर फोड़ दूं। उल्लू का पट्ठा।”

“हौसला रख, जरा-जरा सी बात पर उखड़ते नहीं है। इसमें बलबीर का क्या कसूर। उसे तो नहीं पता था कि वो तेर...।”

“दिल तो जलता है।”

"जलने दे। तू करोड़ रुपये की तरफ ध्यान दे, जो तेरे को मिलेंगे। पचास लाख कस्तूरी भाभी को भी मिलना है। तब मेरे को मत भूल जाना।" गोलू मुस्कुराया – "मुझे भी अपने साथ काम-धंधे में लगा लेना।"

सूरमा उखड़ा रहा।

"सुबह चाचा मिला था उधर बाज़ार में। तब तो दुकान खोलने जा रहा था।" गोलू बोला।

"कुछ कहा उसने?"

"कह रहा था दुकान बेचनी है। कोई ग्राहक हो तो बताना।"

"दुकान बेचनी है!" सूरमा ने अजीब से स्वर में कहा – "उसकी हार्डवेयर की दुकान तो बहुत चलती है। फिर कल मेरे से तो उसने ऐसी कोई बात नहीं की। अचानक दुकान बेचने का प्रोग्राम कैसे बन गया?"

"तेरे को सलाह दूं।"

"क्या?"

"अभी हमारे पास नोट तो आ ही जायेंगे।"

"तो?"

"रखने की समस्या होगी कि कहाँ रखें। काम-धंधा तो हमें तब भी करना होगा।" गोलू अपने हाथ पर हाथ मारकर कह उठा – "तो क्यों ना चाचा की हार्डवेयर की दुकान हम ही खरीद लें।"

"वाह क्या आईडिया है!"

"फिट!"

"फिट!"

“तो चाचा से कह देते हैं की एक ग्राहक है, जो कि दस-पंद्रह दिन बाद आएगा। उससे बात हो गयी है और वो पक्का उसकी दुकान खरीद लेगा।”

“ये न बताएं कि हमने खरीदनी है दुकान।”

“ये कहेगा तो चाचा का पहला सवाल होगा कि पैसे कहाँ से आये हैं हमारे पास?”

“ये सवाल तो वो बाद में भी पूछेगा?”

“तब तो उसके सामने नोटों की गड्डियों का ढेर लगा देंगे। वो तो नोट गिनने में लग जाएगा। उसे होश ही कहाँ रहेगा कि हमसे कुछ पूछना है।”

“ठीक है। यहाँ से चल, पुराना फर्नीचर खरीद ले। उधर दुर्गा फर्नीचर वाला भी पुराना फर्नीचर रखता है। पहले उसके यहाँ चलते हैं। फर्नीचर पर पॉलिश लगवा के बढ़िया चमका देंगे उसे।”

□□

धुप और गर्मी से बचने के लिए जगमोहन ने सिर पर कैप रखी हुई थी।

दोपहर के ढाई बज रहे थे।

जगमोहन इस वक़्त चंडीगढ़ सेक्टर-8 के एक स्कूल के सामने खड़ा था। कल का सारा दिन भी उसने चंडीगढ़ में ही बिताया था।

वजह थी बैंक मैनेजर सोढ़ी का बेटा राजू।

सोढ़ी का इकलौता बेटा राजू, जो कि सेक्टर-8 के स्कूल में आठवीं में पढता था। सोढ़ी की ये एकमात्र औलाद उसकी शादी के कई सालों बाद हुई थी।

बैंकडकैती में एक ऐसे इंसान की जरुरत थी देवराज चौहान को, जो उनके भीतरी रास्तों को आसान बना सके। ये काम सोढ़ी बहुत अच्छे ढंग से और आसानी से कर सकता था।

अब उसी को उठा ले जाने का प्रोग्राम था।

स्कूल में अब कभी भी छुट्टी हो सकती थी। बच्चे बाहर आ सकते थे।

पिछला दिन भी जगमोहन ने राजू पर नज़र रखने को और उसे पहचानने पर ही लगाया था। आज सुबह-सुबह वो चंडीगढ़ आ पहुंचा था और राजू के स्कूल वैन के पीछे-पीछे ही स्कूल तक आया था। सब ठीक था।

राजू ने अब स्कूल से निकलना था और जगमोहन ने उसका अपहरण करना था।

स्कूल के भीतर घंटी बजी। छुट्टी हो गयी थी।

जगमोहन गेट के पास ही खड़ा था। वहाँ स्कूल का दरबान भी खड़ा था। यूँ तो विकेट गेट से ही आना-जाना होता है, परन्तु छुट्टी होने पर दरबान ने पूरा गेट खोल दिया था।

स्कूल के बाहर बच्चों के इन्तजार में कई लोग खड़े थे। स्कूल बसें और प्राइवेट वैन खड़ी थी। रिक्शे खड़े थे। अच्छी-खासी भीड़ थी वहां!

बच्चे स्कूल से निकलना शुरू हो गए थे।

जगमोहन की पैनी निगाह गेट से बाहर निकलते बच्चों पर थी। वो नहीं चाहता था कि उसकी लापरवाही की

वजह से राजू स्कूल वैन में जा बैठे और आज उसका अपहरण करने से चूक जाए।

दस मिनट बाद राजू बाहर निकलता दिखा। नीला पिठ्ठू बैग उसने पीठ पर लाद रखा था।

इससे पहले कि वो गेट से निकलकर स्कूल वैन की तरफ बढ़ता, जगमोहन बच्चों की भीड़ में से निकलता राजू के पास जा पहुंचा। पसीने से तेरह वर्षीय राजू का चेहरा भीगा हुआ था।

"राजू।" जगमोहन ने पुकारा।

अपना नाम सुनते ही राजू उसी पल ठिठका।

"तुम्हारा नाम राजू है न?" जगमोहन ने पास पहुंचकर जल्दी से पूछा।

"हाँ, आप कौन?"

"तुम सोढ़ी साहब के बेटे हो न, जो जीरकपुर बैंक में काम करते हैं।"

"हाँ, आप....!"

"बेटे तुम्हारे पापा का एक्सीडेंट हो गया है, तुम मेरे साथ चलो।"

"पापा का एक्सीडेंट?"

"हाँ, मैं तुम्हें लेने आया हूँ। घर पर तुम्हें कोई नहीं मिलेगा। तुम्हारी मम्मी जीरकपुर में हैं।"

राजू के चेहरे पर उलझन उभरी।

"आप कौन हैं?"

"मैं तुम्हारे पापा के साथ ही काम करता हूँ। तुम्हारी मम्मी ने ही मुझे भेजा है कि तुम्हें ले आऊँ।"

"आपने मुझे पहचाना कैसे?"

"मैं पहले तुम्हारे घर आया था। तुम्हें पहले भी देखा हुआ है मैंने। तभी पहचान लिया। देर न करो। तुम्हारे पापा की हालत ठीक नहीं। हमें जल्दी वहाँ पहुंचना है। आओ बेटे।" जगमोहन ने राजू की कलाई पकड़ी और स्कूली भीड़ से बचाता एक तरफ बढ़ने लगा।

भीड़ से निकलकर वो एक तरफ खड़ी कार में जा बैठे। राजू का स्कूल बैग पीछे वाली सीट पर रख दिया। जगमोहन ने कार आगे बढ़ा दी।

"कैसे एक्सीडेंट हुआ पापा का?"

"अभी बताऊंगा। कुछ देर मुझे आराम कर लेने दो।" जगोहन ने कहा।

कुछ आगे जाकर जगमोहन ने कार एक दुकान के सामने रोकी और वहाँ से दो कोल्डड्रिंक लाया। जेब से उसने एक गोली निकालकर कोल्डड्रिंक में डालू और वो बोतल उसने राजू को दे दी।

खामोश रहकर राजू ने कोल्डड्रिंक समाप्त की।

जगमोहन कार के बाहर खड़ा पीता रहा।

फिर जब जगमोहन बोतलें दुकान पर लौटा के आया तो तब तक राजू पर गोली का असर हो चुका था। वो बेहोश हो गया था। सीट बेल्ट बंधी होने के कारण वो सीधा बैठा नज़र आ रहा था। देखने वाला यही समझता कि बैठे-बैठे नींद में लग गया है।

जगमोहन ने उसे चेक किया। वो ठीक-ठाक बेहोश था।

जगमोहन ने मोबाइल निकाला और देवराज चौहान से बात की।

"काम हो गया है।" लाइन मिलते ही जगमोहन बोला।

"सामान तुम्हारे पास है?"

"हाँ!"

"क्या पोजीशन है?"

"सामान आराम से रखा है और मैं वापस आने को तैयार हूँ।"

"आ जाओ। लेकिन यहाँ मत आना।"

"कहाँ जाऊं?"

"कहीं भी जाओ। सामान को हिफाज़त से रखना। रात खेतों जैसी जगह में बिता देना। जब फ्लैट में शिफ्ट करेंगे, तो सामान को अपने साथ वहीं ले चलेंगे।" देवराज चौहान की आवाज़ आई।

"इसके बाप से बात कब करोगे?"

"आज ही?"

"मैं उसके साथ खुले में रहूँगा तो किसी की नज़र पड़ सकती है।"

"ऐसा नहीं होना चाहिए। कोई सुरक्षित जगह पर ही रुकना।"

"ठीक है।" जगमोहन ने गहरी सांस ली और फोन बंद कर दिया।

□□

बैंक मैनेजर सोढ़ी परेशान था।

दिन के सवा तीन बज रहे थे।

अभी-अभी चंडीगढ़ से उसकी पत्नी का फ़ोन आया था कि राजू स्कूल वैन में घर नहीं पहुंचा। वो स्कूल से निकलते ही गायब हो गया। एक लड़के से पता चला कि वो किसी आदमी के साथ कार में जाते देखा है।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था कि राजू इस तरह गायब हो गया हो।

किसी आदमी के साथ कार में जाते देखा गया है। इस विचार ने उसे परेशान कर दिया था। बैंक के काम में उसका मन नहीं लग रहा था। कहीं कोई उसे उठा तो नहीं ले गया?

नहीं, सब ठीक है। अभी आ जाएगा घर पर।

तरह-तरह के विचार सोढ़ी के मस्तिष्क में आ रहे थे।

तभी फोन की घंटी बजी।

"हेल्लो!" उसने फ़ौरन रिसीवर उठाया।

दूसरी तरफ उसकी पत्नी थी। जिसकी आवाज़ सुनते ही सोढ़ी व्याकुलता से बोला।

"आ गया राजू?"

"नहीं आया। पता नहीं वो कहाँ हैं?" उसकी पत्नी की रोती आवाज कानों में पड़ी – "आप फ़ौरन घर आ जाईये। मुझे घबराहट हो रही है। मेरे बेटे को कुछ हो गया तो मैं जिंदा नहीं....।"

"ऐसी बातें नहीं कहते। मैं आकर पुलिस में रिपोर्ट कराता....।"

"आ जाईये आप।" उधर उसकी पत्नी बिलख उठी।

"अपने पर काबू रखो। आ रहा हूँ मैं।" कहकर सोढ़ी ने फोन बंद किया।

सोढ़ी के चेहरे पर चिंता बरसने लगी थी।

दोनों हाथ सिर पर रखे वो वैसे ही बैठा रहा। ये उसका केबिन था। केबिन के शीशे से बाहर का नज़ारा स्पष्ट दिखाई देता था। काम में लगा सारा स्टाफ व्यस्त था अपने काम में।

हाथों को उसने टेबल पर रखा और शीशे के पार स्टाफ को देखा। सबको देखते हुए वो सोच रहा था कि कितने खुश हैं ये सब, क्योंकि इनके बच्चे स्कूल से घर आ गए हैं।

लेकिन उसका बेटा नहीं आया।

घर जाने के लिए सोढ़ी उठ खड़ा हुआ।

तभी फोन की बेल बजने लगी। टेबल पर दो फोन पड़े थे। उन्हीं में से एक फोन बज रहा था। उसका मन नहीं किया फोन रिसीवर उठाने का।

फोन बजता रहा।

फिर बंद हो गया।

सोढ़ी ने गहरी सांस ली और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

पुनः फोन बज उठा।

सोढ़ी ठिठका और हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया।

"हेल्लो!"

"सोढ़ी?"

"हाँ!"

"राजू मिला?"

"नहीं, मैं घर जा...।" कहते-कहते सोढ़ी ठिठका, फिर उसके होंठो से निकला – "तुम कौन हो?"

दूसरी तरफ देवराज चौहान था, परन्तु वो इस कदर आवाज़ बदलकर बोल रहा था कि सुनने वाला देवराज चौहान के सामने आने पर सोच भी नहीं सकता था कि इसी व्यक्ति ने उससे बात की है।

उस तरफ से खामोशी पाकर सोढ़ी बेचैनी से बोला।

"तुम कौन हो, तुम्हें कैसे पता चला कि राजू घर नहीं पहुंचा? तुम...!"

"राजू मेरे पास है।"

"तुम्हारे पास?" सोढ़ी के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"हाँ!"

"तुम कौन हो?"

"मेरे बारे में जानने की बजाय राजू की फ़िक्र करो।"

"उसे कुछ मत करना।"

"मैं क्या पागल हूँ, जो उसका बुरा चाहूँगा।"

"ठ.... ठीक-ठीक। म.. मेरे बच्चे को छोड़ दो...! प्लीज... उसे छोड़...।"

"अभी नहीं।"

"त.. तो तुम क्या चाहते हो?"

"पहले तो ये तय करो कि क्या राजू की गुमशुदगी की खबर पुलिस में करना चाहोगे?"

"न.. नहीं! मैं पुलिस को खबर नहीं करूँगा।" बोला सोढ़ी घबराकर – "लेकिन मेरे पास ज्यादा पैसे नहीं है, जो है वो तुम बेशक ले लो – परन्तु मेरे राजू को..!"

"मुझे पैसे नहीं चाहिए।"

"तो?"

"कल फोन करूँगा। तब तक जुबान और मुंह दोनों बंद रखना।"

"कल... कल फोन करोगे, तब तक राजू... राजू कहाँ होगा?"

"मेरे पास, पूरी तरह हिफाज़त से।"

"तुम राजू को छोड़ दो। उसे घर आने दो। तुम जो कहोगे, मैं मानूंगा.... तुम...!"

"कान खोलकर सुन लो – पुलिस के पास नहीं जाना। मुंह बंद, जुबान बंद। कल फोन करूँगा। अगर कहीं भी चालाकी की तो वो तेरी गलती होगी।"

"नहीं.. मैं गलती नहीं...!"

उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था।

सोढ़ी ने कांपते हाथों से रिसीवर वापस रखा। रिसीवर वाले हाथ में पसीना आ गया था। माथे पर भी पसीने की बूंदे नज़र आ रही थीं। उसने रुमाल निकालकर पसीना पोंछा।

तभी दरवाजा खोलकर बलबीर ने भीतर प्रवेश किया।

"सर, चाय।"

सोढ़ी ने बलबीर को देखा।

"आपकी तबियत ठीक नहीं लग रही सर।" बलबीर बोला।

"हाँ, घर जाने की सोच रहा था।" सोढ़ी ने अपने को संभाला।

"जी, चाय।"

"रहने दो। लाथूरा को बोल देना, मेरा काम संभाल ले।"

"जी।" बलबीर ने सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

सोढ़ी ने होंठ भींचकर रिसीवर उठाया और घर फोन किया।

उसकी पत्नी ने रिसीवर उठाया।

"हेल्लो!"

"मैं बोल रहा हूँ।"

"राजू नहीं मिला! मैंने कई जगह फोन किया!"

"मुझे पता चल गया है।"

"ओह! कहाँ हैं मेरा बेटा... मेरे जिगर का टुकड़ा?"

"होश में आओ और मेरी बात सुनो।" सोढ़ी की आवाज़ में सख्ती आ गयी थी।

"क्या?"

"राजू को कुछ लोगों ने उठा लिया है।"

"क्या कहते हो, राजू...!"

"मैंने कहा है मेरी बात सुनो। हाय-तौबा छोड़ दो।"

उधर से सुबकने की आवाज़ आई।

"कहो।"

"राजू जिनके पास है, उनका फोन आया था कि हम पुलिस में राजू के गायब होने की खबर न करें और राजू के बारे में शोर न डालें। राजू को उठाने वाले लोग हमसे कुछ चाहते हैं।"

"तो दे दो सारा पैसा! हमारे राजू को वापस...!"

"तुम फ़िक्र मत करो। अगर मेरे बस में हुआ तो मैं राजू को कुछ नहीं होने दूंगा।"

"और क्या कहा उन्होंने?"

"वो बोलते हैं कि ये रात आराम से बिताओ। बाकी बात वो कल करेंगे।"

"तो मेरा राजू रात भर उनके पास पास ही रहेगा?"

"हाँ, उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है कि राजू उनके पास सुरक्षित रहेगा।"

"उनकी बात का क्या भरोसा कि....।"

"इस वक़्त उनकी बात पर विश्वास करना हमारी मज़बूरी है। कोई दूसरा रास्ता नहीं है हमारे पास।"

"आप घर आ जाइये, मेरा मन घबरा रहा...।"

"मैं आ रहा हूँ। तुम मुंह बंद रखना, किसी से कुछ मत कहना। वरना राजू की जान खतरे में पड़ जायेगी। कोई पूछे तो कह देना राजू मौसी के घर गया है।"

"जी!" उधर से सुबकता स्वर कानों में पड़ा।

सोढ़ी ने होंठ भींचे रिसीवर रख दिया।

□□

शाम हो चुकी थी।

जगमोहन की कार चंडीगढ़-जीरकपुर हाईवे पर जीरकपुर के हिस्से में ही सड़क से कुछ हटकर पेड़ों के झुरमुट में खड़ी थी। इस तरह खड़ी थी कि सड़क से कार नज़र न आती थी। आस-पास भी बेतरतीबी से पेड़-झाड़ियाँ उगी हुई थीं, उसके बाद कुछ आगे जाकर खेतों का सिलसिला शुरू हो रहा था।

यहाँ हर तरफ वीरानी ही थी।

राजू को होश आया। हल्की सी कराह के साथ उसने आँखें खोल दी। अभी भी उसने सीट बेल्ट में खुद को फंसे पाया। बेल्ट खोली – नज़र जगमोहन पर पड़ी, जो कि कार के पास ही खड़ा था। कार के भीतर से उठती आवाज़ सुनकर जगमोहन ने भीतर झाँका।

राजू को अपनी तरफ देखते पाया।

"पापा कहाँ हैं?" राजू ने पूछा – "मम्मी किधर है?"

जगमोहन राजू को देखने लगा।

"मैं कोल्डड्रिंक पीते ही बेहोश हो गया। क्या था उस कोल्डड्रिंक में – बेहोशी की दवा?"

"तुम्हारा अपहरण किया है मैनें।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"अपहरण! मतलब की किडनैप?" राजू के होंठों से घबराहट भरा स्वर निकला।

"हाँ!"

"फिर तो तुमने पापा से पैसे भी मांगे होंगे मुझे छोड़ने के लिए।"

जगमोहन कुछ न बोला।

“पापा तुम्हें पैसे दे देंगे। मुझे बहुत प्यार करते हैं वो।” राजू बोला।

जगमोहन चुप रहा।

“यहाँ क्यों तुमने कार रोक रखी है?”

“रात तुमने यहीं कार में बितानी है। तुम्हारे पापा से बात हो रही है – कल बताऊंगा तुम्हें कि कब छोड़ना है?”

“कार में मैं रात भर कैसे नींद ले पाऊंगा?” राजू ने कहा।

“तुम्हें नींद की गोली दूंगा खाने के बाद, ताकि तुम भाग न सको। सुबह ही तुम्हारी आँख खुले।”

“तब भी मैं भाग गया तो?”

“नहीं भाग सकोगे।” जगमोहन मुस्कुराया।

“हूँ! कितने पैसे मांगे हैं पापा से?”

“दस हज़ार।”

“इतने तो वो दे देंगे।” तेरह वर्षीय राजू ने तसल्ली से सिर हिलाया।

जगमोहन दूसरी तरफ देखने लगा।

“मुझे भूख लग रही है। दिन में भी कुछ नहीं खाया।”

“पीछे वाली सीट पर पैक खाना रखा है खा लो। कुछ देर में अँधेरा हो जाएगा फिर खाने मैं परेशानी आएगी।”

राजू दरवाजा खोलकर बाहर निकला और पीछे वाली सीट पर जा बैठा।

□□

अगले दिन सुबह आठ बजे सोढ़ी के घर का फोन बजा।

“हेल्लो!” सोढ़ी ने ही उठाया था रिसीवर।

“हर रोज की तरह बैंक पहुँचो।”

सोढ़ी आवाज़ पहचान चुका था।

“राजू कैसा है?”

“एकदम ठीक। वो...!”

“मेरी बात कराओ उससे।” सोढ़ी व्याकुल स्वर में कह उठा।

“आज राजू से तुम्हारी बात करा दी जाएगी।”

“आखिर तुम चाहते क्या हो? कुछ कहो तो कि तुम्हारी मांग क्या है?”

“बैंक पहुँचों, बाकी बात फिर होगी।” कहकर उधर से रिसीवर रख दिया गया।

□□

जगमोहन का मोबाइल बजा।

दूसरी तरफ देवराज चौहान था।

“कहो।”

“तुमने ठीक बारह बजे बैंक में सोढ़ी को फोन करना है।”

“क्या बात करनी है उससे?”

“राजू की सोढ़ी से बात करा देना।” देवराज चौहान की आवाज़ उसके कानों में पड़ी।

“समझ गया।”

□□

देवराज चौहान जब सूरमा के खोखे पर पहुंचा तो दिन के साढ़े दस बज रहे थे।

सूरमा और गोलू वहाँ मौजूद थे।

देवराज चौहान के पास पहुँचते ही सूरमा मुंह बनाकर कह उठा।

"वाह पप्पू भाई साहब, आपने तो कमाल कर दिया।"

"क्या हुआ?"

"एक घर का पुराना सामान खरीदना है और आपने दिया सिर्फ बीस हज़ार।"

"कितने चाहिए?" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"कम-से-कम पचास हज़ार और चाहिए, तभी एक ट्रक भर सामान खरीद पायेंगे हम।"

"वो फ्लैट तीन बेडरूम वाला है। ऐसे में कम से कम तीन बेड अवश्य लेने हैं। साथ में सोफा भी।"

"तो आप सत्तर हज़ार दे दो। जो बचेगा आपका, वैसे बचेगा नहीं।"

देवराज चौहान ने उसे पांच सौ की गड्डी और बाकी पांच सौ के नोट की शक्ल में खुले नोट दे दिए।

सूरमा ने नोटों को जेब में ठूंस लिया।

गोली जल्दी से बोला।

"चाय लाता हूँ मैं!"

"जरुरत नहीं।" देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई

फिर सूरमा से कहा – "यहाँ नकली दाढ़ी-मूंछ कहाँ मिलेगी?"

"उसकी क्या जरुरत पड़ गयी?"

"जो पूछा है उसका जवाब दो।"

"जीरकपुर में तो कहीं नहीं मिलेगी। उधर कुछ आगे द्वापर नाम की जगह है, वहां मिल जायेगी।"

"मुझे वहाँ ले चलो।"

"सूरमे।" गोलू कह उठा – "लालडू या द्वापर में घर का पुराना सामान सस्ता मिल जाता है। हम भी वहीँ चलते हैं। पप्पू भाई साहब वहाँ ही तो जा रहे हैं। वाप्सो हम सामान के साथ आराम से करेंगे।"

"ये तूने ठीक कहा।"

कुछ देर बाद ही तीनो कार में मौजूद थे।

कार लालडू और द्वापर की तरफ भागी जा रही थी।

"कल फर्नीचर खरीदा कोई?" देवराज चौहान ने पूछा।

"डबल बेड और डाइनिंग टेबल खरीदा है। साथ में कुछ पुरानी कुर्सियाँ और एक मेज। पायदान वगेरह भी ले लिए और दीवार पर लगाने के लिए गाँव की एक पुरानी सीनरी खरीदी है।"

"सारा सामान पुराना-सा दिखना चाहिए।"

"पुराना ही दिखता है।"

रखा कहाँ है?"

"चांदीलाल के घर पर, जो आपके बाप का रोल करेगा।" सूरमा ने कहते हुए दांत फाड़े।

"वहीँ से उठाकर ट्रक में भर लेंगे। ट्रक वाला भी अपनी पहचान का है।" गोलू कह उठा।

"कब शिफ्ट करना है?"

"जब तुम लोग सामान खरीद लोगे घर का।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये काम तो आज निपट जाएगा।"

"तो हम कल शिफ्ट कर लेंगे।"

□□

तब बारह बजने में दस मिनट बाकी होंगे कि बैंक के बाहर कार रुकी और देवराज चौहान बाहर निकला। उसके चेहरे पर दाढ़ी-मूंछे थीं। आँखों पर काला चश्मा चढ़ा हुआ था। हाथ में ब्रीफ़केस पकड़ा हुआ था। कमीज-पैंट और टाई बाँध रखी थी।

ब्रीफ़केस थामे देवराज चौहान आगे बढ़ा और बैंक में प्रवेश करता चला गया। बैंक में रोजमर्रा की तरह चहल-पहल थी। देवराज चौहान ठिठका।

तभी उसने सामने से बलबीर को जाते देखा।

"सुनो।"

"जी!" बलबीर ठिठका।

वो देवराज चौहान को इस मेकअप में पहचान नहीं पाया था।

"सोढ़ी साहब कहाँ मिलेंगे?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सोढ़ी साहब? दो हैं सोढ़ी साहब, एक तो क्लर्क...।"

"मैनेजर सोढ़ी साहब।"

"वो किधर, कोने में केबिन बना दिख रहा है, उसमें बैठे हैं। चले जाईए।"

देवराज चौहान आगे बढ़ गया।

चंद पलों बाद ही उसने सोढ़ी के केबिन में प्रवेश किया।

देवराज चौहान ने उसे सामान्य ढंग से अपने काम में व्यस्त पाया परन्तु वो आँखों से स्पष्ट तौर पर परेशान लग

रहा था। उसने देवराज चौहान को देखा। सामने कुछ पेपर्स रखे थे।

"कहिये।" सोढ़ी ने पूछा।

"मेरे ख्याल में आप मेरा ही इन्तजार कर रहे थे।" देवराज चौहान आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठ गया।

सोढ़ी ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

"मैनें आपको पहचाना नहीं।"

"देवराज चौहान ने भेजा है मुझे।"

"कौन देवराज चौहान?"

"देवराज चौहान डकैती मास्टर, शायद आपने नाम भी सुन रखा हो।"

सोढ़ी चौंका।

"डकैती मास्टर देवराज चौहान!"

"हाँ, आपका बेटा राजू देवराज चौहान के पास ही है।"

"ओह!" सोढ़ी की आँखे फैलती चली गयी।

वो कुछ कहने लगा कि देवराज चौहान बोला।

"वक़्त क्या हुआ है?"

"बारह बजने वाले हैं।" उसने दीवार पर लगी घडी पर निगाह मारकर कहा।

"ठीक बारह बजे फोन बजेगा और तब तुम अपने बेटे से बात कर पाओगे। इस बात की तुम्हें तसल्ली हो जायेगी कि' राजू सही-सलामत है। तुम अपने बेटे से बात करना चाहते थे न?"

"ह... हां!"

"पुलिस को खबर की?"

"न... नहीं की।"

"यार-दोस्तों को कुछ बताया?"

"बिल्कुल नहीं बताया।" सोढ़ी ने दायें-बाएं गर्दन हिलाकर कहा।

"तेरे मुंह से बात निकली नहीं कि तेरा बेटा साफ़।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"न... नहीं, ऐसा मत करना। मेरे बेटे का कुछ बुरा न करना।" सोढ़ी कांपते स्वर में कह उठा।"

"देवराज चौहान के हाथ में है सब कुछ, तू सीधा रहेगा तो देवराज चौहान सीधा रहेगा।"

"म... मैं सीधा हूँ, सीधा हूँ!"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"क्या चाहता है देवराज चौहान?" सोढ़ी का स्वर सूख रहा था।

"पहले अपने बेटे से बात कर ले, उसके बाद...।"

तभी टेबल पर पड़े फोन की घंटी बजने लगी।

सोढ़ी ने जल्दी से फोन की तरफ हाथ बढ़ाया कि देवराज चौहान ने पहले ही रिसीवर पर हाथ रख दिया।

सोढ़ी ने फ़ौरन अपना हाथ पीछे कर लिया।

देवराज चौहान ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"कहो।"

"मैं हूँ।" देवराज चौहान की आवाज़ पहचानते ही दूसरी तरफ से जगमोहन ने कहा।

"बेटे की बाप से बात करा दो।" कहकर देवराज चौहान ने रिसीवर सोढ़ी की तरफ बढ़ाया।

सोढ़ी ने झपट्टा मारने वाले ढंग से रिसीवर थामा।

"हेल्लो.... राजू – राजू बेटे... तुम कैसे हो? तुम ठीक तो हो?"

दो पलों बाद राजू की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं ठीक हूँ पापा। इन लोगों ने मेरा किडनैप कर लिया है।"

"तेरे को मारा तो नहीं इन्होने?"

"नहीं पापा। मुझे तो ये लोग अच्छे लगे हैं। वक़्त पर खाना-पीना देते हैं और....।"

"तू घबरा मत, मैं बहुत जल्दी तेरे को इन लोगों से छुड़ा लूँगा। हौसला रखना बेटे।"

तभी देवराज चौहान ने कहा – "बात हो गयी, अब रिसीवर रख दे।"

"दो... दो बात और...।"

"नहीं, रिसीवर रख।" देवराज चौहान का स्वर सख्त हो गया।

सोढ़ी ने फ़ौरन रिसीवर वापस रखा और माथे पर आये पसीने को पोंछा।

देवराज चौहान ने कश लेकर कहा।

"अब तुम्हें तसल्ली हो गयी होगी कि तुम्हारा बेटा ठीक-ठाक हाल में हैं।"

"ह... हाँ!" सोढ़ी का चेहरा घबराहट से भरा था – "त...तुम क्या चाहते हो?"

"मैं नहीं, देवराज चौहान चाहता है।"

"क... क्या?"

"तुम्हारा बैंक लूटना है उसने।"

"बैंक लूटना!"

"धीरे बोल।"

सोढ़ी ने होंठ बंद कर लिए।

तभी दरवाजा खुला और बलबीर ने कुछ कागज़ थामे भीतर प्रवेश किया।

"चाय मंगवा।" देवराज चौहान धीमे स्वर में बोला।

"सर।" बलबीर पास आकर कागज टेबल पर रखता बोला – "ये मल्होत्रा साहब ने भेजे हैं।"

"ठीक है। तुम दो चाय लेकर आओ।"

"जी।" बलबीर बाहर निकल गया।

"अपना चेहरा ठीक रख। शीशे में बाहर से भीतर का सब कुछ दिखता है।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला।

सोढ़ी ने सामान्य दिखने की चेष्टा की।

"राजू को जिंदा देखना चाहता है या...।"

"जिंदा, पूरी तरह ठीक-ठाक....! वो मेरी एक ही औलाद है। उसे कुछ मत कहना।"

"तो बैंक लूटना है हमने।"

सोढ़ी ने थूक निगलकर गला तर किया।

"त... तो?"

"इस काम में तेरा साथ चाहिए।"

"म... मेरा साथ?" सोढ़ी के चेहरे के कई रंग बदले।

"हाँ तुम..।"

"मेरी नौकरी चली जायेगी! मैं...!"

"तेरी नौकरी नहीं जायेगी। किसी को पता ही न चलेगा कि तूने कहाँ पर गड़बड़ की है।"

सोढ़ी देवराज चौहान को देखने लगा।

"क्या करना होगा मुझे?"

"आज क्या तारीख है?"

"पच्चीस!"

"पहली तारीखों में तेरी ब्रांच में करोड़ों रुपया आता है, जिसे कि पार्टियां अपने कर्मचारियों को तनख्वाह बांटने के लिए ले जाती है। वो पैसा तू दो अलग-अलग दिनों में मंगवाता है।"

"ह.... हाँ!"

"क्यों?"

"एक दिन में मैं उतना ही पैसा मंगवाता हूँ जितना कि खप जाये। बैंक में बेकार न पड़ा रहे कि बैंक बंद होने के बाद कोई उसे लूट ले जाए।" सोढ़ी ने सूखे होंठों को जीभ से गीला करते हुए कहा।

"कितना पैसा आता है कुल मिलाकर?"

"सोलह-सत्रह करोड़।"

"दो अलग-अलग दिनों में?"

सोढ़ी ने हाँ,में गर्दन हिलाई।

"ये पैसा तूने शनिवार को मंगवाना होगा, ताकि शनि की रात और इतवार बैंक में रहे और...।"

"ये नहीं हो सकता।" सोढ़ी के होंठों से निकला।

"क्यों?"

"शनि को हेडऑफिस से पैसे की सप्लाई नहीं आती।"

"क्यों?"

"हेडऑफिस का रुल है – क्योंकि शनि को दो घंटे ही बैंक खुला रहता है। ऐसे में पैसे को बैंक में खामख्वाह ही रखना ठीक नहीं। कोई इमरजेंसी हो तो जुदा बात है।" सोढ़ी ने बताया।

"तुम इमरजेंसी पैदा करो।"

"ये असंभव है। इमरजेंसी में मंगवाया गया पैसा बैंक में रुकना नहीं चाहिए, जबकि तुम चाहते हो कि पैसा बैंक में ही पड़ा रह जाए। मेरी बात अच्छी तरह समझ रहे हो तुम।"

देवराज चौहान ने कश लिया।

तभी बलबीर ने भीतर प्रवेश किया। हाथ में थाम रखी छोटी-सी ट्रे में चाय के दो प्याले रखे हुए थे। प्यालों को टेबल पर रखता हुआ बोला।

"सर, बिस्कुट।"

"है।" सोढ़ी ने शांत भाव में कहा और टेबल का ड्रावर खोलकर बिस्कुट का पैकेट निकाला और यूँ ही खोलकर टेबल पर देवराज चौहान की तरफ रख दिया।

बलबीर सिर हिलाकर बाहर निकल गया।

"मुझे लगता है, तेरे को बच्चे की जान प्यारी नहीं।"

"ऐसा मत कहो। बच्चे के लिए तो ये सब बातें कर रहा हूँ।" सोढ़ी बेबस स्वर में बोला।

"तो कोई रास्ता निकाल। इस बात का रास्ता तू ही बेहतर निकाल सकता है। सोलह-सत्रह करोड़ एक ही बार में मंगाना है तूने और वो रात भर बैंक में ही पड़ा

रहे – क्योंकि उस रात सारा पैसा देवराज चौहान लूट ले जाएगा।"

"बहुत गड़बड़ हो जायेगी। मेरी नौकरी चली जायेगी और...!"

"समझदारी से चलेगा तो तेरा बाल भी बांका नहीं होगा।"

सोढ़ी होंठ भींचकर रह गया।

देवराज चौहान ने सिगरेट ऐश-ट्रे में डाली और प्याला अपनी तरफ सरका के घूँट भरा।

"इसका कोई रास्ता निकाल के रख। देवराज चौहान तेरे को फोन करेगा।"

सोढ़ी ने सिर हिलाया।

"बैंक के स्ट्रांगरुम में कितना पैसा रहता है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कुछ भी फिक्स नहीं है। कभी ज्यादा तो कभी कम।"

"फिर भी कितना?"

"कभी बीस-तीस लाख तो कभी साथ-सत्तर लाख।"

"तेरा मतलब कि एक करोड़ से कम रहता है?"

"हाँ!" सोढ़ी ने मरे ढंग में गर्दन हिलाई।

"और ये जो दरवाजा पीछे को बैंक कॉलोनी की तरफ खुलता है, उसका क्या सिस्टम है?"

"वो दरवाजा बंद रहता है। उसे खोला नहीं जाता। इमरजेंसी के लिए है वो।"

"तू खोलना चाहे तो खोल सकता है उसे कि किसी को पता न चले।"

सोढ़ी हिचकिचाया।

"मुंह खोल।"

"हाँ, खोल सकता हूँ। किसी को इसलिए नहीं पता चलेगा कि वो खुला है, क्योंकि सबको पता है कि वो बंद ही रहता है और बैंक बंद करते वक़्त उसे हर रोज चेक नहीं किया जाता।"

"तेरे को अपने बेटे की ज़िन्दगी चाहिए?"

"हां-हाँ.. वो।"

"तो हमारा काम कर तेरे को बच्चा सलामत मिलेगा। सोलह-सत्रह करोड़ एक ही दिन में मंगवा और वो सारा पैसा रात भर बैंक में पड़ा होंगा चाहिए। तू पीछे वाला दरवाजा खुला रखेगा कि देवराज चौहान उधर से भीतर आकर वो सारा पैसा निकालकर ले जा सके। समझा।"

सोढ़ी ने मरे ढंग से गर्दन हिलाई।

देवराज चौहान ब्रीफ़केस थामे उठ खड़ा हुआ।

"चौबीसों घंटे तुम पर हमारी नज़र रहेगी। जहां भी तूने गड़बड़ की, वहीँ तेरा बच्चा खत्म।"

"मैनें कहा तो है कि गड़बड़ नहीं करूँगा।"

"तो तेरा बेटा भी सलामत रहेगा।"

"वो कब मिलेगा मुझे?"

"काम ख़त्म होने के बाद।"

"लेकिन...!"

"अब तेरे को जो बात करनी हो, देवराज चौहान से करना। उसका फोन कल आएगा तेरे को। वो बहुत गरम दिमाग का खतरनाक बंदा है। उसे कहीं भी न लगे कि तूने

गड़बड़ की है, वरना...।" कहने के साथ ही देवराज चौहान पलटा और दरवाजा खोलते हुए बाहर निकलता चला गया।

सोढ़ी के चेहरे का हाल देखने वाला था।

न तो किसी से कह सकता था। न किसी से सलाह ले सकता था।

कोई हरकत करके अपने बेटे की जान खतरे में न डालना चाहता था।

□□

धुप में राजू पेड़ों के झुरमुटों में खड़ी कार के भीतर बैठा था। शरीर पर स्कूल की ही यूनिफार्म थी, जो मैली हो रही थी। गर्मी में उसका बुरा हाल था।

"मुझे बहुत गर्मी लग रही है।" राजू जगमोहन से बोला।

जगमोहन कार का दरवाजा खोले, टाँगे लटकाए बैठा था।

"गर्मी तो मुझे भी लग रही है।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"किसी होटल में चलते हैं।" राजू बोला – "वहाँ ए.सी. या कूलर तो होगा।"

"तुम यहीं ठीक हो।"

"क्यों?"

"वहाँ तुम चीख-चिल्ला सकते हो। मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर सकते हो।"

"कसम से, मैं चिल्लाऊंगा नहीं।"

"अभी तुम बहुत मजे में हो।"

"वो कैसे?"

"मेरे दोस्त ने एक बच्चे का अपहरण किया था। वो उस बच्चे से खेतों में हल चलवाता था। दो महीने वो बच्चा वहीँ काम करता रहा, जब तक उसे फिरौती नहीं मिली।" जगमोहन बोला।

"ओह!"

"मैं तुमसे हल नहीं चलवा रहा।"

"मैं चला भी नहीं सकता। हल खींचने की ताक़त मेरे में नहीं है।" राजू बोला।

"हल खींचने का वक़्त आया तो ताक़त भी आ जाएगी।" जगमोहन मुस्कुराया।

"तुम मुझे डरा रहे हो।"

"मैं तुम्हें बात बता रहा हूँ कि तुम्हें कितने प्यार से रखा है।"

राजू गहरी सांस लेकर रह गया।

"मेरे पापा ने तुम लोगों को दस हज़ार दिए नहीं?" राजू ने पूछा।

"नहीं।"

"कमाल है। इतने पैसे तो उनके पास घर में ही रखे हैं।"

जगमोहन चुप रहा।

"आज रात का खाना नहीं है हमारे पास।" राजू ने कहा।

"जब अँधेरा होगा, तब ले आयेंगे। तुम्हें भूखे नहीं सोना पड़ेगा।"

"तो क्या आज रात भी यहीं रहना पड़ेगा?"

"हाँ!"

"यहाँ मच्छर बहुत काटते हैं।" राजू ने मच्छर का काटा सूजा हाथ उसे दिखाया।

जगमोहन ने मुस्कुराकर मुंह फेर लिया।

□□

शाम को देवराज चौहान खोखे पर पहुंचा।

सूरमा वहां मौजूद था।

"सामान ले आये?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हाँ, सत्तर हज़ार और पहले का बीस हज़ार ख़त्म हो गया – परन्तु सामान आ गया।"

"इसका मतलब कल हम फ्लैट में शिफ्ट हो सकते हैं।"

"अभी नहीं, कल दिन में। सुबह नौ बजे तुम ट्रक में सामान रखना शुरु कर देना। मैं आ जाऊँगा।"

"ठीक है।"

"अपनी बीवी को सब समझा देना और उसे भी तैयार रखना।"

सूरमा ने सिर हिलाया।

"चांदीलाल को भी साथ ले लेना।"

सूरमा ने पुनः सिर हिलाया।

"तुम सामान वहाँ पहुंचाकर, वहाँ रखवाकर वापस आ जाओगे। मैं बाद में तुमसे यहीं मिलूँगा।"

"ठीक है।"

"चांदीलाल को समझा दिया है सब?"

"वो खेला-खाया आदमी है। उसकी फ़िक्र मत करो।"

"तेरी पत्नी कस्तूरी कोई गलती न कर दे।"

"उसे समझा-समझाकर पका दिया है, वो कोई बच्ची नहीं है। जानती है कि करोड़ों का मामला है। इस बार चांस गँवा दिया तो ज़िन्दगी भर करोड़ों तो क्या किसी भी नोट की गड्डी नहीं देख पायेगी। वो सब संभाल लेगी।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"पप्पू भाई साहब, वो आपका छोटा भाई नहीं दिखा इतने दिनों से?" सूरमा ने पूछा।

"काम पर है।"

"इसी काम पर?"

"हां!"

"सारा काम तो मैंने कर दिया – फ्लैट का इन्तजाम हो गया, बाप का हो गया, बीवी का हो गया, घर का सारा सामान तैयार कर दिया। अब ऐसा और क्या काम बचा है कि जो वो कर रहा है।"

"जो काम तुमने किये हैं, वो करके बैंक लूट लोगे?" देवराज चौहान ने पूछा।

मुझे क्या पता?"

"नहीं पता तो ज्यादा सवाल मत किया करो। एक जगह हाथ डालने के लिए दस जगह हाथ मारने पड़ते हैं। उसके बाद भी पक्का नहीं कि काम होता है या नहीं। तुम्हें जो काम बोले, तुमने कर दिए। अपने भाई को जो काम बोले, वो उन कामों को पूरा करने की चेष्टा में लगा हुआ है।"

"लेकिन मुझे समझ में नहीं आता कि बैंक कैसे लूटा जाएगा।"

"तुम्हें समझने की जरुरत भी नहीं है। गोलू कहाँ है?"

"वो उधर बनवारी की दुकान के सामने द्वापर से लाये फर्नीचर को पेड़ के नीचे सेट करके रखकर उस पर रस्सा बाँध रहा है। बनवारी के नौकर दुकान के बाहर नींद मारते हैं। वो सामान का रात भर ध्यान रखेगा।"

"मैं तुम्हारे पास कल सुबह दस बजे आऊंगा।"

सूरमा ने सिर हिलाया।

देवराज चौहान कार की तरफ बढ़ गया।

□□

अगले दिन बारह बजे ट्रक बैंक कॉलोनी के गेट पर पहुंचा।

गेट पर वॉचमैन मौजूद था।

ट्रक ड्राईवर के बगल में सजी-धजी-चमकती कस्तूरी बैठी थी। आज दूसरी साड़ी बाँध रखी थी। मुखड़ा खूबसूरती से दमक रहा था। बालों की एक लट लहराती-सी माथे पर आ रही थी, जिससे उसकी सुन्दरता को चार चाँद लग रहे थे। ऊपर से शोख चेहरा तो सामने वाला गश क्यों न खाए?

उसकी बगल में खिड़की के पास चांदीलाल बैठा था। सफ़ेद कुरता-पायजामा, पांवो में जूते। सफ़ेद बाल पीछे की तरफ संवार रखे थे और होंठों पर मूंछे।

ट्रक के पीछे सामान पर सूरमा और गोलू चढ़े बैठे थे।

उनके पीछे कार में देवराज चौहान था।

ट्रक रुकते ही चांदीलाल ट्रक की खिड़की से सिर निकालकर वॉचमैन से बोला।

"गेट खोल देख क्या रहा है?"

"कहाँ जाना है?" वॉचमैन उलझन में फंसा पास आया।

"भीतर जाना है। देखता नहीं ट्रक में सामान भरकर लाये हैं। फ्लैट किराये पर लिया है, पुरे दो महीने का किराया एडवांस में दिया है। खोल गेट।"

"कौन सा फ्लैट – बिनायक साहब का?"

"हमें नहीं पता किसका – वो...।"

तभी पीछे से देवराज चौहान पास आ पहुंचा।

देवराज चौहान को देखते ही वॉचमैन कह उठा।

"नमस्कार साहब जी, वो विनायक साहब वाले फ्लैट में जाना है?"

"हाँ!"

"बताया था मुझे साहब ने। बलबीर तो उस दिन से ही दिन में दो बार पूछने आता है कि साहब के फ्लैट में किरायेदार आये कि नहीं। कोई खबर तो नहीं है उनके आने की।" कहकर उसने गेट खोल दिया।

ट्रक आगे बढ़ गया।

देवराज चौहान ने सौ का नोट निकालकर वॉचमैन को दिया तो वॉचमैन ने चार बार सलाम ठोका।

फिर देवराज चौहान कार में बैठकर भीतर प्रवेश कर गया।

तभी वॉचमैन ने देखा बलबीर को, जो बैंक से निकलकर सामने की तरफ आ रहा था।

"बलबीर।" वॉचमैन ने पुकारा।

बलबीर ने ठिठककर उसे देखा।

“किरायेदार आ गए हैं।” वॉचमैन ऊँचे स्वर में कह उठा।

बलबीर फ़ौरन पास आया।

“कौन आ गए हैं?”

“विनायक वाले फ्लैट में किरायेदार...।”

“ओह!” बलबीर का चेहरा चमक उठा। उसने भीतर निगाह मारी। फ्लैट के गेट के पास ट्रक रुक चुका था – “ तू उस बंटी जूस वाले से कह दे कि चार गिलास जूस शर्मा जी तक पहुंचा दे।” कहकर बलबीर गेट के भीतर जाने लगा।

“तू किधर जा रहा है?”

“समझाकर, वो मेरे पहचान वाले हैं। उनके पास भी जाना जरुरी है।”

“लोग अच्छे हैं। साहब ने मुझे सौ रुपया दिया।”

“लोग अच्छे नहीं, बहुत ही अच्छे हैं।” बलबीर भीतर की तरफ बढ़ गया।

“बैंक के काम कौन देखेगा?”

“कोई मुझे पूछे तो कह देना जीरकपुर गया हूँ।”

बलबीर ट्रक के पास पहुंचा।

देवराज चौहान सामने पड़ा।

“नमस्कार भाई साहब।”

“नमस्कार।” देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

तभी चांदीलाल ट्रक से उतरता दिखा तो बलबीर ने फ़ौरन आगे बढ़कर उसके पाँव छुए।

“जीता रह, जीता रह। लेकिन तू है कौन?”

“बलबीर।”

“बलबीर कौन?”

“बैंक का चपरासी, पीछे वाले फ्लैट में ही रहता हूँ।

विनायक साहब को मैंने ही बोला था फ्लैट किराये पर देने के लिए और आपके बेटे को उस दिन मैनें ही फ्लैट दिखाया था।”

“ठीक है, ठीक है। फुर्सत में बात करेंगे।”

लेकिन तब तक बलबीर की निगाह कस्तूरी पर टिक चुकी थी, जो कि ट्रक से उतर रही थी।

“आहिस्ता भाभी जी, संभल के।” बलबीर पास जा पहुंचा – “लाईये अपना हाथ दीजिये, फिर उतरिये।” कस्तूरी ने गोद में बच्चा भी उठा रखा था। कस्तूरी ने अपना हाथ बलबीर को थमा दिया।

फिर जब कस्तूरी उतरी तो बलबीर ने सहारे के तौर पर उसकी कमर में हाथ दे दिया।

सामान के ऊपर चढ़े सूरमा ने ये सब देखा तो सुलग उठा।

“बेटा।” तभी चांदीलाल बलबीर से बोला – “बहू जमीन पर आ गयी है। अब तो हाथ छोड़ दे।”

बलबीर ने फ़ौरन कस्तूरी का हाथ छोड़ा और दांत दिखाता कह उठा।

“भाभी जी, सामान उतारने के लिए मजदूरों की क्या जरुरत थी, मैं ही सारा सामान उतार देता।”

“तू भी हाथ लगा दे।” चांदीलाल बोला = “मनाही थोड़े न है।”

बलबीर की निगाह कस्तूरी पर टिकी रही।

"बलबीर।" कस्तूरी ने खनकते स्वर में कहा – "गर्मी बहुत लग रही है।"

"मैं अभी नींबू-पानी लाता हूँ।"

"नींबू कहाँ से मिलेंगे?"

"चिंता मत कीजिये भाभी। बैंक में बहुत पड़े हैं। मैं अभी आया।" कहकर बलबीर वहाँ से दौड़ता गया।

चांदीलाल कस्तूरी के पास आया और धीमे स्वर में बोला।

"ये तो तेरे पे फ़िदा लगता है।"

"कोई बात नहीं। कुछ दिन की ही तो बात है।" कस्तूरी बोली – "इसे फ़िदा रहने दो।"

"सूरमा को अच्छा नहीं लगेगा।"

"मैं तो आने वाले नोटों की सोच रही हूँ। ये काम हर हाल में होना चाहिए।"

सूरमा और गोलू ट्रक से नीचे आ गए थे।

ड्राईवर बाहर निकला और ट्रक पर चढ़कर सामान उन्हें पकड़ाने लगा। इस तरह सामान नीचे उतरने लगे। चांदीलाल और कस्तूरी गेट पर जा खड़े हुए थे।

देवराज चौहान ने चाबी लगाकर फ्लैट के दरवाजे खोल दिए थे।

तभी बगल वाले फ्लैट का दरवाजा खुला और तीस बरस की औरत बाहर निकली।

"आप आये हैं किराये पर यहाँ?" उसने पूछा।

"नमस्कार जी।" कस्तूरी ने कहा – "हम ही आये हैं।"

"मैं कुर्सियां ला देती हूँ।" वो भीतर गयी और प्लास्टिक की दो कुर्सियां उठा लायी – "अच्छा हुआ, जो आप लोग आ गए। मेरा तो यहाँ मन ही नहीं लगता था। बातें करने के लिए पड़ोस तो होना चाहिए। कौन-कौन है घर में?"

"ये मेरे ससुर जी हैं, मेरे पति हैं, देवर हैं और मेरा ये लाखों में एक।" उसने गोद में उठाये बच्चे को देखा।

"फिर तो भरा पूरा परिवार हैं तुम लोगों का। कितना प्यारा बच्चा है। क्या करते हैं तुम्हारे पति?" वो औरत जैसे एक बार में ही सारी जानकारी ले लेना चाहती थी।

"नवां शहर से आये हैं। बहन यहाँ ब्याही है, तो वहाँ उनका दिल नहीं लगा। सो यहाँ शिफ्ट हो गये। अब यहाँ पर ही कोई काम देखेंगे। होटल खोलने की सोच रहे हैं यहाँ?"

"होटल?"

"हाँ, शिमला में हमारे दो होटल चलते हैं। सोचा एक जीरकपुर में भी डाल लें। पैसे की तो कमी है नहीं। कभी-कभी तो रखने की दिक्कत हो जाती है कि कहाँ रखे।" कस्तूरी ने गहरी साँस लेकर कहा।

"अच्छा....!" औरत ने जैसे खुद को संभाला हो।

"मैं तो बहुत किस्मत वाली हूँ, जो इस घर में ब्याही....।"

"बहन, मेरा भी एक काम कर दे।"

"क्या?"

"मेरी बहन के लिए कोई अच्छा-सा रिश्ता देख...!"

"बहन के लिए?"

"हाँ, चौबीस की है। मेरी तरह ही खुबसूरत है। पतली है, लम्बे बाल हैं, एम.ए. तक पढ़ी है। आजकल नौकरी भी करती हैं, ऐसे ही टाइम पास करने के लिए। दहेज़ वगैरह देने को ज्यादा नहीं है।"

"ठीक है, मैं देखूंगी रिश्ता।"

"तुम बैठो, मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ। मेरे पति इसी बैंक में काम करते हैं। शर्माजी कहते हैं सब उनको। हमारा तो बस खर्चा-पानी ही निकल पाता है।" मिसेज शर्मा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"आप चाय ला रही थीं।"

"अभी लायी।" मिसेज शर्मा पलटकर अपने फ्लैट में चली गयी।

तभी देवराज चौहान पास आया। चांदीलाल से बोला।

"मुझे कुछ काम करना है, मैं जा रहा हूँ। तुम सामान लगवा लेना।"

चांदीलाल ने सिर हिला दिया।

"सुनो जी।" कस्तूरी देवराज चौहान से बोली – "दोपहर का खाना लेते आईएगा। यहाँ कुछ नहीं है।"

"मेरे भरोसे मत रहना। सूरमा से मंगवा लेना।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा।

"सूरमा तो सामान रखवा रहा है।"

"तो बलबीर से कह देना।"

"तुम जाओ, कुछ न कुछ इन्तजाम हो जाएगा।" चांदीलाल कह उठा।

देवराज चौहान कार की तरफ बढ़ गया।

सूरमा, गोलू और ट्रक ड्राईवर सामान उतारने में व्यस्त थे।

कस्तूरी ने चांदीलाल को देखा।

चांदीलाल आस-पास नज़रें दौड़ा रहा था फिर कस्तूरी से बोला।

"शांत जगह है।"

"पप्पू भाई साहब को कब से जानते हो?" कस्तूरी ने धीमे स्वर में पूछा।

"आज पहली बार मिला हूँ।"

"कैसा लगा तुम्हें ये आदमी?"

"जैसा भी हो, मुझे तो अपने काम से मतलब है। काम के बाद नोट मिलने चाहिए।" चांदीलाल मुस्कुराकर बोला।

"मुझे तो ये बोत खतरनाक लगा है।"

"होगा।"

"ऐसा न हो कि बाद में हमें पैसे ने दे और सारे पैसे लेकर भाग जाए।" कस्तूरी ने शंका जाहिर की।"

"ऐसा भी हो सकता है।"

"तुम्हें चिंता नहीं है कि अगर वो सारे पैसे लेकर भाग गया तो?"

"पहले डकैती तो कर लेने दो। नावां सामने तो आ लेने दो।" चांदीलाल शांत स्वर में बोला।

तभी सामने बलबीर जग और गिलासों के साथ भागकर आता दिखा।

□□

देवराज चौहान ने कुछ आगे जाकर कार रोकी और मोबाइल निकाल जगमोहन का नम्बर मिलाया।"

"सब ठीक है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हाँ!" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी – "लेकिन बच्चा इस तरह रहते तंग आ चुका है।"

"हम फ्लैट में पहुँच गए हैं। इस वक़्त वहाँ सामान उतारा जा रहा है।"

"फिर ठीक है।"

"मैं तुम्हें कुछ देर बाद फोन करूँगा और बच्चे को उसी फ़्लैट पर ले जायेंगे। ऐसा करते समय बच्चे को बेहोश रखना जरूरी होगा। उस पर किसी की नज़र पड़ गयी तो...!"

",मुझे बता देना, मैं उसके खाने में या पानी में बेहोशी की दवा डाल दूंगा।" जगमोहन ने कहा – "सोढ़ी से बात हुई?"

"कल हुई थी।"

"क्या बोला?"

"कोई ख़ास समस्या नहीं है, काम हो जाएगा। पैसा एक ही दिन बैंक में पहुंचे, इसका कोई रास्ता निकालेगा और वो पैसा रात भर बैंक में भी रहना चाहिए। अभी उसे फोन करने वाला हूँ।"

"तुम्हारा मतलब कि वो रास्ता निकालेगा?"

"हाँ, बच्चे की खातिर वो सब करेगा। बंद करता हूँ।"

देवराज चौहान ने फोन बंद किया और सोढ़ी को फोन किया।

पहली घंटी पर ही उसने रिसीवर उठाया था।

"हेल्लो!" स्वर में बेसब्री थी।

"पहचाना?"

उधर से सोढ़ी के गहरी सांस लेने की आवाज़ आई।

"हाँ, मैं तुम्हारे ही फोन कर इन्तजार कर रहा था। राजू कैसा है?"

"एकदम ठीक।"

"मेरी बात कराओ।"

"अभी नहीं, शाम को हो पायेगी बात, मेरे काम का क्या हुआ?"

"तुम्हारे काम का कुछ सोचा है मैंने।" सोढ़ी का थका-सा स्वर कानों में पड़ा।

"क्या?"

"ध्यान से सुनना।"

"बोलते रहो।"

"मैं शुक्रवार को सारा पैसा इकट्ठा मंगवा लूँगा। शुक्रवार यानी कि 2 तारीख। ऐसे में बैंक वैन हर बार साढ़े दस बजे पैसा लेकर बैंक आ जाती है। क्या तुम बैंक वैन को रास्ते में रोक सकते हो?"

"रास्ते में?"

"हाँ, इसलिए बैंक तक आते-आते वैन को एक-सवा बज जाए। समझो वैन का टायर पंचर हो जाता है।"

"मुझे वैन की पहचान नहीं – तो मैं कैसे कर पाऊंगा ये काम? देवराज चौहान बोला।

"वैन की पहचान मैं बता दूंगा। उसका रूट मैं बता दूंगा। उसका रंग और नम्बर भी बता दूंगा।"

सोच भरे अंदाज में देवराज चौहान के होंठ भींच गए।

"सुन रहे हो?" उधर से आती सोढ़ी की व्याकुल आवाज़ कानो में पड़ी।

"ऐसा करने से तुम्हें क्या फायदा होगा।"

"शुक्रवार का दिन निकल जाएगा। पैसा जिन पार्टियों को देना है, वो नहीं दिया जा सकेगा और बैंक में ही रहेगा।"

"शनिवार को क्या होगा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"शनिवार दो घंटे के लिए बैंक खुलता है। मैं बैंक में कोई ऐसा झंझट डलवा दूंगा कि शनिवार को भी वो पैसा पार्टियों को ना दिया जा सके। यानी कि वो पैसा सोमवार को दिया जायेगा। तुम्हारे पास शनि की, रवि की और बीते शुक्र की भी रात होगी। इन तीन रातों तक पैसा बैंक में पड़ा रहेगा। तुम आसानी से अपना काम कर सकते हो।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"ठीक रहेगा?"

"हाँ!"

"मेरे बच्चे को तो कुछ नहीं होगा?" सोढ़ी का घबराया-सा स्वर कानों में पड़ा।

"कुछ नहीं होगा। वो तुम्हें सही-सलामत वापस मिल जाएगा।"

"हर रोज, राजू से मेरी बात करवाते रहना।"

"होती रहेगी बात। शनिवार को तुम जहां बैंक की स्टेशनरी रखी होती है या फिर कबाड़ चुपचाप वहाँ आग लगा सकते हो। इस तरह बैंक का कार्य समय बीत जाएगा।"

"हाँ, ये भी ठीक रहेगा।"

"अभी पांच-छः दिन का वक़्त पड़ा है इन कामों में। तुम मुझसे फोन पर बातें करते रहना। वक़्त आने पर मैं तुम्हें बैंक वैन के बारे में बता दूंगा कि किसमें पैसा लाया जा रहा है। तुम उस वैन को पंचर कर देना।"

"ठीक है।"

"तुम देवराज चौहान हो, माने हुए डकैती मास्टर?"

"हाँ!"

"ये जो हो रहा है, क्या बाद में भी इस मामले में फंस जाऊँगा?"

"समझदारी से काम लोगे तो नहीं फंसोगे।"

"एक बार राजू से मिलवा दो।"

"दोबारा मत कहना, वरना मैं फोन पर उससे तुम्हारी बात भी नहीं कराऊंगा।"

"ठीक है, ठीक है – तुम फोन पर ही बात कराते रहना। मेरे बेटे को कुछ होगा तो नहीं?"

"अगर तुम कोई चालाकी नहीं करोगे हमारे साथ तो तुम्हारे बेटे को भी कुछ नहीं होगा।"

"म... मैं कोई चालाकी नहीं करूँगा। सुनो, राजू की माँ बहुत व्याकुल है। भगवान् के लिए एक बार घर के नम्बर

पर फोन करके राजू की उससे बात करा दो। वो पागल हुई जा रही है।"

"करा दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

□□

सामान फ्लैट में पहुँच गया था।

सूरमा और गोलू की हालत बुरी थी।

ट्रक वाले को सूरमा ने पैसे देकर चलता किया था। दोपहर का एक बज रहा था। सूरमा बलबीर से चिढ़ा हुआ था कि वो कोई न कोई बहाना बनाकर कस्तूरी से बातों में लग जाता था।

आज शनिवार था।

बैंक बारह बजे ही बंद हो गया था।

विनायक भी एक बार चक्कर मार गया था और उन्हें नए घर में आने की बधाई दे गया था। सूरमा ने पसीने से भरा चेहरा साफ़ किया और गोलू को देखा।

"काम हो गया।" गोलू ने कहा।

"मुझे तो बलबीर पर गुस्सा आ रहा है।"

गोलू मुस्कुरा रह गया।

"तू दांत फाड़ रहा है।" सूरमा ने तीखे स्वर में कहा।

"कुछ ही दिन की बात है। यहाँ परमानेंट मामला तो है नहीं रहने का।"

"तेरा क्या मतलब, बलबीर को कस्तूरी के साथ...।"

"तू गुस्सा मत कर। गुस्सा करके तू कुछ कर भी नहीं सकता। कस्तूरी इस समय तेरी नहीं, पप्पू भाई साहब की

बीवी बनी हुई है। ऐसे में तू बलबीर को कुछ कहेगा तो अटपटा लगेगा।"

"यही तो दिक्कत है।"

"तू कस्तूरी को कह कि उससे ज्यादा बात न करे।"

"कस्तूरी कहती है कि कुछ दिन की बात है। क्या फर्क पड़ता है। वो डरती है कि बलबीर किसी बात पर शक न खा जाए कि हम यहाँ कोई गड़बड़ करने का इरादा रखते हैं।" सूरमा ने कहा।

"फिर तो भाभी का कहना भी ठीक है। मस्त रह, परवाह मत कर किसी बात की।"

सूरमा कुछ नहीं बोला।

"चल भीतर।" गोलू ने कहा।

दोनों ने फ्लैट के भीतर प्रवेश किया।

चांदीलाल सोफे चेयर पर बैठा था। गोद में उसने बच्चे को बिठा रखा था। कस्तूरी घर के सामान को सेट कर रही थी। किचन का सामान भी किचन में बिखरा पड़ा था।

ड्राइंगरूम में सोफे और तीनों कमरों में बेड लग चुका था। गद्दे भी बिछ गए थे परन्तु चादरें नहीं थी। उन्हें बाज़ार से खरीदना बाकी था। सूरमा ने बहुत सोच-समझकर घर का सामान खरीदा था। न तो कोई चीज फ़ालतू थी और न कम थी।

उन दोनों को देखते ही चांदीलाल बोला।

"निकलो अब तुम दोनों। कोई बात होगी तो पप्पू भाई साहब तुमसे खोखे पर ही मिल लेंगे।"

"बलबीर बहुत चिपक रहा है मेरी बीवी से।" सूरमा ने उखड़े स्वर में कहा।

"मेरे को क्या कहता है, अपनी बीवी से बोल।"

"वो परवाह नहीं कर रही। तू ध्यान रखना कि उन दोनों में बात ज्यादा न बढ़े।" सूरमा ने कड़वे स्वर में कहा।

"ठीक है, मैं ध्यान रखूँगा।" चांदीलाल ने सिर हिलाया – "तू भी अपने मन से शक और वहम निकाल दे। हम यहाँ काम कर रहे हैं, घर नहीं बसा रहे। क्या तेरे को अपनी औरत पर भरोसा नहीं।"

"भरोसा तो है, पर....!"

"मैं ध्यान रखूँगा। तुम दोनों जाओ, तुम्हारा यहाँ रुकना ठीक नहीं।"

तभी कस्तूरी ने भीतर प्रवेश किया।

सूरमा ने उसे देखा।

"मुंह क्यों लटका रखा है?" कस्तूरी बोली – "काम करके थक गया है क्या?"

"चलता हूँ मैं। तू बलबीर से ज़रा दूर रहना।"

"चिंता न कर। वो दो बातें कर लेगा तो मेरा कुछ घिस नहीं जायेगा।"

"ध्यान रखना चांदीलाल।"

चांदीलाल ने सिर हिलाया।

सूरमा और गोलू बाहर निकल गए।

कस्तूरी पुनः घर का सामान सेट करने लग गयी।

तभी मिसेज शर्मा ने भीतर प्रवेश किया।

"ला, मैं तेरा काम हल्का कर दूँ।" उसने कस्तूरी से कहा।

"काम है ही क्या, वो...!"

"अरे चादरें ला, मैं बिस्तरों में बिछा दूं।"

"चादरों वाली गठरी तो नवां शहर में ही रह गयी – और भी बहुत सारा सामान रह गया है। कुछ दिन सांस लेकर मैं नवां शहर जाउंगी तो अपने साथ ही सामान लेकर आउंगी।"

"वहाँ क्या अपना फ्लैट है?"

"फ्लैट नहीं, बंगला है बंगला। पुरे चौदह कमरे हैं। दो नौकर तो सारा दिन साफ़-सफाई में लगे रहते थे।" कस्तूरी ने हाथ हिलाकर कहा – "दोनों नौकर अभी भी उसी बंगले में साफ़-सफाई के लिए रहेंगे। यहाँ तो इतनी जगह नहीं कि उन्हें भी साथ ले आते।"

"यहाँ तो धीरे-धीरे सेटिंग होगी।" मिसेज शर्मा ने प्रभावित अंदाज में सिर हिलाया।

"यहाँ तो हम साल-दो साल ही रहेंगे। फिर अपना बंगला बनवा लेंगे। मुझे तो बंगले में रहने की आदत हो गयी है, फ्लैट तो बहुत छोटा लगता है। क्या करें, अभी तो काम चलाना ही है।"

मिसेज शर्मा सिर हिलाकर रह गयी।

"आपके बच्चे स्कूल से आ गए?" कस्तूरी ने पूछा।

"बच्चे हुए ही नहीं। तेरे जीजा बहुत ढीले हैं। मिसेज शर्मा ने मुंह बनाकर कहा।

"ढीले?"

"हाँ, बच्चे पैदा कर सकने का दम नहीं है। कई बार तो सोचती हूँ कि महीने-दो महीने के लिए मायके जाऊं और वहीं कहीं आस-पड़ोस से बच्चे का इन्तजाम कर लूं। अब इस तरह तो ज़िन्दगी कटनी भी कठिन है।"

कस्तूरी ने सिर हिलाया।

"अब तो शर्मा जी भी इशारों-इशारों में कह चुके हैं कि बच्चा किसी से कर लूं। वो भी क्या करें, लोग उनसे भी तो पूछते हैं कि बच्चा क्यों नहीं है। किसमें कमी है। वे भी इन सवालों से तंग आ चुके हैं।"

तभी चांदीलाल की आवाज़ आई।

"बहू।"

"आई पिताजी।" कस्तूरी ने सहज स्वर में कहा।

"किचन का सामान पहले ठीक से रख दे। कुछ खाना-पीना हो जाए। बाकी काम तो होते रहेंगे।"

"मैं किचन का सामान लगा देती हूँ।" मिसेज शर्मा बोली – "और अपने घर से खाने का इन्तजाम भी....!"

"तू क्यों तकलीफ करती....।"

"इसमें तकलीफ कैसी, अब तो हम पड़ोसी हैं।" मिसेज शर्मा ने मुस्कुराकर कहा और किचन में चली गयी।

पांच मिनट भी न बीते होंगे की बलबीर की आवाज आई।

"भाभी जी, कहाँ हैं भाभी जी?" इसके साथ ही बलबीर ने भीतर प्रवेश किया।

"आ बेटा आ, बैठ।" चांदीलाल ने बच्चे को खिलाते हुए कहा।

बलबीर ने हाथ में दो लिफाफे थाम रखे थे। चांदीलाल की बात जैसे उसने सुनी ही नहीं।

"भाभी जी।"

"यहाँ बैठ। आ जाती है बहू।"

लेकिन बलबीर भीतर वाले कमरों में प्रवेश कर गया। कस्तूरी दिखी।

"लो भाभी जी।" बलबीर ने मुस्कुराते हुए लिफ़ाफ़े कस्तूरी की तरफ बढ़ाए – "गरमा-गरम खाना। राजमा है, कोफ्ते की प्लेट लाया हूँ खासतौर से आपके लिए और साथ अमूल मक्खन के परांठे। अपने सामने परांठे बनवाये हैं कि कहीं मक्खन पार न कर दे होटल वाला।"

कस्तूरी लिफाफों को थामती कह उठी।

"ओह बलबीर, तुम इतनी तकलीफ क्यों उठा रहे हो।"

"तकलीफ कैसी भाभी जी। जीरकपुर से तो लाया हूँ। बैंक की वैन बंद होने के बाद मेरे पास ही रहती है। पेट्रोल सरकारी होता है। आपने कहीं बाज़ार चलना हो तो मेरे साथ चलना।" बलबीर मुस्कुराया।

ड्राइंगरूम में बैठा चांदीलाल बड़बड़ा उठा।

"ये साला झंडा गाड़ के ही रहेगा।"

तभी किचन से मिसेज शर्मा निकली।

बलबीर उसे देखकर सकपका उठा।

"भाभी जी आप!"

"क्यों रे, तेरे को मैं तीन दिन से कह रही हूँ की एक किलो बेसन ला दे। वो तो तू लाया नहीं और नयी आई को तू मक्खन के परांठे खिला रहा है।" मिसेज शर्मा ने कहा।

"जी, ये भी तो घर का काम है।" बलबीर सकपकाकर बोला – "मैं खाना लाकर ने देता तो बेचारे भूखे रह जाते। ताजा-ताजा सामान शिफ्ट किया है। खाना कैसे बनता?"

"वो तो मैं खिला देती, तू ये बता मेरा बेसन क्यों नहीं लाया?"

"वो मैं अभी ला देता....!"

"अब तो शर्मा जी जीरकपुर गए हैं। दो-चार चीजें और भी लानी थी। तू सीधा हो जा, वरना बैंक की वैन को ज्यादा न घुमा पायेगा।" मिसेज शर्मा ने सतर्क करने वाले अंदाज में कहा।

बलबीर दांत दिखाकर रह गया।

"आईये मिसेज शर्मा, खाना खा लेते हैं।"

दोनों किचन की तरफ बढ़ गयी।

"भाभीजी! मैं भी खाऊंगा। आज शनिवार हैं, बैंक बंद हो चुका है। छुट्टी वाले दिन खाने की थोड़ी-सी दिक्कत रहती है। परांठे कम नहीं पड़ेंगे। ज्यादा बनवा के लाया हूँ और कोफ्ते सिर्फ आपके लिए हैं।"

तभी मिसेज शर्मा किचन के दरवाजे पर दिखाई दी।

"क्यों रे, अगर कोफ्ते मैं खा लूंगी तो क्या मेरा पेट खराब हो जाएगा?"

"म... मैनें ऐसा कब कहा?"

"तो बार-बात क्यों कहता है कि कोफ्ते सिर्फ आपके लिए हैं।"

तभी चांदीलाल की आवाज़ आई।

"बलबीर बेटे यहाँ आ जा।"

बलबीर वहाँ से खिसका और चांदीलाल के सामने आ बैठा।

"मरद, मर्दों मे ही बैठा अच्छा लगता है।"

"अंकल जी।" बलबीर मुंह लटकाकर बोला – "मैं मरद कहाँ, मैं तो बच्चा हूँ। बच्चों और औरतों में तो फर्क नहीं होता।

"तू मेरे पास बैठा कर। शिक्षा ले मुझसे। कितना कमाता है?"

"चौदह हजार।"

"बीवी-बच्चे हैं?"

"गाँव में है।"

"तो हिसाब दे मुझे कि इतने पैसों का तू क्या करता है। मैं तेरे पैसे ब्याज पे लगा दूंगा – और कमाई होगी तेरे को।"

□□

देवराज चौहान ने जगमोहन से फोन पर बात की।

"अपनी पोजीशन बता। बच्चे के साथ तू किधर है?" जगमोहन ने बताया।

"ठीक है, मैं पंद्रह मिनट में तेरे पास पहुँच रहा हूँ तुम बाहर सड़क पर आ जाना।"

"कार का क्या करूँ?"

"वो तो चोरी की है।"

"तभी तो पूछ रहा हूँ।"

"कार पर से उँगलियों के निशान मिटा दे और उसे वहीं रहने दे। मैं पहुंच रहा हूँ।"

जगमोहन बच्चे के साथ मिला।

बच्चे को कंधे पर लाद रखा था। दवा देकर उसे बेहोश कर दिया था। जगमोहन ने बच्चे को कार की पिछली सीट पर लिटाया और खुद देवराज चौहान की बगल में आगे आ बैठा।

देवराज चौहान ने कार आगे बढ़ा दी।

"क्या हो रहा है वहां?"

"ख़ास कुछ नहीं। फ्लैट में शिफ्ट हो गए हैं।"

"बैंक मैनेजर सोढ़ी से अब तक क्या बात हुई?" जगमोहन ने पूछा।

देवराज चौहान ने बता दिया।

"मतलब कि सोढ़ी अपने बच्चे की खातिर हमारा काम कर रहा है।"

"अभी तो तो ऐसा ही है।"

"तुम्हें क्या लगता है कि बाद में वो पीछे हटेगा?"

"वो अपने बच्चे को पाने की खातिर काम पूरा करेगा।" कहकर देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

"चांदीलाल और सूरमा की बीवी ठीक से काम कर रहे हैं।"

"हाँ, कस्तूरी की हरकतों और बातचीत को देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि वो पंचर लगाने वाले की बीवी है। बहुत अच्छे ढंग से उसने अपने हिस्से का काम संभाला हुआ है।"

जगमोहन कुछ न बोला।

"बच्चे की बात उसकी माँ से करानी है। सोढ़ी कह रहा था।" देवराज चौहान बोला।

"करा दूंगा।"

"सोढ़ी के घर फोन करके बात कराना।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"आज शनिवार है। पांच दिन तो हमारे पास ख़ास कुछ करने को नहीं है। शुक्र, शनि और रवि की रात पैसा बैंक के भीतर रुका रहेगा। शुक्रवार हमने कुछ नहीं करना है, क्योंकि शनिवार बैंक खुलेगा। शुक्रवार कुछ किया तो शनि को बैंक से पैसा गायब होने की बात खुल जायेगी। ऐसे में हम शनिवार हरकत में आयेंगे।"

"पैसा कहाँ रखना है?"

"फ्लैट में। फिर भी इस बारे में सोच लेंगे। हमारे पास बेकार का एक सप्ताह पड़ा है। वक़्त ज्यादा है और विचार करने के लिए बातें कम हैं। हम आराम से हर पहलू पर सोच-विचार कर सकते हैं।"

तभी बैंक और बैंक कॉलोनी आ गयी।

देवराज चौहान ने कार को गेट की तरफ मोड़ दिया।

कार को पहचानते ही वॉचमैन ने गेट खोल दिया। देवराज चौहान कार को भीतर ले जाता चला गया। पीछे वाली सीट पर बेहोश पड़े राजू को वॉचमैन न देख सका।

फ्लैट के सामने देवराज चौहान ने कार रोकी।

दोनों बाहर निकले।

जगमोहन ने हर तरफ नज़र दौड़ाई। शाम के चार बज रहे थे। इस वक़्त कोई भी नज़र न आया। बाहर गेट

पर वॉचमैन अवश्य था, परन्तु वो भी छाया के चक्कर में इधर-उधर दुबक गया था। जगमोहन ने कार का पिछला दरवाजा खोला और राजू को बाहर खींचकर कंधे पर लादा। तब तक

देवराज चौहान फ्लैट के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ चुका था। बैल बजा दी थी।

कुछ ही देर में वे दोनों फ्लैट के भीतर थे।

जगमोहन चांदीलाल और कस्तूरी को पहली बार देख रहा था। वो दोनों भी जगमोहन को पहली बार देख रहे थे। इस पर भी उन्हें परिचय की आवश्यकता नहीं थी।

जगमोहन ने राजू को पीछे वाले बेडरूम में बेड पर लिटा दिया।

कस्तूरी भी साथ आ गयी थी।

"ये कौन है?" कस्तूरी ने पूछा।

"बैंक मैनेजर का बेटा।"

"ओह!" कस्तूरी थोड़ा-सा समझी – "इसका अपहरण किया है?"

"हाँ!"

"आज?"

"दो दिन हो गए।"

"ओह! क्यों?" कस्तूरी ने जगमोहन को देखा।

"बैंक लूटना है या नहीं?"

"लूटना है।"

"तो ये सारे काम उसी के लिए कर रहे हैं।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"बैंक मैनेजर से भी काम ले रहे हो?"

"हाँ, तू सवाल बहुत पूछती है।"

"पूछना पड़ता है, बच्चे की देखभाल तो मैनें करनी है।"

"होश में आने पर ये चीखे-चिल्लाये नहीं। ये जिम्मेवारी तुझ पर है।"

वो तो ठीक है, लेकिन इसे कब तक यहाँ रखना है?"

"काम होने तक।"

"काम कब होगा?"

"अगले शनि को।"

"पहले नहीं हो सकता?"

"तुझे जल्दी है क्या?"

जवाब में कस्तूरी गहरी सांस लेकर रह गयी।

"कुछ खाने को पड़ा है?"

"हाँ, बलबीर लाया था, मक्खन के परांठे और....!"

"बलबीर कौन है?"

"बैंक चपरासी।"

"अच्छा वो।" जगमोहन को बलबीर का चेहरा याद आया।

"जानता है बलबीर को?"

"एक बार देखा था। वो यहाँ क्यों आता है?"

"मेरे चक्कर में।"

जगमोहन ने उसे घूरा।

"यहाँ पर जितने कम लोग आएं, उतना ही ठीक रहेगा। समझी क्या?"

"लेकिन उसे सीधा –सीधा मना करना भी ठीक नहीं। वो मेरे पे फ़िदा है। मना करूँगी तो दूर से देखा करेगा। फ्लैट के आस-पास मंडराता रहेगा। ये और भी खतरे वाली बात है।" कस्तूरी ने कहा।

"ये तुम जानो।" जगमोहन ने मुंह बनाया – "मैं खाने के लिए इसलिए पूछ रहा था कि बच्चे ने खाया कुछ नहीं है। होश में आते ही इसे खाने को कुछ चाहिए होगा।"

"बच्चे की चिंता मत करो। इसकी सब तरह की जिम्मेवारी मेरी।"

जगमोहन वहाँ से निकला और ड्राइंगरूम में आ गया।

"तो तुम चांदीलाल हो।" जगमोहन बोला।

"तेरा बाप हूँ इस वक़्त तो। दीवारों के भी कान होते हैं, ठीक से बात करेगा तो ठीक रहेगा।" चांदीलाल गोद में सोये बच्चे को हौले-हौले हिलाकर कह उठा।

जगमोहन समझ गया कि चांदीलाल खेला-खाया इंसान है।

"कस्तूरी, ओ बहू।" चांदीलाल ने आवाज़ लगाई।

"आई पिताजी।" कहने के साथ ही कस्तूरी ने भीतर प्रवेश किया।

"ले अब बच्चे को संभाल। मेरी तो टाँगे अकड़ गयी हैं।"

"लाईये पिताजी।" कहकर कस्तूरी ने बच्चे को गोद में उठा लिया।

"मेरा थैला रखा है न, जो तेरे हवाले किया था।" चांदीलाल ने पूछा।

"रखा है।"

"उसमें दो बोतलें हैं मेरी। शाम होती जा रही है। सात बजे मैं बोतल खोलूँगा।"

"पी के नींद लेते हो या बहक जाते हो?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

"पीकर मैं और भी समझदारी वाली बातें करता हूँ।" चांदीलाल मुस्कुराकर कह उठा।

देवराज चौहान खिड़की खोले बाहर की तरफ देख रहा था।

"चाय बनाऊं, किचन तैयार कर लिया है मैनें।" कस्तूरी बोली।

"बना, बना। पूछती क्यों हैं।" चांदीलाल कह उठा।

तभी देवराज चौहान पलटा और जगमोहन को देखकर बोला।

"इसी तरह हमें यहाँ पूरा सप्ताह बिताना है। पैसा जब बैंक में आएगा, तभी हमारा काम शुरु होगा।"

□□

शाम के सात बज रहे थे।

कस्तूरी किचन में व्यस्त थी। डिनर तैयार कर रही थी।

अभी-अभी ही चांदीलाल ने बोतल खोली थी और गिलास तैयार किया था। नाईट सूट पहने देवराज चौहान पीछे वाले कमरे में राजू के साथ बातों में व्यस्त था। घंटा भर पहले उसे होश आया था। कस्तूरी ने उसे परांठे और राजमा खिला दिए थे। राजू बहुत सब्र के साथ काम ले

रहा था। किसी भी मौके पर उसने अभी तक तंग नहीं किया था।

जगमोहन भी नाईट सूट पहने ड्राइंगरूम में बैठा था और पुराना अखबार पढ़ रहा था।

"बहू!" दो घूँट भरने के बाद चांदीलाल ने पुकारा – "सुन जरा।"

"आई पिताजी।"

फिर कस्तूरी आई।

"कुछ खाने को तो दे दे साथ में।"

कस्तूरी आगे झुकी और धीमे स्वर में बोली।

"इसके साथ तो मुर्गा हो तो मजा आ जाता है।"

"मुर्गा!" चांदीलाल की आँखें फ़ैल गयी – "तेरे को कैसे पता?"

"मुझे सब पता है।"

"घूँट लगाये हैं कभी?"

"दांव लगे तो लगा ही लेती हूँ।"

"मुर्गे के साथ?"

"कुछ भी समझो।"

"अब लगाएगी?"

"नहीं। ऐसे नहीं लगाती मैं। इस वक़्त तू बाप बना है तो बाप ही बना रह। दिन के राजमा रखे हैं, साथ में दूं क्या?"

"राजमा।" चांदीलाल ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"और कुछ नहीं है। थैले में साथ ले जाने के लिए जब बोतलें डाली तो खाने का भी सामान रख लेना था।"

"ला, राजमा ही दे।"

कस्तूरी किचन की तरफ बढ़ी।

तभी बेल बजी और साथ में आवाज़ आई।

"कस्तूरी बहन, ओ कस्तूरी बहन।" मिसेज शर्मा थी।

चांदीलाल ने घूँट भरा और बुरा-सा मुंह बनाया।

कस्तूरी ने दरवाजा खोला।

सामने मिसेज शर्मा बर्तन लिए खड़ी थी।

"ले, मैंने काले चने बनाए थे, तेरे लिए लायी हूँ।"

"आ, भीतर आ जा।"

मिसेज शर्मा भीतर आई।

जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने हाथ जोड़कर नमस्ते की। मिसेज शर्मा ने भी सिर हिला दिया।

"अंकल जी नमस्कार।" मिसेज शर्मा ने चांदीलाल को कहा।

"जीती रहो बेटी। दूधों नहाओ, पूतो फलो।"

"आपके आशीर्वाद का क्या फायदा, बच्चा तो होता नहीं।" मिसेज शर्मा ने मुंह लटकाकर कहा।

"नहीं होता?" चांदीलाल ने घूँट भरा।

"अभी तक कहाँ हुआ है।"

"मेरे पास एक नुस्खा है। वो बताऊंगा तेरे को। मैंनें उस नुस्खे से कईयों के बच्चे पैदा कर दिए...।"

"तो मुझे वो नुस्खा बताईये न अंकल। मैं...!"

"अभी नहीं, आज से ठीक नौ दिन बाद, अगले रविवार को पूछना।"

"ठीक है!"

कस्तूरी मिसेज शर्मा को किचन में ले गयी।

"तू क्या बना रही है?"

"दाल।"

"ठीक है। जब बन जाए तो मुझे इसी बर्तन में डाल के दे देना। आज तेरे हाथ की दाल खाऊँगी।"

"अच्छा।"

"ये कौन है, जो अंकल के कमरे में बैठा है?" मिसेज शर्मा ने धीमे स्वर में पूछा।

"वो, वो तो मेरा देवर है।"

"कितना हैण्डसम है! शादी हो गयी?"

"नहीं।"

"वो तो कब का शादी के लायक हो चुका है। उसकी शादी करते क्यों नहीं?" मिसेज शर्मा ने अपनापन दिखाते कहा।

"कर देंगे।" कस्तूरी मुस्कुराई।

"मेरी बहन है। तू बात चलाना।"

"तेरी बहन से!"

"मैं क्या बुरी हूँ। वो भी मेरी तरह ही खुबसूरत है। तेरा देवर भी खुबसूरत है। दोनों का रिश्ता पक्का कर देते हैं।"

"अब मैं इसमें क्या कह सकती हूँ।"

"तेरे पति कहाँ हैं?"

"पीछे वाले कमरे में, गुड्डू के साथ खेल रहे हैं। क्यों पूछा तूने?"

"तेरे घर में किसकी चलती है?"

"पिताजी की।"

"तो मैं पिताजी से रिश्ते की बात करती हूँ।" कहने के साथ ही मिसेज शर्मा किचन से बाहर निकली।

चांदीलाल एक गिलास ख़त्म कर चुका था।

"बहू, राजमा।"

"लायी पिताजी।"

तब तक मिसेज शर्मा वहाँ पहुंचकर चांदीलाल के पास लम्बे सोफे पर आ बैठी थी।

"अंकल को काले चने लाकर दे कस्तूरी। गरमा-गरम है। अंकल को मजा आ जाएगा।"

"ठीक है, वही देती हूँ।"

मिसेज शर्मा ने मुस्कुराकर जगमोहन को देखा।

"आपका नाम क्या है भाई साहब?"

जगमोहन ने अखबार से नज़रें हटाकर मिसेज शर्मा को देखा।

"मेरा?"

"जी हाँ, आप ही से पूछ रही हूँ।"

"जगमोहन।"

"आह, कितना अच्छा नाम है। मेरी बहन को भी नाम पसंद आएगा।"

"आपकी बहन को!" जगमोहन अचकचाया।

"हाँ, चौबीस साल की है। मेरी तरह खुबसूरत है। एम.ए. कर रखी है। आप एक ही नज़र में उसे पसंद करने लगेंगे। मैं तो कब से उसके लिए लड़के देख रही हूँ लेकिन कोई पसंद ही नहीं आता। आपको देखा तो एक ही बार

में आप पसंद आ गए। मैं तो कहती हूँ कि आपको लड़की देखने की भी जरुरत नहीं। खुबसूरत है। मेरी गारंटी कि देखते ही आपको पसंद आ जायेगी।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा और पुनः अख़बार में ध्यान लगा दिया।

"शर्म आ गयी बेचारे को।" मिसेज शर्मा मुस्करा पड़ी।

"लो पिताजी, चने।" कस्तूरी कटोरी में चने रख गयी।

"मिसेज शर्मा।" चांदीलाल बोला।

"जी, अंकल जी।"

"रिश्ते की बात तुम्हें मुझसे करनी चाहिए।"

"आपसे!"

"बड़ा हूँ घर का। मेरी हाँ के बिना रिश्ता कैसे होगा?"

"करनी तो आपसे ही थी। वो तो यूँ ही जगमोहन से बात छिड़ गयी।" मिसेज शर्मा ने दांत दिखाए।

चांदीलाल ने पुनः गिलास तैयार किया।

"आप तो बहुत ज्यादा पीते हैं।"

"ये तो पानी है मेरे लिए।" चांदीलाल ने लापरवाही से कहा – "उम्र बीत गयी पीते-पीते।"

मिसेज शर्मा ज़रा सा सिर आगे करके धीमे स्वर में बोली।

"शर्मा जी भी घूँट ही भर रहे हैं।"

"घूँट भर रहे हैं! उन्हें यहीं बुला लो।"

"रहने दीजिये। आपके साथ बैठे तो ज्यादा हो जायेगी। ज्यादा हो जाए तो वो गड़बड़ कर देते हैं।"

"गड़बड़! कैसी गड़बड़?"

"एक बार तो कच्छा पहनकर घर से बाहर आ गए थे। मैं उन्हें जबरदस्ती भीतर लेकर गयी थी।"

"इसमें चिंता की क्या बात है? कच्छा तो पहन ही रखा था।"

"आप भी अंकल।" मिसेज शर्मा ने मुस्कुराकर कहा – "शरारत करने से बाज नहीं आते।"

चांदीलाल ने घूँट भरा और काले चनों का मजा लेता कह उठा।

"रिश्ते तो जगमोहन के लिए बहुत आते हैं। हम तो लड़की वालों को कुछ कहते भी नहीं, वो खुद ही मकान और कारें दहेज़ में देने लगते हैं। नकद की भी बात छेड़ देते हैं। मैं तो बहुत कहता हूँ कि मुझे दहेज़ से नफरत है और पैसे की तो हमें परवाह है ही नहीं। मैं तो दहेज़ के सख्त खिलाफ हूँ।"

"मैं भी।" मिसेज शर्मा जल्दी से गहरी साँस लेकर कह उठी – "दहेज़ से थोड़े न ब्याह करना है।"

"वो ही तो मैं कहता हूँ। जो लड़की बहू बनकर आएगी, उसी ने राजमा और काले चने बनाने हैं।"

"मेरी बहन बहुत ही अच्छा-अच्छा सामान बनाती है।"

"सच!"

"हाँ अंकल, आप कहें तो कल ही उसे बुलवाकर...।"

"अभी नहीं, इतनी तेजी से आगे मत बढ़।"

"मैं समझा नहीं।"

"हम काम मुहूर्त के हिसाब से होता है। तू मुझसे अगले रविवार को बात करना।"

"अगले रविवार को कोई शुभ मुहूर्त है क्या?"

"बहुत ही शुभ। उस दिन मैं तेरे को नुस्खा भी बताऊंगा बच्चा पैदा करने का और रिश्ते की भी बात करेंगे।"

"ठीक है। मैं अगले रविवार को आपसे बात करूँगी। वैसे आप दहेज़ के तो खिलाफ है न?"

"पक्का खिलाफ! कस्तूरी से पूछ ले। शरीर पर पहने कपड़ों से ही ब्याह किया। साथ में कुछ नहीं लायी। हमने ही मना कर दिया था। इसके बाप ने तो खासा सामान खरीद रखा था।"

"ओह! आप कितने अच्छे हैं अंकल जी।"

तभी जगमोहन उठा और अखबार रखकर पीछे वाले कमरे की तरफ बढ़ गया।

"लगता है, हमारी बातों से शर्म आ गयी है। तभी चला गया है।" मिसेज शर्मा कह उठी।

"बच्चा है।"

"ओह!" मिसेज शर्मा एकाएक उठती हुई बोली – "मैं चलती हूँ। उधर शर्मा जी पेग मार रहे हैं। अगर एक पेग भी ज्यादा लगा लिया तो मुसीबत खड़ी जो जायेगी। उन्हें संभालना कठिन हो जाएगा।"

"मुझे बता देना। जरुरत पड़ी तो मैं उसे संभाल लूँगा।"

मिसेज शर्मा दरवाजे की तरफ बढ़ती कह उठी।

"कस्तूरी, तू दाल को मेरे बर्तन में डाल के रखना, मैं अभी ले जाउंगी।"

□□

जगमोहन ने कमरे में प्रवेश किया कि ठिठककर मुस्कुरा पड़ा।

राजू, गुड्डू के साथ खेल रहा था।

"अंकल!" जगमोहन को देखते ही राजू कह उठा – "ये बच्चा बहुत शरारती है।"

"अब तो तेरा वक़्त अच्छी तरह बीत जाएगा।"

"हाँ अंकल, ये बच्चा मेरी ऊँगली ही नहीं छोड़ता।"

देवराज चौहान एक तरफ कुर्सी रखे आराम से बैठा था।

"राजू की बात इसकी माँ से करानी है?" जगमोहन बोला।

"करा दो।"

राजू का ध्यान भी जगमोहन की तरफ हो गया।

"मम्मी से मेरी बात कराओगे अंकल?"

"हाँ, दिन में तुम्हारे पापा ने बात कराने को कहा था।" देवराज चौहान कह उठा - "बात करोगे?"

"जरूर!"

जगमोहन जेब से फोन निकालकर नम्बर मिलाता कह उठा।

"उन्हें बता देना कि तुम किस हाल में हो। इससे उनकी चिंता कम हो जायेगी।"

"मम्मी तो बहुत ही ज्यादा मेरी चिंता कर रही होगी।"

नम्बर मिला, उधर से रिसीवर उठाया गया। सोढ़ी की आवाज़ कानों में पड़ी।

"हेल्लो!"

"सोढ़ी?"

"हां-हां, तुम...!"

"तुमने राजू से बात करने को कहा था।"

"हाँ-हाँ.. उसकी माँ कब से रो रही है उससे बात करने के लिए.... वो.. वो..!"

"लो बात करो।" जगमोहन ने फोन राजू को थमा दिया।

"हेल्लो पापा!"

"तुम कैसे हो राजू? तुम....।"

"मैं बहुत अच्छा हूँ पापा। ये अंकल भी बहुत अच्छे हैं।"

"खाना खाया आज?"

"हाँ, परांठे और राजमा खाया। मजा आ गया।"

"ले अपनी माँ से बात कर...।"

अगले ही पल राजू के कानों में उसकी माँ की आवाज़ पड़ी।

"राजू-राजू तू कैसा है बेटा, कहाँ है?" आवाज़ ममता से काँप रही थी।

"मैं बहुत अच्छा हूँ मम्मी। मम्मी य... यहाँ पर तो एक छोटा-सा काका भी है।"

"काका!"

"छोटा-सा, बहुत प्यारा है। मैं तुमसे कहता था ना कि मुझे भी एक काका ला दो और तुमने...!"

"गोली मार काके को, तू अपना हाल सुना – कहाँ पर हैं तू?"

"मुझे क्या पता, मैं कहाँ पर हूँ। मैं तो बेहोश था, जब यहाँ लाया गया।"

"और कौन-कौन हैं तुम्हारे पास?" रो रही थी उसकी माँ।

तभी जगमोहन राजू से कह उठा।

"काम की बात कर, फोन की चार्जिंग खत्म होने वाली है।"

"मम्मी जल्दी से बात कर लो, फोन बंद हो जाएगा। इन्हें जल्दी से दस हज़ार दे दो।"

"दस हज़ार?"

"दस हज़ार ही तो माँग रहे हैं ये, वैसे मुझे यहाँ भी अच्छा लग रहा है।"

तभी उसके कानों में सोढ़ी की आवाज़ पड़ी।

"तू घबरा मत बेटा। पांच-सात दिन में तू हमारे पास आ जाएगा।"

"मैं कहाँ घबरा रहा हूँ?"

"तू रोज अपनी माँ से बात कर लिया कर।"

"ठीक है पापा....।"

तभी जगमोहन ने हाथ बढ़ाकर राजू से फोन ले लिया।

"बेटे से बात अब कल होगी।" जगमोहन ने फोन पर कहा और फोन बंद कर दिया।

तभी कस्तूरी ने भीतर प्रवेश किया।

"राजू, तू मुझे अपनी माँ बना ले।" कस्तूरी ने मुस्कुराकर कहा।

"उससे क्या फायदा होगा?"

"तेरे को तो नहीं, तेरे बाप को फायदा हो जाएगा। खैर, जाने दे। कुछ खायेगा क्या?"

"नहीं भूख नहीं है।"

कस्तूरी ने मुस्कुराकर जगमोहन से कहा।

"तुम्हारा रिश्ता आया है। कहो तो हाँ कर दूं।"

"फ़ालतू बातों की तरफ ध्यान मत दो।"

"मैं तो तुम्हारे भले की कह रही हूँ। परिवार बस जाएगा तुम्हारा।" फिर देवराज चौहान से कहा – "वो गिलास पर गिलास चढ़ाये जा रहा है। बोतल खाली होने वाली है, उसे रोको।"

देवराज चौहान कमरे से बाहर निकल गया।

"तुम इसी कमरे में रहना राजू। मैं तुम्हारे अंकल को खाना देकर आता हूँ।"

"मैं इस काके के साथ खेलता हूँ।"

कस्तूरी बाहर निकली।

जगमोहन भी बाहर निकल गया।

देवराज चौहान ने चांदीलाल की बोतल बंद करके किचन में रख दी थी और सामने रखा गिलास भी उठा दिया था। ऐसे में चांदीलाल ने कसकर उसकी कलाई पकड़ ली थी। उसे चढ़ सी गयी थी।

"सीधा हो जा।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला – "वरना उठाकर बाहर फेंक दूंगा।"

इन शब्दों पर चांदीलाल को कुछ होश आया तो वह संभला।

कस्तूरी ने देवराज चौहान और जगमोहन को खाना डाल दिया था।

दोनों खाना खाने लगे।

"खाना खाकर टहलने के अंदाज में बाहर का माहौल देखेंगे कि रात को यहाँ पहरेदार कैसे घूमते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

जगमोहन ने सिर हिला दिया।

तभी बेल बजी साथ ही आवाज़ आई।

"भाभी!" बलबीर की आवाज़ थी ये।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"बलबीर, बैंक का चपरासी। कस्तूरी का दीवाना हो रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"हाँ, इससे मैं किन्नू की दुकान पर मिला था।"

कस्तूरी किचन से निकली, ठिठकी।

"भाभी।" बाहर से फिर आवाज़ आई।

"इसे भगा दे।" चांदीलाल हाथ हिलाकर बोला।

तभी देवराज चौहान उठा और आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

"भाभी... तुम...!" बलबीर कुछ कहने लगा कि देवराज चौहान को देखकर ठिठका।

"क्या है?" देवराज चौहान शांत स्वर में बोला।

"वो भाभी...!"

"जो बात करनी हो, कल आना। हम नौ बजे सो जाते हैं।"

"कल, ठीक है, मैं कल आऊंगा।"

देवराज चौहान ने दरवाजा बंद कर लिया।

खाना खाने के बाद देवराज चौहान और जगमोहन करीब डेढ़ घंटा बाहर घूमते रहे।

बैंक कॉलोनी के भीतर घूमने वाले तीन गनमैन देखे। एक तो अँधेरे में रखी कुर्सी पर बैठा नींद ले रहा था। स्पष्ट था कि बाकी दोनों ने भी एक-दो घंटे तक नींद मारनी थी। बैंक के पास भी वे घूमते रहे थे। बैंक के पीछे वाले दरवाजे तक का फासला उनके फ्लैट से सौ कदम के करीब था।

ऐसे माहौल में सप्ताह बाद रात को आसानी से काम किया जा सकता था।

देवराज चौहान और जगमोहन अपने फ्लैट पर जाने की सोच रहे थे कि अँधेरे में जाने कहाँ से निकलकर बलबीर उनके पास आ पहुंचा।

"नमस्कार जी।" वो पी.ए. लग रहा था – "खाना खाकर घूमने निकला तो आप पर नज़र पड़ गयी। कल रविवार है, इसलिए शनिवार को मस्ती मार लेता हूँ थोड़ी-सी। उठने की तो जल्दी होती नहीं। सरकारी नौकरी भी कमाल की होती है। छुट्टी हो या न हो, सब एक-सा ही लगता है। मजे ही मजे हैं।"

"रात बहुत हो गयी है, जाकर सो जाओ।" जगमोहन बोला।

"अभी तो टहलूँगा। खाया-पीया हज़म हो जाएगा। आप अकेले ही घूम रहे हैं।"

"अकेले?"

"मेरा मतलब है भाभी जी साथ नहीं है। उन्हें ले आते। वो बोरियत महसूस कर रही होंगी घर में।"

जगमोहन ने अँधेरे में उसे घूरा।

"कुछ गलत कह दिया क्या?"

"नहीं, मैं तो ये सोच रहा हूँ कि तेरे में दिमाग है कि नहीं।"

"हुआ क्या?"

"औरतें रात को बारह बजे तक घूमती रहेंगी तो सुबह उठकर काम कौन करेगा?"

"ओह! तो भाभी जी सो गयी। ठीक किया, नींद लेनी भी जरुरी है। खूबसूरती बनी रहती है।"

"तू उधर जा के घूम। हम घर जा रहे हैं। थके हैं, नींद लेनी है।"

"आप जाईए, मैं इधर ही घुमुंगा। बैंक के बाहर जलने वाली रौशनी में ज़रा-बहुत जगह इधर भी रौशन रहती है। इधर ही टहलता हूँ अक्सर मैं।"

देवराज चौहान और जगमोहन फ्लैट की तरफ बढ़ गए।

"इसकी रात को घूमने की आदत हटानी चाहिए।" देवराज चौहान बोला – "वरना ये काम के वक़्त हमें टहलता मिल गया तो हमारे लिए परेशानी खड़ी हो जायेगी।"

□□

अगले दिन सुबह सात बजे ही बलबीर आया फ्लैट पर।

"भाभी जी! भाभी जी!"

"क्या है?" चांदीलाल बोला – "तू मेरे से बात कर।"

"आपसे करने वाली बात नहीं है। मैं भाभी जी से ही...।"

तभी पीछे वाले कमरे से कस्तूरी वहाँ आ पहुंची।"

"बलबीर, तू इतनी सुबह-सुबह?"

"वो भाभी, नाश्ते का प्रोग्राम पूछने आया था।"बलबीर ने दांत फाड़कर कहा।

"नाश्ते का तो कोई प्रोग्राम है ही नहीं। मैंने तो कुछ भी तैयार नहीं कर रखा।"

"आप कुछ न तैयार करें, तभी तो मैं सुबह-सुबह ही आ गया हूँ।" बलबीर मुस्कुराया।

"क्या मतलब?"

",मैंने सोचा, आज भाभी को पूड़ी-छोले का नाश्ता करवाऊं?"

"पूड़ी-छोले!"

"ऐसे-वैसे नहीं। पिंजौर से लाऊंगा, गुप्ता स्वीट्स के। बैंक की गाड़ी पास में है। आधा घंटा जाना और आधा घंटा आना। ठण्डा नहीं होने दूंगा माल को। गुप्ते की पूड़ी-छोले बहुत मजेदार होते हैं।"

"अच्छा और क्या मिलता है गुप्ता स्वीट्स पर?" कस्तूरी खुश होकर बोली।

चांदीलाल मुंह लटकाये बलबीर को देख रहा था।

"सब कुछ मिलता है। ब्रेड पकौड़े, नूडल्स, समोसे, मिठाई...।"

"बस-बस इतना ही काफी है। ऐसा करो, तुम-तुम दो-दो-चार, कुल बीस प्लेट पूरी-छोले ले आओ।"

"बीस प्लेट!" बलबीर हड़बड़ा-सा उठा।

"जो तुमने खाना हो, साथ लगा लेना और मेरे लिए गरमा-गरम छः समोसे। छः में से दो तो मिसेज शर्मा खा लेगी। पांच-सात ब्रेड पकौड़े ले आना।"

"इतना सब कुछ!" बलबीर ने कहना चाहा।

"वो तुम्हारे भाई साहब पूड़ी-छोले बहुत पसंद करते हैं। देखना, कम पड़ जाएगा। जो बच गया, वो दोपहर को भी तो चल जाएगा।" कस्तूरी ने इतराकर कहा – "एक शिकायत है मुझे तुमसे।"

"मुझसे शिकायत! कहो भाभी।"

"तुम रात को बाहर घूमते रहते हो।"

"तो क्या हो गया?"

"मुझे वो ही लोग अच्छे लगते हैं, जो नौ बजे तक बिस्तर पर जाकर सौ जाते हैं।"

"नौ बजे तो मैं खाना खाता हूँ।"

"चलो, दस कर लो। तुम भी दस बजे तक सो जाया करो।"

"ठीक है भाभी – तुमने जो कहा, पक्का वो ही होगा। मैं दस बजे तक सो जाया करूँगा।" बलबीर खिल उठा।

"जा, अब पिंजौर के गुप्ता स्वीट्स से पूड़ी-छोले, समोसे और ब्रेड पकौड़े ले आ।"

"अभी लाया।"

"गाड़ी आराम से चलाना। जल्दी के चक्कर में तूने एक्सीडेंट मार दिया तो मुसीबत मेरे लिए खड़ी हो जायेगी।"

"मुसीबत आपके लिए, क्यों?"

"देखभाल तो मुझे ही करनी पड़ेगी।"

बलबीर गदगद हो उठा ये शब्द सुनकर।

"मैं अभी पूड़ी-छोले लेकर....!"

"सुन।" चांदीलाल ने टोका।

बलबीर ने ठिठककर उसे देखा।

"गुप्ता स्वीट्स के पास नारियल की हरी बर्फी भी मिलती है। एक किलो वो भी ले आना।"

"किलो।" बलबीर जल्दी से बोला – "ज्यादा हो जायेगी। आधा किलो ले आऊंगा।"

"ठीक है, आधा ही ले आ।"

"भाभी आप बर्तन तैयार रखिये। मैं अभी सारा सामान लेकर...।"

"बहू।" चांदीलाल ने टोका – "इसे पैसे तो दे दे।"

"घर का बंदा ही तो है बलबीर। इसे पैसे क्या देना? भाभी हूँ मैं इसकी। क्यों बलबीर?"

"बिल्कुल भाभी जी, बिल्कुल। पैसे की बात करके तो अंकल मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं।" कहकर बलबीर बाहर निकल गया।

चांदीलाल और कस्तूरी की नज़रें मिलीं।

"तुम्हारा बहुत ध्यान रखता है ये।"चांदीलाल मुस्कुराया।

कस्तूरी मुस्कुरा पड़ी।

"हर मरद बाहर की औरतों का ध्यान रखता है। ये बहुत पुराना दस्तूर है।"

"तू तो मरदों के बारे में बहुत कुछ जानती है।"

"न ही पूछो तो अच्छा है।" कहकर कस्तूरी कमरे में चली गयी।

□□

बलबीर ने मारुती वैन की ब्रेक लगाई खोखे के सामने। नौ बज रहे थे। पिंजौर से पूड़ी-छोले और बाकी सामान लेकर आया था वो।

"ओ सूरमे।"

सूरमा अभी-अभी पहुंचा था खोखे पर।

गोलू पहले से ही मौजूद था।

सूरमा ने बलबीर को देखा तो फ़ौरन उसके पास पहुंचा।

"तू सुबह-सुबह यहाँ कैसे?" सूरमा ने पूछा।

"सुबह किधर, नौ बज रहे हैं। पिंजौर से वापस आ रहा हूँ।" बलबीर हंसकर बोला।

"पिंजौर से!"

"हाँ, सोचा आज भाभी को गुप्ते के पूड़ी-छोले खिला दूं। वो ही लेने गया था।"

"इतनी दूर?" सूरमा के होंठों से निकला।

"अरे भाभी के लिए तो जान भी हाजिर है। कितनी अच्छी है भाभी। जब मुस्कुराती है, तो गालों में पड़ने वाले गड्ढे दिल-दिमाग को झंझोड़ देते हैं। हिरनी जैसे खुबसूरत आँखें, आ...हा...!"

सूरमा सिर से पाँव तक जल उठा।

उसके सामने उसकी बीवी की तारीफ़ कर रहा था और वो कुछ नहीं कह सकता था।

"आज जानता है भाभी ने क्या कहा?"

"क्या कहा?" सूरमा को आग लग रही थी।

"कहने लगी – बलबीर, तू तो घर का ही बंदा है। तेरे में और भाई साहब में फर्क ही क्या है।"

“ऐसा कहा!”

“और क्या – आज सुबह ही की तो बात है। अभी तो मैनें भाभी को परफ्यूम भी लाकर देना है।”

“परफ्यूम!”

“हाँ, स्विट्ज़रलैंड का लाके दूंगा, बेशक हज़ार रुपया लग जाए।”

तभी गोलू आगे बढ़ आया।

“हमारी तरफ से तू कुंए में छलांग लगा। ये ही बताने तू यहाँ रुका है।” गोलू ने तीखे स्वर में कहा।

“पिंजौर से आते वक़्त टायर पंचर हो गया। वो निकाल, पंचर लगा देना। मैं बाद में ले जाऊँगा।”

गोलू डिग्गी की तरफ बढ़ गया।

बलबीर का चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था।

सूरमा दो कदम और आगे आया और बलबीर से कह उठा।

“मैनें तेरे को कल ही कहा था कि वो मेरे रिश्तेदार हैं। उनके बारे में ऐसी बातें न कर।”

“तू चिढ़ता क्यों है? मैनें क्या गलत कह दिया।”

“वो मेरे रिश्तेदार।”

“होंगे। मैं तो उनके काम ही आ रहा हूँ। कल मक्खन के परांठे, राजमा खिलाये, अपने पैसे से। पैसे नहीं लिए।

आज गुप्ते के पूड़ी-छोले खिला रहा हूँ अपने पैसे से। उन्हें कुछ दे ही तो रहा हूँ। लेना भी क्या, अब तो घर की बात है। मैं भी उनके परिवार का सदस्य बनता जा रहा हूँ।”

सूरमा ने कठोर नज़रों से उसे देखा।

"तू कस्तूरी के बारे में ऐसी बातें करनी छोड़ दे।"

"क्यों?"

"वो मेरी रिश्तेदार है।"

तभी डिग्गी बंद करके गोलू पास आया।

"पहिया निकाल लिया है, चलता बन अब। ले जाना बाद में।" गोलू बोला।

"मुझे शर्म भी बहुत आती है।"

"शर्म!" सूरमा के माथे पर बल पड़े।

"लगता नहीं कि तू उनका रिश्तेदार है।" बलबीर ने गियर बदला – "कहाँ तू, कहाँ वो?" कहकर उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

"उल्लू का पट्ठा।" सूरमा दांत किटकिटा उठा।

"तू जलता क्यों है। वो देखता ही तो है भाभी को।" गोलू बोला – "मैं भी तो साल भर हर दोपहर को तेरे घर से लंच लाता रहा हूँ। तूने तब नहीं सोचा कि मैं भाभी के पास अकेला जाता हूँ।"

"तेरी बात और है, ये साला नम्बरी हरामी है।"

"वहाँ भाभी अकेली नहीं है – और लोग भी हैं। पप्पू भाई साहब सब संभाल लेंगे। तू चिंता मत कर।"

□□

दोपहर को मिसेज शर्मा आई।

"वाह!" आते ही वो बोली – "आज क्या बनाया है कस्तूरी, पुरे घर में महक फैली है।"

"पूड़ी-छोले आये थे बाहर से। सबने वो ही खाए।" कस्तूरी किचन से निकलती बोली।

"यहाँ पूड़ी-छोले कहाँ मिलते हैं?"

एक तरफ बैठे चांदीलाल ने गोद में बच्चे को बिठा रखा था।

"वो पिंजौर में है न, गुप्ता स्वीट्स – वहाँ से लाया था बलबीर।"

"बलबीर लाया! वो भी पिंजौर से!" मिसेज शर्मा हैरानी से बोली – "मेरे को तो कभी कुछ ला के नहीं देता।"

"ये बात तो बलबीर से ही पूछ।"

"जरूर पूछूंगी। सामने तो पड़ने दो उसे। मैं तो ये पूछने आई थी कि आज चंडीगढ़ जाना है, सूट लेने – तू साथ चलेगी?"

"मेरे पास तो काम बहुत है। नया-नया घर शिफ्ट किया है। पांच-दस दिन तो वक़्त ही नहीं है।"

"वो मैं समझती हूँ। तू अपने घर में जो बनाए, वो शर्मा जी को भी दे देना। वो भी खा लेंगे। नहीं तो भूखे ही बैठे रहेंगे। खुद तो कुछ बनाकर खाते नहीं। मैंने चंडीगढ़ से सूट ले आऊँ।"

"ठीक है।" कस्तूरी मुस्कुराई।

"तेरे को कुछ मंगवाना है तो बोल दे।"

"नहीं, अभी कुछ नहीं चाहिए।"

"तो बलबीर को कह ना कि वो मेरे को चंडीगढ़ ले चले बैंक की वैन पर।" मिसेज शर्मा एकाएक बोली।

"मैं बोलूं?"

"हाँ, तेरा तो वो बहुत ध्यान रखता है।"

कस्तूरी, मिसेज शर्मा की बांह पकड़कर एक तरफ ले गयी।

"तू पिताजी के सामने कैसी बातें करती है।" कस्तूरी ने नाराजगी से कहा।

"ओह! मुझे ध्यान ही न रहा।"

"देख, बलबीर को मैं कुछ नहीं कह सकती। न ही वो मेरा ध्यान रखता है। तू मुझसे ऐसी बातें न किया कर।"

"तेरी मरजी। मारुती वैन में जाती तो सफ़र आसान हो जाता।"

मिसेज शर्मा फ्लैट से बाहर निकली तो सामने से बलबीर आता दिखा। वो ठिठकी।

"कैसी है मिसेज शर्मा?"

"तू मेरे को पूड़ी-छोले का नाश्ता नहीं करा सकता था।" मिसेज शर्मा ने शिकायती स्वर में कहा।

"वो तो यूँ ही, यूँ ही....!"

"मैं सब समझती हूँ। तेरे को कस्तूरी अच्छी लगती है। तभी तो तू...।"

"ये आप क्या कह रही हैं!" बलबीर सकपका उठा।

मिसेज शर्मा ने दो कदम आगे बढ़ाए और बलबीर के पास जा पहुंची।

"मैं तेरे को अच्छी नहीं लगती न।"

"आप!" बलबीर की हालत देखने लायक थी – "लगती हैं बहुत अच्छी लगती हैं।"

"तो फिर मेरे साथ चल ना?"

"कहाँ?"

"चंडीगढ़, मैनें दो सूट लेने हैं।"

"लेकिन – लेकिन...!"

"मैं तेरे साथ वैन में आगे बैठूंगी।" मिसेज शर्मा ने अदा के साथ कहा।

"आ – गे?"

"मौका लगा तो फिल्म भी देख लेंगे। शर्मा जी को मत बताना।" मिसेज शर्मा ने बलबीर का हाथ पकड़ लिया।

"चलता हूँ, चलता हूँ!" बलबीर की हालत देखने लायक थी – "वैन अभी लाऊं क्या?"

"पंद्रह मिनट बाद ले आना। मैं कपड़े बदल लूँ। तेरे को कौन-सा सूट अच्छा लगता है?"

"कौन – सा सूट?" बलबीर को अपना मस्तिष्क हवा में उड़ता लग रहा था – "सूट ज्यादा अच्छा नहीं रहता। अ... आप साड़ी पहन लीजिये। उसमें हवा लगती रहती है, वो ठीक रहती है।"

"शरारती! मैं अभी आई।"

□□

इसी तरह देवराज चौहान और जगमोहन अपनी तैयारियों में लगे रहे। काम का सारा प्लान बनता रहा। चंद दिनों का नकली परिवार फलता-फूलता रहा। बलबीर और मिसेज शर्मा के चक्कर इसी प्रकार लगते रहे उनके पास।

राजू की बात हर रोज उसके माँ-बाप से करा दी जाती।

रविवार बीता, सोम बीता, मंगल आ गया।

□□

बैंक में रोजमर्रा का काम चल रहा था। दिन के ग्यारह बज रहे थे।

सोढ़ी काम में अवश्य लगा हुआ था, परन्तु बेहद परेशान था। इस वक़्त मुख्य तौर पर दो परेशानी थी उसे। पहली परेशानी राजू की थी कि वो राजू को जल्द से जल्द वापस पा लेना चाहता था, परन्तु जानता था कि अभी ये संभव नहीं है। देवराज चौहान का काम करेगा तो तभी देवराज चौहान उसके बेटे को छोड़ेगा। फिर भी इतनी तसल्ली थी कि राजू से उसकी रोज बात हो जाती थी।

दूसरी परेशानी उसके सामने ये थी कि बैंक में लूट जाने के बाद क्या होगा? क्या उसकी नौकरी चली जायेगी? क्या पुलिस को पता चल जाएगा कि उसने बैंक लूटने वालों का साथ दिया है। कहीं वह जेल तो नहीं चला जायेगा। तरह-तरह की आशंकाएं उसके मस्तिष्क में उठ रही थी।

इस वक़्त ये ही सोच रहा था कि आज मंगलवार है। चार दिन की बात है, फिर राजू को वो लोग छोड़ देंगे और सब ठीक हो जायेगा।

तभी दरवाजा खुला और पुलिस वालों ने भीतर प्रवेश किया।

सोढ़ी ने उसे देखा।

वो इंस्पेक्टर की वर्दी में था। ऊँचा-लम्बा, चेहरे पर मूंछे। सिर पर कैप डाल रखी थी। छाती पर लगी पट्टी पर उसका नाम परमजीत सिंह सेठी लिखा था।

सोढ़ी घबराकर खड़ा हो गया।

"जी कहिये!"

"मेरा नाम परमजीत सिंह सेठी है। दो दिन पहले ही मैनें कश्मीर से आकर इस इलाके का चार्ज संभाला है।"

"कश्मीर से?" सोढ़ी अचकचाया – "बैठिये, आपके कंधे पर तो हरियाणा पुलिस की पट्टी लगी है।"

परमजीत सिंह सेठी मुस्कुराकर कुर्सी पर बैठा।

सोढ़ी भी बैठ गया।

"मुझे स्पेशल ऑफिसर के तौर पर कश्मीर भेजा गया था। उससे पहले मुझे स्पेशल पुलिस ऑफिसर बनाकर चम्बल, मध्य प्रदेश भेजा गया था। मेरे किस्से सुनेंगे तो आप हैरान हो जायेंगे।"

"किस्से!"

"जी हां, किस्से।" परमजीत सिंह सेठी छाती फुलाकर बोला – "चम्बल का डाकू लखबीरे का नाम तो आपने सुना होगा?"

"नहीं सुना।" सोढ़ी के होंठों से निकला – "ये नाम अखबार में कभी पढ़ा नहीं।"

"जिस दिन अखबार में लखबीरे का नाम आया होगा, उस दिन आपने अखबार पढ़ा ही नहीं था। बहरहाल मैं बता देता हूँ कि लखबीरे के नाम से चम्बल का चप्पा-चप्पा कांपता था और मैनें अकेले ही लखबीरे को मार गिराया।"

"ओह!"

"उसके बाद कश्मीर भेजा गया मुझे। वहाँ अफगानी आतंकवादी से मेरी टक्कर हो गयी। एक-एक के छक्के छुड़ा दिए। वो सबके सब कश्मीर छोड़कर भाग खड़े हुए।"

"फिर तो आप बहुत बहादुर हैं।"

"सब जानते हैं, इसमें क्या नया है।"

"तो जीरकपुर जैसी छोटी जगह में आप क्या कर रहे हैं?" सोढ़ी ने पूछा।

"बड़ी-बड़ी लड़ाईयां लड़कर मैं थक गया हूँ – तो मैंने अपनी ट्रान्सफर जीरकपुर जैसी शांत जगह पर करा ली। कम-से-कम साल भर यहाँ रहकर आराम करूँगा। अब तो मैनें अपने ऑफिसर्स से कह दिया है कि पुरे एक साल तक मुझे किसी भी ख़ास मिशन पर न भेजा जाए। जानते हैं क्यों?"

"क्यों?"

"क्योंकि जीरकपुर मुझे बहुत अच्छा लगा, मैं यहाँ मकान लेना चाहता हूँ। पुलिस की नौकरी में मेरी ज़िन्दगी का क्या भरोसा। भगवान् न करे, अगर मुझे कुछ हो जाए तो घर वालों को कोई परेशानी न हो।"

"वो तो है। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"आज तो मैं बैंक में खाता खुलवाने आया हूँ।"

"अभी खुल जाएगा।"

"शुक्रिया।" परमजीत सिंह सेठी अकड़ वाले अंदाज में मुस्कुराया – "आप मेरे काम आइये। मैं आपके काम आऊंगा।"

"मेरे काम!"

"हाँ, आप कभी परेशानी में आएं तो मुझे बताईयेगा। कोई गुंडा आपके घर वालों को तंग करता हो या किसी से खुंदक निकालनी हो तो सब इन्तजाम है मेरे पास।" परमजीत सिंह सेठी अपनी होलस्टर को ठीक करता कह उठा – "तो मैं कह रहा था कि मुझे मकान बनवाने के लिए लोन चाहिए।"

"लोन?"

"यही कोई बीस-पच्चीस लाख। कोई दिक्कत हो तो बता दीजियेगा।"

"कोई दिक्कत नहीं। आप जैसे देश के सेवक की सेवा करके मुझे ख़ुशी होगी।" सोढ़ी मुस्कुराकर बोला। उसका दिमाग तेजी से दौड़ने लगा था – "मिल जाएगा आपको लोन।"

"जल्दी चाहिए।"

"जल्दी मिल जाएगा। सब कुछ मेरे हाथ में है।"

"गुड! आपने तो मुझे खुश कर दिया।" परमजीत सिंह सेठी मुस्कुराया।

"एक छोटा-सा काम है आपसे।"

"कहिये, आपका काम करके मुझे ख़ुशी होगी।"

सोढ़ी हिचकिचाया।

परमजीत सिंह सेठी ने उसकी हिचकिचाहट को ताड़ लिया।

"मुझसे बात करने के लिए आपको डरने की जरुरत नहीं। जो भी बात हो, कर डालिए।"

"वो... वो दरअसल, मेरा दोस्त परेशानी में है।"

"परेशानी बोलो मैनेजर साहब!"

"वो भी मेरी तरह बैंक में काम करता है।" सोढ़ी हिम्मत करके बोला – "एक बदमाश ने उसके बेटे को उठा लिया है और इसी दम पर बदमाश उसे मजबूर कर रहा है कि उसकी बैंक लूटने में सहायता की जाए।"

"खूब!" परमजीत सिंह सेठी सतर्क अंदाज में मुस्कुराया – "कौन दोस्त है वो?"

"ये नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"मेरा दोस्त अभी सोच रहा है कि क्या करे? पुलिस की सहायता ले या बदमाश की बात मान जाए। उससे पूछे बिना मैं आपको अपने दोस्त के बारे में नहीं बता सकता। वो अपने बेटे को बहुत चाहता है।" सोढ़ी बोला।

"बेटा कितनी उम्र का है?"

"तेरह साल का।"

"हूँ! तो मुझसे क्या चाहते हैं आप?"

"सलाह ले रहा हूँ कि इस मामले में क्या किया जा सकता है। कैसे बच्चे को बचाया जा सकता है।"

"बहुत आसान है। ये मामला मेरे हवाले कर दो। उसके बाद देखो, बदमाशों का हाल।"

"नहीं, बच्चे को कुछ हो जाएगा।"

"नहीं होगा।"

सोढ़ी ने बेचैनी से पहलु बदला।

परमजीत सिंह सेठी एकटक उसकी आँखों में झाँक रहा था।

“म... मैं अपने दोस्त से बात करके उसके बाद आपसे बात करूँगा इंस्पेक्टर साहब!”

“जरूर।” कहने के साथ ही परमजीत सिंह सेठी ने कार्ड दिया – “इस पर मेरा मोबाइल फोन नम्बर है। जब भी बात करनी हो, कर लीजियेगा। हम पुलिस वालों को खुद नहीं पता होता कि कब वो कहाँ पर होगा। फोन पर तो किसी भी वक़्त बात हो सकती है। चलिए मेरा खाता खोलिए

और कम-से-कम पच्चीस लाख लोन का इन्तजाम भी कीजिये। दो-चार दिन में लोन का इन्तजाम हो जाए तो बढ़िया रहेगा।”

“आज मंगल है, सोमवार तक आपका लोन मिल जाएगा इंस्पेक्टर साहब।”

उसके बाद बैंक में खाता खोलने की कार्यवाही होने लगी।

□□

घंटे भर बाद परमजीत सिंह सेठी बैंक से बाहर निकला। सामने पांच-छः कारें खड़ी थीं। दीवार के पास गनमैन स्टूल पर बैठा था। उसके बाहर आते ही गनमैन ने जबरदस्त सेल्यूट ठोका।

“सब ठीक है ना?” परमजीत सेठी ने रौबीले स्वर में पूछा।

“जी साब जी।”

“सावधानी से ड्यूटी दिया करो। लापरवाही करते हो और मुसीबत हमारे सिर पर आ जाती है।”

“जी.. जी...!”

परमजीत सिंह सेठी पुरानी-सी फ़िएट के पास पहुंचा और चाबी लगाकर दरवाजा खोला, फिर भीतर बैठते हुए स्टार्ट किया और बैक करने के बाद कर आगे बढ़ा दी।

कुछ आगे जाकर उसने सड़क से नीचे कार उतारी और कार में बैठे ही बैठे कपड़े बदल लिए। अब शरीर पर सादी कमीज-पैंट थी। पुलिस की वर्दी को बहुत प्यार से तह किया और बाहर निकलकर कार की डिग्गी में रखकर डिग्गी बंद की।

अब तो पाठक बंधू इस तीरंदाज को पहचान गए होंगे?

नहीं पहचाने?

ये अपना जुगल किशोर ही है।

महाहरामी। महाशातिर, नम्बर वन महाठग...।

दिल्ली से जम्मू जा रहा था और करनाल के पास खाना खाने के लिए रुका तो किसी शरीफजादे ने महाठग पर ही हाथ फेर दिया। कार में ढाई लाख रुपये पड़े थे, वो कोई ले उड़ा।

एकाएक ही जुगल किशोर खाली हाथ हो गया था।

वो तो कार में पेट्रोल भरा था कि जीरकपुर तक आ पहुंचा। मन में यही सोच थी कि चंडीगढ़ पहुंचकर कहीं से पैसों का इन्तजाम करेगा, परन्तु यहाँ आबादी से ज़रा हटकर बैंक देखा तो यहीं पर हाथ मारने की सोची। प्लान बनाया और चंडीगढ़ से ड्रामा कंपनी वालों के यहाँ से वर्दी ले आया और फिर जो हुआ बैंक में, वो नज़ारा तो आपने देख लिया है।

बंधुवर की कार वही थी फ़िएट।

कई साल पहले पैंतीस हज़ार में खरीदी थी। वो ही अब चल रही थी। ये नहीं कि बढ़िया कार वो ले नहीं सकता था। यूँ ही ले नहीं रहा था।

बहुत फायदे थे इस कार के।

पुलिस ऐसी पुरानी कार की परवाह नहीं करती थी। ट्रैफिक पुलिस भी ऐसी पुरानी कार को नहीं रोकती थी, बेशक सिग्नल क्रॉस कर लिया जाए। कार के कागज़ चेक कर लेना तो दूर की बात थी।

पैंतीस हजारी चल रही थी, वो चला रहा था।

जुगल किशोर जैसे ठग का इरादा बैंक से लोन के नाम पर पच्चीस लाख हड़पने का था।

परन्तु इस वक़्त वो कुछ और सोच रहा था।

सोढ़ी की कही बात पर विचार कर रहा था कि उसके दोस्त के बेटे को किसी ने उठा लिया है और उस पर दबाव दे रहा है कि बैंक लूटने में उसकी सहायता करे।

ठग से क्या छिपा था।

वो समझ गया कि सोढ़ी ही किसी मुसीबत में फंसा हुआ है, परन्तु मामले की तह तक पहुंचना जरूरी था। जुगल किशोर ने वहाँ से कार सड़क पर ली और जीरकपुर पहुंचकर बैंक फोन किया सोढ़ी को। उससे उसके घर का फोन नम्बर ये कहकर लिया कि देर-सबेर कोई काम पड़ा तो फोन पर बात कर लेगा।

पुलिस वाले को नम्बर देने पर भला सोढ़ी को क्या एतराज था।

उसने नम्बर दे दिया।

जुगल किशोर ने फोन नम्बर से सोढ़ी के घर का पता एक्सचेंज से मालुम किया और चल पड़ा चंडीगढ़ कि सोढ़ी के घर की खोज खबर ली जाए कि वहाँ क्या गड़बड़ है।

□□

जुगल किशोर ने बेल पर ऊँगली रखी।

भीतर बेल बजने की आवाज़ हुई। फिर क़दमों की आहटें पास आती कानों में पड़ी। उसके बाद दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाली पचास बरस की उम्र की थी। जुगल किशोर ने ताड़ लिया कि चेहरा उतरा हुआ है।

जुगल किशोर मुस्कुराया।

"किससे मिलना है आपको?" औरत ने बेमन से पूछा।

"आपको घबराने की कोई जरुरत नहीं।" जुगल किशोर ने शांत स्वर में कह – "पुलिस पर भरोसा रखिये। हम आपके बच्चे को सही-सलामत घर वापस ला देंगे। क़ानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं।"

औरत चौंकी।

राजू की गुमशुदगी के बारे में अभी तक किसी को नहीं बताया था, फिर पुलिस को कैसे पता चला?

"आप सोच रही होंगी कि हमें कैसे पता चला आपके बच्चे के बारे में। मामूली बात है ये जान लेना। जैसा कि मैनें आपको पहले भी कहा है कि क़ानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। पुलिस की नयी स्कीम के आधार पर ख़ुफ़िया तौर पर हर घर पर सरसरी निगाह रखी जाती है कि कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं। बस, उससे ही हमें पता चल गया।"

औरत के होंठ काँपे।

"हिम्मत रखिये और भीतर चलिए। मुझे सारी बात बता दीजिये। मैं गारंटी देता हूँ कि आपका बेटा सही-सलामत वापस आएगा। हमारी सतर्कता देखिये कि मैं वर्दी पहनकर आपके पास नहीं आया। सादे कपड़ों में आया हूँ कि दुश्मन यहाँ नज़र भी रख रहा हो तो उसे किसी बात का शक न हो। चलिए भीतर। बाकी बातें भीतर करते हैं।"

औरत की आँखों से आंसू निकले और पलटकर वो भीतर प्रवेश कर गयी।

जुगल किशोर भी उसके पीछे चला गया और उससे राजू के अपहरण के बारे में हर बात जान ली, जो वह नहीं जानता था।

□□

जुगल किशोर वापस जीरकपुर पहुंचा।

शाम के पांच बज रहे थे।

बैंक के सामने से ही निकला, परन्तु अभी बैंक जाने का उसका कोई इरादा नहीं था। सीधा निकलता चला गया। पैंतीस हजारी अपनी मस्त रफ़्तार पर आगे बढ़ी जा रही थी। तभी सामने पेड़ों पर लटके टायरों को देखकर उसे ध्यान आया कि कई दिन से टायरों में हवा नहीं डलवाई।

और फिर वहीं पर जाकर कार रोकी, जहां टायर लटके हुए थे।

पीछे खोखा था।

इधर पेड़ के नीचे गोलू कुर्सी पर बैठा ऊँघ रहा था।

सूरमा खोखे के पास एक टायर खोले बैठा पंचर लगाने के लिए ट्यूब घिस रहा था।

जुगल किशोर कार से बाहर निकला और गोलू के पास जा पहुंचा।

"हवा भरनी है।" जुगल किशोर ने गोलू से कहा।

"अभी लो।" गोलू उठता हुआ बोला – "दस रुपये लगेंगे।"

"दस रुपये!"

"पैरों के पैडल से हवा भरनी पड़ती है, मेहनत लगती है। आप भर लीजिये।"

"ठीक है, ठीक है। भरो।"

गोलू हवा भरने वाली मशीन ले आया और पहिये में पैडल मार-मारकर हवा भरने लगा।

"ये कौन-सा मॉडल है?" गोलू ने पूछा।

"अस्सी का।"

"अब तो बेचारी को छोड़ दो। इतने पुराने मॉडल की कार कहाँ चलती है?"

"ये चल रही है।"

"कहाँ से आ रहे हैं आप?"

"दिल्ली से, जम्मू जाना है और कुछ पूछना है?"

तब तक सूरमा अपने काम से फारिग होकर वहाँ आ गया था।

"दिल्ली में आपका बिज़नेस है?" सूरमा ने पूछा।

"नहीं।"

"नौकरी है?"

"नहीं।"

"तो बाप-दादे की जायदाद मिली होगी?"

"नहीं।" जुगल किशोर ने सिगरेट सुलगा ली।

"कमाल है, तो फिर खर्चा-पानी कैसे चल रहा है?" सूरमा ने अजीब-से स्वर में पूछा।

"ऊपर वाले की मेहरबानी है।"

सूरमा ने आसमान की तरफ देखा फिर जुगल किशोर को।

"ऊपर वाला तुम पर क्यों मेहरबानी कर रहा है, मुझ पर क्यों नहीं करता?"

"ये तो ऊपर वाला ही जाने।"

तभी गोलू एक टायर की हवा भरते-भरते ठिठका, बोला।

"साब जी पंचर है।"

"पंचर!" जुगल किशोर ने उसे देखा – "अभी तो सब ठीक था।"

"मैनें तो कर नहीं दिया। सब कुछ आपके सामने हैं। कहो तो लगा दूं, नहीं तो रहने देता हूँ।"

"लगा दे।"

गोलू फुर्ती से जैक चढाने लग गया।

"बैठिये, कुर्सी पर बैठिये। कुछ वक़्त लगेगा, कब तक खड़े रहेंगे?"

जुगल किशोर आगे कुर्सी पर बैठ गया।

सूरमा उसके पास बैठा।

"साब जी, दिल्ली में कोई धंधा बताओ।"

"धंधा, वहाँ कुछ करने के लिए मोटे नोट चाहिए।"

"नोटों की फ़िक्र मत करो।"

"क्यों – कितने हैं?"

"एक करोड़।"

जुगल किशोर हड़बड़ाया।

"पंचर लगा-लगाके तुमने एक करोड़ इकट्ठा कर लिए?" जुगल किशोर के होंठो से निकला।

"शराफत से कहाँ पैसा कमाया जाता है।"

"तो तुमने कहाँ से इतना पैसा इकट्ठा किया?"

"अभी कहाँ किया है, कुछ ही दिन में इन्तजाम अवश्य हो जाएगा।"

"कहाँ से?"

"मेरा बाप मरने वाला है।"

"कब?"

"कुछ दिन में?"

जुगल किशोर ने उसे घूरा।

सूरमा मुस्कुराया।

"बात कुछ और ही है, बाप मरने पर इस तरह करोड़ रुपया हाथ नहीं आता। अगर इतना ही दम है तो तुम पंचर न लगाते।"

"सूरमा! तू कौन-सी फ़ालतू बात ले बैठा। चाचा से हार्डवयेर की दुकान खरीद लेंगे। हर आते-जाते से दिल्ली की बात मत किया कर। कौन कैसा आदमी है, हमें क्या पता?" गोलू पहिया निकालता कह उठा।

"तू ठीक कहता है।"

जुगल किशोर ने दोनों को व्यंग भरी नज़रों से देखा, फिर बोला।

"तुम दोनों क्या हर आने वाले को ऐसी बातें करके ही बेवकूफ बनाते हो?"

"क्या मतलब?"

"दो दिन पहले ही मेरा दोस्त मिला था मुझे, वो बता रहा था कि जीरकपुर में पंचर के खोखे पर दो लड़के हैं, जो कि करोड़ों से कम की बात नहीं करते।" जुगल किशोर का स्वर तीखा था।

सूरमा और गोलू की नज़रें मिलीं।

"क्यों, पहले हमने किसी से बात की है गोलू।"

"नहीं, कभी नहीं।"

"फिर तो ये बण्डल मारता है।" सूरमा मुस्कुरा पड़ा – "साब जी, बात ऐसी है कि हम ठहरे गरीब बंदे। पैसा हमारे पास है नहीं, इसलिए करोड़ों की बातें करके दिल बहला लेते हैं।"

जुगल किशोर ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

गोलू पंचर लगाता रहा।

कुछ देर बाद जुगल किशोर ने पूछा।

"यहाँ कहीं होटल है ठहरने के लिए?"

"बिल्कुल है, सामने लालबत्ती है। बायीं तरफ मुड़कर थोड़ा-सा आगे जाईये तो वहाँ होटल महक पैलेस नज़र आएगा।"

"धन्यवाद।"

"कोई बात नहीं, ये तो हमारा फ़र्ज़ है आते-जाते की सेवा करना। एक बात बताएँगे?"

"क्या?"

"लोग पैसा कैसे कमा लेते हैं, जबकि करते कुछ नहीं।"

जुगल किशोर मुस्कुराया।

"इसका मतलब आप जानते हैं कि कैसे कमाते हैं करोड़ों।"

"ऊपर वाले से पूछो।"

"आप नहीं जानते?"

"नहीं।"

"आप कहते हैं तो सच मान लेते हैं। फिर भी करोड़ों कमाने का कोई रास्ता मिले तो बताईयेगा।"

"अब चुप रहना। करोड़ों की बातें सुनकर मेरा सिरदर्द होने लगा है।"

"आपकी मर्जी। चुप हो जाते हैं।"

तभी गोलू ऊँचे स्वर में कह उठा।

"मिल गया। मिल गया।"

"क्या?" सूरमा ने उसकी तरफ देखा।

"पंचर! साला छोटा-सा है, पकड़ में नहीं आ रहा था।"

□□

जुगल किशोर होटल महक पैलेस पहुंचा तो शाम के साढ़े छः बज रहे थे। पैंतीस हजारी को उसने होटल की छोटी-सो पार्किंग में खड़ा किया और पीछे वाली सीट पर रखा छोटा-सा बैग उठाकर होटल के भीतर प्रवेश कर

गया। छोटा-सा, साफ़-सुथरा लेकिन बेहतरीन होटल लगा उसे।

रिसेप्शन पर पहुंचा।

बीस-बाईस बरस का युवक मौजूद था उसके पीछे।

"वेलकम सर।" युवक मुस्कुराकर बोला।

"कैसे हो?" जुगल किशोर ने दोस्ताना स्वर में पूछा।

"ठ.... ठीक हूँ सर!" युवक कुछ हड़बड़ाया।

"कमरा चाहिए।"

"सिंगल रूम सर।"

"डबल, मुझे टाँगे फैलाकर नींद लेने की आदत है।"

"श्योर सर।" युवक मुस्कुराया और एंट्री रजिस्टर खोलकर उसकी तरफ सरकाया – "एंट्री कर दीजिये।"

जुगल किशोर ने रजिस्टर संभाला और दिल्ली का फर्जी पता और नाम जुगल किशोर ही लिखा।

तभी उसकी सांसों से परफ्यूम की खुशबु टकराई।

जुगल किशोर की आँखें सिकुड़ी। उसने रिसेप्शन पर खड़े युवक को देखा।

वो युवक उसके पीछे देख रहा था।

इससे पहले कि जुगल किशोर गर्दन घुमाकर पीछे देखता, कानों में खनकती आवाज़ पड़ी।

"चाबी प्लीज।"

"ओह.... हाँ!" युवक संभलकर पलटा और की-बोर्ड से चाबी निकालकर उसकी तरफ बढ़ाई।

जुगल किशोर जैसा औरतखोर फ़ौरन पलटा।

अगले ही पल जुगल किशोर के तन-मन में घंटियाँ बज उठी।

वो छब्बीस बरस के आस-पास की थी। उसने घुटनों तक टाइट स्कर्ट और ऊपर स्कीवी पहन रखी थी। कमर तक जाते सिल्की बाल लापरवाही से उसने बाँध रखे थे। इसलिए बालों की कई लटें इधर-उधर निकल कर लहरा रही थीं। रंग न गोरा न सांवला। लम्बाई 5.5", शरीर के उभार आवश्यकतानुसार। कानों में लटकते झुमके। होंठों पर कोक कलर की लिपस्टिक। नाक में चमकता हुआ कोका। चेहरा इतना खुशनुमा था कि देखने वाला देखता ही रहा जाता।

"खुबसूरत।" जुगल किशोर के होंठों से निकला।

चाबी थामते हुए युवती ने उसे घूरा।

जुगल किशोर मुस्कुराकर बोला।

"आपने मैडम, चाइना डेली यूज़ का परफ्यूम लगा रखा है। मुझे ये बहुत अच्छा लगता है।"

युवती ने पुनः तीखी नज़रों से उसे घूरा और पलटकर आगे बढ़ गयी। उसके सेंडिलों की ठक-ठक कानों में पड़ती रही। जुगल किशोर उसे होटल की लॉबी में आगे बढ़ता देखता रहा कि वो पलटकर उसे देखेगी। परन्तु उसने नहीं देखा उअर लॉबी के मोड़ से मुड़ गयी।

जुगल किशोर गहरी सांस लेकर सीधा हुआ।

युवक मुस्कुराया।

"क्या नाम है इन मैडम का?" जुगल किशोर ने पूछा।

"चंदा।"

"कब से ठहरी है यहाँ?"

"आज तीसरा दिन है।"

"अकेली?"

"यस सर।"

"कोई मिलने आया।"

"नो सर। दस-ग्यारह बजे जाती है और शाम को इसी वक़्त लौटती है।"

"कहाँ से आई है?"

"सॉरी सर! किसी कस्टमर के बारे में जानकारी देना मेरे अधिकार में नहीं है।"

जुगल किशोर ने पांच सौ का नोट निकालकर उसे थमाया।

युवक ने मुस्कुराकर नोट जेब में डालते हुए कहा।

"दिल्ली की है। यहाँ प्रॉपर्टी बेचने आई है।"

"खूब!" जुगल किशोर ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला लेकिन युवक को दिया नहीं – "ये नोट भी तुम्हारा हो सकता है। अगर तुम मुझे इस खुबसूरत चंदा के बगल वाला कमरा दे दो।"

"सॉरी सर, मैडम के आस-पास के कमरे खाली नहीं है।" युवक मुस्कुराकर कह उठा – "अगर आप मुझे ऐसे दो नोट दें तो मैडम के ठीक सामने वाला कमरा आपको दे सकता हूँ।"

"वो कमरा तो तुम मुझे वैसे भी दे सकते हो।"

"नो सर, वो बुक है। उसमें ठहरने वाले रात को आ रहे हैं। ऐसे में उनके नाम दूसरा कमरा चढ़ाकर, वो कमरा

आपको दे सकता हूँ। दरवाजा खोलते ही बीच में चार फीट की गैलरी और फिर मैडम का कमरा।" युवक मुस्कुराया।

जुगल किशोर ने दो नोट निकालकर उसे दिए।

अगले दस मिनट में जुगल किशोर 204 नम्बर कमरें में था और ठीक सामने 212 नम्बर कमरा था, जिसमें कि वो चाँद का टुकड़ा चंदा थी।

कमरा बढ़िया था।

बाथरूम में जाकर कंघा किया, बाल सँवारे और अपने कमरे से निकलकर सामने वाले कमरे के दरवाजे पर जा पहुंचा। कॉलबेल दबाई। भीतर बेल हुई।

फ़ौरन ही दरवाजा खुला।

चन्दा जैसी खुबसूरत शह उसके सामने थी।

जुगल किशोर मुस्कुराया।

जबकि चंदा शांत निगाहों से एकटक उसे देखने लगी।

"गुड इवनिंग चंदा जी, मैं आपके सामने वाले कमरे में ही ठहरा हूँ।"

"ये कमरा लेने के लिए कितना दिया रिसेप्शन पर?" उसने शांत स्वर में पूछा।

जुगल किशोर की मुस्कान कुछ फीकी पड़ी, अगले ही पल पुनः चमक उठी।"

"पांच सौ के दो नोट।"

"हज़ार रुपया खराब कर दिया।"

"खराब, मेरा हज़ार तो अब तक वसूल हो गया है।"

"औरतों के परफ्यूम के बारे में बहुत जानकारी है तुम्हें।" उसका स्वर शांत ही था।

"चाइना डेली यूज़ के बारे में ही जानकारी है सिर्फ।"

"कौन लगाती है?"

"हैं नहीं थी, थी एक आप जैसी ही खुबसूरत। रिसेप्शन पर जब चाइना डेली यूज़ की स्मेल साँसों से टकराई तो मैनें सोचा शायद वो ही मेरे पीछे आ खड़ी हुई है।" जुगल किशोर ने गहरी सांस ली – "मेरा नाम जुगल किशोर है। आप जैसी हसीनाओं का खादिम हूँ।"

"तुम मुझे समझते क्या हो, जो मेरे दरवाजे पर आ पहुंचे।" उसका स्वर शांत था।

"मैं तो अपना परिचय देने...।"

"दुबारा मत आना। मैं बेकार के लोगों से नहीं मिलती।"

"वही तो मैं साबित करना चाहता हूँ कि मैं बेकार का नहीं हूँ। मुझे मौक़ा दो, मैं अभी साबित कर दूंगा।"

"अजीब जबरदस्ती है।" उसने तीखे स्वर में कहा और दरवाजा बंद कर लिया।

अच्छी बात ये ही रही कि दरवाजा जुगल किशोर की नाक से लगते-लगते बचा।

"साली, तीखी बड़ी है।" जुगल किशोर बड़बड़ाया।

तभी दरवाजा खुला। वो फिर दिखी।

जुगल किशोर ने मुस्कुराने की चेष्टा की कि तबी पुनः दरवाजा बंद हो गया।

"भाड़ में जा।" जुगल किशोर ने मुंह बनाया और पलटकर अपने कमरे में प्रवेश कर गया।

□□

जुगल किशोर ने नहा-धोकर कुरता-पायजामा पहना। नौ बज गए थे। कमरे में डिनर मंगवाने की अपेक्षा होटल के रेस्टोरेंट में डिनर लेने की सोचकर बाहर निकला।

चंदा के बंद दरवाजे पर निगाह पड़ी। बरबस ही मुस्कुरा पड़ा। फिर दरवाजा बंद करके राहदारी में आगे बढ़ गया। सीढ़ियाँ तय करके ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचा और पास से निकलते कर्मचारी से रेस्टोरेंट के बारे में पूछा।

"वो रहा सर। शीशे के दरवाजे पर रेस्टोरेंट लिखा है।"

"थैंक्स।" जुगल किशोर उस तरफ बढ़ गया।

शीशे का दरवाजा धकेलकर भीतर प्रवेश किया।

रेस्टोरेंट में करीब पंद्रह लोग बैठे थे।

तभी उसकी निगाह चंदा पर पड़ी।

चंदा के सामने ख़त्म हुआ बियर का मग रखा था और वो ऑर्डर देने के लिए मेनू की छानबीन कर रही थी। जुगल किशोर मुस्कुराया और उसके पास जा पहुंचा।

"हेल्लो!"

चंदा ने सिर उठाकर उसे देखा।

बियर के नशे में उसकी आँखें मस्ती से भरी लग रही थी। उसने पुनः गर्दन नीचे की और नज़रें मेनू पर टिका दी। जुगल किशोर ढीठ स्वर में बोला। "अगर आपको एतराज न हो तो मैं यहाँ बैठ जाऊं?"

"बैठ जाओ।" उसने लापरवाही से कहा।

"थैंक्स चंदा जी।" जुगल किशोर बैठते हुए बोला – "आपको देखकर मुझे उसकी याद आ जाती है।"

"किसकी?" उसने मेनू से नज़रें हटाई।

"गोवा में मिली थी, बीच पर। उसका चेहरा बिल्कुल आपसे मिलता है।"

"बिल्कुल?"

"कसम से, बिल्कुल।"

"वो मेरी बहन है।"

"बहन!" जुगल किशोर अचकचाया।

"उसकी शक्ल मेरे से मिलती है तो वो मेरी बहन ही होगी।" चंदा ने मेनू टेबल पर रखा और बीयर का घूँट भरा। बियर की छाप उसके चेहरे पर स्पष्ट नज़र आ रही थी।

जुगल किशोर को इस वक़्त वो और अभी खुबसूरत लगी।

"क्या लोगे?" चंदा ने खुले दिल से पूछा।

"बियर।"

चंदा ने वेटर को बुलाया और बियर लाने को कहा।

"मैनें जब शाम को आपको रिसेप्शन पर देखा तो तभी आपका दीवाना हो गया।"

"मेरा दीवाना?" वो मुस्कुरायी।

"हाँ!"

"मेरा दीवाना होने के लिए पास में नोट होने चाहिए। मेरी आदतें बिगड़ी हुई हैं।"

"मुझे तो नहीं लगता।"

"मैं वासवानी परिवार की बहू हूँ।"

"वासवानी परिवार – कभी सुना नहीं।"

"मामूली लोग बड़े घरों के बारे में सुन नहीं पाते।"

"मैं मामूली नहीं हूँ।"

"तो कौन हो?"

"मैं अजमेरा परिवार का एकमात्र वारिस हूँ। अथाह दौलत का मालिक।"

"अजमेर परिवार?" चंदा बुदबुदाने वाले अंदाज में बोली।

"हाँ!"

"ये कहाँ है?" चंदा ने नज़रें उठाकर जुगल किशोर को देखा – "कभी सुना नहीं।"

"हैरानी है कि वासवानी परिवार ने अजमेरा परिवार के बारे में नहीं सुना। खैर.... अजमेर का सबसे शाही खानदान है हमारा। अजमेरा के नाम पर ही तो अजमेर शहर का नाम पड़ा।"

"अच्छा, हो सकता है। मैनें सुना नहीं। यहाँ कैसे आये?"

वेटर बियर का मग रख गया।

"जल्दी ख़त्म करो बियर। फिर खाना खायेंगे।"

जुगल किशोर ने मग उठाकर बियर का घूँट भरा।

"तुमने बताया नहीं।"

"क्या?"

"जीरकपुर में कैसे आए?" चंदा ने मग के बचे चाँद घूंटों में से एक घूँट भरा।

"यहाँ अजमेरा स्माल सिटी बसाने की सोच रहा हूँ।"

जीरकपुर में।"

"चंडीगढ़ की तरफ। जीरकपुर समाप्त होते ही जहां चंडीगढ़ शुरु होता है, वहाँ की बात कर रहा हूँ। खाली

जमीन पड़ी है उधर। चौदह करोड़ में उस जमीन का सौदा कर रहा हूँ।" जुगल किशोर ने कहा।

"सिर्फ चौदह करोड़?"

"साथ लगती पैंतीस करोड़ की जमीन पहले ही खरीद चुका हूँ।"

चंदा ने पूरी आँखें खोलकर जुगल किशोर को गहरी निगाहों से देखा।

"लगते तो नहीं।"

"क्या?"

"यही कि इतने अमीर हो।"

"मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो अपनी अमीरी का झंडा साथ लाकर फिरें। मैं शानो-शौकत के आडम्बर से बचकर रहना चाहता हूँ। सामान्य लोगों के करीब रहना मुझे अच्छा लगता है।"

"मेरे जैसी ही आदत है।" चंदा लापरवाही से बोली।

बातों के साठ-साथ जुगल किशोर बियर के घूँट भरता जा रहा था।

"शादी नहीं की तुमने?" चंदा ने पूछा।

"नहीं।"

"मैं वासवानी परिवार से तलाक चाहती हूँ। वहाँ रहकर मेरा दम घुटता है।"

"फिर तो तुम्हें फ़ौरन तलाक ले लेना चाहिए।"

"डरती हूँ।"

"किससे?"

"अपने आप से। मेरे खर्चे बहुत हैं। वो कैसे पूरे होंगे।" चंदा ने गहरी सांस ली।

"लो, ये भी कोई बात है। हमारे अजमेर आ जाओ। छोटा किला तो अभी तक खाली पड़ा हुआ है। हर रोज उसकी साफ़-सफाई होती है। चौबीस नौकर हर वक़्त वहां मौजूद रहते हैं। खर्चें की परवाह मत करो। तुम्हारी हर जरुरत को पूरा किया जायेगा।" जुगल किशोर ने फ़ौरन कहा।

"ओह, कितने अच्छे हो तुम।"

"तो तुम्हें मेरा अच्छापन नज़र आ गया।"

"रियली, यु आर ग्रेट। अच्छा, एक बात बताओ जुगल किशोर।"

"अजमेरा! तुम मुझे अजमेरा भी कह सकती हो।"

"हाँ, तो अजमेरा, मैं तुम्हें कैसी लगती हूँ?"

"खुबसूरत! लाजवाब!"

चन्दा ने नशीली आँखों से जुगल किशोर को देखा।

"सच!"

"दिल से सच। जब से तुम्हें देखा है, मेरा चैन छीन गया है।" जुगल किशोर ने सांस भरी।

"लगता तो नहीं।"

"तुम्हें कैसे लगेगा। चैन तो मेरा छीना है। तुम्हें देखते ही तुम्हारे सामने वाला कमरा ले लिया। फिर तुमसे मिलने भी आया और अब तुम्हारे पीछे-पीछे आ गया। तुम क्या जानो कि तुमसे बात करके मेरे मन को कितना आराम मिल रहा है।"

चंदा ने बियर का मग खाली किया।

"मैनें तो अभी से तुम्हें छोटा किला दे दिया है।"

"मैं ऐसे किला नहीं लेती।"

"तो तुम्हारे नाम कर दूं।"

"ऐसे नहीं।"

"तो?"

"मुझसे शादी कर लो?"

"शादी, वो तो तुम्हारी वासवानी परिवार में हो चुकी है।"

"वहाँ से मैं तलाक ले लूंगी।"

"सच?"

"कसम से।"

"ओह! कितना अच्छा होगा कि तुम वासवानी परिवार से तलाक ले लोगी।"

"ऐसे नहीं।"

"तो?"

"तुम मुझसे ब्याह करोगे, तो तभी तलाक लूंगी। ऐसा न हो कि मैं किसी भी तरफ की न रहूँ।"

"ब्याह!" जुगल किशोर ने बियर के कई घूँट एक साथ भरे।

"क्यों, क्या हो गया?"

"परेशानी आ जायेगी मेरे लिए।"

"वजह।"

"मेरी माँ ने मेरे ब्याह के लिए लड़की पसंद कर रखी है। बचपन में ही मेरा ब्याह तय हो गया था।"

"तो मत करो उससे, दिक्कत क्या है? मना कर दो अपनी माँ को।"

"मना कर दूं!" जुगल किशोर उसे देखने लगा।

"और क्या?"

"ठीक है, मना कर दूंगा। ज्यादा-से-ज्यादा वो मुझे जायदाद से बेदखल कर दोगी, उसकी मुझे परवाह नहीं। तुम हो ना मेरे साथ। रुखी-सूखी खाकर हम जैसे भी होगा, ज़िन्दगी बिता लेंगे।"

चंदा का आधा नशा उतर गया।

"रुखी-सूखी खाकर!" उसके होंठों से निकला।

"प्यार में सब कुछ करना पड़ता है।" जुगल किशोर बोला।

"मुझे ऐसा प्यार नहीं चाहिए।"

"तो कैसा चाहिए?"

"नोटों वाला, रुखा-सुखा नहीं। मैं पैसे के बिना जिंदा नहीं रह सकती।"

"आदमी के बिना?"

"रह लूंगी। आदमी तो हर कदम पर मुंह उठाये खड़े हैं। जब जरुरत पड़ी, पकड़ लिया। पैसा तो हर कदम पर नहीं पड़ा।"

"ओह! तुम्हारे विचार इतने अच्छे हैं कि तुम्हें अजमेरा परिवार में आ जाना चाहिए।"

"पहले अपनी माँ को मना लो। मैं तो तैयार हूँ।"

जुगल किशोर ने बियर का मग खाली किया और मेनू थाम लिया।

"क्या हुआ? बात करो न, अच्छा लग रहा है।"

"तुम्हें भूख लगी है?" जुगल किशोर ने उसे देखा।

"हाँ!"

"मुझे भी लगी है। खाने के लिए ऑर्डर दे लूँ। तुमने कितनी बियर पी है?"

"दो।"

"तभी चढ़ गयी लगती है।" जुगल किशोर ने मेनू देखते हुए कहा – "बैंक बैलेंस हैं तुम्हारे पास?"

"नहीं, सब खाते खाली है।"

"तो तुम मेरे किस काम की।"

"क्या... क्या कहा तुमने?"

"मैनें कहा, अगर भरे भी होते तो मैंने क्या करने थे।"

"ओह, मैनें समझा तुमने कुछ और कहा है।"

जुगल किशोर ने वेटर को बुलाकर ऑर्डर नोट करवाया।

वेटर चला गया।

"इतना ज्यादा सामान क्यों मंगवा लिया?"

"अजमेरा खानदान की परम्परा रही है कि खाने का टेबल भरा होना चाहिए। तुम्हारा रात का क्या प्रोग्राम है?"

"रात का – नींद लूंगी!"

"मेरे कमरे में नहीं आओगी?"

"वहाँ – वहाँ क्या करुँगी?"

जुगल किशोर उसे घूरने लगा।

"यूँ क्या देख रहे हो?"

"मैनें तुम्हें छोटा किला दे दिया और तुम मेरे कमरे में आने को मन कर रही हो।"

"कहाँ दिया तुमने किला?"

"देने को कह तो दिया है। ये क्या कम है।"

"जब मैं किले में आ जाऊं तो तुम मेरे पास आ जाना। मेरे कमरे में।"

"अब नहीं।"

"नहीं। आज मेरा खूब नींद लेने का प्रोग्राम है। दो बियर का नशा काफी ज्यादा हो रहा है।"

"दो बियर पीने की जरुरत क्या थी?"

"आज मैं बहुत खुश हूँ।"

"खुश!"

"हाँ, दो को चूना लगाकर पुरे ब्यालीस लाख कमाए हैं।" चंदा मस्ती में कह उठी।

"ब्यालीस लाख?" जुगल किशोर के कान खड़े हुए।

चंदा ने सिर को झटका दिया। नशे से भरी पूरी आँखें खोली।

जुगल किशोर समझ गया कि सामने बैठी चंदा नम्बरी हरामी है।

"क्या कहा मैंने अभी-अभी?" वो एकाएक कुछ संभली।

"तुम कह रही थी कि तुम्हारे ब्यालीस सौ रुपये कहीं गिर गए हैं।"

"ओह हाँ, कहीं गिर गए हैं गिरने दो – मेरे पैसे अक्सर गिर जाते हैं।"

खाना आ गया।

दोनों खाना खाने लगे।

"कितनो को चूना लगाया – दो को?"

"हाँ!" खाते-खाते उसने सिर हिलाया।

"कैसे?"

"एक प्लाट मैंने दो लोगों को बेचकर उनसे नोट ले लिए। एक से बीस – एक से बाईस।"

"कर दिया काम?"

200

"हां आज ही तो किया है।"

"और अभी तक यहीं रुकी हो, वो दोनों तुम्हारी हड्डियाँ बराबर कर देंगें। खिसक जाओ।"

"अब रात को कहां जाऊं?"

"मेरे कमरे में आ जाओ।"

"तुम्हारे कमरे में?"

"सामान भी ले आओ। वो दोनों...।"

"नहीं, मैं अपने कमरे में ही ठीक हूं।"

"मर्जी तुम्हारी। मैंने तो सही सलाह दी थी।"

"अभी उन्हें कहां पता चलेगा। कल सुबह मैं भाग जाउंगी।" वो हौले से हंसी।

"प्लॉट तुम्हारा था?"

"मेरा कहां था -किसी के कागज हाथ लग गये और यहां आकर मैंने प्लॉट बेच दिया।"

"जल्दी से खाना लाओ और अपने कमरे में जाकर सो जाओ। बाकी बातें सुबह होगी।"

दोनों खाना खाते रहे।

"बिल तो तुम दोगे?"

"ठीक है, मैं दे दूंगा। खाना खाकर तुम जल्दी से यहां से उठो।"

□□

रात को ग्यारह बज रहे थे।

जुगल किशोर नींद लेने की तैयारी में था कि उसके मोबाइल फोन की बेल बजी। स्क्रीन पर आया नम्बर देखा, जो उसके लिये बिल्कुल अंजान था।

"हैलो।"

"नमस्कार सेठी साहब। मैं सोढ़ी बोल रहा हूं, बैंक मैनेजर।"

"नमस्कार...नमस्कार...।"

"आपने तो बहुत गड़बड़ कर दी। मेरे घर तक आ पहुंचे।" स्वर में शिकायत थी।

"मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि मैं बहुत खतरनाक पुलिसवाला हूं। उड़ती चिड़िया के पंख गिन लेता हूं। मेरे लिए छोटी सी बात है। आपको तब मेरे से स्पष्ट बात करनी चाहिए थी।" जुगल किशोर बोला।

"मेरे बेटे की जिंदगी का सवाल..।"

"मेरे होते, फिक्र मत करो। मैं...।"

"मैं नहीं चाहता कि मेरे मामले में पुलिस दखल दे। हाथ जोड़कर आपसे विनती...।"

"तो आप क्या चाहते हैं कि अपराध को देखकर मैं भी अपने फर्ज से से मुंह मोड़ लूं।"

"आप समझने की चेष्टा क्यों नहीं करते? मैं..।"

“चिंता मत कीजिए। मैं कल सुबह बैंक में आकर आपसे बात करूंगा।”

“फिर तो बात खुल जाएगी। बैंक के कर्मचारी भी जान..।”

“मैं अकेला आऊंगा, सादे कपड़ों में। किसी को कुछ पता न चलेगा।”

“ठीक है।”अनमनी-सी आवाज जुगल किशोर के कानों में पड़ी।

“मेरे लोन का क्या हुआ?”

“हो जाएगा आपका काम। सोमवार तक चेक आपके हाथ में होगा।”

जुगल किशोर ने फोन बंद कर दिया।

□□

तेज बेल बजी। बार-बार बजी। धाड़-धाड़ दरवाजा पीटा जाने लगा।

जुगल हड़बड़ाकर उठा।

वाल क्लॉक पर निगाह मारी तो सुबह के सात बजते देखे।

“कैसा घटिया होटल है ये।” जुगल किशोर बेड से उतरा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

बेल पुनः बजी।

जुगल किशोर ने झुंझलाकर सिटकनी हटाई और दरवाजा खोला।

अगले ही पल चेहरे पर मुस्कान बिछ गई।

सामने चंदा खड़ी थी। उसके चेहरे से लग रहा था कि वो अभी नींद से उठकर आई है। गाउन में थी। बालों की लटें रह-रहकर माथे पर आ रहीं थीं, जिन्हें वो झटककर पीछे कर देती। हाथ में एक सूटकेस और दूसरे हाथ में कुछ कपड़े थाम रखे थे।

"सुबह-सुबह आपका चेहरा देख लिया। दिन बढ़िया निकलेगा।" जुगल किशोर मुस्करा पड़ा।

"मुझे भीतर आना है।" वो बैचेनी से कह उठी।

"सामान के साथ।"

"हां, हटो।"

जुगल किशोर एक तरफ हटता हुआ बोला।

"मैंने तो रात ही कहा था कि मेरे कमरे में आ जाओ।"

उसने सूटकेस रखा, कपड़े एक तरफ उछाल दिए और बेड के किनारे आ बैठी।

"रात कब कहा था?"

"जब तुम बियर के नशे में थी।"

"ये दरवाजा क्यों खोले हो। बंद करो।" चंदा बेसब्री से बोली।

जुगल किशोर ने दरवाजा बंद करके गहरी निगाहों से चंदा को देखा।

"तुम तो आज होटल खाली करके निकल जाने वाली थी?"

"किसने कहा तुमसे?"

"तुमने ही कहा था।"

"रात जब मैं बियर के नशे में थी?"

"हां!"

"हे भगवान। ये नशा मुझे उल्टा कर देता है। पता नहीं मुंह से क्या-क्या निकल जाता है। अजमेरा कौन है?"

"अजमेरा?"

"हां, रात मैं किसी अजमेरा से बात रही थी। इतना तो याद है मुझे। तब मुझे लगा कि मैं छोटे किले की मालकिन बन गई। उफ्फ...रहने दो। शायद मैंने कोई सपना देखा हो।"

जुगल किशोर कुछ पल उसे देखता रहा, फिर आगे बढ़कर कुर्सी पर जा बैठा।

चंदा मुंह लटकाए उसे देख रही थी।

"क्या हुआ?"

"मैं मुसीबत में हूं।"

"वो तो लग ही रहा है।" जुगल किशोर ने सिगरेट सुलगाई, "क्या मुसीबत है?"

"मेरे अंकल आने वाले हैं।"

"होटल में?"

"हां, अभी फोन आया था।" चंदा की आवाज में हिचकिचाहट उभरी।

"क्या?"

"चंदा चुप रही।

"तुम्हारे अंकल वो ही तो नहीं, जिन्हें तुमने प्लॉट बेचा है।"

"तुम्हें कैसे पता?" उसके होंठों से निकला, "हां, वो ही हैं।"

"फिर तो तुम्हारे दो अंकल होने चाहिए। तुमने दो को एक ही प्लॉट बेचा है।"

चंदा की निगाह जुगल किशोर पर ही टिकी रही, फिर बोली।

"समझी, तो रात को नशे में मैंने तुम्हें सब बता दिया है।"

"ग्याहर सौ रुपये का बिल चुकाया था मैंने बियर का।"

चंदा हौंले से सिर हिलाकर रह गई।

"तुम्हारे इस सूटकेस में बयालीस लाख रुपया होना चाहिए।"

उसका हाथ फौरन सूटकेस पर जा पहुंचा।

"घबराओ मत। मैं औरतों के पैसे नहीं लेता। तो अब वो आ रहा है?"

"हां, उसे पता चल गया कि मैंने प्लॉट दो को बेचा है। वो मेरा सिर तोड़ देगा।"

"ऐसे काम करते ही खिसक जाना चाहिए और तुम कल शाम से यहां जमी बैठी हो।"

चंदा चुप रही।

"ठीक है, तुम यहीं रहो। आराम से रहो। किसी को पता नहीं चलेगा।"

"ऐसे मैं कब तक रह सकती...।"

"आज का दिन तो रहो, फिर मैं कोई रास्ता निकालूंगा।"

"होटल का बिल भी चुकाना है। होटल वाले ने मुझे देख लिया तो वो भी मुझे पकड़ लेंगें।"

“पैसे मुझे दे देना। बिल मैं चुका दूंगा।”

“ठीक है, तुम..।”

तभी बाहर आवाजें सुनाई दी।

चंदा का चेहरा घबराहट से भर उठा।

“तुम बाथरूम में चली जाओ।”

चंदा फौरन बाथरूम में चली गई।

जुगल किशोर ने दरवाजा खोला तो सामने वाले कमरे के खुले दरवाजे से बाहर निकलते तीन आदमियों को देखा। उनमें से एक का चेहरा गुस्से से भरा हुआ था। जुगल किशोर समझ गया कि चंदा ने उसे ही मुर्गा बनाया है। सामने जुगल किशोर को दरवाज खोलते पाकर ठिठके।

“क्या हुआ भाई साहब? सुबह-सुबह किस बात का शोर मचा दिया?”

“इस कमरे में चंदा नाम की लड़की ठहरी थी।”

“सच में बड़ी खूबसूरत थी।”

“वो कमीनी है, चालबाज है, ठग भी..।” उसने दांत भींचकर कहा।

“क्यों?”

“उसने एक प्लॉट दो को बेच दिया है। सुबह मुझे पता चला। दूसरा भी आता होगा, जिसने खरीदा है।” उसने शब्दों को चबाकर कहा, “मुझे बेवकूफ बनाकर बाईस लाख ले गई।”

“बुरा हुआ। रात तो वो कमरे में ही थी। सुबह निकली है, स्टेशन या बस अड्डे पर तलाशो।”

"मैं जानता हूं कि वो अब नहीं मिलेगी।" कहने के साथ ही अपने दोनों आदमियों के साथ वहां से चला गया।

205

जुगल किशोर दरवाजा बंद करके पलटा।

चंदा को बाथरूम के दरवाजे पर खड़े पाया।

"गया?" चंदा ने धीमे स्वर में पूछा।

"अभी तो गया-लेकिन जब तक यहां के पांच चक्कर नहीं काट लेगा, उसे शान्ति नहीं मिलेगी। वो फिर आएगा।"

"गलती हो गई। मुझे कल शाम ही यहां से निकल जाना चाहिए था।"

"वो तो मैंने रात ही कहा था।"

"अब मैं क्या करूं?"

"एक ही सुरक्षित रास्ता है कि आराम से इसी कमरे में बैठी रहो। बाहर झांकने को भी मत सोचना।"

"तुम दिन भर कमरे में रहोगे?"

"मुझे काम पर जाना है। शाम को आऊंगा।"

"पीछे से वेटर कमरा साफ करने आया तो?"

"उसकी फिक्र मत करो। जाते वक्त मैं तुम्हारा बिल भर दूंगा और कमरा साफ करने से मना कर दूंगा। कोई नहीं आएगा कमरे में। कम से कम दो दिन तुम्हें इसी तरह रहना होगा। तभी बच पाओगी, क्योंकि जिन्हें तुमने बेवकूफ बनाया है, वो अभी दो-चार बार अवश्य यहां आयेंगें। होटल वालों को तुम्हारे बारे में पता चला तो वे उन्हें बता देंगें।"

"प्लीज तुम मेरा साथ दो, तभी मैं बच पाऊंगी।" चंदा कह उठी।

"मैं तुम्हारा साथ क्यों दूं?"

"मैं तुम्हें पांच लाख दूंगी..।" उसने तुरंत कहा।

"और?"

"क्या और..?"

"और?" जुगल किशोर मुस्कराया।

चंदा भी मुस्करा पड़ी।

"चिंता मत करो। सब कुछ मिलेगा। मैं किसी का भी उधार नहीं रखती।"

जुगल किशोर ने बांहों को फैलाया तो चंदा उसके सीने से जा लगी।

जुगल किशोर ने बांहे उसके गिर्द लपेट ली।

"आह! हाथ पांव मत तोड़ना, यह हमारे सौदे में शामिल नहीं है।" चंदा कह उठी।

"तेरे को तो शो-केस में सजा के रखूंगा। पहले नाप तो ले लूं।"

□□

जुगल किशोर बैंक पहुंचा। उसने होटल में चंदा का बिल चुका दिया था। यही कहा कि रात को जाते वक्त उसे पैसे दे गई थी। तब वो जल्दी में लग रही थी।

सोढ़ी जैसे उनका ही इंतजार कर रहा था।

"आइए इंस्पेक्टर साहब, बैठिए।"

जुगल किशोर बैठ गया। आज सादी कमीज-पैंट पहने था।

सोढ़ी बेचैन नजर आ रहा था। घंटी बजाकर उसने बलबीर को बुलाया।

"दो चाय ले आ।"

"जी।" बलबीर जाने लगा तो सोढ़ी ने टोका।

"आजकल तू नजर नहीं आता। कहां रहता है?"

"जी सर, वो-वो मेरे रिश्तेदारों ने विनायक साहब का फ्लैट किराए पर लिया है, उनमें थोड़ा व्यस्त रहा...!"

"नौकरी करनी है कि नहीं?"

"करनी है सर!"

"तो ड्यूटी के वक्त, हर वक्त ड्यूटी पर ही दिखो-समझ गए।"

"जी!" बलबीर जल्दी से बाहर निकल गया।

सोढ़ी ने गहरी सांस लेकर जुगल किशोर को देखा।

जुगल किशोर मुस्कराया। बोला।

"सरकारी नौकरी भी क्या शानदार चीज है। अपना कुछ नहीं, रौब फिर भी राजाओं की तरह।"

सोढ़ी जबरदस्ती के अंदाज में मुस्कराया।

"मैं आपसे गुजारिश कर रहा हूं कि मेरे बेटे के मामले में दखल मत दीजिए।" सोढ़ी बोला-"मैं कुछ भी करके अपने बेटे की जान नहीं लेना चाहता। आप इस मामले को भूल जाइए।"

"सोढ़ी साहब, आप मुझे अपने फर्ज के प्रति लापरवाह होने को कह रहे हैं।" जुगल किशोर बोला।

"नहीं मैं अपने बेटे की जान की भीख मांग रहा हूं।"

"आपके बेटे को कुछ नहीं होगा। मैं बहुत खतरनाक पुलिसवाला..।"

"वो लोग आपसे भी खतरनाक हैं।"

"अच्छा, तो ये बात है। आप जानते हैं उन्हें?"

"कुछ-कुछ।"

"बताइए उनके बारे में।"

"पहले वादा कीजिए कि आप इस मामले से हट जाएंगें।"

"वादा और वो भी पुलिस वालों का, बहुत भोले हैं आप। खैर, बताइए उनका नाम जो आपके बेटे को उठाकर आपको मजबूर कर रहे हैं कि बैंक डकैती में आप उनका साथ दें।"

सोढ़ी हिचकिचाया।

"अब रुको मत। बता दो मुझे सब कुछ।"

"देवराज चौहान।"

"कौन देवराज चौहान?" जुगल किशोर की आंखें सिकुड़ीं।

"डकैती मास्टर देवराज चौहान!"

"आप जानते हैं उसे?"

"बहुत अच्छी तरह से।" जुगल किशोर के होंठों से निकला, फिर संभलकर बोला-'देवराज चौहान के बारे में उतना ही जानता हूं, जितना कि हर पुलिस वाला जानता है।"

"वो बहुत खतरनाक है!"

"हां, बहुत खतरनाक है।" जुगल किशोर अभी भी इस बात को हजम करने की चेष्टा कर रहा था कि देवराज चौहान ने इस बैंक में डकैती डालने के लिए चक्कर फैलाया हुआ है-"आपसे मिला देवराज चौहान?"

"उसका आदमी मिलने आया था।"

"आदमी-लेकिन वो तो अकेले ही काम करता है। उसके साथ उसका दोस्त जगमोहन ही होता है।"

"मैं कुछ नहीं जानता।" सोढ़ी बेचैनी से बोला-"आप इस मामले से पीछे हट जाइए।

जुगल किशोर सोढ़ी को कहना चाहता था कि तुम उसका काम बेशक मत करो, फिर भी वो तुम्हारे बेटे को नुकसान नहीं पहुंचाएगा, सलामत छोड़ देगा।

परंतु जुगल किशोर ने ये बात न कही। अपने तक ही रखी।

"देवराज चौहान बहुत खतरनाक है। मेरे ख्याल से तो काम के बाद वो आपके बेटे को मार देगा।"

"ऐसा मत कहिए।"

"मैं ऐसे अपराधियों को बाखूबी जानता हूं, जो काम होने तक अपने शिकार को जिंदा रखते हैं। काम होते ही शिकार का गला काटकर रफूचक्कर हो जाते हैं।" जुगल किशोर ने गंभीर स्वर में कहा।

सोढ़ी का चेहरा फक्क पड़ गया।

"आप मुझे डरा रहे हैं।"

"क्यों डराऊंगा। मत भूलिए कि मैं एक जिम्मेदार पुलिस वाला हूं। इस वक्त गंभीर मुद्दे पर आपसे बात कर

रहा हूं। आपके बेटे की गर्दन दांव पर लगी है।" जुगल किशोर पूर्ववत स्वर में बोला।

सोढ़ी परेशान हो उठा।

तभी बलबीर ट्रेमें चाय के दो कप रखे भीतर आया। एक कप उसने सोढ़ी के सामने रखा और दूसरा जुगल किशोर के सामने और खड़ा हो गया।

"क्या चाहिए?" सोढ़ी ने बलबीर को देखा।

"आप परेशान हैं, मैंने सोचा कुछ और..!"

"मैं कहां परेशान हूं, जाओ यहां से।" सोढ़ी झल्लाया।

बलबीर बाहर निकल गया।

"मैंने अभी-अभी एक फैसला लिया है।" जुगल किशोर कह उठा।

"क्या?"

"कि मैं ये काम व्यक्तिगत तौर पर आपके लिये करूंगा।"

"व्यक्तिगत तौर पर?"

"हां, पुलिस का इसमें दखल न होगा। किसी को न पता चलेगा कि क्या हो रहा है?"

"लेकिन इस मामले में आप दखल क्यों देना चाहते हैं इंस्पेक्टर साहब?"

"हमदर्दी। मैं खतरनाक पुलिस वाला अवश्य हूं-परंतु दिल नरम है मेरा। मैं नहीं चाहता कि देवराज चौहान अपना काम करके आपके बेटे की हत्या कर दे और चलता बने। ऐसा हुआ तो मुझे बहुत दुःख पहुंचेगा और आप देखना सोढ़ी ऐसा होगा भी। मैं देवराज चौहान को अच्छी तरह

जानता हूं कि वह बड़ा कमीना है। एक बार पहले भी इसने ऐसा किया था।"

"पहले।" सोढ़ी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी-"क्या किया था?"

जुगल किशोर ने लम्बी सांस ली और बोला।

"आप जैसा शरीफ बिजनेसमैन था। चेहरा भी कुछ हद तक आपसे मिलता है। मेरी पहचान वाला है वो। दिल्ली में रहता है। देवराज चौहान ने उसके बेटे को उठाकर बीस करोड़ की फिरौती मांगी।"

"त..तो...!"

"मुझे पता चल गया। मैंने उससे कहा कि उसके बेटे की जिम्मेदारी मैं अपने सिर लेता हूं। मैं उसे बचाकर लाऊंगा। जैसे कि अब आपसे कह रहा हूं। वो आपकी तरह डरा हुआ था। मेरे जोर देने पर भी नहीं माना कि कहीं मेरे दखल देने से उसके बेटे की जान को खतरा न पैदा हो जाए। वो नहीं माना तो मैं भी चुप होकर बैठ गया।"

"फ..फिर?"

"फिर क्या, पांच दिन बाद उसके बेटे की लाश उसके घर के बाहर पड़ी मिली।"

"नहीं।"

"नहीं क्या, आंखों देखी सच बात बता रहा हूं।" जुगल किशोर ने गहरी सांस लेकर कहा।

सोढ़ी ने व्याकुलता से पहलू बदला।

"तभी तो कह रहा हूं कि देवराज चौहान से आशा मत रखिये कि वो आपके सलामत छोड़ देगा। बहुत ही क्रूर

किस्म का है वो। देखने में खानदानी लगता है।" जुगल किशोर गंभीर स्वर में कह रहा था-"इसलिये आपसे कह रहा हूं कि आपके बेटे को बचाने का जिम्मा मैं व्यक्तिगत तौर पर ले लेता हूं।"

"वो बच जायेगा?" सोढ़ी का स्वर कांप गया।

"पक्का।"

"अगर...अगर उसे कुछ हो गया तो?"

"कुछ नहीं होगा आपके बेटे को। मैं बहुत खतरनाक पुलिसवाला हूं, ये बात तो देवराज चौहान भी जानता है।"

"देवराज चौहान आपको जानता है?"

"अच्छी तरह से। ये सब अपराधी मेरे को देखकर भाग जाते हैं।" जुगल किशोर ने छाती ठोकी।

"तो मैं क्या करूं?" सोढ़ी सच में परेशान हो उठा था।

"आप सारा मामला मेरे को बताइये।"

"सारा मामला?"

"यही कि देवराज चौहान ने आपको क्या-क्या करने को कहा, ताकि उसकी प्लानिंग कर सकूं।"

और फिर सोढ़ी हर बात बताता चला गया, जो देवराज ने उससे कही थी।

जुगल किशोर जो जानना चाहता था, जान गया।

देवराज चौहान की प्लानिंग से जुगल किशोर वाकिफ हो गया था।

सोढ़ी के खामोश होने पर जुगल किशोर ने कहा।

"आप चिंता मत कीजिये। अब मैं आपके बेटे को बचा लूंगा।"

"लेकिन कैसे?"

"मैं देवराज चौहान को कुछ नहीं कहूंगा। योजना के मुताबिक वो उस रात बैंक के पीछे वाले दरवाजे से बैंक के भीतर प्रवेश करेगा। मैं उस पर नजर रखूंगा और मौका पाकर आपके बेटे को छुड़ा लूंगा। उसके बाद ही देवराज चौहान पर और बैंक के पैसे को पकडूंगा। मैं सब कुछ अब सम्भाल लूंगा।"

"आपकी दया पर ही है अब मेरा राजू।"

"दया तो ऊपर वाले की चाहिए। अब मस्त हो जाइए आप। क्या देवराज चौहान ने बताया कि वो कहां ठहरे हैं?"

"नहीं।"

कुछ चुप रहकर जुगल किशोर बोला।

"एक बात समझ में नहीं आई।"

"क्या?"

"देवराज चौहान बैंक कॉलोनी की तरफ से, बैंक के पीछे दरवाजे से पैसे बाहर निकालेगा।"

सोढ़ी ने गर्दन हिलाई।

"ये कैसे हो सकेगा। बैंक कॉलोनी के पहरेदार उसे न देख लेंगें। करोड़-पचास लाख तो जुदा बात है। सोलह-सत्रह करोड़ कोई जेब में डाल के तो ले नहीं जाएगा।" जुगल किशोर ने सोच भरे स्वर में कहा।

सोढ़ी उसे देखता रहा।

"बैंक कॉलोनी में बैंक वाले ही रहते हैं?" जुगल किशोर ने पूछा।

"बाहर के लोग भी रहते हैं। कुछ ने फ्लैट किराये पर उठा रखे हैं।" सोढ़ी ने बताया।

"बाहरी कितने परिवार हैं?"

"मैं अभी बलवीर को बुलाता हूं, वो बताएगा।" सोढ़ी ने कहकर बलवीर को बुलाने के लिए घंटी बजाई।

बलवीर हाजिर हुआ।

"बलवीर, ये मेरी खास पहचान वाले हैं।" सोढ़ी ने कहा, "ये कुछ जानना चाहते हैं।"

बलवीर ने दो पल सोचा, फिर कह उठा।

"सिर्फ सात लोग, यानी कि सात परिवार रहते हैं।"

"हूं..कब से रह रहे है?"

"इस बैंक कॉलोनी को बने दो साल हुए हैं। कोई भी किराएदार डेढ़ साल से ज्यादा पुराना नहीं है।"

"सबसे आखिरी नए किराएदार कब आए?" जुगल किशोर ने पूछा।

"लो, वो तो अभी आए हैं। विनायक साहब के फ्लैट में। तीन-चार दिन हुए हैं।" बलवीर मुस्कराकर कह उठा, "मेरे रिश्तेदार हैं वो। उनका भी ध्यान रखना पड़ता है।"

"तुम्हारे रिश्तेदार?"

"हां जी।"

"क्या रिश्ता है उनसे तुम्हारा?"

"रिश्ता क्या?" बलवीर ने गहरी सांस ली, "मन के रिश्ते होते हैं। जहां दिल लग गया, रिश्ता बन जाता है।"

"क्या मतलब?"

"वो आए और मेरा दिल उनसे लग गया। बन गया दिल का रिश्ता।"

"मतलब कि वो तुम्हारे रिश्तेदार नहीं, पहले तुम उन्हें नहीं जानते थे। यहां आने के बाद ही उन्हें जाना।"

"जी।"

"परिवार है?"

"भरा-पूरा परिवार है साबजी।"

"कौन-कौन है परिवार में?"

"जो-जो परिवार में होते हैं, वो ही हैं सब। पिताजी हैं, दो बेटे हैं, एक बहू है। छोटी बेटी की अभी शादी नहीं हुई और बूढ़े का छोटा-सा पोता है। चार-पांच महीने का होगा।" बलवीर ने मुस्कराकर कहा।

"तेरह-चौदह साल का कोई लड़का भी है?"

"नहीं साहब। इतना बड़ा बच्चा कहां से आ गया। भाभी की उम्र तो अभी छोटी ही है।"

"भाभी की?"

"जो वो बड़े बेटे की बहू की बात कर रहा हूं।"

"तुम्हारा मतलब कि शरीफ खानदान है।"

"बहुत ही शरीफ। मिसेज शर्मा अपनी छोटी बहन की बात करने की कोशिश में हैं।"

"किससे?"

"छोटे बेटे से। देखो क्या होता है?रिश्ता हो जाए तो बढ़िया ही रहेगा।"

"कहां से आए हैं ये लोग?"

"नवां शहर से।"

"नवां शहर से।"

"हूं...तुम जाओ।"

बलबीर चला गया।

"तुम इतनी क्यों पूछताछ कर रहे हो?"

"करनी पड़ती है।" जुगल किशोर बोला, "आपने बताया कि बैंक के पीछे वाला द्वार खुला रहेगा। उसी रास्ते से देवराज चौहान करोड़ों रुपया बाहर निकालेगा। ऐसे में जरूरी है कि बैंक कॉलोनी में उनका कहीं ठिकाना हो, ताकि नोटों को निकालने का काम आसानी से किया जा सके।"

सोढ़ी ने सिर हिलाया।

जुगल किशोर ने सोच भरे ढंग में सिर हिलाया फिर उठता हुआ बोला।

"आप चिंता मत कीजिए, मैं कुछ करूंगा।"

"मैं सिर्फ अपने बेटे की खैरियत चाहता हूं।"

"चिंता मत कीजिए।" जुगल किशोर मुस्कराया, "आपके बेटे को कुछ नहीं होगा। वो ठीक-ठाक आपको मिल जाएगा।"

फिर आने को कहकर जुगल किशोर सोढ़ी के केबिन से बाहर निकला।

सामने बलवीर दिखा।

"सुनो।"

"जी।" बलवीर पास आया।

"वो जो नए आए हैं, उनका नाम क्या है?"

"नाम-वाम तो मुझे पता नहीं, बुर्जुग के बड़े लड़के को पप्पू भाई साहब कहकर बुलाते हैं।"

"जुगल किशोर ने सिर हिलाया, और बाहर की तरफ बढ़ गया।

परंतु बाहर आकर वो गया नहीं, अपनी कार में जा बैठा। पचास कदमों की दूरी पर बैंक कॉलोनी का गेट था और वहां कुर्सी पर वॉचमैन बैठा स्पष्ट नजर आ रहा था। गेट के भीतर जोने वालों और बाहर आने वालों को जुगल किशोर यहां से स्पष्ट देख सकता था।

बैंक कॉलोनी के गेट पर नजर रखते हुए जुगल किशोर अपनी कार में ही जम गया।

□□

"गोलू।" सूरमा बोला, "कभी-कभी दिल बोत जोर से धड़कने लगता है।"

"क्या सोचकर धड़कता है सूरमे?"

"ये ही कि पप्पू भाई साहब सफल होंगे कि नहीं अपने काम में?" सूरमा मुंह लटकाकर बोला।

"हो जाएंगे सफल। मुझे पूरा विश्वास है।" गोलू अपनी छाती पर हाथ मारकर बोला।

"वो फंस गए तो हम भी फंस जाएंगे।"

"हम क्यों फंसेंगे?"

"पुलिस के डंडे के आगे तो भूत भी बोलते हैं। पप्पू भाई साहब बता देंगें कि सूरमा भी इस काम में साथ है।"

"हां, ये तो है। चल, पप्पू भाई साहब को बोल आते हैं कि पकड़े जाने पर हमारा नाम न लें।"

"हमारा अभी उधर जाना ठीक नहीं। पप्पू भाई साहब ने मना किया था।"

"अभी वहां कौन-सा काम हो रहा है।"

"फिर भी वहां नहीं जाएंगे। पप्पू भाई साहब हवा भरवाने के बहाने हमारे पास रुकेंगें तो बात कर लेंगें।"

"ये भी ठीक है। तेरे को कस्तूरी भाभी की याद नहीं आती क्या?"

"कस्तूरी की तो नहीं, बलवीर की याद आती है। वो साला हरामी है। कस्तूरी की पूड़ियां खिला-खिलाकर गड़बड़ न कर दे।"

"फिक्र क्यों करता है? भाभी बच्ची थोड़े न है, फिर चांदीलाल तो वहां है। वो साला हर तरफ नजर रखता होगा।"

सूरमा ने गहरी सांस ली। कह उठा।

"मेरा तो बोत दिल करता है कि जल्दी से की हार्डवेयर की दुकान खरीद लूं।"

"पहले नोट तो आने दे। चाचे को तो बाद में खरीदेंगें।"

"चाचे को नहीं, दुकान को।"

"वो ही, वो ही।"

□□

रात नौ-साढ़े नौ बजे जुगल किशोर होटल पहुंचा।

चंदा कमरे में बंद बेचैनी से उसकी वापसी का इंतजार कर रही थी।

"मैं तो परेशान हो रही थी। अगर तुम न आए तो...।" चंदा बोली।

"मैं क्यों नहीं आऊंगा?"

"मुझे क्या पता, तुम्हें ठीक से तो जानती नहीं।" चंदा थकी सी लग रही थी।

जुगल किशोर बैठता हुआ।

"क्या किया आज?"

"करना क्या है, कमरे में बंद बैठी रही। चाबी तो तुम रिसेप्शन पर दे गए थे। वैसे भी मैंने बाहर तो जाना नहीं था।" चंदा बोली, "भूख से जान निकली जा रही है। सुबह से जो नाश्ता तुम करा गए थे, वो ही कर रखा है।"

"इस तरह तुम कमरे में बंद रहोगी तो परेशानी वाली बात होगी।"

"तो?"

"मेरे ख्याल में होटल बदल लेना ठीक होगा।" जुगल किशोर ने कहा।

"ये तो अच्छी बात कही।" चंदा फौरन बोली, "यहां रहने में मुझे खतरा है। पकड़ी जाऊंगी।"

जुगल किशोर ने सिगरेट सुलगाई।

"कल बदलें होटल?" चंदा ने पूछा।

"अभी।"

"अभी?"

"खामख्वाह देर करने से गड़बड़ हो जाती है।" कहते हुए जुगल किशोर उठा, "मैं नहाकर आता हूं, तब तक तुम सामान समेटो। डिनर भी दूसरे होटल में जाकर करेंगे।"

"रिसेप्शन वाले मुझे यहां से बाहर निकलते देख लेंगे।"

"उसकी तुम फिक्र मत करो।"

"प्लॉट खरीदने वाले, रिसेप्शन पर या उसके आस-पास मेरी तलाश में हो सकते हैं।"

"ऐसा कुछ हुआ तो वो भी मैं निपट लूंगा।"

"कैसे?" वो चार-पांच आदमी हुए तो।"

जुगल किशोर ने जेब से रिवॉल्वर निकालकर चंदा को दिखाई और जेब में डाल ली।

चंदा ने गहरी सांस ली, फिर हिचहिचाकर बोली।

"ये तो मेरे पास भी है।"

"अच्छा कभी चलाई क्या?"

"न...नहीं।"

"कहां से ली?"

"किसी को मुर्गा बनाकर, उसकी खिसका ली थी।" चंदा के होंठों पर छोटी-सी मुस्कान उभरी।

"हूं। कब से कर रही हो ये काम?"

"उन्नीस-बीस की थी, तब से।"

"कहां रहती हो?"

"दिल्ली, बी-कॉम सेकेंड इयर तक पढ़ी हूं। उसके बाद मां बीमार हो गई। उसकी बीमारी के लिए पैसा चाहिए था। एकदम ज्यादा पैसा कहां से मिलता। एक सेठ के यहां नौकरी मांगने गई तो वो मुझे कार में बिठाकर अपने फार्म हाउस पर ले गया। मेरे कपड़े उतारे, जो करना था, उसने किया-उसके बाद मैंने किया।"

"तुमने क्या किया?"

"जूतियों से उसकी पिटाई की, शोर डाला। डर के मारे उसने मुझे दो लाख रुपये दे दिए। वो मेरा पहला शिकार था। उन पैसों से मैंने मां का इलाज कराया।"

"समझा। तुम सामान समेटो।"कहकर जुगल किशोर इंटरकाम के पास पहुंचा और रिसेप्शन पर बिल तैयार करने को कहा, फिर बाथरूम में चला गया।

□□

आधे घंटे बाद जुगल किशोर और चंदा रिसेप्शन पर थे।

रिसेप्शन पर वो ही युवक था और चंदा को देखकर चौकां।

"मैडम आप?" उसके होंठों से निकला।

चंदा व्याकुल-सी मुस्कराई।

"हमने शादी कर ली है।" जुगल किशोर बोला।

"हां, अब हम हनीमून के लिए शिमला जा रहे हैं।"

"शिमला-लेकिन मैडम ने तो यहां के दो लोगों से धोखाधड़ी की है। वो आज दिन में भी तीन-चार बार आए थे। अपना फोन नंबर दे गए हैं कि ये मैडम इधर दिखाई दे तो उन्हें फोन कर दूं।"

"उन्हें फोन मत करो।"

"ऐसा नहीं हो सकता सर, वो यहां के लोकल लोग हैं।"

जुगल किशोर ने पांच सौ का नोट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"ये काफी रहेगा?"

युवक ने नोट को हाथ लगाने की भी चेष्टा न की और बोला।

"मैंने सुना है, मैडम ने लाखों का घपला किया है।"युवक ने स्पष्ट कहा।

"तो तेरे को हिस्सा चाहिए क्या?" जुगल किशोर के माथे पर बल पड़े।

"हिस्सा न सही, टेन परसेंट तो मिलना ही चाहिए।"

जुगल किशोर ने जेब से रिवॉल्वर निकालकर उसे झलक दिखाई।

युवक का चेहरा फक्क पड़ गया।

"कितना परसेंट?"

"क..कुछ नहीं सर। आप यूं चले जाइए। ग..गलती से जुबान फिसल गई थी।" युवक कांप-सा उठा।

"उन दोनों को मत बताना कि हम हनीमून के लिए शिमला गए हैं, वरना...।"

"म..मैं क्यों बताऊंगा। मैंने तो मैडम को यहां देखा ही नहीं।"

जुगल किशोर ने बिल चुकता किया और होटल में खड़ी पैंतीस हजारी में अपना सामान रखा। चंदा ने हैरानी से बूढ़ी फिएट को देखा और अपना सूटकेस भीतर रखती बोली।

"ये तुम्हारी कार है?"

"हां!" जुगल किशोर ड्राइविंग सीट पर बैठता हुआ मुस्कराया।

"चलती है?"

"वफादार है।"

चंदा जुगल किशोर के बगल वाली सीट पर आ बैठी।

जुगल किशोर ने पैंतीस हजारी स्टार्ट करके आगे बढ़ाई और होटल के पार्किंग से निकलकर सामने की मुख्य सड़क पर आ गया। वाहन आ-जा रहे थे। इस वक्त रात के दस बजे थे।

"कार सड़क की साइड में रोको, तुमसे बात करनी है।" चंदा ने कहा।

जुगल किशोर ने कार को सड़क के किनारे रोका और चंदा को देखा।

चंदा हिचकिचाई।

"जो भी कहना है, कह डालो।"

"जीरकपुर में अब रुकना मेरे लिए ठीक नहीं। मैं यहां से निकल जाना चाहती हूं।"

"तो?"

"मैंने तुमसे वादा किया था कि तुम मुझे बचा लोगे तो मैं तुम्हें पांच लाख दूंगी।"

"किसी और चीज का भी वादा था।"

"उसकी भी कीमत लगाकर कैश ले लो। कुल मिलाकर सात लाख दे देती हूं।"

जुगल किशोर ने घूरकर चंदा को देखा।

चंदा थोड़ी-सी सकपकाई।

वहां अंधेरा था, परंतु आते-जाते वाहनों में उनके चेहरे रह-रहकर चमक उठते थे।

"अगर मुझे तुम्हारी बात मंजूर न हो तो?" जुगल किशोर बोला।

"फिर तो मजबूरी है। कम-से-कम दो दिन और तुम्हारे साथ रहना पड़ेगा।" चंदा कह उठी।

"मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे करीब आया हूं। पैसों के लिए नहीं।"

चंदा कुछ नहीं बोली।

"मैं तो तुम्हें छोटे किले की रानी बनाकर रखने की सोच रहा हूं।"

चंदा मुस्करा पड़ी।

"श्योर मिस्टर अजमेरा। मैं तैयार हूं।"

"किस्मत वाली ही छोटे किले की रानी बनती है।"

"तो मैं किस्मत वाली हूं।"

"वो तो पता नहीं, लेकिन खूबसूरत हो। हसीन हो। कभी-कभी कयामत भी लगती हो।"

"कयामत की हवा निकल रही है।"

"क्यों?"

"भूख लग रही है।"

"अभी ठहरने के लिए होटल तलाश कर लूं। उसके बाद खाना खाएंगे।" जुगल किशोर ने कहा और कार आगे बढ़ा दी।

"तुम बातें अच्छी करते हो मिस्टर जुगल किशोर।"

"मैं सारे काम ही अच्छे करता हूं।" जबकि जुगल किशोर रह-रहकर सोचने लगा था कि इसके पास पैंतालीस लाख नगद हैं। अगर उस पर हाथ साफ किया जाए तो बुरा नहीं रहेगा? परंतु इस विचार को रह-रहकर दबा जाता क्योंकि उसका ध्यान करोड़ों की बैंक डकैती पर

था, जो कि देवराज चौहान करने जा रहा था। चंद लाखों से बेहतर ही था कि करोड़ों पर हाथ साफ किया जाए।

और ये काम वो अकेले नहीं कर सकता था।

किसी साथी की सख्त आवश्यकता थी। ओर हालातों में चंदा से बेहतर साथी दूसरा नहीं मिल सकता था। इसी तरह के विचार बन बिगड़ रहे थे जुगल किशोर के मस्तिष्क में।

कुछ देर बाद ही एक होटल दिखा।

होटल छोटा था, लेकिन उनके लिए ठीक था।

वहां डबल बेडरूम मिसेज एंड मिस्टर जुगल किशोर के नाम से बुक कराया और कमरे में जा घुसे। जुगल किशोर ने बोतल निकाली अपने बैग में से।

"तुम लोगी?" जुगल किशोर गिलास की तरफ बढ़ता कह उठा।

"चढ़ जाती है।"

"चढ़ने के लिए ही तो पी जाती है। एक पैग ले लो।"

"जुगल किशोर ने अपना और चंदा का गिलास तैयार किया और उसे गिलास थमाकर घूंट भरा, फिर कुर्सी पर बैठ गया। सामने बैठी चंदा ने भी घूंट भरा।

"होटल बदलकर तुमने अच्छा किया।" चंदा बोली।

"मैं हर काम अच्छे ही करता हूं।" जुगल किशोर मुस्कराया।

चंदा ने पुनः घूंट भरा।

"तुम कहां के रहने वाले हो?"

"सारा हिन्दुस्तान ही अपना है।" जुगल किशोर ने घूंट भरा।

"खूब।" चंदा ने पुनः दो घूंट भरे, "खाने के लिए कह दो। मुझे भूख लग रही है।"

जुगल किशोर ने एक ही सांस में गिलास खाली किया और उठकर इंटरकॉम की तरफ बढ़ गया। रूम सर्विस को डिनर के लिए ऑर्डर करवाया और रिसीवर रखकर चंदा से बोला।

"तुमने गिलास खाली नहीं किया। मैं अपना दोबारा तैयार करने जा रहा हूं।"

"और नहीं लूंगी। चढ़ जाती है।"

"चढ़ाने के लिए तो पी जाती है। लाओ, छोटा-सा और बना देता हूं।"

चंदा ने गिलास खाली करके जुगल किशोर को थमा दिया।

जुगल किशोर पुनः गिलास बनाने लगा।

चंदा के चेहरे और आंखों में नशा भरना आरंभ हो गया था।

"कभी-कभी तो तुम कमाल के लगते हो।" चंदा बोली।

"मैं कमाल का ही हूं।" जुगल किशोर ने गिलास तैयार करके उसे थमाया।

अपना गिलास लेकर वो कुर्सी पर जा बैठा।

"बोतल हर समय अपने साथ ही रखते हो?" चंदा नशे में मुस्कराई।

"हां, जाने कब छोटे किले में किसी को बसाना पड़ जाए।"

"तो उसके लिए बोतल की की जरूरत पड़ती है।"

"छोटे किले की चाबी तभी मिलती है, जब बोतल पास हो।" जुगल किशोर मुस्कराया।

"तुम करते क्या हो?"

"करोड़ों का बिजनेस।"

"करोड़ों का...!"

"हां!"

"लगते तो नहीं कि इतनी ऊंची उड़ान भरते हो।"

"तुमने अभी मेरे पंखों को देखा ही कहां है।"

चंदा ने घूंट भरा। वो नशे में लगने लगी थी।

"यहां आओ।" जुगल किशोर ने अपनी टांगें थपथपाईं, "इधर बैठो।"

"खाना खा लेने दो। बहुत भूख लगी है। दिन भर खाए बिना ही कमरे में बंद रही।"

"आ जाओ।"

चंदा गिलास थामे अपनी जगह से उठी और जुगल किशोर की टांगों पर जा बैठी।

जुगल किशोर ने एक बांह से उसे थाम लिया।

"मेरी मां ने मुझे ऐसे बैठे देख लिया तो बहुत पिटाई करेगी।" चंदा नशे की मस्ती में बोली।

"पहले कितनी बार देखा है?"

"एक बार भी नहीं।"

"चिंता मत करो, उसे सब पता होगा कि तुम क्या करती हो। गलत तो नहीं कहा?"

"सही कहा, पता है।" चंदा ने घूंट भरा, "नोट यूं तो आ नहीं जाते। एक बात बताओ।"

"क्या?"

"जीरकपुर में तुम क्या कर रहो हो?"

"सोलह-सत्रह करोड़ का बिजनेस करने वाला हूं। इसी सप्ताह में हो जाएगा।"

"इसी सप्ताह में सोलह-सत्रह करोड़ का बिजनेस हो जाएगा...! ये कैसा बिजनेस है?"

"ये मेरा बिजनेस है। मैं प्लॉट बेचने का घटिया बिजनेस नहीं करता।"

"अच्छा, तो कैसा करते हो?"

"बैंको से बिजनेस करता हूं। चार-पांच दिन में मेरे पास सोलह-सत्रह करोड़ रुपया नगद होगा।"

"नकद..!" चंदा ने नशे में पलकें झपकाईं।

"हां, कभी देखा है इतना पैसा?"

"कसम से नहीं देखा। ये बयालीस लाख भी पहली बार देख रही हूं, जो मेरे पास हैं।"

"करोड़ों के सामने फुटकर का जिक्र करके मेरा मूड खराब मत करो।"

"बयालीस लाख फुटकर है?"

"हां, सोलह-सत्रह करोड़ के सामने फुटकर ही है।"

"फिर तो तुम बहुत बड़े आदमी हो।" चंदा ने आंखें फैलाईं।

"हां, बहुत बड़ा।"

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

चंदा उसकी टांगों से उतरकर कुर्सी पर जा बैठी।

जुगल किशोर ने दरवाजा खोला तो सामने वेटर को डिनर के साथ खड़े पाया।

वेटर डिनर रखकर चला गया। जुगल किशोर ने दरवाजा बंद किया।

"लाओ, मुझे तो भूख लगी है।" चंदा एक ही सांस में गिलास खाली करके कुर्सी उठाए टेबल के पास जा पहुंची। नशे में उसके हाथ इधर-उधर पड़ने लगे थे।

"तुम खा लो।"

"और तुम?"

"मैं तो खड़े-खड़े खा लूंगा। तुम डटकर खाओ, क्योंकि आज रात तुमने मेरे छोटे किले में रहना है।"

"अजीब हो। क्या तुम हर किसी को छोटे किले में रखने से पहले खिलाते हो?"

"हां!"

"ऐसा क्यों?"

"इसका जवाब तो छोटे किले में रात बिताने के बाद सुबह तुम ही दोगी।"

"मुझे डराओ मत। हां, मैं बहुत किलों में रह चुकी हूं। रात को किलों में रहने से मुझे डर नहीं लगता।" कहने के साथ ही वो खाने पर टूट पड़ी।

जुगल किशोर ने गिलास खाली किया और वो भी खाने लगा।

□□

वीरवार दोपहर बारह बजे।

देवराज चौहान ने सोढ़ी को फोन किया।

"हैलो।" सोढ़ी की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी।

"मैं बोल रहा हूं। पहचाना?"

"ओह! तुम..तुम..।"

"आज वीरवार है और कल तुमने रुपया बैंक में मंगवाना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां, याद है मुझे। मैंने हैड ऑफिस फोन कर दिया है।" सोढ़ी ने तेज स्वर में कहा।

"किस वैन में आना है रुपया और उसका रूट क्या है?"

"वो..मैं पता कर रहा हूं।"

"कब तक पता चलेगा?"

"शाम तक पता चल जाएगा। बैक की दो वैनों में से एक वैन आएगी। शाम चार बजे तक उनमें से किसी एक वैन को कल का प्रोग्राम बता दिया जाएगा। मैंने किसी से हैड ऑफिस में कह रखा है, वो मुझे खबर कर देगा।"

"मैं तुम्हें पांच बजे फोन करूंगा।"

"हां, अगर पांच बजे हमारी बात न हो सकी तो रात को घर पर फोन कर...।"

"ठीक है।"

"राजू कैसा है?"

"रोज तुम्हारी उससे बात हो रही है।"

"बहुत दिन हो गए। अब राजू से मिलने का दिल करता...।"

"अगर तुमने ईमानदारी से हमारा साथ दिया तो रविवार को राजू तुम्हारे पास होगा।"

"वो...!" सोढ़ी हिचकिचाया।

"कहो।"

"तुम बुरा तो नहीं मान जाओगे?"

"नहीं।"

"मैंने सुना है कि तुमने पहले भी एक बार किसी बच्चे का अपहरण किया था और काम होने के बाद उसे मार दिया।"

"देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"नाराज मत होना, तुमने ही कहा है कि नाराज नहीं होओगे मेरी बात सुनकर।"

"किससे सुना है तुमने?" देवराज चौहान का स्वर कठोर हो गया।

सोढ़ी अब क्या बताता।

"इसका मतलब तुमने किसी को बताया है कि तुम्हारे बेटे को मैंने उठा रखा है।"

"न..नहीं...!"

"तुम्हारी बात का तो ये ही मतलब निकलता है।"

"व..वो मैंने अपने मन से बात बनाकर कही थी।" सोढ़ी का घबराया स्वर चौहान के कानों में पड़ा।

"होश में रहो। दो तीन दिन की बात है, समझ गये।"

"ह..हां!"

"देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में रख लिया।

सामने बैठा चांदीलाल देवराज चौहान को देख रहा था।

"क्या हुआ?"चांदीलाल ने पूछा।

"कुछ नहीं।" कहते हुये देवराज चौहान भीतर की तरफ बढ़ गया।

"भीतर कमरे में कस्तूरी अपने छोटे बच्चे को गोद में लिये बैठी थी। पास में राजू बैठा कभी-कभार बच्चे से छेड़-छाड़ कर लेता था। देवराज चौहान को देखते ही बोला।

"अंकल घर के भीतर बैठे-बैठै मैं थक गया हूं।"

"तीन दिन बाद तुम अपने घर पहुंच जाओगे।"

"पक्का?"

"हां!" देवराज चौहान ने कस्तूरी को देखा-"जगमोहन कहां है?"

"उधर वाले बेडरूम में।"

देवराज चौहान दूसरे कमरे में जगमोहन के पास पहुंचा।

जगमोहन बेड पर लेटा आराम कर रहा था।

"सोढ़ी से बात की है मैंने। शाम तक वो हमें वैन के बारे में और रूट के बारे में बता देगा।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"हमने वैन को ठीक वक्त पर बैंक नहीं पहुंचने देना है। इसके लिये उसके टायर पर गोली चलानी होगी। निशाना चूंक भी सकता है।" देवराज चौहान का स्वर गंभीर था।

"निशाना चूका तो क्या होगा?"

"इसका एक ही रास्ता है कि हम दो जगह मौजूद रहें। अगर मेरे निशाने से वैन का टायर बच जाता है तो एक किलोमीटर आगे तुम वैन का निशाना लोगे। उसके टायर को हर हाल में बेकार करना है।"

"तब भी वैन बच गई तो?" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"उस स्थिति में वैन वक्त पर पर ही बैंक पहुचेगी। तब सोढ़ी को कोई और रास्ता देखना होगा कि पैसा शुक्रवार को न बंट पाए और बैंक में ही रहे।"

"लेकिन हमने तो शनिवार रात काम करना है। शनिवार को...।"

"शनिवार को दो घंटे के लिये बैंक खुलता है। इन दो घंटों में पैसा इसलिए नहीं पार्टियों को दिया जाएगा कि बैंक में आग लग जाएगी।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"आग सोढ़ी लगाएगा?"जगमोहन ने पूछा।

"हां!"

जगमोहन सिर हिलाकर रह गया।

"अगर शुक्रवार राम को ही हम बैंक से रुपये...।"

"इससे परेशानी हो सकती है।" देवराज चौहान ने कहा-"हमने रात को तीन और चार के बीच काम करना है। यानी कि हमारे काम करने के चंद घंटों बाद ही बैंक खुलेगा और शोर पड़ जाएगा कि बैंक से कोई पैसा ले उड़ा है, जबकि मैं चाहता हूं कि बैंक से रात को पैसा निकालने के बाद हमें सामान्य होने का पर्याप्त वक्त मिले। शनिवार

को हम काम करेंगें, तो रविवार को बैंक बंद रहता है। हमारे पास वक्त होगा संभलने का।”

जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

“शनिवार को पैसा बैंक से निकाल लेने के बाद हम यहां रुके ही क्यों, निकल चलते हैं।” जगमोहन बोला।

“जल्दी क्या है निकलने की। जब नोटों के साथ रहने का ठिकाना हमारे पास है।”

“इतने नकद नोटों के साथ हम फ्लैट में नहीं रह सकते। एक कमरा तो हमें उन रुपयों को रखने के लिये चाहिए होगा-जबकि मिसेज शर्मा जब भी आती है, पूरे घर का फेरा लगाती है-राजू को तो उसकी नजरों से छिपाया जा सकता है-परंतु नोटों को नहीं।”

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

“बलबीर भी वक्त-वे-वक्त भाभी-भाभी कहता सीधा कमरे में घुस आता है। नकद पैसा फ्लैट में रखना ठीक नहीं होगा।” जगमोहन ने पुनः कहा।

“ठीक बोला तू। पैसे का कोई और ठिकाना देखना होगा।”

जुगल किशोर शाम सात बजे होटल पहुँचा।

चंदा कमरे में ही मिली।

“आज तुम थके लग रहे हो।” चंदा बोली।

“बीबी की तरह बात मत करो।।” जुगल किशोर ने लंबी सांस ली।

“रात तुम्हारे छोटे किले में रही तो उसका कुछ असर तो होगा ही।” चंदा मुस्कराई।

"जुगल किशोर ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"आज तुम्हारा बिजनेस ठीक हुआ नहीं लग रहा?"

"आज का दिन बेकार गया।"

"वो कैसे?"

"पंद्रह-बीस करोड़ की डील में जो व्यक्ति बीच का काम कर रहा है, वो नजर नहीं आया।"

"उसे नजर आना चाहिए था।"

"हां, उसके बिना तो बात ही नहीं बनेगी।" जुगल किशोर ने मुंह बनाया।

चंदा कुछ चुप रहकर बोली।

"मुझे चिंता हो रही है कि तुम्हारा काम होना चाहिए।" चंदा ने कहा।

जुगल किशोर ने चंदा को देखा।

"मुझे बताओ, अगर मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकी तो मुझे खुशी होगी।"

"तुम्हारी जरूरत शनिवार रात को पड़ सकती है।"

"शनिवार रात...!"

जुगल किशोर ने सिर हिलाया।

चंदा कुछ गंभीर दिखी।

"क्या करना होगा मुझे?"

"ये तुम्हें उसी रात मौके पर बताऊंगा।" जुगल किशोर ने कश लेकर कहा।

"तो तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?"

"नहीं।"

"मैं तुम्हारे छोटे किले में रह रही हूं। ऐसे में तुम्हें मुझ पर पूरा विश्वास करना चाहिए।"

"छोटे किले में रहना और विश्वास, दोनों ही अलग-अलग बातें हैं।"

"चंदा चुप रही।

"उस रात तुम्हें मेरे साथ काम करने का पचास लाख मिलेगा।"

"बैंक लूट रहे हो?"

"मैं नहीं लूट रहा। कोई दूसरा लूट रहा है। उसकी योजना मेरे सामने।" जुगल किशोर ने शांत स्वर में कहा-"उसने कहीं पर सोलह-सत्रह करोड़ रखना है और वहां से मैंने पैसा उठा लेना है।"

"हमने उठा लेना है!"

"नहीं, सिर्फ मैंने।" जुगल किशोर ने चंदा को देखा-"तुम सिर्फ मजदूर के तौर पर मेरे साथ रहोगी।"

"मजदूर ही सही।" चंदा मुस्कराई-"पचास लाख तो मिलेंगें। क्या पता जो बैंक लूट रहा है, वो सफल ही न हो।"

"वो सफल होगा।"

"ओह...कौन है वो?"

"देवराज चौहान! डकैती मास्टर देवराज चौहान।"

"बाप रे! वो तो बहुत खतरनाक है!" चंदा के होंठों से निकला-"वो देवराज चौहान जीरकपुर में है?"

"हां!"

"तुम जानते हो उसे?"

"यूं ही, दो-चार बार मुलाकात हो चुकी है।" जुगल किशोर ने कश लिया।

"जल्दी से मुझे पैग बनाकर दो। तुम तो बहुत पहुंचे हुए लगते हो। देवराज चौहान को भी जानते हो।"

"आज तुमने मेरे छोटे किले में रहना है।"

"याद है, पहले मुझे तगड़ा-सा पैग बनाकर तो दो। देवराज चौहान! इतना बड़ा डकैती मास्टर और जीरकपुर में ... ये सुनकर ही मेरी जान निकली जा रही है। ये करोड़ों की डकैती डालने जा रहा और तुम्हें पता ही नहीं, बल्कि उसके माल पर हाथ डालोगे। ये सुनकर ही मेरे होश उड़े जा रहे हैं।"

□□

बुधवार का दिन जुगल किशोर ने बैंक कॉलोनी के गेट की निगरानी में बिता दिया था। उसे शक था कि सबसे अंतिम जो परिवार बैंक कॉलोनी में किराए पर रहने आया है, वह परिवार देवराज चौहान का जमावड़ा हो सकता है। ये शक जुगल किशोर को इसलिये हुआ कि बैंक मैनेजर सोढ़ी ने उसे बताया था कि देवराज चौहान ने कहा है कि शनिवार की रात बैंक के पीछे वाला दरवाजा खुला रखे।

यानि कि देवराज चौहान बैंक कॉलोनी की तरफ से बैंक से पैसा निकालेगा।

जुगल किशोर के ख्याल से वहां से पैसा निकालना कठिन था-क्योंकि कॉलोनी के बाहरी गेट पर वॉचमैन रहता है और रात की कॉलोनी में भी अवश्य वॉचमैन रहते होंगें।

ऐसे में बैंक कॉलोनी वाले दरवाजे से पैसा निकालना तभी आसान हो सकता है, जबकि उस तरफ रहने का ठिकाना हो और भीतर से भीतर ही काम कर लिया जाए।

बुधवार को जो लोग भी बैंक कॉलोनी से निकले, जुगल किशोर किसी को नहीं पहचान सका-परंतु उसने हिम्मत नहीं छोड़ी।

वीरवार को पुनः बैंक कॉलोनी के गेट के सामने सड़क पर पैंतीस हजारी को मुनासिब जगह टिकाकर भीतर बैठ गया और नजर रखने लगा।

"शाम को चार बजे उसकी मेहनत रंग लाई।

एक कार बैंक कॉलोनी के गेट से बाहर निकली और जीरकपुर की तरफ बढ़ गई।

जुगल किशोर की आंखें धोखा नहीं खा सकती थीं।

कार को देवराज चौहान ही चला रहा था। बेशक वो दाढ़ी मूंछ में था परंतु महाठग की निगाहों से वो बच न सका था। जुगल किशोर के होंठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

देवराज चौहान की सारी योजना वो सोढ़ी से जान चुका था। अब ये जानकर कि देवराज चौहान बैंक कॉलोनी के भीतर ही ठहरा हुआ है। उसकी बाकी की सारी योजना जान गया था।

जुगल किशोर की आंखों के सामने पंद्रह-सत्रह करोड़ की रकम नाच उठी।

वो तो बैंक से लोन के रूप में पच्चीस लाख ठगने के लिये यहां रुका था परंतु अब वो पच्चीस लाख को भूल चुका था और करोड़ों के सपने देखने लगा था।

देवराज चौहान की पूरी योजना जुगल किशोर के सामने खुल चुकी थी।

अब जुगल किशोर को अपनी योजना बनानी थी कि कैसे उन पैसों को अपना बनाए, जिन्हे देवराज चौहान बैंक से चुपके से लूटने जा रहा था।

□□

देवराज चौहान ने कार खोखे पर रोकी।

सूरमा तुरंत उसके पास पहुंचा।

"सब ठीक है न?" सूरमा ने पूछा-"काम कब होगा?"

"शनिवार रात।"

मतलब कि परसो।"

"हां, शनिवार दोपहर के बाद तुम लोगों को कहीं से एक कार चुरानी है।"

"कार चुरानी है! क्यों?"

"शनिवार को बताऊंगा।"

"चोरी की कार इस छोटे से इलाके में पकड़ ली जायेगी।"

"उस कार का इस्तेमाल नहीं करना है। शनिवार की रात ही उससे पीछा छुड़ा लेना है।"

"क्या ये भी डकैती के प्लान का हिस्सा है?" सूरमा ने व्याकुल स्वर में कहा।

"हां!"

तभी गोलू पास आया। चार कदमों की दूरी पर खड़ा दोनों की बातें सुन रहा था।

"कोई दिक्कत नहीं, कार चोरी हो जाएगी।" गोलू बोला।

"किसकी?"

"हार्डवेयर वाले चाचे की।"

"मरवाएगा तू!"

"कुछ नहीं होगा। ये काम तू मुझ पर छोड़ दे। शनिवार दोपहर से साप्ताहिक बाजार लगना शुरू हो जाता है। ऐसे में चाचा कार को कुछ दूर ग्राउंड में पार्क कर देता है। बाकी दुकानदार भी ऐसा ही करते हैं। ग्राउंड में कोई पहरेदार तो है ही नहीं, वहां से कार आसानी से उठाई जा सकती है। चाचा की कार का लॉक भी ठीक से काम नहीं करता, मुझे पता है। सब कुछ आसानी से हो जाएगा।"

"तू करेगा ये काम?" सूरमा ने पूछा।

"कर दूंगा। कार उठाते हुए पकड़ा गया तो कह दूंगा कि सूरमा से शर्त लगी कि मैं चाचा की कार चुपचाप यहां तक ला पाता हूं कि नहीं। ऐसे में बात यहीं खत्म हो जाएगी।" गोलू मुस्करा पड़ा।

"पक्का हरामी है।" सूरमा ने गहरी सांस ली।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"शनिवार की रात हम पैसा बैंक से निकाल लेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"फिर तो मजा आ जाएगा।" सूरमा मुस्कराया।

“रविवार सब कुछ शांत रहेगा और सोमवार को बैंक खुलते ही हंगामा खड़ा हो जाएगा। वहां पर चारों तरफ पुलिस ही पुलिस होगी। तब तुम दोनों ने उस तरफ का रुख नहीं करना है। यहीं अपने खोखे पर ही रहना है।”

“ठीक है, मुझे एक करोड़ से ऊपर देने को कहा था तुमने, वो कब मिलेगा?”

“चार-पांच दिन बाद।”

“और कस्तूरी कब वापस आएगी?”

“डकैती के बाद हमें तब तक परिवार के रूप में रहना है, जब तक कि पैसे को लेकर हम खिसक नहीं जाते। यूं समझे कि डकैती के सप्ताह बाद तक हम वहां इसी तरह रहेंगे। उसके बाद धीरे-धीरे खिसकेंगे। तब तक पुलिस भी शांत हो गई होगी।”

सूरमा ने सिर हिला दिया।

“असल बात तो काम हो जाने से है, क्यों सूरमा?”

“हां-हां!” सूरमा ने सिर हिला दिया।

देवराज चौहान कार स्टार्ट करता हुआ बोला।

“याद रखना शनिवार दोपहर बाद तुम दोनों ने एक चोरी की कार का इंतजाम करना है।”

“परवाह नहीं। चाचा जिंदाबाद।”

□□

बैंक बंद होते ही बलबीर फुरसत में आया और भाभी जी की याद आई। वो सीधा अपने फ्लैट में पहुंचा-हाथ-मुंह धोया, कपड़े बदले, बाल संवारे। उसके बाद बॉलकनी में आया और सामने के फ्लैट की खिड़की को देखा।

खिड़की बंद थी।

"भाभी खिड़की नहीं खोलती कभी।" बलबीर बड़बड़ाया, फिर फ्लैट की तरफ बढ़ गया।

फ्लैट के दरवाजे पर पहुंचा।

"भाभी जी।" आवाज के साथ बलबीर ने बेल बजाई।

उसी पल मिसेज शर्मा का दरवाजा खुला।

मिसेज शर्मा को देखते ही बलबीर मुस्कराया।

"इधर तो आ।" मिसेज शर्मा ने कहा।

बलबीर फौरन मिसेज शर्मा ने कहा।

बलबीर फौरन मिसेज शर्मा के पास जा पहुंचा।

"क्यों रे!" मिसेज शर्मा ने धीमे स्वर में कहां-"उस दिन कैसा लगा?"

"मजा आ गया।"

"धीरे बोल!"

"शर्मा जी कहां हैं?" बलबीर धीमे स्वर में बोला।

"नहा रहे हैं।" मिसेज शर्मा मुस्कराई।

"कल फिर चलें चंडीगढ़?" बलबीर और भी धीमे स्वर में कह उठा।

"बार-बार जाने से शर्मा जी को शक हो जायेगा।"

"अगले हफ्ते चलें?"

"हां, ये ठीक रहेगा। मैं तेरे को एक दिन पहले बता दूंगी। अच्छा सुन, जीरकपुर जा के सब्जी ला दे।"

"सब्जी?"

"लाएगा ना?"

"आपके लिए तो जान हाजिर है।"

"बस-बस, ज्यादा बातें न बना।" कहकर मिसेज शर्मा ने बताया कि कौन-सी सब्जी लानी है।"

"मैं अभी एक घंटे में आपको सब्जी पहुंचा दूंगा।"

"पैसे आकर ले लेना।"

बलबीर वापस फ्लैट के दरवाजे पर पहुंचा।

दरवाजा खुला मिला। बलबीर भीतर प्रवेश कर गया।

सामने चांदीवाला बैठा दिखा।

"कहां चले गये थे तुम?"

"मिसेज शर्मा से बात कर रहा था। भाभी ओ भाभी।" बलबीर ने पुकारा।

"कभी मेरे पास भी बैठ जाया कर।" चांदीलाल बोला-"तेरे को उस दिन बताया था कि पैसे को कैसे ब्याज पर चढ़ाना है।"

"मैंने भी आपसे कहा था कि फिक्स डिपॉजिट हो रखी है। अभी देने को पैसे पास में नहीं हैं।"

"बैंक भला क्या देगा ब्याज? जितना बैंक साल भर में देगा, उतना तो बाहर से दो महीनों में मिल जाएगा। फिक्स डिपाजिट तुड़वा ले। बैंक तो लूटते हैं तेरे जैसे शरीफ आदमी को..!"

तभी सामने वाले कमरे से कस्तूरी बाहर निकली।

कस्तूरी को देखते ही बलबीर का चेहरा खिल उठा।

"नमस्ते भाभी जी।"

"नमस्ते-नमस्ते।" कस्तूरी मुस्कराकर बोली-"बैठ, मैं तेरे लिये चाय बनाती हूं।"

"चाय?"

“हां, मीठा कम डालूं के ज्यादा?”

“ज्यादा।” बलबीर ने दांत दिखाये।

“अब तो बैठ जा।” चांदीवाला बोला।

“दो बात तो कर लूं भाभी से।” बलबीर आगे बढ़ा और किचन के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ।

कस्तूरी चाय बनाने की तैयारी करने लगी।

“भाभी, कल मैं चंडीगढ़ जाऊंगा। आपके लिये परफ्यूम लेकर लौटूंगा।”

“सच।” कस्तूरी ने कातिल अदा से गरदन घुमाकर बलबीर को देखा।

बलबीर चारों खाने चित जैसे हो गया।

“आप भी चलिए ना भाभी।”

“चंडीगढ़?”

“हां, बहुत बढ़िया लंच कराऊंगा। आपका मन बहुत लगेगा। बैंक की वैन में जाएंगें।”

“मैं कैसे जा सकती हूं। भरा-पूरा परिवार है, सबके लिये खाना बनाना पड़ता है।”

“एक दिन नहीं बनेगा खाना तो क्या हो जाऐगा?”

“नहीं जा पाऊंगी।” कस्तूरी ने लंबी सांस लेकर कहा।

“बलबीर।” पीछे से चांदीलाल ने कहा-”मैं चलूंगा तेरे चंड़ीगढ़। मुझे लंच कराना।”

“मैं आपसे बात नहीं कर रहा।” बलबीर ने उखड़े स्वर में कहा।

“तो इधर आ जा। किचन में बहू के पास क्यों घुसा जा रहा है।”

बलबीर हड़बड़ाकर किचन से बाहर आ गया।

"बैठ जा। चाय बनेगी, तो मिल जायेगी। ये बता कभी बोतल वगैरह पीता है या नहीं?"

"महीने में एक-दो बार घूंट भर लेता हूं।"

"तो ला कभी बढ़िया सी बोतल, दोनों बैठकर खत्म करेंगें।"

"पैसे नहीं है, फिक्स डिपाजिट करा रखी है।"

बलबीर ने मुंह बनाकर कहा।

"तनख्वाह तो मिलती होगी?"

"लोन लिया हुआ है, सारा पैसा कट जाता...।"

तभी किचन से कस्तूरी बाहर निकलती कह उठी।

"चाय कैसे बनेगी, दूध तो है ही नहीं।"

"नहीं है।" बलवीर तुरंत उछलकर खड़ा हो गया-"मेरे होते हुये चिंता की जरूरत नहीं भाभी। मैं अभी लाया।" कहकर बलवीर बाहर निकल गया।

"चांदीलाल ने गहरी सांस लेकर कस्तूरी को देखा।

कस्तूरी मुस्कराई।

"ये तो तेरी चौखट के बाहर बैठा रहने वाला चौबीस घंटे का कुत्ता बन चुका है।" चांदीलाल ने मुंह बनाकर कहा-"ये तब तक कुत्ता बना रहेगा, जब तक तू इसे सूंघने नहीं देती।"

□□

रात आठ बजे देवराज चौहान ने सोढ़ी को फोन किया।

"बोल सोढ़ी।" लाइन मिलते ही देवराज चौहान ने कहा।

"ओह! मैं तो तेरे इंतजार में सूखा जा रहा था कि तेरा फोन आएगा कि नहीं। मेरा बेटा कैसा है?"

"ठीक है।"

"बात करा।"

"नींद में है, कल बात कर लेना।" देवराज चौहान ने कहा-"मैंने बैंक वैन के बारे में जानने के लिये फोन किया है।"

"हां, उसके बारे में ही मैं तुम्हें बताना चाहता...।"

"कल वैन बैंक में पैसा ला रही है?"

"हां!"

"उस वैन के बारे में सब कुछ बता। रंग, मेक, नंबर-सब कुछ, रास्ता भी।"

सोढ़ी बताने लगा।

देवराज चौहान सुनता रहा।

सोढ़ी के खामोश होते ही देवराज चौहान बोला।

"और कुछ.....।"

"मुझे डर लग रहा है।"

"डरो मत, सब ठीक रहेगा। तुम पर आंच नहीं आएगी।"

"मेरे बेटे को तुम लौटा क्यों नहीं देते?"

"रविवार को तुम्हें तुम्हारा बेटा मिल जाएगा।"

सोढ़ी के लंबी सांस लेने की आवाज आई।

"बेटा लौटाने के को लेकर मेरे से बेईमानी तो नहीं करोगे?"

"रविवार को तुम्हें हर हाल में तुम्हारा बेटा मिलेगा।"

“शुक्रिया।” सोढ़ी की आवाज में हल्का-सा कंपन उभरा।

देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया।

□□

रात के बारह बज रहे थे।

जुगल किशोर जाग रहा था।चंदा करवट लिये लेटी पड़ी थी। छोटे किले का फेरा लगाकर दोनों लौट चुके थे। नशा भी बहुत हद तक उतर चुका था।

जुगल किशोर ने सिगरेट सुलगाई तो चंदा ने करवट ली।

“नींद नहीं ले रहे?” चंदा ने पूछा।

“आई नहीं।”

“छोटे किले में फिर चलना है?”

“अभी नहीं।” जुगल किशोर ने चंदा पर नजर मारी।

“परेशान लग रहे हो?”

“नहीं, कल कुछ होना है-उसके बारे में सोच रहा हूं कि क्या वो होगा?”

“क्या होना है?”

“जुगल किशोर जवाब में कुछ नहीं बोला।

“मैं होटल में बैठे-बैठे बोर हो जाती हूं। कल मुझे भी अपने साथ ले चलना।”

“ठीक है।” जुगल किशोर ने कहने के साथ ही फोन उठाया और नंबर मिलाने लगा।

चंदा उसे देखती रही।

बेल बजी। फिर रिसीवर उठाने के साथ सोढ़ी की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो?"

"कैसे हैं सोढ़ी साहब?" जुगल किशोर मुस्कराया।

"ओह! इंस्पेक्टर साहब।"

"इतनी रात गए फोन किया, उसके लिये माफी चाहता हूं। दरअसल आपके काम में ही व्यस्त रहा।"

"मेरे काम में?"

"आपके बच्चे का पता लगा लिया है।"

"ओह!"

"वो देवराज चौहान के पास ही है और देवराज चौहान मेरी नजरों के सामने है। मेरी आंख उस टिकी हुई है। चिंता की कोई बात नहीं, मैंने अपना आदमी देवराज चौहान के आदमियों में फिक्स कर दिया है।"

"कोई गड़बड़ मत करना इंस्पेक्टर साहब।"

"कैसी गड़बड़?"

"दो घंटे पहले देवराज चौहान का फोन आया था। वो मुझे यकीन दिला रहा था कि रविवार को बच्चा लौटा देगा।"

"मेरी भी यही ख्याल है-क्योंकि शनिवार की रात वो बैंक लूटेगा।"

"हां!"

"बैंक वैन के बारे में पूछने के लिये देवराज चौहान ने फोन किया होगा।"

"हां, बैंक वैन के बारे में मैंने बता दिया।"

"ठीक किया। देवराज चौहान को काम करने दीजिये। मुझे बैंक के पैसे की नहीं, आपके बेटे की चिन्ता है।"

"मुझे भी अपने बेटे की फिक्र है।"

"लेकिन कुछ करना मत। कहीं आपसी छीना-झपटी में मेरे बेटे की जान न चली जाए।"

"रविवार तक मैं कुछ नहीं करूंगा।"

"मेहरबानी।"

"कल आऊंगा आपसे मिलने।" जुगल किशोर ने कहा और फोन बंद कर दिया।

चंदा बोली।

"तुमने क्या चक्कर फैला रखा है?"

"ऐसे सवाल मत करो।"

"कल तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे। तब भी तो बातें पता चलेंगीं मुझे।"

"कल शनिवार है, परसो रविवार। दो दिनों में तुम्हें इतना कुछ नहीं चल सकता कि उससे मेरी सेहत बिगड़े।"

"तुम मुझे पर भरोसा क्यों नहीं कर रहे जुगल?"

"भरोसा करने की कोशिश कर रहा हूं।"

"बहुत शक्की हो।"

जुगल किशोर मुस्कराया।

"छोटे किले पर घूमने चलें?" चंदा मुस्कराई।

"बहुत मेहरबान हो मुझे पर?"

"तुम एक रात की मजदूरी मुझे पचास लाख दोगे तो मेरी मेहरबानी पर तुम हैरान क्यों हो रहे हो?"

"हैरान नहीं हूं, तुम्हें समझने की कोशिश कर रहा हूं।"

"मुझे समझने की जरूरत क्या है। काम के बाद हमने अपने-अपने रास्ते पर निकल जाना है।"

जुगल किशोर जवाब में सिर हिलाकर रह गया।

□□

शुक्रवार सुबह!

9:55 हो रहे थे।

देवराज चौहान जीरकपुर-चंडीगढ़ सीमा पर मौजूद था। सड़क के किनारे झाड़ियों के पीछे। नजरें चंडीगढ़ से आती सड़क पर थी। रिवॉल्वर हाथ में थी। ये वीरान हाइवे था। वाहन ही आते-जाते दिखाई दे रहे थे। जिधर देवराज चौहान की नजरें टिकी हुई थीं, उस तरफ तीन सौ फीट आगे छोटा-सा घूमता मोड़ था। जाने वाले वाहन उस मोड़ से मुड़ते ही निगाहों से ओझल हो जाते और चंडीगढ़ से आ रहे वाहन एकाएक ही मोड़ पर दिखाई देने लगते थे।

देवराज चौहान की शिकार जो वैन थी, जिस पर सोलह-सत्रह करोड़ रुपया आ रहा था। उस वैन के दो पहियों को उड़ाने का प्रोग्राम बना रखा था। एक पहिया तो वे लोग स्टेपनी बदलकर आधे घंटे में ही वहां से रवाना हो सकते थे, जबकि पहिये खराब हो जाने पर दूसरे पहिये का इंतजाम करने में उन्हें वक्त लगना था।

बैंक डकैती की योजना का ये हिस्सा अहम था।

सूर्य सिर पर चढ़ता जा रहा था। गर्मी की वजह से पसीना रह-रहकर लकीर के रूप में गालों पर नजर आने लगता परंतु देवराज चौहान की नजर मोड़ पर टिकी थी।

वो जानता था कि वैन नजर आने के बाद उसे सिर्फ पंद्रह सेकेंड ही मिलने थे। उन पंद्रह सेकंडों में ही उसने दो टायरों का निशाना लेना था। अगर चूक गया तो यहां से एक किलोमीटर आगे ठीक इसी तरह झाड़ियों में जगमोहन मौजूद था। तब उसने मोबाइल फोन पर तुरंत जगमोहन को खबर करनी थी और जगमोहन ने वैन के टायरों का निशाना लेना था।

उसके या जगमोहन के हाथों वैन के टायरों का काम होना जरूरी था।

वक्त बीतने लगा।

दस बजकर बीस मिनट हो गए। तभी देवराज चौहान का मोबाइल बजा।

नजरों सामने टिकाए देवराज चौहान ने फोन निकालकर बात की। दूसरी तरफ जगमोहन ही था।

"कहो।"

"बैंक वैन ने 10.10 पर आना था अब 10.20 हो चुके हैं।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"दस पंद्रह मिनट वैन की देरी होना, मामूली बात है। अब वो किसी भी वक्त आ सकती है।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद करके जेब में डाला और सिगरेट सुलगा ली।

रिवॉल्वर हाथ में तैयार पकड़ी थी।

10.40 पर वो बैंक वैन मोड़ से आती दिखी।

झलक मिलते ही देवराज चौहान ने वैन को पहचान लिया था।

बैंक मैनेजर सोढ़ी के बताएनुसार वो हल्के रंग की वैन थी, जिसकी साइड में निकलने वाली खिड़कियों पर लोहे मजबूत जाली फिट कर रखी थी-जिसके सामने नंबर प्लेट के साथ 'भारत सरकार' के शब्दों की भी प्लेट लगी हुई थी।

पलक झपकते ही देवराज चौहान तैयार हो चुका था। उसने पोजीशन ले ली।

बाज की तरह देवराज चौहान की नजरें अपने शिकार पर जा टिकीं थीं।

वैन करीब आती जा रही थी।

जब सिर्फ सात फीट दूर थी वैन तो ट्रेगर पर देवराज चौहान की उंगली कसती चली गई।

दूरी कुछ कम हुई।

अगले टायर का निशाना लेते हुए देवराज चौहान ने ट्रेगर दबा दिया।

उस शांत हाइवे पर फायर का धमाका गूंजा।

बैंक वैन को लड़खड़ाते देखा देवराज चौहान ने।

उसी पल पीछे के टायर का निशाना लेकर देवराज चौहान ने पुनः फायर किया।

निशाना चूक गया।

बैंक वैन लड़खड़ाती हुई अब ठीक उसके सामने से निकल रही थी।

देवराज चौहान ने दांत भींचकर वैन के पीछे के टायर का निशाना लेकर एक के बाद एक दो फायर किए और उसी पल वैन का पिछला टायर भी फटता देखा।

लड़खड़ाती वैन एक तरफ झुकती चली गई।

काम हो गया था।

देवराज चौहान फुर्ती से खड़ा हुआ और रिवॉल्वर जेब में डालते हुए कुछ दूरी पर मौजूद पेड़ के तने के पीछे जा छिपा। नजरें सड़क पर मौजूद बैंक वैन पर ही रहीं, जो कि लड़खड़ाती हुई एक तरफ झुकी-झुकी सी सड़क के किनारे जा ठहरी थी।

देवराज चौहान वैन को देखता रहा।

वैन अपनी जगह पर शांत सी ढेढ़ी खड़ी थी। उसमें से कोई बाहर न निकला था। देवराज चौहान जानता था कि अभी कोई बाहर नहीं निकलेगा. भीतर के लोग पहले बाहर के हालातों को जानना चाहेंगे, क्योंकि वैन के भीतर करोड़ों रुपया मौजूद था।

देवराज चौहान ने मोबाइल फोन निकालकर जगमोहन का नंबर मिलाया।

"हां!" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"कार लेकर आ जाओ, काम हो गया है। मैं तुम्हें सड़क पर ही मिलूंगा।"

"ठीक है।"

"देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में डाला और पेड़ों -झाड़ियों के पीछे से घूमता लंबा चक्कर काटकर सड़क पर पहुंचा और दोनों हाथ जेबों में डाले लापरवाही से आगे बढ़ने लगा।

बैंक वैन पीछे रह गई थी।

वैन में से अभी तक कोई बाहर न निकला था।

पांच मिनट ही बीते होंगें कि कार पर जगमोहन आ पहुंचा। उसने पास ही कार रोकी तो देवराज चौहान भीतर बैठता चला गया। जगमोहन ने कार आगे बढ़ा दी। चंडीगढ़ जाने वाले रास्ते पर थे वे।

"किधर जाना है?"

"चंडीगढ़!" देवराज चौहान बोला।

"वहां तो हमें कोई काम नहीं?" जगमोहन ने पूछा।

"कार का कवर लेना है।" देवराज चौहान बोला।

"कार का कवर! किसलिए?"

"रुपया बैंक से निकालने के बाद हम फ्लैट के बाहर खड़ी कार में रखेंगें और कार को कवर के साथ ढांप देंगें।"

"ओह!"

"इसके लिए हमें एक कार कहीं से चुरानी होगी।"

"चोरी की कार में रुपया रखेंगें तो खतरा बढ़ जाएगा।" जगमोहन ने कहा।

"कुछ नहीं होगा-क्योंकि कार का नंबर कार के कवर के नीचे ढक जाएगा।"

जगमोहन ने बेचैनी से पहलू बदला।

"कुछ कहना चाहते हो?" देवराज चौहान ने जगमोहन पर नजर मारी।

"तुम्हारा मतलब कि हम फ्लैट के भीतर रहेंगें और करोड़ों रुपया बाहर कार में पड़ा रहेगा। कोई ले गया तो?"

"क्या कोई कार का कवर उठाकर देखता है कि कार में क्या है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"न..नहीं देखता।"

"तो फिर चिंता क्यों करते हो? रुपया कवर से ढकी कार में बिल्कुल सुरक्षित रहेगा।"

□□

जुगल किशोर जब चंदा के साथ बैंक पहुंचा तो दिन के पौने ग्यारह बज रहे थे। बैंक का रोजमर्रा का काम सामान्य रूप से चल रहा था।

चंदा ने घुटनों तक लंबी शर्ट और स्कीवी डाल रखी थी। कंधों तक लहराते खुले बाल और चेहरे पर जबरदस्त मेकअप। वो बला की खूबसूरत लग रही थी। बैंक में प्रवेश करते ही कईयों की निगाह उस पर जा टिकी थीं। जुगल किशोर चंदा के साथ सीधा सोढ़ी के केबिन में पहुंचा।

सोढ़ी काम में व्यस्त अवश्य था-परंतु आज बेचैन था। बार-बार उसका ध्यान बैंक वैन की तरफ चला जाता था, जो करोड़ों रुपया लेकर बैंक पहुंचने वाली थी। वो समझ नहीं पा रहा था कि क्या देवराज चौहान उस वैन के साथ ऐसा कुछ कर पायेगा कि वो समय पर बैंक न पहुंच सके।

अगर समय पर वैन पैसा लेकर बैंक आ गई तो पार्टियों को आज पैसा डिलीवर करना ही पड़ेगा। उसके पास कोई बहाना नहीं रहेगा कि पैसे को बैंक में रोके रख सके।

वैन अगर देरी से बैंक पहुंचती है तो पार्टियों के सामने बहाना लगाया जा सकता है। ऐसे में उस पर कोई शक भी नहीं कर पाएगा कि वो कोई गड़बड़ करने की फिराक में।

तभी फोन की घंटी बजी।

"हैलो।" सोढ़ी ने रिसीवर उठाया।

"मैनेजर साहब, मैं शुक्ला बोल रहा हूं। पेमेंट लेने के लिये आऊं क्या?"

"वैन आ रही है, रास्ते में है। कभी भी आ सकती है। आप घंटे भर बाद आ जाइए।" सोढ़ी बोला।

"ठीक है।"

सोढ़ी ने रिसीवर रख दिया।

यही वो वक्त था, जब जुगल किशोर और चंदा ने केबिन में प्रवेश किया था।

"ओह...! इंस्पेक्टर साहब।" सोढ़ी के होंठों से निकला।

"परमजीत कहिए, सेठी कहिए, इंस्पेक्टर साहब नहीं।"

"ह..हां, ठीक है।" सोढ़ी की निगाह चंदा पर गई-"ये..ये...!"

"ये सब-इंस्पेक्टर रेवती वालिया हैं। मेरी असिस्टेंट। इस काम में मेरे साथ हैं।"

चंदा ने जुगल किशोर और चंदा फौरन बैठ गए।

"सोढ़ी साहब, आज काम चल रहा रहा है ना?"

"कौन-सा काम?"

"वो ही, देवराज चौहान वाला। वो आज रास्ते में वैन का वक्त खराब करने की चेष्टा करेगा।"

"हां!" सोढ़ी ने पहलू बदला-"जाने क्या होने जा रहा है?"

"सब ठीक होगा, आप...!"

"मुझे अपने बेटे की फिक्र है।"

"मैं उसी के लिए तो भाग-दौड़ कर रहा हूं, क्यों रेवती?"

खामोश बैठी चंदा हड़बड़ाकर बोली।

"इंस्पेक्टर साहब को तो आपके बेटे की चिंता में रातों को भी नींद नहीं आती। मैं बहुत कहती हूं कि...!"

तभी फोन बजा।

सोढ़ी ने रिसीवर उठाया।

"हैलो।" सोढ़ी बात करता रहा-"जी सर, बस सर।

ओ.के. सर। मैं अभी पहुंचता हूं।" कहकर उसने रिसीवर रखा।

"जुगल किशोर और चंदा उसे ही देख रहे थे।

"वो-वो हैडऑफिस से फोन था। बैंक वैन के दो टायरों को किसी ने गोली से उड़ा दिया है। यहां से आठ किलोमीटर दूर खड़ी है वैन। मुझे वहां जाना होगा। पुलिस भी वहां पहुंच रही है।"

"जरूर जाइए।" जुगल किशोर बोला-"उन पुलिस वालों के सामने मेरा और रेवती का जिक्र न करना सोढ़ी, वरना तुम्हारे बेटे के अपहरण की बात खुल जाएगी और उसकी जान को खतरा पैदा हो जाएगा।"

सोढ़ी ने तुरंत सिर हिलाकर कहा।

"मैं किसी से बात नहीं करूंगा।"

"आपके बेटे के बचाव में ही आपसे एक काम था।"

"क्या?"

"मैं अपनी असिस्टेंट के साथ कल रात तक के लिये बैंक कॉलोनी में रहना चाहता हूं।"

"क्यों?"

"पुलिसवालों से ज्यादा सवाल नहीं किए जाते। ये पुलिस की प्लानिंग है, फिर भी आपको इस बार तो बता देता हूं कि ऐसा करके पुलिस क्या करना चाहती है।" जुगल किशोर ने गंभीर स्वर में कहा-"जैसा कि देवराज चौहान ने आपसे कहा है कि आप कल रात बैंक के पीछे कॉलोनी में खुलने वाला दरवाजा खुला रखें, तो इससे स्पष्ट है कि शनिवार को रात देवराज चौहान उधर से ही करोड़ों रुपया बैंक से बाहर निकालेगा और हमने देखना है कि देवराज चौहान रुपया कैसे बैंक कॉलोनी से बाहर ले जाता है।"

"समझा।"

"इसके लिये हम दोनों बैंक कालोनी में ऐसी जगह टिकना चाहते हैं, जहां से ये सब दिखाई दे।"

"सोढ़ी ने सिर हिलाया, फिर बोला।

"इसके लिए तो आपको सामने वाला कोई फ्लैट चाहिए।"

"हां! कोई तो खाली होगा?"

"खाली तो होगा, लेकिन किसी से मैं क्या कहूंगा?"

"हम आपके बेटे की जिंदगी बचाने का प्रयास कर रहे हैं सोढ़ी साहब।"

"मैं समझता हूं।"

"इसलिए हमें ऐसे किसी फ्लैट का इंतजार करके दो।"

"कोशिश करता हूं।"

"कोशिश नहीं, ये काम हर हाल में होना चाहिए। तभी तो आपका बेटा बचेगा।"

“उसे जरूर बचाना।”

“तो फ्लैट कर इंतजाम करो।” जुगल किशोर उठ खड़ा हुआ-”आओ रेवती।”

चंदा भी उठी।

“तुम चार बजे मुझे फोन करना।” सोढ़ी ने बेचैनी से उसे देखा।

“पूरे चार बजे करूंगा।”

जुगल किशोर चंदा के साथ बाहर निकला।

“सोढ़ी ने इंटकरकॉम का रिसीवर उठाकर नंबर दबाया और बात की।

“हैलो।” उधर से आवाज कानों में पड़ी।

“सूरज।”

“हां, सर।”

“वो तुम्हारा फ्लैट है बैंक के पीछे, तीसरी मंजिल पर।”

“यस सर।”

“खाली पड़ा है?”

“बिलकुल खाली है। अभी मेरा वहां रहने का प्रोग्राम नहीं है।”

“किराये पर देना है?”

“किराये पर?”

“मेरी पहचान वाला है, किराया बढ़िया दे देगा।“

“आप कहते हैं तो दे देता हूं।”

“फ्लैट की चाबी कहां है?”

“घर पर ही है सर।”

“कल ले आना।”

"ठीक है सर, ले आऊंगा और बलबीर से कहकर फ्लैट की सफाई भी करवा दूंगा।"

□□

"सब काम ठीक चल रहा है।" जुगल किशोर बोला-"देवराज चौहान ने टायरों को उड़ाकर वैन को रुकने पर मजबूर कर दिया है।"

"खुलकर बताओ मुझे कि ये सब क्या हो रहा है?" चंदा बोला।

"कुछ बातें समझ में आईं?"

"हां, कुछ-कुछ-परंतु उन बातों के बीच की कड़ियां टूटी हुईं हैं। ठीक से समझ नहीं आ रहा।"

"मेरे साथ रहो। सब ठीक से समझ आने लगेगा। कड़ियां जुड़ने लगेंगी।"

"तुम क्यों नहीं बताते मुझे?"

"सब कुछ बता दिया तो वक्त से पहले सब कुछ समझ जाओगी। ऐसे में अगर तुमने कोई खुराफात करनी होगी तो उसके लिये तुम्हारे पास भरपूर वक्त होगा। बेहतर यही है कि तुम्हें धीर-धीरे ही समझ आए। जब तक तुम्हें पूरी बात समझ में आएगी, तब तक काम निबट चुका होगा।" जुगल किशोर ने कहा।

"अजीब आदमी हो।" चंदा कार के पास पहुंचकर ठिठकी।

जुगल किशोर मुस्कराया।

"तुम्हें मुझ पर भरोसा करना चाहिए।"

"क्यो?"

"हम दोनों एक साथ कितनी बार छोटे किले में रह चुके हैं। वो सब हमारे भरोसे का आधार ही तो है।"

"हम जैसे लोगों में विश्वास नहीं, धंधे के उसूल चलते हैं। रिश्ता नहीं चलता, नोट चलते हैं।"

चंदा ने मुंह बनाकर जुगल किशोर को देखा।

"अब मुझे तुम कमीने लगने लगे हो। मेरी मां कहती है कि प्यार में बहुत दम होता है।"

"जरूर होता होगा, लेकिन हममें प्यार है ही नहीं।" जुगल किशोर ने लापरवाही से कहा-"शाम को चार बैंक मैनेजर सोढ़ी को फोन करना है, याद रखना।"

"हां, वैसे मामला कितनी रकम का है?"

"पंद्रह-बीस करोड़ का।"

"फिर तो तुम सच में कमीने हो।"

"क्यों?"

"मुझे सिर्फ पचास लाख दे रहे हो।"

"एक रात की मजदूरी के हिसाब से ये भी बहुत ज्यादा है।" जुगल किशोर ने गहरी सांस ली। फिर सिगरेट सुलगाकर पैंतीस हजारी का दरवाजा खोला तो चंदा कह उठी।

"मैं तुम्हें अच्छी लगती हूं।"

"खूबसूरत हो, दिलकश हो।" जुगल किशोर ने मुस्कराकर उसे देखा।

"क्या ख्याल है कि अगर हम हमेशा के लिये छोटे किले में रहने लगें?" चंदा मुस्कराई।

"मैं शादी-ब्याह के चक्कर में नहीं पड़ता।"

"तो बिन शादी के छोटे किले में घर बसा लेते हैं जुगल।"

"मैं बहता पानी हूं, जितना भी रोकेगी, तेरे हाथ में कुछ नहीं आयेगा और तेरे को मेरी जरूरत नहीं। उस पैसे के लिये तू मेरे साथ रहना चाहती है, जो मेरे हाथ आने वाला है।" जुगल किशोर ने शांत स्वर में कहा।

"इन्कार नहीं करूंगी कि आपके वाला करोड़ों रुपया भी साथ रहने की वजह है, लेकिन तू भी अच्छा लगता है मुझे।"

"मुझे माफ कर। अपना पचास लाख लेकर चलती बन।" जुगल किशोर कार के भीतर जा बैठा।

चंदा भी भीतर बैठते हुये बोली।

"बहुत कमीना है तू।"

"तेरे को हाथ नहीं रखने दिया तो कमीना बन गया। हाथ रखने देता तो तू मुझे दूल्हे राजा कहकर पुकारती।"

"क्या बुरा करती।"

"मैं नोटों का सेहरा बांधता। बिना बारात के ही बहुत ब्याह किए हैं मैंने।"

"तू तो असली कमीना है।"

"एकदम शुद्ध कमीना।" जुगल किशोर ने कार आगे बढ़ाई-"मेरे साथ चिपकने की कोशिश मत कर, कोई फायदा नहीं होगा।"

चंदा ने कुछ नहीं कहा। मुस्कराई और खिड़की के बाहर देखने लगी।

□□

गोलू पेड़ के नीचे कुर्सी पर बैठा था। दिन के बारह बज रहे थे। इस बीच वो आधे घंटे की झपकी भी ले चुका था। तभी उसने सूरमा को सामने से आते देखा।

सूरमा पास पहुंचा तो गोलू बोला।

"एक घंटे से तू किधर था?"

"चाचा के पास।" उसके पास रखी कुर्सी पर सूरमा बैठता कह उठा-"सौदा पटा के आया हूं।"

"सौदा?"

"चाचा की हार्डवेयर की दुकान का।"

गोलू हड़बड़ाकर सीधा बैठ गया।

"चाचा से क्या कहा कि तूने खरीदनी है?" गोलू के होंठों से निकला।

"इतना बेवकूफ नहीं हूं।"

"तो?"

"चाचा से कहा मैंने कि कोई ग्राहक है, उसने मुझे सौदेबाजी करने भेजा है।"

"ठीक कहा-फिर?"

"फिर क्या, आज तो चाचा ने चाय के बाद लिमका भी पिलाई। बहुत ज्यादा कीमत है दुकान की। दुकान में पंद्रह लाख का तो माल भरा पड़ा है। माल के पूरे बिल दिखाए चाचा ने।"

"बात बनी कि नहीं?"

"पचास लाख मांग रहा था चाचा दुकान के-फिर बात पैंतीस पर आ गई।"

"हां कर दी?"

"अभी नहीं, अभी तो मैंने यही कहा है कि ग्राहक से बात करके बताऊंगा। अब बात क्या करनी है, दो तीन दिन में पैसा हाथ में होना है। पैंतीस लाख ले जाकर चाचा के सामने रख देंगें।"

"ये भी ठीक है, लेकिन...!"

"क्या लेकिन?"

"पप्पू भाई साहब, काम में सफल होंगें कि नहीं?"

"मुझे क्या पता।" सूरमा बेचैन हुआ-"कस्तूरी से मिलने का मन कर रहा है।"

"पप्पू भाई साहब नाराज होंगें कि तू उधर...!"

"होने दे, इतने दिन हो गए।"

"कस्तूरी से बात किए। उसका हाल-चाल तो देख आऊं-चल।"

"मैं?"

"हां, तू बाहर रहना। गेट के बाहर, मैं कस्तूरी से मिल आऊंगा।"

"ठीक है चल।"

"दोनों एक तरफ खड़े रंग-बिरंगे स्कूटर पर बैठे और चल दिए।

दस मिनट में ही बैंक कॉलोनी के गेट पर जा पहुंचे।

"तू यहीं रुक। मैं अभी आया।"

गोलू स्कूटर के पास खड़ा रहा और सूरमा आगे बढ़ गया। गेट पर मौजूद वॉचमैन उसे जानता था, इसलिए रोका-पूछा नहीं। सीधा फ्लैट पर पहुंचा। दरवाजा खुला था। उसने भीतर प्रवेश किया।

सामने ही चांदीलाल बैठा था।

"तू कैसे आया सूरमा?" चांदीलाल ने उसे देखते ही पूछा।

"कस्तूरी से मिलने आ गया। कैसी है वो?"

"उसे क्या होता है, ठीक है। पड़ोस में मिसेज शर्मा के यहां गई है। अभी आ जाएगी।"

सूरमा बैठते हुये बोला।

"पप्पू भाई साहब और जगमोहन।"

"वो काम पर बाहर गए है।"

सूरमा ने राहत की सांस ली, ये जानकर कि देवराज चौहान वहां नहीं है।

"काम कैसा चल रहा है?" सूरमा ने पूछा।

"बढ़िया।"

"कब होगा?"

"कल रात को।"

"हो जाएगा?"

"होना तो चाहिए।" चांदीलाल बोला-"क्यों तेरे को कोई शक है क्या?"

"मुझे क्या पता, मैं तो तेरे से पूछ रहा हूं।"

"वो लगे हुए हैं। काम हो जाना चाहिए।" चांदीलाल गंभीर स्वर में बोला।

"वो चपरासी बलबीर, अब तो नहीं आता यहां?"

"आता है।"

"कस्तूरी इससे ज्यादा बात नहीं करती?"

"तू फिक्र मत कर। मैं उन दोनों को ज्यादा बात करने ही नहीं देता।" चांदीलाल ने उसे तसल्ली दी।

"उस साले को यहां आने ही मत दिया करो।"

"दो-चार दिन की बात है, तू क्यों फिक्र करता है? मेरे पे तेरे को भरोसा है ना?"

"पूरा है।"

"तो मस्त रह। यहां सब ठीक है।"

"बुला कस्तूरी को, मिल लूं उससे।"

"चांदीलाल ने गला फाड़कर 'बहू-बहू' आवाजें लगाईं।

कस्तूरी आ गई। सूरमा को देखते ही मुस्कराई।

"कैसा है?" कस्तूरी ने पूछा।

"ठीक हूं। तू अच्छी है?"

"बिल्कुल, तेरे सामने हूं। देख ले।"

"बच्चा कहा है?"

"ठीक है, भीतर बैंक मैनेजर के लड़के के साथ खेल रहा है। लाऊं क्या?"

"रहने दे।" सूरमा, कस्तूरी के पास पहुंचकर धीमे स्वर में बोला-"किसी को राजा तो नहीं बनाया तूने?"

"क्या बात करता है।" कस्तूरी ने मुंह बनाया।

"अगर ऐसा किया तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

"शक मत कर। राजा मैं सिर्फ तेरे को ही बनाती हूं।"

"समझा।" चांदीलाल कह उठा-"सूरमे, तेरा शक नहीं जायेगा।"

"तुम बीच में मत बोलो। ये मियां बीबी का मामला है।" सूरमा ने मुंह बनाया।

"मैं ही तो यहां कस्तूरी का ध्यान रखता हूं। मुझसे ठीक से बात कर।"

"ठीक है, मुझे यूं ही गुस्सा आ गया था।" कहकर सूरमा ने कस्तूरी को देखा-"तेरी बहुत याद आती हैं।"

"फिक्र मत कर। नोटों के साथ आऊंगी वापस।"

"कब?"

"जल्दी ही।"

"मैंने तो सुना है काम कल रात को होना है।"

"तू चुपचाप निकल ले यहां से।" कस्तूरी बोली-"फालतू का इधर मत आ।"

"ध्यान रखियो, कहीं माल के साथ पप्पू भाई साहब खिसक न जाएं।"

"मैं पूरा ध्यान रखूंगी। तभी तो यहां हूं।"

"पानी नहीं पूछेगी?" सूरमा मुस्कराया।

"पानी क्या, तेरे को मुर्गा के साथ पिलाऊंगी-लेकिन दो चार दिन का सब्र रख। जा यहां से।"

"जाऊं?"

"हां, जा।"

"वो बलबीर से ज्यादा बात मत किया कर, वो..।"

"मैं किसी से बात नहीं करती। तू जा, नोट लेकर आऊंगी।"

सूरमा ने गहरी सांस ली और बाहर निकल गया।

सूरमा वापस गोलू के पास पहुंचा।

"चल।"

"क्या हुआ?" गोलू स्कूटर स्टार्ट करते हुये बोला।

"भाव बहुत ऊंचे हो गये है साली के, पानी तक नहीं पिलाया।"

"लेकिन हुआ क्या?"

"कुछ नहीं, सब ठीक है।"

गोलू ने स्कूटर स्टार्ट किया। सूरमा बैठ गया। स्कूटर आगे बढ़ गया।

"कल दिन में कार उठानी है चाचा की।" सूरमा बोला।

"याद है।"

□□

शाम को बलबीर बैंक बंद होते ही फ्लैट पर जा पहुंचा।

"आ बलबीर बेटा।" चांदीलाल उसे देखते ही कह उठा-"तू नहीं आता तो दिल नहीं लगता।"

"अब दो दिन की छुट्टी? कल तो बैंक खुला है।"

"दो घंटे ही तो खुला है। उसके बाद मजे ही मजे। भाभी किधर है?"

"तभी कस्तूरी किचन से बाहर निकली।

"कैसा है तू बलबीर?" कस्तूरी ने मुस्कराकर पूछा।

कस्तूरी ने तंग सूट पहन रखा था। जिस्म का एक-एक उभार जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ था। बलबीर कस्तूरी का ये जानलेवा अंदाज देखता रह गया।

"किधर देखता है?" चांदीलाल बोला-"कस्तूरी तेरा हाल पूछ रही है।"

"मैं..मैं ठीक हूं।" बलबीर हड़बड़ाकर कह उठा।

"होश में रहा कर।"

“भाभी।” चांदीलाल की बात की परवाह न करके, बलबीर कह उठा-”मैं जब भी आता हूं, तुम किचन में होती हो। कभी भी आराम करते नहीं देखा तुम्हें। मुझे बता दिया करो, काम मैं...।”

“चाय बना रही हूं, पिताजी के लिये-आ तू बना। पानी चढ़ा रखा है।”

“अभी लो।” कहते हुए बलबीर किचन में प्रवेश कर गया।

कस्तूरी किचन के दरवाजे पर ठिठकी।

“वो दूध है और इधर चीनी-पत्ती।”

“मुझे सब पता है।” बलबीर बात काटकर बोला-”कल चंडीगढ़ चलें?”

“चंडीगढ़?”

“बैंक की वैन है, चिंता क्या।”

“लेकिन वहां जाकर करेंगें क्या?”

“तुम्हारे लिये परफ्यूम खरीदना है। लंच भी कर लेंगें। एक-दो घंटे पेड़ की छांव में बैठकर बिता लेंगें।” बलबीर मस्ती भरे स्वर में कह उठा-”बाकी जो तुम कहोगी, वो कर लेंगें।”

कस्तूरी ने बलबीर की बांह पर हाथ रखा।

“बलबीर और भी मस्ती में डूब गया।

“भाभी!”

“जाना तो मैं भी चाहती हूं तेरे साथ चंडीगढ़।”

“तो चली जा।”

"लेकिन अभी टाइम नहीं मिल रहा। कुछ दिन और ठहर जा।"

"कुछ दिन, तब तक तो मेरी जान निकल जाएगी।"

"झूठा कहीं का। कुछ दिन पहले तू मिसेज शर्मा के साथ चंडीगढ़ तो गया था।" कस्तूरी ने शरारत भरे स्वर में कहा।

"व..वो...।"

"मुझसे कुछ भी छिपा नहीं है।" कस्तूरी ने प्यार भरे अंदाज में मुंह बनाया।

"सब पता चल गया तुम्हें, कहीं मिसेज शर्मा ने तो नहीं बताया।"

कस्तूरी मुस्कराई।

"कैसी है मिसेज शर्मा?"

"बढ़िया।" बलबीर मुस्कराया-"देखने में तो फुस लगती है।"

"बच्चा चाहिये उसे?"

"हो जाएगा।"

"कर देना, बेचारी बहुत दुखी है।"

"दुःख दूर कर दूंगा उसका। तुम कब चल रही हो चंडीगढ़। तुम चलोगी तो मेरा दुःख...!"

तभी चांदीलाल की आवाज आई।

"चाय बन गई क्या?"

"पानी तो खौलकर सूख भी गया।" बलबीर कह उठा।

"सूख गया तो तू क्या कर रहा था।" चांदीलाल का स्वर पुनः आया।

"चाय बना जल्दी से।" कस्तूरी ने कहा और किचन से बाहर निकलकर चांदीलाल से बोली-"चाय बनाने की प्रैक्टिस ले रहा था।"

"प्रैक्टिस ले रहा था तो फिर बन गई चाय।"

"अभी लाया पिताजी। बढ़िया बनाकर दूंगा।"

"पिताजी!" चांदीलाल बड़बड़ाया। सामने खड़ी कस्तूरी को देखा।

कस्तूरी मुस्कराई और आंख दबा दी।

चांदीलाल गहरी सांस लेकर दूसरी तरफ देखने लगा।

□□

घंटे भर बाद जगमोहन कार पर पहुंचा। कार नई के हाल में थी। इंडिका थी, चंडीगढ़ का नंबर था। फ्लैट के बाहर कार रोकी ही थी कि तभी बलबीर बाहर निकला।

"नमस्कार जगमोहन जी।"

"नमस्कार।" जगमोहन कार से बाहर निकलता कह उठा-"कार पर कवर चढ़ा दो। भीतर पड़ा है।"

"अभी लो।" बलबीर ने कार का दरवाजा खोला और सीट पर पड़ा कवर बाहर निकालता बोला-"ये कार कहां से ले आए। पहले तो दूसरी कार थी।"

"ये अपनी कार है। चंडीगढ़ की दुकान से लाया हूं।"

"चंडीगढ़ में दुकान भी है आपकी?"

"दो दुकानें हैं।"

"ओह! मेरे को तो अब पता चला। दुकानों का पता बता देना भाई साहब। आड़े वक्त में काम आएगी।"

"आड़े वक्त में?"

"हां, कभी पैसे कम पड़ जाते हैं तो आपकी दुकान से ले लूंगा और वापस आकर चुका दूंगा।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

बलबीर ने गाड़ी पर अच्छी तरह से कवर चढ़ा दिया।

"सुबह गाड़ी को आपने निकालना तो है ही, फिर कवर चढ़ाने की क्या जरूरत है?" बलबीर बोला।

"पांच सात दिन इस गाड़ी को नहीं निकालना है। यहीं खड़ी रहेगी।"

बलबीर ने सिर हिलाया, फिर गेट की तरफ नजर पड़ते ही बोला।

"लो, पप्पू भाई साहब आ गए।"

जगमोहन ने उधर देखा। दूसरी कार पर देवराज चौहान आ पहुंचा था।

□□

शाम को जुगल किशोर ने सोढ़ी को फोन किया था।

सोढ़ी ने उसे बता दिया था कि बैंक वैन पैसों के साथ दोपहर एक बजे बैंक पहुची है। ऐसे में सारा पैसा बैंक में ही रुका है-क्योंकि पैसा बैंक में पंहुचते-पहुंचते डेढ़ बज गए थे।

साथ ही सोढ़ी ने उसे बता दिया कि उसके लिये फ्लैट का इंतजाम हो गया है।

यानी कि सारे काम सुचारु रूप से चल रहे थे।

देवराज चौहान के काम भी और इधर जुगल किशोर के भी।

□□

देवराज चौहान ने शाम को आठ बजे सोढ़ी को फोन किया।

तब सोढ़ी घर पर था। उसने फोन पर बात की।

"मुझे बहुत...... ।"

"अपने आप पर काबू रखो। कल तुमने बैंक के कागजों में छोटी-सी आग लगानी है। कल दो घंटे का बैंक है और ये दो घंटे जैसे-तैसे तुमने निकालने हैं कि बैंक में मंगवाया पैसा पार्टियों को न देना पड़े। वो बैंक में ही रहे।"

"याद है मुझे।" सोढ़ी के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

"कल किसी भी तरह की लापरवाही मत कर बैठना।"

"नहीं करूंगा। मेरा बच्चा कैसा है?"

"एकदम सलामत।"

"बात कराओ।"

चंद पलों की चुप्पी के बाद उसके कानों में बेटे की आवाज पड़ी।

"पापा!"

"कैसे हो राजू?"

"ठीक हूं पापा-लेकिन अब इस तरह बंद पड़े-पड़े बोरियत होने लगी है। ये मुझे कमरे से बाहर नहीं जाने देते।"

"सब ठीक हो जायेगा। कल की बात है, परसो तुम मेरे पास होगे।"

"आप दस हजार इन्हें दे क्यों नहीं देते?" राजू की आवाज कानों में पड़ी।

"दस हजार...! हां-हां कल दे दूंगा। तुम किसी बात की फिक्र मत करो।"

"अंकल फोन वापस मांग रहे हैं, आप मम्मी से मेरी बात करा दो।"

सोढ़ी ने अपनी पत्नी को फोन दे दिया।

"वो आंखों में आंसू लिये अपने बच्चे से बात करने लगी।

पांच मिनट बाद बातचीत बंद हो गई।

सोढ़ी की पत्नी ने रिसीवर वापस रखा और आंसू साफ करके कह उठी।

"बस बहुत हो गया। आप मुझे मेरा राजू वापस ला दीजिये।"

"परसो राजू आ जाएगा। हौसला रखा।"

"क्या भरोसा, वो मेरे लाल को जान से मार दे तो?"

सोढ़ी ने होंठ भींच लिए।

"जवाब दो-वो...!"

"ऐसा नहीं होगा। राजू हमें जिंदा ही वापस मिलेगा। बुरी बातें मत कहो।"

"ये कहकर आप मुझे झूठी तसल्ली दे रहे हैं।"

"मैं स्वयं नहीं जानता कि क्या होगा?"

"वो पुलिस वाला कहां है, परमजीत सिंह सेठी-वो क्या कर रहा है?" उसकी पत्नी की आंखों में आंसू बह निकले।

"वो राजू को ही बचाने में लगा हुआ है।" सोढ़ी ने कहा-"मैंने ही उसे कह रखा है कि वो राजू को देवराज

चौहान की कैद से छुड़ा लाने का प्रयास न करे। कहीं राजू को किसी तरह की तकलीफ न हो जाए।"

"बाद में उसने राजू का कुछ बुरा कर दिया तो?"

"सेठी ध्यान रखेगा। वो देवराज चौहान के गिर्द अपना घेरा कस रहा है। इस बात का पूरा ध्यान रखेगा कि हमारा राजू सलामत रहे।"

"भगवान जाने क्या होगा।" वो रो पड़ी।

"अपने पर काबू रखो। तुम इस तरह रोती रही तो कल मुझे काम करने में परेशानी आ जाएगी।

□□

शनिवार सुबह साढ़े दस बजे जुगल किशोर और चंदा बैंक पहुंचे। आज जुगल किशोर पहचानने में न आ रहा था। होंठों पर मूंछें, फ्रेंचकट दाढ़ी। साथ में शर्म से लजाती चंदा ने लाल साड़ी बांध रखी थी। सिर पर लिया साड़ी का पल्ला माथे तक आ रहा था।

दस मिनट में ही दोनों बैंक से बाहर आ गए थे। फ्लैट की चाबी मिल गई थी। सोढ़ी ने उसे फ्लैट का नंबर बता दिया था। दोनों कार में बैठे और बैंक कॉलोनी के गेट पर आ पहुंचे। वॉचमैन के पूछने पर उन्होने बताया कि 115 नम्बर फ्लैट उन्होने किराए पर लिया है।

पैंतीस हजारी को भीतर फ्लैटों के पास ले जाकर रोका। चोर नजरों से उसने उस फ्लैट को देखा, जिसमें देवराज चौहान ने डेरा जमा रखा था। तभी उसने कस्तूरी को देखा, जो फ्लैट से निकलकर बगल वाले फ्लैट की तरफ बढ़ गई थी।

"वो है फ्लैट, जिसमें देवराज चौहान टिका हुआ है।"

चंदा ने उधर देखा।

जुगल किशोर बाहर निकला।

चंदा भी बाहर निकल आई।

पीछे सीट पर पड़ा सूटकेस उन्होंने बाहर निकाला।

तभी जुगल किशोर ने जगमोहन को देखा, जो कि फ्लैट से निकल रहा था। जुगल किशोर ने हड़बड़ाकर उसकी तरफ पीठ कर ली। चंदा ने माथे पर साड़ी का पल्लू ठीक करते जगमोहन को देखा।

"कौन है ये?"

"जगमोहन, देवराज चौहान का सबसे खास। बहुत खतरनाक है ये।" जुगल किशोर धीमे स्वर में बोला।

"तुम्हें पहचानता है?"

"हां, साले ने पहचान लिया तो खाट खड़ी कर देगा मेरी।" जुगल गहरी सांस ली।

"डरते हो उससे?" चांदा ने व्यंग से कहा।

"छोटे जानवरों को बड़े जानवरों से डरना ही पड़ता है। उनके सामने दहाड़ना बेवकूफी होती है।"

जुगल किशोर और चंदा सूटकेस के साथ ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़े।

जगमोहन तब वापस फ्लैट में जा चुका था।

सूटकेस थामे जुगल किशोर और चंदा तीसरी मंजिल के फ्लैट तक पहुंचे ही थे कि मध्यम सा शोर उनके कानों में पड़ा। दरवाजा खोला। जुगल किशोर ठिठका।

"ये क्या है?"

"शायद बैंक में आग लगी है।" जुगल किशोर ने जल्दी से दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गया।

चंदा उसके पीछे थी।

दोनों फ़्लैट की लोहे की ग्रिल वाली बालकनी में पहुंचे। शोर बैंक की तरफ से ही आ रहा था और आग-आग की मध्यम सी आवाज भी कानों में पड़ रही थी।

जुगल किशोर और चंदा की निगाहें मिलीं।

"आग लग जाने के बहाने की वजह से पैसा आज पार्टियों को नहीं दिया जाएगा?" चंदा ने कहा।

"नहीं, सब काम ठीक ढंग से हो रहा है।" जुगल किशोर और चंदा वापस आ गए।

"इसका मतलब आज रात डकैती होगी?"

"पक्का।" जुगल किशोर की आवाज में दृढ़ता थी। फ्लैट बिल्कुल खाली था।

फर्नीचर के नाम पर एक कुर्सी भी वहां नहीं थी।

"हम आराम कहां करेंगें?" चंदा ने पूछा।

"फर्श पर।"

"यहां तो पंखा तक नहीं है। गर्मी बहुत है।" चंदा ने नीचे बैठते हुये कहा।"

"होटल में चली जाओ। वहां ए.सी. है।"

"और तुम करोड़ों रुपया लेकर चलते बनो।"

"मजदूरी करना हो तो फिर गर्मी-सरदी नहीं देखते। सिर्फ काम की तरफ ध्यान देते है।"

चंदा गहरी सांस लेकर रह गई।

बीस मिनट बाद आग बुझाने वाली गाड़ी (फायर बिग्रेड) की टन-टन सुनाई देने लगी थी।

"देवराज चौहान भी सारा काम फिट करके आगे बढ़ता है।" जुगल किशोर बड़बड़ा उठा।

□□

देवराज चौहान ने खोखे के सामने कार रोकी।

कुर्सी पर बैठा सूरमा देवराज चौहान की झलक पाते ही उछलकर खड़ा हुआ। पास पहुंचा।

"मैं सोच ही रहा था कि आज तुम्हें आना चाहिए।" सूरमा कह उठा-"सब ठीक ठाक तो है।"

"तुमने आज कहीं से एक कार उठानी है। उस कार की हमें आधी रात को जरूरत पड़ेगी।"

"गोलू चाचा की कार उठाने गया हुआ है। मैंने वो जगह भी देख ली है, जहां रात तक कार रखनी है।"

"काम होने के बाद मुझे फोन पर खबर कर देना कि इंतजाम हो गया है।"

"सूरमा ने सिर हिलाया, फिर बोला।

"कस्तूरी कैसी है?"

"तू कल आया था उससे मिलने।"

सूरमा सकपका कर चुप रहा।

देवराज चौहान जाने लगा तो सूरमा बोला।

"जा रहे हो?"

"हां, काम है।"

"चाय-वाय पी लेते। गर्मी बहुत है, कहो तो सामने से ठंडी बियर ले...!"

"काम की तरफ ध्यान दो।"

"आज काम हो जायेगा?" सूरमा ने धीमे स्वर में पूछा।

"ख्याल तो यही है।"

"तुमने मुझे एक करोड़ से ऊपर रुपया देना है। पीछे मत हटना, तुमने यही कहा था।"

"तो मैं पीछे कहां हट रहा हूं। रुपया तुम्हें मिलेगा।" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"मेरी बीबी को पचास लाख...!"

"याद है मुझे।"

"याद ही रखना, देना है तुमने।"

"जरूर दूंगा, अगर मैं काम में सफल रहा तो।"

"तो तुम सोच रहे हो कि असफल हो जाओगे?"

"इन कामों का कुछ पता नहीं चलता। मौके पर चूक हो जाती है।" देवराज चौहान ने कहा-"फिर भी आशा तो है कि काम हो जाएगा। असफल होने पर तुम्हारा तो थोड़ा नुकसान होगा, मेरा नुकसान ज्यादा है।"

"फायदा हुआ नहीं और तुम नुकसान की बातें पहले करने लगे।" सूरमा मुंह लटकाकर बोला।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा और कार आगे बढ़ा दी।

कुछ आगे जाकर सड़क किनारे पेड़ के पास कार रोकी और कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा। दोपहर के ढाई बज रहे थे। देवराज चौहान ने मोबाइल फोन निकाला और सोढ़ी के मोबाइल का नंबर मिलाने लगा। दो-तीन बार मिलाने पर नंबर मिला।

"हैलो।" सोढ़ी की आवाज कानों में पड़ी।

"ओह! तुम?"

"बैंक बंद हो गया?"

"हां!"

"सारा काम वैसे ही किया है, जैसा मैंने कहा था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां, सब वैसे ही किया है। बैंक का पीछे का दरवाजा देखने में तो बाहर से रोज की तरह बंद नजर आएगा, परंतु वो खुला हुआ है। जोर खींचोगे तो...नहीं, धक्का दोगे तो वो भीतर की तरफ खुल जाएगा।"

"पैसा किधर रखा है?"

"स्ट्रांग रूम में। वहां से निकालना तुम्हारा काम है। मेरे ख्याल में तो स्ट्रांग रूम का दरवाजा तुम्हें खोलने में परेशानी होगी। ठीक यही होगा कि उधर की दीवार में सेंध लगा लेना। एक ईंट की दीवार है। आसानी से उसमें सेंध लगा सकोगे।"

"मैं ध्यान रखूंगा।"

"मेरा बेटा?" सोढ़ी ने कहना चाहा।

"तुम्हारा बेटा कल हर हाल में तुम्हें मिलेगा।" देवराज चौहान ने कहा-"मेरा काम हो या न हो परंतु कल तुम्हें बेटा अवश्य मिल जाएगा लेकिन तुम्हारी वजह से मेरा काम नहीं बिगड़ना चाहिए।"

"मैं..मै तो पूरी तरह तुम्हारा साथ दे रहा हूं।"

"इसी तरह साथ दो और आज की रात ठीक से निकल जाने दो, फिर...।"

"रात जैसी भी निकले, म..मेरे बेटे को सलामत रखना उसे कोई तकलीफ मत देना। मैं...।"

"तुम कोई गड़बड़ नहीं करोगे तो कल बारह बजे तक तुम्हें तुम्हारा बेटा मिल जाएगा।"

"मु..मुझे कैसे पता चलेगा कि मेरा बेटा कहां..?"

"मैं तुम्हें फोन करूंगा। सुबह ग्यारह बजे तक मेरा फोन आ जाएगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में रखा और कार आगे बढ़ा दी।

□□

रात के नौ बज रहे थे।

आज फ्लैटों में तनाव से भरा अजीब-सा माहौल था।

देवराज चौहान और जगमोहन सावधानी से खिड़कियों से बाहर बैंक की तरफ नजर रख रहे थे। चांदीलाल और कस्तूरी के चेहरों पर स्पष्ट तौर तनाव नजर आ रहा था। आज तो कस्तूरी ने रात का खाना भी शाम सात बजे तक तैयार करके फुर्सत पा ली थी।

बीते कई दिनों की मेहनत का रंग आज रात नजर आना था।

कस्तूरी पीछे के कमरे में गई, जहां राजू उसके बेटे के साथ खेल रहा था।

"आंटी!" राजू उसे देखते ही कह उठा-"कल मैं मम्मी-पापा के पास चला जाऊंगा?"

"पक्का बेटे।" कस्तूरी मुस्कराकर बोली-"कल उन्हें यहां आने को कह दिया है।"

"कह दिया है। पापा यहां आएंगें?"

"हां!"

"कब?"

"ये तो पता नहीं, तेरे अंकल को पता होगा। पूछ कर बता दूंगी।"

राजू ने सिर हिलाया तो कस्तूरी वहां से वापस आ गई।

पहले वाले कमरे में आकर चांदीलाल के पास बैठी। देवराज चौहान और जगमोहन पर निगाह मारी, फिर चांदीलाल से धीमे स्वर में कह उठी।

"आज काम हो जाएगा चांदीलाल?"

"देख ले, लगे हुए हैं।" चांदीलाल ने देवराज चौहान की तरफ इशारा किया।

"तेरे को कितना देंगें ये?"

"पता तो है तेरे को।"

"अपने मुंह से फिर बता।"

"पचास लाख।"

"मुझे भी पचास लाख देंगें। मैं तो कल ही अपने पचास लाख लेकर चली जाऊंगी।"

"कल नहीं होगा।"

"क्यों?"

"पप्पू भाई साहब कहता है कि कुछ दिन उन्हें यहीं रहना है।"

"यहां! क्यों?"

"पप्पू भाई साहब समझदार हैं। उन्हें पता है कि कब क्या करना है। हमें उसकी बात माननी चाहिए।"

“तो क्या पांच-सात दिन हम पैसा भी अपने पास रखेंगें?”

“हां, इसी फ्लैट में तो रखा जाएगा पैसा।”

“अजीब बात है।”

“पप्पू भाई साहब जो कहते हैं चुपचाप वही कर।”

“वो ही तो कर रही हूं।”

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई।

देवराज चौहान और जगमोहन तुरंत अपनी जगह से हटे और पीछे वाले कमरे में चले गए।

कस्तूरी ने उठकर दरवाजा खोला तो मिसेज शर्मा को सामने खड़ा पाया।

“हाय कस्तूरी।” मिसेज शर्मा दांत फाड़कर बोली-”खाना खा लिया?”

“अभी नहीं। खाने की सोच रहे हैं।”

“ये तो अच्छा हुआ, बनाया क्या है?”

“आज दाल ही बनाई है।”

“कोई बात नहीं, कटोरी भर के दे दे। ये शर्मा जी शनिवार को बहुत तंग करते हैं। अगले दिन छुट्टी होती है तो हर शनिवार को बोतल खोलकर बैठ जाते हैं। मेरी तो सुनते ही नहीं। पीते हुए एक ही बात कहते रहते हैं कि हमारा बच्चा नहीं है। अब तू ही बता, हर शनिवार को बोतल लेकर बैठने से क्या बोतल बच्चा दे देगी?”

“नहीं!”

“वो ही तो मैं शर्मा जी को समझाती हूं। सुनते ही कहां है। राजमा बना रखे थे। दो-चार पैग में सारे खा लिए।

रोटी के साथ खाने को कुछ नहीं बचा तो तेरे पास आना पड़ा।"

"कोई बात नहीं, आओ मैं कटोरी भरकर दाल दे देती हूं।"

"कस्तूरी, मिसेज शर्मा को किचन में ले गई।

कटोरी में दाल डालते कस्तूरी धीमे स्वर में बोली।

"तू बच्चा पैदा करके अपने आदमी की गोद में क्यों नहीं रख देती?"

"कैसे रखूं? बच्चा पैदा करने का दम-खम नहीं है उसमें। डाक्टरों ने बताई ये बात।"

"बलबीर में तो दम है।"

"बलबीर?" मिसेज शर्मा सकपकाई।

"मुझे सब पता है, चंडीगढ़ वाली बात।"

"पता है-ओह! समझ गई...तू भी बलबीर के साथ चंडीगढ़ गई...।"

"मैं कहीं नहीं गई।"

"तो क्या घर पर ही...।"

"मैंने कुछ नहीं किया। मैं तो तेरे को मुसीबत में छुटकारा दिला रही हूं। क्या हुआ था चंडीगढ़ में?"

"यूं हीं।" मिसेज शर्मा मुस्कराई-"चंडीगढ़ गई थी बलबीर के साथ वैन में बैठकर। सूट खरीदना था। वहां अपने किसी दर्जी की दुकान पर ले गया। दुकान के पीछे खाली कमरा था। बस, वहां सब कुछ हो गया।"

"हो गया तो बच्चा ठहर गया होगा।"

"क्या पता?"

"तू बलबीर के साथ चंडीगढ़ से दस-बीस सूट और ले आ। बच्चा हो जाएगा।"

"लेकिन शर्मा जी तो जानते हैं कि वो बच्चा पैदा करने का दम नहीं रखते।"

"इन आदमियों को बेवकूफ बनाना बहुत आसान होता है। कह देना कि तो क्या बलबीर का बच्चा है। सही हो जाएंगें। उस डॉक्टर के कान पहले ही भर देना और शर्मा जी को डाक्टर के पास ले जाना। तब डॉक्टर कह देगा कि कभी-कभी तीर निशाने पर बैठ जाता है और बच्चा हो जाता है।"

"ये बात तूने अच्छी कही। मैं कल फिर बलवीर के साथ चंडीगढ़ सूट खरीदने जाती हूं।"

"एक क्या दो-दो सूट खरीद। दर्जी की दुकान के पीछे वाले कमरे में तसल्ली से सूट की लंबाई-मोटाई देख, जल्दी क्या है। शर्मा जी को बच्चा चाहिए तो निकालकर दे दे उनके हाथ में।"

"ठीक कहा तूने कस्तूरी। अब मैं बच्चा करके ही रहूंगी।" मिसेज शर्मा ने सिर हिलाकर कहा और दाल की कटोरी थाम ली।

"जरूरी नहीं हर बार चंडीगढ़ ही जाए। जब शर्मा जी बैंक ड्यूटी पर होते हैं, तो बलबीर को बुला लिया कर कि आलू लाने हैं और आलू लाने में देर ही कितनी लगती है। जल्दी हो तो दस पंद्रह मिनट।"

"ये बात तो तूने ठीक कही। मैंने तो इस बारे में पहले कभी सोचा नहीं था।"

कस्तूरी मुस्कराई।

"सुन! मैं कल काम से फुरसत पाकर तेरे पास आऊंगी।

"क्यों?"

"तू ज्यादा पढ़ी लिखी लगती है। अब मुझे तेरे से कई तरह की सलाहें लेनी पड़ेंगी।"

"आना तू, मैं तेरे को भी सारी पढ़ाई करा लूंगी।"

मिसेज शर्मा दाल की कटोरी थामे चली गई।

"क्या कह रही थी?" चांदीलाल ने पूछा।

"ये औरतों की बातें हैं।"

"मुझे भी बता दे। मैं भी सुन लूंगा।"

"इसे बच्चा नहीं हो रहा। आदमी में खराबी है। ऐसे में इसे बता रही थी कि बच्चा कैसे होगा?"

"मेरे घर का पता दे दिया न?" चांदीलाल बोला।

"शर्म कर। अपनी उम्र का तो ख्याल कर।" कस्तूरी ने मुंह बनाकर कहा।

"उम्र का बच्चा पैदा करने से क्या ताल्लुक। बच्चा बूढ़ा पैदा नहीं होगा। वो तो बच्चा ही पैदा होगा।"

"सूरमा को बताऊंगी कि तू हरामी है।"

"वो जानता है।" चांदीलाल मुस्कराया-"लेकिन मैंने तेरे को तो कुछ नहीं कहा।"

"क्या पता कह दे।"

"नहीं कहूंगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि तू भी जीरकपुर की और मैं भी जीरकपुर का, फिर ऊपर से तू सूरमा की पत्नी।"

"बात तो ऐसे कर रहा है, जैसे दुनियां भर की औरतों का नाप ले रखा हो। साला, बूढ़ा कहीं का।" कस्तूरी ने तीखे स्वर में कहा और दूसरे कमरे की तरफ बढ़ गई।

चांदीलाल शान से बैठा मूंछ को उमेठने लगा।

वे खाना खाकर हटे ही थे कि फोन की बेल बजी।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"पप्पू भाई साहब, मैं सूरमा।"

"कह।"

"कार का इंतजाम हो गया है। शाम को ही हो गया था।"

"कार किधर है?"

"मैंने संभाल के एक खास जगह छिपा रखी है-लाऊं क्या?"

"इधर मत ले आना और ना ही कार को इधर-उधर घुमाते रहना, वरना फंस जाओगे।"

"वो कार इस लायक नहीं है कि उस पर घूमा जाए। थोड़ी बहुत चल जाती है, ये ही बहुत है। चाचा की कार है, हार्डवेयर वाला चाचा। उसने भी कबाड़ से खरीदी।"

"मैंने हिस्ट्री नहीं पूछी कार की।"

"ह..हां!" सूरमा की आवाज में पलभर के लिये हड़बड़ाहट उभरी-"अब मैं कार का क्या करूं?"

"तेरे पास फोन है?"

"मेरी औकात ही कहां फोन रखने की। साला पंचर लगवाने ही लोग नहीं आते।"

"तू रात को मुझे तीन साढ़े बजे मुझे फोन करना।"

"रात को?"

"कोई दिक्कत?"

"नहीं, इधर कई एस.टी.डी. खुली रहती हैं। चिंता नहीं, हो जायेगा फोन।"

"कितने बजे?"

"तीन-साढ़े बजे।"

"नींद में मत डूब जाना।"

"क्या बात करते हो पप्पू भाई साहब। रातों की नींद वैसे ही उड़ी हुई है। आज तो पूरी तरह गुल है।" सूरमा के लंबी सांस लेने की आवाज आई-"कस्तूरी कैसी है, बलबीर तो नहीं आया कस्तूरी के पास। वो..।"

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

जगमोहन उसे ही देख रहा था।

"मैं कुछ सोच रहा हूं।" जगमोहन बोला।

"क्या?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"सोलह-सत्रह करोड़ के नोटों को बैंक के पीछे वाले दरवाजे से लाकर कार में भरना आसान नहीं।"

"मैं इस बात को पहले ही सोच चुका हूं।"

"तो?" जगमोहन ने प्रश्न भरी नजरों से देवराज चौहान को देखा।

"हम वक्त आने पर खामोशी से कार को धकेलकर वहां से ले जायेंगें और करोंड़ों के नोट डिग्गी में कार के पीछे वाली सीट में ठूंस-ठूंस के भर देंगे और कार वापस लाकर खड़ी कर देंगें।" देवराज चौहान ने कहा-"परंतु कार को

वहां ले जाते लाते कोई देखे नहीं, इसके लिये दो जगह रौशनी के बल्बों को फ्यूज करना होगा।"

"वो मैं कर दूंगा।" जगमोहन ने कहा।

"काम हो जाने के बाद कार के टायरों के निशान, बैंक की तरफ जाते दिखेंगें। उन निशानों को हर हाल में में मिटाना होगा-वरना फंस सकते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"सुबह छः बजे कॉलोनी में झाड़ू देने वाले आ जाते हैं। कल रविवार है। बैंक नहीं खुलेगा।" जगमोहन ने कहा-"मेरे ख्याल में हमें इस बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं।"

"देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और सिर हिलाकर बोला।

"सुबह हमें कॉलोनी में सफाई करने वाले पर नजर रखनी होगी कि वो झाड़ू देते हैं या नहीं। नहीं देते तो उनसे कहकर झाड़ू लगवाया जाए, ताकि कच्ची मिट्टी पर बने टायरों के निशान मिट सकें।"

□□

रात के दो बज गए थे।

चारों तरफ रात का सन्नाटा और वीरानी फैली हुई थी। सामने हाइवे पर जब वाहन तेजी से गुजरते तो शोर पैदा होता था-परंतु लगातार होने वाला वो शोर जैसे रात का ही हिस्सा लग रहा था। आज हवा ज्यादा न चल रही थी। मौसम उखड़ा-उखड़ा सा था।

काम शुरु करने का वक्त आ चुका था।

देवराज चौहान और जगमोहन बाहर निकलने की तैयारी में थे। कमरे में जीरो वॉट का बल्ब ऑन था। चांदीलाल एक तरफ बैठा था। कस्तूरी बेचैनी से टहल रही थी।

जब वे निकलने लगे तो कस्तूरी धीमे स्वर में कह उठी।

"पप्पू भाई साहब, हिम्मत से काम लीजियेगा। हमारी आशायें आप पर ही टिकीं हैं, क्यों चांदीलाल?"

"ह..हां!" चांदीलाल ने गरदन हिलाकर कहा-"मैं भी साथ चलूं क्या?"

"नहीं।" देवराज चौहान ने उसे देखा-"तुम यहीं रहकर बाहर निगाह रखो।"

"ठीक है।"

जगमोहन ने पास ही रखा तरह-तरह के औजारों से रखा बैग उठा लिया।

"भगवान तुम दोनों को सफल करे।" चांदीलाल गहरी सांस लेकर कह उठा।

दोनों बाहर निकले।

कस्तूरी ने दरवाजा बंद किया और जीरो वॉट बुझाकर खिड़की पर आ गई। वहां से बाहर का अंधेरे में डूबा बैंक तक का हिस्सा नजर आ रहा था।

चांदीलाल भी पास आ गया।

"अब क्या होगा?" कस्तूरी वास्तव में घबराहट में थी।

"यहां से भागने के लिये तैयार रह।"

"भागने के लिए?"

"अगर पप्पू भाई साहब और जगमोहन पकड़े गये तो हमारा क्या होगा?" चांदीलाल बोला।

"हम भी फंसेंगें।"

"वो ही तो कह रहा हूं कि भागने के लिए तैयार रह। वो दोनों फंस भी सकते हैं।"

"कैसी बुरी बात करता है तू।"

"सच बात कह रहा हूं।"

"चुप रह और बैंक के पीछे वाले उस दरवाजे पर नजर रख, जहां से पप्पू भाई साहब ने आना जाना है।"

"चांदीलाल कुछ नहीं बोला।

"तेरा दिल धड़क रहा है चांदीलाल?"

"जोरों से...डर तो लगेगा ही। इस वक्त पचास लाख मिलने की बात नहीं है। मन में ये है कि कहीं फंस न जाएं।"

"तू तो डराने वाली बातें करता है।"

"तेरे को पता है, हम यहां रहकर बैंक डकैती कर रहे हैं। सोचा है तूने-क्या कभी तूने सोचा था कि बैंक डकैती करेगी?"

कस्तूरी गहरी सांस लेकर रह गई।

दोनों की नजरें बाहर के अंधेरे से भरे हिस्से पर टिकीं रहीं। बीच में रौशनी दे रहे दोनों बल्बों को जगमोहन खराब कर चुका था।

□□

देवराज चौहान और जगमोहन बैंक के पीछे वाले दरवाजे के पास पहुंचकर ठिठके और पलटकर हर तरफ नजरें घुमाईं। कई पलों तक वो अंधेरे में देखते रहे।

कोई न दिखा।

जहां वो खड़े थे, वहां घुप्प अंधेरा था।

एकाएक देवराज चौहान पलटा और बैंक की दीवार में लगे बंद दरवाजे को हौले से धक्का दिया। दरवाजा टस से मस न हुआ। देवराज चौहान ने पुनः धक्का दिया।

दरवाज़ा वहीं का वहीं।

"जोर से धक्का लगाकर देखो।" जगमोहन ने भुनभुनाकर कहा।

वो ही तो देवराज चौहान करने जा रहा था।

उसने दरवाजे को जोर से धक्का दिया। दरवाजा जरा सा हिला। देवराज चौहान समझ गया कि दरवाजे के पीछे कुछ रखा हुआ है, ताकि अनजाने में किसी का हाथ लगने से दरवाजा न खुल जाए।

देवराज चौहान को दरवाजा सावधानी से धकेलना पड़ रहा था कि लोहे का दरवाजा कहीं रात के सन्नाटे में आवाज पैदा न कर दे।

जगमोहन कंधे पर बैग लटकाए अंधेरे में इधर-उधर नजरें दौड़ाते ये मालूम करने की चेष्टा कर रहा था कि उनकी हरकतों को कोई देख तो नहीं रहा?

कुछ मिनटों की कोशिश के पश्चात देवराज चौहान दरवाजे का पल्ला इतना सरका लिया कि उसमें से सरककर भीतर जाया जा सके।

पहले देवराज चौहान भीतर गया।

बाहर खड़े जगमोहन ने दरवाजे में से बैग थमाया देवराज चौहान को, फिर सावधानी से खुद सरककर भीतर चला गया। भीतर घुप्प अंधेरा था।

दोनों एक ही जगह खड़े रहे। आगे बढ़ने की चेष्टा न की।

देवराज चौहान ने दरवाजा धकेलकर बंद किया। तब तक जगमोहन ने बैग में से दो टार्च निकाल ली थीं। एक टॉर्च देवराज चौहान ने थाम ली।

टॉर्च रोशन करके उन्होने देखा कि दरवाजे के इस तरफ लकड़ी का एक टेबल रखा हुआ है, जिसकी वजह से दरवाजे को जोर लगाना पड़ा था।

"स्ट्रांगरूम किधर है?" जगमोहन ने पूछा।

"इधर।"

दोनों टॉर्च की रौशनी में सावधानी से आगे बढ़े और सोढ़ी के केबिन को पार करके आगे के रास्ते से बाएं को मुड़े कि सामने ही स्ट्रांगरूम का मोटा सा दरवाजा दिखा। दरवाजे पर लॉक सिस्टम से वास्ता रखती बड़ी सी चक्री लगी थी। दरवाजे पर ही दाएं-बाएं, दो की-होल नजर आ रहे थे।

"मजबूत दरवाजा है।" जगमोहन बोला-"सोहनलाल होता तो इसे फौरन खोल देता।

"सोहनलाल को मुम्बई से यहां नहीं बुलाया जा सकता। अब सारा काम हमने ही करना है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने टॉर्च की रौशनी दरवाजे के पास की दीवार पर मारी-"सोढ़ी ने बताया था कि ये एक ईंट की दीवार है। इसे बहुत आसानी से तोड़कर हम स्ट्रांगरूम के भीतर जा सकते हैं।"

जगमोहन ने उसी पल कंधे पर लटका रखा भारी बैग नीचे रखा। देवराज चौहान ने टॉच की रौशनी बैग पर स्थिर कर दी। जगमोहन ने बैग की जिप खोली और भीतर मौजूद कई तरह के औजारों में से सम्बल निकाला-जो कि ठोस लोहे का, 3 इंच व्यास में चार फीट लंबा था और आगे से नुकीला था। दीवार जैसी चीजों को संबल से आसानी से तोड़ा जा सकता था।

"एक ईंट की दीवार इस संबल से दो-तीन मिनट में टूट जाएगी।" जगमोहन ने कहा।

"काम शुरू करो।" देवराज चौहान ने हाथ में दबी टॉर्च की रौशनी दीवार पर स्थिर कर दी।

जगमोहन ने चार फीट के सम्बल को दोनों हाथों से पकड़ा और नोक वाला हिस्सा जोरों के साथ दीवार पर मारा।

एक के बाद एक वार होने लगे दीवार पर।

जगमोहन का शरीर पसीने से भरने लगा।

मिनट भर में ही एक ईंट दीवार की टूट गई। चूर-चूर हो गई। उसके बाद तो बाकी ईंटों को निकालना कठिन न रहा। सम्बल के वार होते रहे। ईंटे गिरतीं रही। रास्ता बनता गया भीतर जाने का।

□□

तीसरी मंजिल के फ्लैट की बॉलकनी में जुगल किशोर और चंदा बैठे थे। यूं गर्मी में बैठना उन्हें मुसीबत लग रहा था परंतु ये सब जरूरी भी था।

अंधेरे से भरी बॉलकनी से उन्हें सब कुछ नजर आ रहा था।

दस बजे ही दोनों बॉलकनी में आ बैठे थे।

लंबे इंतजार के बाद दो बजे उन्होने देवराज चौहान और जगमोहन को फ्लैट से निकालकर अंधेरे में बैंक की तरफ जाते देखा। जुगल किशोर समझ गया कि डकैती होने जा रही है।

"ये दोनों बैंक में डकैती करने जा रहे हैं।" चंदा बोली।

"हां!"

"कर लेंगें?"

"वो देवराज चौहान है। हिंदुस्तान का नंबर वन डकैती मास्टर।"

"ये पैसा कैसे निकालेंगें बैंक से?"

"यही तो देखना है।"

"और वो पैसा नीचे के अपने फ्लैट में रखेंगें।" चंदा सोच भरे स्वर में बोली।

"हां!"

"तो हम कैसे इनके फ्लैट से पैसा निकाल पाएंगें। ये लोग तो हर समय पैसे के पास मौजूद रहेंगें।"

"सोचेंगें इस बारे में।" जुगल किशोर बोला-"पहले आज की रात तो निकल जाने दे।"

"मुझे तो मामला कठिन लगता है कि इनके हाथ से पैसा तुम ले पाओगे।"

"लेकर तो रहूंगा।"

"मुझे तो ऐसा नहीं लगता।"

“ज्यादा हवा मत दे। चुपचाप बैठ और नीचे देख। तेरा काम सिर्फ मजदूरी करना है।”

“मुझे अपने पचास लाख की चिंता है कि वे मिलेंगें कि नहीं।”

“उसके लिए जरूरी है कि पहले देवराज चौहान सफल हो।”

कुछ देर बाद चंदा बोली।

“वे दोनों तो उस दरवाजे से बैंक के भीतर चले गए। दरवाजा बंद हो गया।”

“जल्दी ही वो नोटों के साथ बाहर निकलेंगें।”

“कितना पैसा ये बैंक से ले भागेंगें?”

“पंद्रह-सत्रह करोड़।”

“नकद?”

“तो क्या बैंक से चेक या एफ.डी. उठायेंगे।” जुगल किशोर ने मुंह बनाकर कहा।

“पंद्रह-सत्रह करोड़ का कैश बहुत ज्यादा होता है, बेशक वो हजार की गड्डियां ही क्यों न हो।”

“ठीक बोली तू।”

“नोटों का इतना ढेर इन्हें फ्लैट तक लाते-लाते सुबह हो जाएगी। कोई देख भी सकता है। ये फंस भी सकते हैं।”

“ये फंस गए तो हमें भी कुछ नहीं मिलने वाला। दुआ कर देवराज चौहान सफल हो।”

“मेरे दुआ करने से देवराज चौहान सफल हो जाएगा?”

“शायद हो जाए।”

चंदा ने गहरी सांस ली और बैंक की तरफ देखने लगी।

दोनों को इंतजार था देवराज चौहान और जगमोहन का कि कब नोटों के साथ वे बाहर निकलते हैं।

□□

"ये क्या कर रहे हो?" जुगल किशोर के होंठों से निकला।

सुस्त पड़ी चंदा फौरन संभलकर बैठ गई।

"क्या हुआ?"

"रात के पौने तीन का वक्त हो रहा था।

एकाएक जुगल किशोर ने बैंक के पीछे वाला दरवाजा खुलते देखा, और देवराज चौहान, जगमोहन को बाहर निकलकर फ्लैट की तरफ बढ़ते देखा। फिर फ्लैट के बाहर खड़ी कार का कवर उतारने के पश्चात जगमोहन को स्टेयरिंग पर बैठते देखा और उसके बाद कार को धक्का लगाकर उसे बैंक की तरफ ले जाते देखा।

"तब तक चंदा भी मामला समझ चुकी थी।

"ये क्या कर रहे हैं?" चंदा धीमे से मुस्कराई।

एकाएक जुगल किशोर चिंहुका।

"ओफ्फ!"

"क्या हुआ?" चंदा ने उसे देखा।

"नोट रखने का क्या बढ़िया इंतजाम सोच रखा है।"

"क्या?"

"मेरे ख्याल में नोटों को फ्लैट के बाहर खड़ी कार में रखेंगें। उस पर कवर चढ़ा देंगें। यानी कि खुद फ्लैट के भीतर और करोड़ों रुपया बाहर खड़ी कार में पड़ा रहेगा। कार कवर से ढकी रहेगी। ऐसे में कोई सोच भी नहीं

सकेगा, बैंक से गायब करोड़ों रुपया सामने खड़ी कार में ढका पड़ा है।"

"सच में ऐसा होगा!"

"लग तो ऐसा ही रहा है।" जुगल किशोर के चेहरे पर पर अजीब-सी मुस्कान थिरकने लगी थी।

कठिनता से पांच मिनट लगे होंगें। कार बैंक के पीछे वाले दरवाजे के पास पहुंच गई।

"अब ये कार में नोट भरेंगें।" जुगल किशोर किशोर बड़बड़ा पड़ा-"देवराज चौहान की हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी।"

तभी वे दोनों चौंके।

बैंक कॉलोनी के गेट पर किसी गाड़ी की हैडलाइट चमकी और हॉर्न बजा।

"ये कौन आ मरा...।" जुगल किशोर के होंठ भिंच गए।

"कोई मुसीबत न खड़ी हो जाए।" चंदा चिंता भरे स्वर में बड़बड़ा उठी।

□□

देवराज चौहान और जगमोहन ने कार को बैंक के दरवाजे के पास रोका ही था कि कुछ दूर की सारी जगह एकाएक रौशन सी हुई, फिर हॉर्न बजा।

दोनों चौंके।

"कोई आया है।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"इस वक्त कौन आया हो सकता है।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

"कॉलोनी में किसी के घर पर कोई आया होगा।"

"दरवाजे से भीतर चलो।" देवराज चौहान की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

दोनों ने दरवाजा खोला और भीतर सरक गए। दरवाजा बंद किया परंतु थोड़ा-सा खुला रहने दिया और बाहर झांकने लगे। एक-एक पल उन्हें भारी लग रहा था।

"अब कुछ गड़बड़ हो गई तो मुझे बहुत तकलीफ होगी।" जगमोहन ने होंठ भींचकर कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि हम पैसा ले जाने के करीब हैं। ऐसे मौके पर कोई असफल नहीं होना चाहेगा।"

"देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा और दरवाजे की झिर्री में से बाहर देखता रहा।

□□

आने वाला बलबीर था। बैंक की वैन के साथ कहीं से रात गए लौट रहा था। नशे में टुन्न था। वैन की तेज रौशनी में गेट के पास स्टूल पर बैठे वॉचमैन की आंख खुली। वो हड़बड़ाकर उठा।

बलबीर खिड़की से सिर निकालकर ऊंचे स्वर में बोला।

"ओए, सोया हुआ था।"

"बैठा हुआ था।" चौकीदार गेट खोलता बोला-"अभी तो राउण्ड लगाकर बैठा हूं।"

"मैं सब समझता हूं कि तुम लोग रात को नींद में डूब जाते हो। सालों पूरी रात एक डंडा भी नहीं चलता। तुम लोगों को सुबह देखूंगा। कॉलोनी वालों की मीटिंग बुलाऊंगा।"

"हां, उन्हें बताना कि तुम बैंक वैन के साथ आवारीगर्दी करके रात को तीन बजे लौटे...।"

"शादी से आ रहा हूं।"

"झूठ मत बोल।" चौकीदार पूरा गेट खोलकर पास आया-"शादी का कार्ड तो होगा तेरे पास, वो दिखा।"

"कार्ड?"

"जिस पर लड़के-लड़की के नाम और ब्याह की तारीख लिखी होती है।"

"व...वो कार्ड नहीं छपवाया था लड़की वालों ने। गरीब हैं, फोन करे ही बुलवा लिया था।"

"मुझे बेवकूफ मत बना। मैं सब जानता हूं तेरी हरकतें।"

"क्या जानता है?"

"रहने दे, मुंह मत खुलवा। जाकर नींद ले। अभी तू नशे में है। सुबह आकर बात करना। साले तब तो तू चूहा बना होगा। बैंक का चपरासी और अपने को साब समझता है।"

"पंद्रह हजार तनख्वाह है मेरी।"

"तो क्या मुझे देता है, जो तेरा रौब मानूं।"

बलबीर ने बड़बड़ाते हुए गाड़ी आगे बढ़ा दी। बलबीर तगड़े नशे में था। आंखें चढ़ी हुई थी। आवाज भी रह-रहकर जाती और वैन तो तूफानी रफ्तार से चला रहा था।

वो सीधा अपने फ्लैट की तरफ वैन को ले जा रहा था।

"सालों ने अंधेरा कर रखा है।" बलबीर नशे में बड़बड़ा उठा।

आगे का छोटा-सा मोड़ ज्यों ही मुड़ा, उसकी वैन की हैडलाइट में बैंक के पीछे वाले दरवाजे के पास खड़ी कार चमक उठी। बलबीर ने आंखें मिचमिचाकर कार को देखा।

अगले ही पल उसने ब्रेक का पूरा पैडल दबा दिया।

वैन को तीव्र झटका लगा। उसका स्वयं का सिर शीशे से टकराता बचा।

"पुरानी हो गई है वैन। सरकारी माल ऐसा ही होता है।" फिर उसने आंखें मिचमिचाकर पुनः बैंक के पीछे वाले गेट के पास खड़ी कार को देखा।

"उसके बाद दरवाजा खोलकर नीचे उतरा।

"कार पहचानी हुई लगती है। तभी किसी ने वहां खड़ी कर दी है। यहां तो सिर्फ बैंको की वैन ही खड़ी हो सकती है। बैंक की दीवार के पास पार्किंग मना है, फिर किसने खड़ी कर दी कार।" नशे में टुन्न बड़बड़ाते हुये बलबीर ने दरवाजा खोला और बाहर निकल आया। फिर वैन का इंजन बंद किया। रास्ते में ही खड़ी कर दी थी वैन। हैडलाइट अभी तक जल रही थी।

फिर बलवीर लड़खड़ाते हुये उस कार तरफ बढ़ा।

हालात खतरनाक होते जा रहे थे। राते के अंधेरे में वैन की तेज हैडलाइट कार पर पड़ रही थी। जिसे इधर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, उसे भी जानकारी हो सकती थी।

बलबीर कार की तरफ बढ़ते कह रहा था।

"ये कार है किसकी?"

□□

"ये बलबीर नई मुसीबत खड़ी करेगा।" चांदीलाल बेचैन सा कह उठा।

"कमीना हमेशा गलत वक्त पर आता है।" कस्तूरी ने दांत भींचकर कहा।

दोनों अंधेरे भरे कमरे में बैठे, खिड़की से बाहर देख रहे थे।

"ये क्या कर रहा है?" कस्तूरी बोली।

तब बलबीर वैन से निकलकर बैंक के पास खड़ी कार की तरफ बढ़ने लगा था।

"नशे में लग रहा है। तगड़ी पी रखी है।"

"ये अब इधर क्यों जा रहा है?" कस्तूरी तेज स्वर में बोली।

"कार खड़ी देखकर उधर जा रहा है।" चांदीलाल तेज स्वर में बोला।

"काम खराब कर देगा ये।"

"वो तो करेगा ही।" चांदीलाल दांत पीस उठा-"इसे तुरंत वहां से हटा देना चाहिये।"

"लेकिन कैसे? हरामी कैसे मौके पर आ मरा है। दिल तो करता है, पास पहुंचकर जूती से मारना शुरु कर...।"

"सुन।" चांदीलाल बाहर बलबीर को देखता कह उठा-"तू बलबीर को संभाल सकती है।"

"कैसे?"

"उसे राजा बना दे।"

कस्तूरी ने चांदीलाल को देखा।

"उसे वहां से उसके फ्लैट पर ले जा और एक डेढ़ घंटा उसे राजा बना के रख। तब तक इधर सब ठीक हो जायेगा। इसी एक डेढ़ घंटे की बात है, हम मोटी रकम के मालिक बन जायेंगें।"

कस्तूरी का चेहरा अंधेरे में ठीक से दिखाई न दे रहा था।

"सोचती क्या है। वो तो वैसे भी तेरे पर फिदा है, तू आसानी से उसे संभाल लेगी।"

"ये काम मेरे काम में शामिल नहीं था।"

"तो।"

"पंद्रह लाख इस काम के लूंगी।"

"पंद्रह-ये तो बहुत ज्यादा हैं। बहुत।"

"तो फिर तू चला जा बलबीर के पास।"

"मेरा क्या करेगा बलबीर, डर कर भाग जायेगा।"

"पंद्रह लाख लगेंगें, बोल देगा?"

"दिलवा दूंगा पप्पू भाई साहब से।"

"उसने न दिये तो?"

"वो दे देगा। नहीं दिये तो मैं अपने पल्ले से दूंगा-लेकिन तू अब जल्दी से जा।"

कस्तूरी दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई।

□□

अंधेरे में आगे बढ़ते हुये कस्तूरी वैन के पास पहुंची और हैडलाइट बंद की।

लाइट बंद होते ही उधर कार के पास पहुंच चुका बलबीर बड़बड़ा उठा।

"लो, वैन की बत्ती गुल। ये सरकारी माल ऐसा ही होता है। स्टार्ट होने में भी नखरे दिखाती है। कल बैटरी नई डलवा दूंगा, बैंक के खर्चे पर।" फिर वो कार के बोनट पर हाथ मारकर बोला-"ये कार है किसकी। बैंक की दीवार के साथ गाड़ी खड़ी करना मना है। मैनेजर साहब ने कई बार कहा है कि बलबीर ध्यान रखना। बैंक की दीवार के साथ कोई गाड़ी पार्क न हो। फिर ये गाड़ी क्यों खड़ी...!"

तभी बलवीर की सांसों से परफ्यूम की खुशबू टकराई।

"आहा! ये परफ्यूम की खुशबू...ये तो भाभी की खुशबू लगती...।"

उसी पल उसके कंधे पर कस्तूरी ने हाथ रखा।

बलवीर हड़बड़ाकर पलटा।

अंधेरे में समझ नहीं सका कि कौन खड़ा है।

"क...कौन?"

"मैं, तेरी भाभी।"

"भ..भाभी।"

"भ..भाभी!" बलबीर हड़बड़ाया-"तुम यहां?"

"कहां चला गया था आज तू?"

"यूं ही, व..वो...!"

"मैं तो कब से तेरा इंतजार कर रही थी।" कस्तूरी थोड़ा और उसके करीब आ गई।

"इंतजार! मेरा! भाभी सच कह रही हो?"

"हां बलबीर, आज तो घर में पिता जी के अलावा कोई नहीं है।"

"सच! किधर गए?"

"नवां शहर। अचानक ही प्रोग्राम बन गया। सुबह तक वापस भी आ जाएंगे।" कस्तूरी और भी बलबीर के साथ चिपक गई। छातियों का बोझ उस पर पड़ा तो वो मगन हो उठा।

"तुम कितनी अच्छी हो भाभी।" बलबीर का हाथ कस्तूरी की कमर पर पहुंचा।

"कोई देख लेगा।"

"त...तो?"

"तेरे फ्लैट में चलते हैं।"

"फ्लैट में, ह..हां चलो भाभी। मैं...!"

"दिन निकलने से पहले मुझे लौटना भी है अपने फ्लैट पर।"

"लौट जाना भाभी। आओ तो...!"

कस्तूरी और बलबीर चिपके-चिपके आगे बढ़ने लगे।

"कहां गया था तू?"

"चंडीगढ़। मेरा दर्जी दोस्त है, उसके पास।"

"जिसकी दुकान के पीछे कमरा खाली है।जहां तू मिसेज शर्मा को ले गया था।"

"हां, वही-उसी कमरे में आज भी...!"

"क्या आज भी?"

"रहने दो।" बलबीर शर्माया।

"बता न।"

"नहीं-कल बताऊंगा।"

"कल, ठीक है-कल बताना जरूर।"

"मुझे पता होता कि तुम मेरे इंतजार में हो तो आज जाता ही नहीं। खामखाह पैसे खराब हो गए।"

"कितने दिए चंडीगढ़ वाली को?"

"पांच सौ।"

"मुझे कितने देगा?"

"तुम्हें!" बलबीर मस्ती में हंसा-"तुम्हें क्या देना है भाभी, मेरा तो सब कुछ ही तुम्हारा है।"

"क्या भाभी-भाभी लगा रखी है।" कस्तूरी कह उठी।

"क्या हुआ?" बलबीर हड़बड़ाकर रुका-"कुछ गलत कह गया क्या?"

"कस्तूरी बोल न। ऐसे मौके पर भाभी कहना अच्छा लगता है क्या?"

"ओह! कस्तूरी मेरी...।"

"रुक क्यों गया, अपने फ्लैट में चल। यहां...!"

"एक मिनट।" बलबीर पलटा और उधर देखने लगा, जिधर कार खड़ी थी।

"अब क्या हो गया तुझे?"

"वो कार...कार बैंक की दीवार के पास क्यों खड़ी...।"

"मिसेज शर्मा ठीक कहती है।"

"क्या-क्या कहती थी?"

"यही कि बलबीर कुछ ढीला है।"

"ढीला?"

"हां, मैं देख भी रही हूं कि मेरे पास होने पर भी तेरा ध्यान कहीं और है। रहने दे, मैं चलती...।"

"क्या करती हो भाभी?" बलबीर ने फौरन कस्तूरी की कलाई पकड़ी-"तुम...।"

"फिर भाभी।"

"ओह मेरी कस्तूरी। जल्दी चल, बहुत आग लग रही है मुझे।"

"आग तो औरतों को लगती है, ये मरदों को कब से लगने लगी?"

"अब से। अभी से। जल्दी चल।"

दोनों आगे बढ़ गये।

"मिसेज शर्मा झूठ बोलती है कि मैं ढीला हूं।" एकाएक बलबीर उखड़ा-"वो साली खुद ढीली है।"

"ढीली है।" कस्तूरी के होंठों पर दबी-सी मुस्कान उभरी।

"और क्या? दौड़ते-दौड़ते थक जाती है। कहती है रुक जा बलबीर, दम लेने दे।"

"ऐसा कहती है।"

"और क्या, ऊपर से मुझे ढीला कहती है।"

"देखना, मैं तेरे को बहुत दौड़ाऊंगी।"

"दौड़ाना, थकूंगा नहीं। बलबीर छाती पर हाथ मारकर बोला।

□□

भोर का उजाला फैलने वाला था।

चिड़ियों की चहचहाट गूंजने लगी थी। हवा में भी बदलाव आ गया था। रात की गरम हवा की अपेक्षा अब

ठंडी हवा चलने लगी थी। तारे अब कुछ ज्यादा ही तीव्रता से चमकते लगे थे।

फ्लैट के पास दो कारें खड़ीं थीं।

एक तो देवराज चौहान वाली कार। दूसरी कवर चढ़ी चोरी की कार, जिसमें सोलह सत्रह करोड़ रुपया भरा हुआ था।

काम खत्म हो गया था।

मात्र बीस मिनट पहले ही सारा काम निबटा था।

बैंक का दरवाजा बंद था। सब कुछ सामान्य था। पहले जैसा था। कोई सोच भी नहीं सकता था कि बैंक में से करोड़ों रुपया गायब हो चुका है। आज रविवार था। बैंक बंद रहना था। कल ही बैंक खुलने पर हो-हल्ला होना था। जगमोहन फ्लैट के भीतर जा चुका था, जबकि देवराज चौहान बैंक से लूटे कुछ रुपयों के साथ बैंक कॉलोनी को एक तरफ की दीवार फांदकर तेजी से आगे बढ़ता चला गया था।

पंद्रह मिनट बाद देवराज चौहान सड़क के किनारे खड़ी कार के पास पहुंचा।

ड्राइविंग सीट पर गोलू और बगल में सूरमा बैठा था।

"बहुत देर लगा दी आने में?" सूरमा गहरी सांस लेकर उसे देखते ही बोला।

"काम निपटाने में लगा था।"

"निपट गया?"

"हां!"

"यानी कि बैंक में डकैती डाल ली!" गोलू मुंह फाड़कर कह उठा।

"हां!"

"नोट कहां हैं?"

"संभाल कर रख लिये हैं।" देवराज चौहान नोटों की गड्डियों को जेब से निकालकर कार की पिछली सीट पर फेकते हुए बोला।

"ये क्या कर रहे हो?"

"साठ सत्तर हजार रुपया है ये। इसे इसी तरह कार की पीछे वाली सीट पर पड़े रहने देना।" फिर देवराज चौहान ने जेब से रिवाल्वर निकाली और उस पर से उंगलियों के

निशान साफ करके उसे भी सीट पर गड्डियों के बीच फेंक दिया।

सूरमा और गोलू ये सब देख रहे थे।

"तुम कर क्या रहे हो?" सूरमा ने पूछा।

"इस कार को चंडीगढ़ की सीमा के भीतर कहीं भी छोड़ दो।" देवराज चौहान बोला-"पुलिस को कार में से रिवॉल्वर और नोट इसी तरह मिलने चाहिए। नोट अपनी जेब में मत डाल लेना।"

"तुम जो कह रहे हो, वैसा ही करेंगें। लेकिन ऐसा करने से होगा क्या?" गोलू बोला।

"पुलिस को नोटों की गड्डियां और रिवॉल्वर के साथ कार चंडीगढ़ में मिलेगी तो वो यही समझेगी कि बैंक में डकैती करने वाले चंडीगढ़ की तरफ भाग आए है। ऐसे में

पुलिस का अधिकतर ध्यान जीरकपुर से हटकर चंडीगढ़ की तरफ लग जाएगा।”

“समझा।”

“लेकिन पुलिस को कैसे पता चलेगा कि ये नोट की गड्डियां बैंक डकैती का ही माल है?”

“पुलिस सब पता लगा लेगी। बैंक वाले अपनी गड्डियों को फौरन पहचान लेते हैं, जैसे मां अपने बेटे को पहचानती है। तुमसे जो कहा है, वो ही करो। कार छोड़ते वक्त कार में से अपनी उंगलियों के निशान साफ कर देना, वरना फंस जाओगे।”

“उंगलियों के निशान कैसे साफ करने हैं?” गोलू ने पूछा।

“कोई कपड़ा लेकर कार के अंदर-बाहर हर जगह से रगड़कर साफ कर देना। उंगलियों के निशान मिट जाएंगें। ये काम जल्दी निपटाओ। कुछ देर बाद ही दिन निकलने वाला है।”

“ठीक है, ये काम निपटाकर तुम्हारे पास आएं क्या?” सूरमा कह उठा।

“किस वास्ते?”

“नोट लेने!”

“जल्दबाजी मत करो। अभी पांच-सात दिन कुछ नहीं होगा। जैसे अपने दिन बिताते हो, बाकी के दिन भी वैसे ही बिताओ। कोई गलती करोगे तो फंस जाओगे।” देवराज चौहान ने कहा और पलटकर वापस चल पड़ा।

गोलू ने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"मुझे तो समझ नहीं आता कि पांच-सात दिन रुकने की क्या जरूरत है।"

"पप्पू भाई साहब समझदार हैं।" सूरमा समझाने वाले स्वर में बोला-"उनकी बात हमें समझ नहीं आ रही परंतु कोई तो मतलब होगा ही। जो कहते हैं, हमें चुपचाप करना चाहिए।"

कुछ ही देर में उनकी कार चंडीगढ़ की सीमा में प्रवेश कर गई।"

"कार किधर छोड़ें?"

"कुछ और आगे चल। किसी कॉलोनी के मकान के सामने कार खड़ी कर देंगें।"

"जैसा तू चाहे।"

आधे घंटे बाद ही कार को चंडीगढ़ छोड़कर वे दोनों बस द्वारा वापस जीरकपुर चल पड़े।

भोर का उजाला पूरी तरह फैल चुका था।

□□

दिन का उजाला फैलने के पहले ही जुगल किशोर और चंदा भीतर आ गए थे। साथ बॉलकनी का दरवाजा बंद कर लिया। दोनों की आंखों में नींद भरी हुई थी।

जो कुछ भी होता रहा, उनकी आंखों के सामने हुआ।

रात भर वो देखते रहे।

मन में तसल्ली रही कि जो वो देखना चाहते थे, वो ही दिखा।

दोनों की नींद भरी आंखें मिलीं।

“वो सारा रुपया नीचे खड़ी कार में भरा पड़ा है।” चंदा बोली।

“हां!” जुगल किशोर शांत भाव से मुस्कराया।

“अब काम हम आसानी से कर सकते हैं। कार से रुपया निकालना खास कठिन नहीं।” चंदा ने कहा।

“ये तू मेरे को बता रही है!”

“कोई कुछ कहे तो उसे सुन लेना बुराई नहीं होता। मैं तेरे से ही कह रही हूं कि कार में से रुपया उन्होने फ्लैट के भीतर रखा होता तो वहां से निकालना कठिन था।”

“वहां से भी निकल आता। अभी तुम मुझे ठीक से जानती नहीं।“

“तीस मारखां हो क्या?”

“हूं, देखा नहीं तूने कि देवराज चौहान ने जो डकैती की, उसका मुझे पहले ही पता था कि वो क्या-क्या कर रहा है, कैसे कर रहा है, कब करेगा, उसकी प्लानिंग क्या है?”

चंदा ने गहरी सांस ली।

“तू अपनी मजदूरी के पचास लाख की सोच, बस। जल्दी ही तेरे को मजदूरी का मौका दूंगा।”

“एक सलाह और दूं?”

“कह दे।”

“कार में से रुपया जल्दी निकाल लेना। क्या पता देवराज चौहान का प्रोग्राम आज-कल में निकल जाने का हो।”

जुगल किशोर ने चंदा को देखा।

“मेरी बात ठीक न लगे तो मत मानना।”

"तू ठीक कहती है।"

"शुक्र है।"

"अभी नींद ले ले। मैं भी कुछ नींद मार लेता हूं। उसके बाद कुछ सोच विचार करेंगें।" जुगल किशोर बोला और कमरे के फर्श पर लेटकर आंखें बंद कर ली।

"न बिस्तर, न पंखा। पता नहीं, तुम्हें कैसे नींद आ जाती है।" चंदा मुंह बनाकर कह उठी।

"धंधे के वक्त खाना-पीना-सोना ऐसे ही होता है। देखना अभी तेरे को भी नींद आ जाएगी।"

एकाएक चंदा मुस्कराई।

"क्या हुआ?"

"कभी-कभी तू मुझे बहुत अच्छा लगता है."

"भाड़ में जा. अपनी बुरी नज़रें मुझ पर मत डाल." जुगल किशोर ने कहा और करवट ले ली.

"उल्लू का पट्ठा!" चंदा बड़बड़ाई और आँखें बंद कर ली.

□□

उधर दिन निकलने के पश्चात चंडीगढ़ में सड़क के किनारे खड़ी कार पुलिस की जानकारी में आई. जिसकी पिछली सीट पर रिवाल्वर और नोटों की गड्डियां पड़ी थीं.

फ़ौरन पन्द्रह पुलिस वाले वहाँ पहुँचे और कार को घेर लिया.

दूर खड़े ढेरों लोग ये सब देख रहे थे.

उन पुलिस वालों का प्रधान इंस्पेक्टर हरजीत पाहवा था.

"दलबीर सिंह!" इंस्पेक्टर पाहवा ने पास खड़े सब इंस्पेक्टर से कहा- "इससे एक बात तो ज़ाहिर है."

"क्या सर?"

"कि बीती रात किसी बड़ी वारदात को अंजाम दिया गया है. उसी वारदात के निशानों को अब हम देख रहे हैं."

"कैसी वारदात सर?"

"पता नहीं, देर-सबेर में खबर मिल जायेगी. तुम आस-पास के लोगों के बयान लो कि शायद किसी ने किसी को कार छोड़ते देखा हो." इंस्पेक्टर हरजीत पाहवा ने सोच भरे गंभीर स्वर में कहा.

"इस कार का क्या करें सर?"

"इसे 'टो' कर थाने ले चलेंगे. बाकी काम वहीं पर होगा." इंस्पेक्टर हरजीत पाहवा पीछे वालो सीट पर पड़ी नोटों की गड्डियों को देखते हुए बोला, "हो सकता है, रात कहीं पर भारी लूट की गई हो. नोटों की गड्डियां कार में इस तरह मिलना तो इसी तरफ संकेत करता है. जो भी सच है, जल्दी पता चल जायेगा."

"लूट कितनी भी भारी हो, इस तरह नोटों की गड्डियों को तो नहीं छोड़ा जाता."

"क्या पता क्या चक्कर है। तुम दो पुलिस वालों के साथ आस-पास रहने वाले लोगों से पूछताछ करो कि कार यहां पर कौन छोड़ गया है। हो सकता है, किसी ने कार छोड़ने वाले को देखा हो।"

दलबीर सिंह वहां से हटकर फौरन अपने काम में लग गया।

□□

कस्तूरी भोर के उजाले के साथ-साथ ही वापस फ्लैट में आ पहुंची थी। बलबीर को आज उसने राजा बना दिया था। वो भाभी-भाभी करता रहा और उसे राजा बना दिया कस्तूरी ने। जब उसे छोड़कर चली तो उसका सारा नशा हवा हो चुका था परंतु आंखों में नया नशा ही तैर रहा था।

जगमोहन को उसने फ्लैट में ही पाया।

"काम हो गया क्या?" कस्तूरी ने दबे स्वर में पूछा।

जगमोहन ने सहमति में सिर हिलाया।

"तुमने हमें नहीं बताया कि रुपया कार में ही कवर चढ़ाकर रखा जाना है।" कस्तूरी बोला।

"क्या जरूरी था बताना।"

"बता देना ठीक होता है।" कस्तूरी बोली-"बलबीर बहुत गलत मौके पर वहां पहुंचा था।"

"हां!" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा-"लेकिन सब ठीक हो गया।"

"पंद्रह लाख की बात कर ले चांदीलाल। मैं कुछ देर सोने जा रही हूं। पप्पू भाई साहब किधर हैं?"

"बाहर गए हैं, आते ही...।"

तभी दरवाजे के पल्लों को धकेलकर देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया।

चांदीलाल ने कस्तूरी की पंद्रह लाख की डिमांड बताई।

"पैसे मुफ्त में मिलते, जो पंद्रह लाख उसे...।" जगमोहन ने भड़ककर कहना चाहा।

“वो भी मुफ्त में नहीं मांग रही। ठीक मौके पर सारे मामले को संभालने के लिये उसने अपनी इज्जत दांव पर लगाई है। वरना सारा मामला बिगड़ ही गया था।” चांदीलाल शांत स्वर में बोला।

जगमोहन कुछ कहने लगा कि देवराज चौहान बोला।

“पंद्रह लाख उसे मिल जाएंगे।”

“उस पचास के अलावा!” चांदीलाल ने कहा।

“हां, कुल पैंसठ लाख।”

“ठीक है, अब करना क्या है?” चांदीलाल ने पूछा।

“पांच-सात दिन यहीं, ऐसे ही रहना है। पुलिस का शोर उठकर तब तक मध्यम पड़ जाएगा। उसके बाद हमें अपना पैसा लेकर निकलने में कोई परेशानी नहीं होगी।” देवराज चौहान ने कहा।

“हमें क्या परेशानी है। हमारी तो छोटी-सी रकम है। बड़ी परेशानी तो तुम्हें है कि माल तुमने संभालना है।”

“तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं।” जगमोहन कुढ़कर बोला-”हम संभाल लेंगें।”

चांदीलाल ने खामोशी से सिर हिला दिया।

“आज सोढ़ी के बेटे को छोड़ना है।” जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा।

“हां, छोड़ देंगें।”

□□

उसके बाद सबने दो-दो घंटों के लिये नींद ली।

आठ-साढे आठ बजे रोजमर्रा की तरह तैयार हुए।

चांदीलाल और कस्तूरी बहुत खुश थे कि काम हो गया।

डकैती सफल रही। अब उन्हें पचास-पचास लाख मिल जाएंगे। कस्तूरी ने उठकर हाथ-मुंह धोया और चेहरे पर लिपस्टिक-बिंदी सजा ली। चाय बनाकर सबको दी। खुशी में उसके पांव जमीन पर न पड़ रहे थे।

"आज मैंनेजर के लड़के को छोड़ना है पप्पू भाई साहब ने।" चांदीलाल बोला।

"मालूम है, भीतर पप्पू भाई साहब जगमोहन से कह भी रहे थे।" कस्तूरी ने कहा।

"उसके बाद दो-तीन दिन में पैसे लेकर हम भी चले जाएंगें।"

कस्तूरी चांदीलाल के पास बैठती हुई कह उठी।

"तू क्या करेगा पैंसो का चांदीलाल?"

"क्या करूंगा? पैसों का क्या करते हैं, खाते हैं!"

"बुढ़ापे में तू पैर रख चुका है। इस उम्र में तो खाया पिया भी हजम नहीं होता।"

"चांदीलाल ने उसे घूरा, फिर सिर हिलाकर बोला।

"तेरा क्या ख्याल है कि मुझे पैसे का क्या करना चाहिए?"

"तू हमारे साथ रहना शुरू कर दे।"

"तुम्हारे साथ!"

"मेरे और सूरमा के साथ। हमें बुजर्ग मिल जाएगा और तुझे बुढ़ापे का सहारा।"

"और पचास लाख तेरे हवाले कर दूं!"

"हां!"

"बहुत सयानी है तू?"

"तभी तो तेरे को बुढ़ापा काटने का रास्ता बता रही हूं।"

"मुझे अपने घर में बिठाकर मेरे से बरतन साफ करवाएगी?"

"बरतन..!"

"और क्या, मेरा पैसा तो तू ले लेगी-चार दिन की चांदनी दिखाएगी, उसके बाद तो तू मुझे लात मारकर...!"

"क्या बात करता है चांदीलाल?"

"गलत कह दिया क्या?" चांदीलाल व्यंग से मुस्कराया।

"हां, गलत कहा। मैं तो तेरे को बुढ़ापा काटने का सही रास्ता बता रही...।"

"मालूम है, मैं क्या करूंगा?"

"क्या?"

"पैसा दबाकर अपने घर बैठ जाऊंगा। तब बुढ़ापा मेरा अच्छा कटेगा। तेरे जैसे कई इकट्ठे हो जाएंगे मेरा ध्यान रखने के लिए। इस पचास लाख में से हर महीने बीस हजार भी करूं तो मेरे मरने के बाद भी पैसे बचे रह जाएंगे-समझी। मेरा बुढ़ापा बहुत शानदार...।"

"कस्तूरी।" तभी मिसेज शर्मा की आवाज आई-"किधर है तू?"

कस्तूरी उठी कि तभी मिसेज शर्मा ने भीतर प्रवेश किया।

मिसेज शर्मा ने हाथ जोड़कर चांदीलाल को नमस्कार किया फिर कहा।

"अंकल जी, आज अपनी बहन को बुला लूं?"

"बहन को...!"चांदीलाल के होंठों से निकला-"मैंने तुम्हारी बहन का क्या करना है?"

"आपने कहा था न कि रविवार को रिश्ते की बात करेंगें। आज रविवार आ गया।"

"आ गया-बहुत जल्दी आ गया लेकिन अभी बात नहीं हो पाएगी।"

"क्यों अंकल जी?"

"हमारी रिश्तेदारी में कोई मर गया है, दो चार दिन में वहां जाना है।"

"ओह..! बहुत बुरा हुआ।"

"रिश्ते की बात आने वाले रविवार पर डाल दे। तब मेरे से पूछे बिना अपनी बहन को बुला लेना।"

"ठीक है।" मिसेज शर्मा ने सिर हिलाया-"जगमोहन कहां है?"

"भीतर है।"

"चल।" कस्तूरी ने मिसेज शर्मा का हाथ पकड़ा और दोनों किचन में पहुंच गईं।

"रात तेरे शर्मा जी ने बहुत तंग किया।" मिसेज शर्मा गहरी सांस लेकर बोली।

"क्यों?"

"पीने के बाद उन्हें पता नहीं क्या हो जाता है, सोने ही नहीं देते-लिपटते रहते हैं।"

"तो तेरा क्या जाता है।" कस्तूरी आंख दबाकर मुस्कराई।

"मुझे तो रात भर बलबीर याद आता रहा।"

"बलबीर?"

"और क्या-शर्मा जी तो फुस्स हो जाते हैं पीकर। कभी इधर लुढ़क जाते हैं तो कभी उधर। निशाना ही नहीं लगा सकते कि...छोड़ क्या बताऊं। पूछते ही रहते हैं कि ये हाथ है, ये मुंह है, ये बाल है, ये नाक है। इतने में ही नींद आ जाती है। दो खर्राटे मारेगें और फिर नाक मुंह टटोलने लग जायेंगें। मैं तो तंग आ गई हूं।"

"अब क्या कर रहे हैं?"

"करना क्या है। सुबह उठने के बाद नाश्ता किया, नाक मुंह टटोलकर फिर सो गए। अभी तक रात की चढ़ी हुई है। मैं तो बलबीर के साथ चंडीगढ़ सूट लेने जा रही हूं।"

"लेने, वो तो तू पिछले रविवार लाई थी।"

"तब खरीदा था और सिलने दे दिया था। अब सिल गया होगा। बलबीर ने कहा था कि ग्यारह बजे आ जाएगा।" कहते हुए मिसेज शर्मा के चेहरे पर मुस्कान आ ठहरी थी।

"फिर तो आज का दिन तेरा बढ़िया बीतेगा।"

"बढ़िया क्या, रात को लगी आग बुझ जाएगी। भला हो बलबीर का, वरना मैं तो मर ही जाती। तू ये बता कि क्या तेरे को चंडीगढ़ से कुछ मंगवाना है?" मिसेज शर्मा ने पूछा।

"नहीं-लेकिन बलबीर को कुछ ले दिया कर। वो..!"

"दे तो देती हूं। खुश हो जाता है। इतना खुश हो जाता है कि मुझे छोड़ता ही नहीं।" शर्मा जी से तो बलबीर अच्छा है। बैंक में चपरासी हुआ तो क्या हुआ। मैं आज तेरे लिए पापड़ लाऊंगी।"

"पापड़?"

"हां, चंडीगढ़ में पिछली बार अमृतसरी पापड़ों की दुकान देखी थी। वही से लाऊंगी तेरे लिए। तैयार हो जाऊं। बलबीर कभी भी गाड़ी लेकर आ सकता है। बलबीर को मेरा साड़ी पहनना पसंद है। अब साड़ी पहनने में दस पंद्रह मिनट तो लगते ही हैं। उस साड़ी का ब्लाउज भी कुछ टाइट है लेकिन बलबीर को टाइट अच्छा लगता है।"

"बहुत ध्यान रखने लगी है बलबीर का।"

"वो भी तो मेरा ध्यान रखता है।"

मिसेज शर्मा चली गई।

उसके बाद देवराज चौहान के कहने पर कस्तूरी ने राजू को तैयार किया।

"आज राजू बेटा मम्मी-पापा के पास जाएगा।"

आधे घंटे बाद ही देवराज चौहान और जगमोहन राजू को कार में बिठाकर ले गए। बाहर कवर से ढंकी कार सलामत खड़ी थी, जिसमें करोंड़ों रुपये ठूंसे हुए थे।

□□

डेढ़ घंटे बाद देवराज चौहान और जगमोहन लौटे।

राजू को सोढ़ी के हवाले कर आए थे।

देवराज चौहान ने फोन करके सोढ़ी को जहां बुलाया, सोढ़ी वहीं खड़ा मिला था। चंडीगढ़ की ही एक जगह तय हुई थी। राजू को सही-सलामत वापस मिलते देखकर सोढ़ी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस बीच जगमोहन और कार सोढ़ी से कुछ दूर ही रही थी।

जब वे वापस बैंक कॉलोनी पहुंचे तो तब देवराज चौहान की निगाह कुछ दूर खड़ी पैंतीस हजारी पर जा टिकी थी। कार में बैठा कई पलों तक वो जुगल किशोर की कार को देखता रहा।

"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।

"ये कार पहचानी-सी लग रही है।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा।

"ये पुरानी फिएट?"

"हां।"

"किसकी है?"

"यही तो याद नहीं आ रहा।" देवराज चौहान दरवाजा खोलता हुआ बोला-"तुम फ्लैट में चलो, मैं आता हूं।"

जगमोहन कार निकलकर फ्लैट में पहुँच गया।

देवराज चौहान जुगल किशोर की फिएट कार के पास पहुंचा। लापरवाही दर्शाते हुये कार के नंबर को देखा। कार को पहचानने की चेष्टा की परंतु कुछ याद नहीं आया।

देवराज चौहान फ्लैट में पहुंचा।

"किसकी है?"जगमोहन ने पूछा।

"ध्यान नहीं आ रहा। परंतु जाने क्यों लगता है कि इस कार को पहले भी देखा है।"

दोपहर का एक बज रहा था।

जुगल किशोर की कार की बात आई-गई हो गई।

सूरमा खोखे के पास ही पेड़ के नीचे पुराने से कपड़े बिछाकर गहरी नींद में सोया हुआ था कि गोलू ने वहां पहुंचते ही उसे जोरों से हिलाकर उठाया।

"क्या कर रहा है? तूफान आ गया क्या?" सूरमा ने आंखें मलते हुए उसे देखा।

"गजब हो गया!" गोलू पास ही कुर्सी खींचकर उस पर बैठता कह उठा।

"पप्पू भाई साहब को पुलिस ने पकड़ लिया क्या?"

"चाचे के यहां चंडीगढ़ की पुलिस पहुंच गई है।"

"चंडीगढ़ की पुलिस?" सूरमा चौंका-"क्यों?"

"वो कार जो हम रात चंडीगढ़ छोडकर आए थे, वो चाचे की ही तो थी। उस कार में चंडीगढ़ पुलिस को नोटों की गड्डियां और रिवाल्वर मिली। कार के नंबर से पुलिस ने पता किया कि कार किसके नाम पर रजिस्टर्ड है और फिर पुलिस पहुंच गई चाचे के पास। चाचे की हालत पतली हो रही थी। मैंने देखा, सारे बाजार वाले इकट्ठे हो गए।"

"फिर?" सूरमा गंभीर हुआ।

"फिर क्या, चाचा तो एक ही रट लगा रहा है कि कल उधर ग्राउंड से उसकी कार कोई उठा ले गया था। कार को बहुत ढूंढ़ा। नहीं मिली तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी थी।" गोलू ने जल्दी से बताया।

"फिर तो चाचा बच जाएगा। पुलिस की रिपोर्ट उसे बचा लेगी कि चाचे की कार चोरी हो गई थी।"

"पुलिस बहुत परेशान नजर आ रही थी।"

"क्यों?"

"पुलिस परेशान नहीं होगी तो क्या होगी। कार में नोटों की गड्डियां मिलीं, रिवाल्वर मिली-परंतु अपराध क्या हुआ, कहां हुआ, ये पता नहीं चल रहा। पुलिस तो अपराध को तलाश करने में लगी है।"

"और जब अपराध तलाश कर लेगी तो अपराधियों को भी तलाश करेगी।" सूरमा ने उसे देखा।

"हां, ये तो कल सुबह बैंक खुलने पर ही पता चलेगा -कि बैंक में डकैती हो गई है और अपराधी चंडीगढ़ की तरफ भाग गए हैं-क्योंकि कार, गड्डियां और रिवाल्वर चंडीगढ़ में मिलीं। सच में पप्पू भाई साहब का दिमाग भी कमाल का है।"

"मुझे खतरा लग रहा है।" सूरमा के चेहरे पर घबराहट नजर आई।

"कैसा खतरा?"

"कार तूने चुराई थी चाचा की। किसी ने तेरे को कार ले जाते देखा होगा तो पुलिस यहां आती ही होगी।"

गोलू का चेहरा फक्क पड़ गया।

"देखा था किसी ने तेरे को?"

"न..हीं। मैंने इस बात का ध्यान रखा था कि कोई मुझे न देखे।"

"कोई देखेगा तो तू उसकी आंखें थोड़े न बंद कर लेगा।" सूरमा ने बेचैनी से कहा।

"अब-अब क्या करें?" सूखे स्वर में पूछा गोलू ने।

"पुलिस आए तो तू कभी मत मानना कि तूने ही कार उठाई थी।" सूरमा ने समझाया।

"पुलिस डंडे से मारेगी।"

"डंडे सह लियो। पांच-सात दिन डंडे मारकर छोड़ देगी तेरे को।"

"छोड़ देगी तो क्या तब तक मैं जिंदा रहूंगा?"

"रहेगा। तब तेरी दवा दारु के लिये मेरे पास नोट बहुत होंगें। तेरा पूरा ध्यान रखूंगा।"

□□

दोपहर बाद जुगल किशोर और चंदा जीरकपुर पहुंचे। खाना खाया। उसके बाद चाय पीने एक रेस्टोरेंट में बैठे तो चंदा ने कहा।

"काम के बारे में क्या सोचा कि कब करना है ?"

"तूने ठीक कहा था कि हमें देर नहीं करनी चाहिए। क्या पता कि आज कल में देवराज चौहान नोटों से भरी कार लेकर चलता बने। हमारे हाथ कुछ भी न लगे।"

"शुक्र है, मेरी बात तेरे को समझ में आ गई।" चंदा ने मुंह बनाकर कहा।

"आज रात हम उस कार से नोट निकालकर अपनी कार में डाल लेंगें।" जुगल किशोर ने कहा।

"इतने नोटों को एक कार से दूसरी कार में डालना मजाक नहीं है।"

"तो?"

"उस कार ही ले उड़ते हैं।"

"नहीं, किसी की कार ले उड़ेंगें तो पकड़े जा सकते हैं। क्या पता देवराज चौहान ने भी वो कार कहीं चोरी की हो। ये तो खामखाह ही फंसने वाली बात हो गई।" जुगल किशोर ने सिर हिलाया-"नोट हमें अपनी कार में ठूंसने होंगें।"

"इसमें तो आधी रात लग जाएगी।"

"इस मजदूरी के तो तेरे को पचास लाख मिलने हैं।"

कार में रखी नोटों की गड्डियां नजर आएंगी। उसे छुपाएंगें कैसे?" चंदा बोली।

"चादर लेकर गड्डियों के ऊपर डाल देंगें।"

"फिर भी इतनी सारी गड्डियां कार में नहीं आ सकेगीं।"

"कोई बात न हीं। जितनी आएंगी, उतनी ही लेकर चल पड़ेंगें।"

"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा है?"

"डिग्गी में रखी जाने वाली नोटों की गड्डियां तो छिप जाएगी लेकिन गड्डियां पीछे वाली सीट पर रखेंगें, उन्हें चादर से ढकेंगें तो रास्ते में कहीं भी चैकिंग हो सकती है। पुलिस चादर के नीचे पड़े नोटों को देख सकती है।"

"तुम ठीक कहती हो-लेकिन हमारे पास दूसरा कोई रास्ता भी नहीं। जो काम जैसे हो रहा है, हो लेने दो।"

"मुझे क्या? मैंने तो अपने पचास लाख लेकर निकल जाना है।" चंदा मुस्कराई।

चाय आ गई। वे चाय पीने लगे।

"काम रात को करना है?" चंदा ने पूछा।

"हां, बारह बजे के बाद। मैं अपनी कार को उस कार के पास खड़ी कर दूंगा। उस कार का लॉक खोल दूंगा। ऐसे में चुपके से उस कार में पड़े रुपये को अपनी कार में ट्रांसफर करना है।"

"तब अगर देवराज चौहान आ गया तो?"

"रात को बारह बजे के बाद वो बाहर क्यों आएगा। ऐसे मौके पर तो बिल्कुल नहीं आएगा, जबकि बाहर खड़ी कार मे करोड़ों रुपया भरकर उस पर कवर चढ़ा रखा हो।"

"तुम ठीक कहते हो।" चंदा ने सिर हिलाया।

"कल देवराज चौहान ने अपना काम करने के लिये सामने के दो बल्ब फ्यूज किए थे। अब वो ही अंधेरा आज रात हमें फायदा देगा। हम आसानी से अपना काम निपटा लेंगें और कोई देख भी नहीं नहीं सकेगा।"

"नोटों से कार भरकर रात को ही निकल चलना है?"

जुगल किशोर ने विचार भरी नजरों से चंदा को देखा और कह उठा।

"रात को ही निकलना बेहतर होगा-परंतु हम जीरकपुर से बाहर नहीं निकलेंगें।"

"क्या मतलब?"

"सुबह बैंक खुलते ही, बैंक में डकैती हो जाने का शोर पड़ेगा। उधर अगर सुबह देवराज चौहान को शक पड़ गया या कवर ढकी कार में झांका तो जान जाएगा कि उसके रुपये कोई ले उड़ा है। ऐसे में वो हमें तलाश करेगा।"

"हमें कैसे तलाश करेगा, उसे कैसे पता क हमने...!"

"अब तक उसने फिएट कार देख ली होगी। रात को भी देखेगा-परंतु सुबह वो कार वहां नहीं देखेगा और अपनी कार से रुपये गायब पाएगा तो समझ जाएगा कि फिएट कार वाले ही नोटों पर हाथ साफ कर गए हैं।"

"तो तुम क्या क्या कहना चाहते हो?"

"हम जीरकपुर में ही कहीं छिप जाएंगें। हाइवे के किनारे कई जगह जंगलों जैसी जगह है। कोई जगह आज ही तलाश कर लेंगें और रात को काम के बाद नोटों से भरी कार लेकर वहां पहुंच जाएंगें। कम से कम दो दिन वहां रुके रहेंगे।"

"मैं भी?"

"हां, तुम भी मेरे साथ रहोगी।"

"लेकिन मेरा काम तो आज रात खत्म हो जाएगा। पचास लाख लेकर मैं चली जाऊंगी।"

"मुझे मुसीबत में छोड़कर।"

"करोड़ों रुपया तुम खा रहे हो तो मुसीबत तुम्हारे ही तो नाम पर होगी।"

जुगल किशोर ने चाय समाप्त करके सिगरेट सुलगाई।

"तुम मेरे साथ रहना, दस लाख रुपया एक रात का दूंगा।"

"दस लाख, हूं...ठीक है-सोचा जा सकता है।" चंदा मुस्कराई-"फिर तो मैं तब तक तुम्हारे साथ रह सकती हूं, जब तक कि मुझे देने को तुम्हारे पास पैसे खत्म न हो जाएं।"

"ज्यादा मुंह मत फाड़ो।"

"जब तुम मुंह फुलाते हो तो बहुत अच्छे लगते हो। लाओ कुछ रुपये निकालो।"

"किस वास्ते?"

"वो सामने की दुकान से दो बड़ी चादरें ले आऊं। कार में ठूसी नोटों की गड्डियों को चादर से ढांपना भी तो है।"

जुगल किशोर से पैसे लेकर चंदा सामने की दुकान पर जा पहुंची। वहां से उसने दो बड़ी चादरें और दस मीटर नाइलोन की पतली डोरी ली।

वापस आई तो जुगल किशोर ने पूछा।

"ये डोरी किसलिए?"

"कहीं भी जरूरत पड़ सकती है। यूं ही ले ली।" चंदा बोली।

चाय के पैसे चुकता करके दोनों कार में जा बैठे। चादरें और डोरी पीछे वाली सीट पर रख दी।

जुगल किशोर ने कार स्टार्ट करते हुए कहा।

"अब वो जगह तलाश करते हैं, जहां दो रातें हमारी नोटों से भरी वैन सुरक्षित खड़ी रहेगी।"

चंदा ने मुस्कराकर सिर हिला दिया।

जुगल किशोर ने कार आगे बढ़ा दी।

□□

भाभी, ओ भाभी।" बलबीर ने शाम पांच बजे फ्लैट में प्रवेश किया।

कस्तूरी फौरन पीछे वाले कमरे से निकल आई। चांदीलाल तब उस कमरे में नहीं था।

कस्तूरी को देखते ही बलबीर का चेहरा खिल उठा।

"तुम्हारा बूढ़ा ससुर कहां है?" बलबीर ने धीमे स्वर में पूछा।

"नहा रहे हैं।"

"और तो घर में कोई नहीं?"

"सब हैं, पीछे वाले कमरे में हैं।"

"ओह!" बलबीर थोड़ा सीधा हुआ, फिर धीमे स्वर में बोला-"भाभी, तुम बहुत अच्छी हो।"

"सच?"

"हां, मैं तो पागल हो गया हूं तुम्हारे लिए। मिसेज शर्मा के साथ चंडीगढ़ जाने में जरा भी मजा नहीं आया।"

"इतनी बुरी तो नहीं मिसेज शर्मा।" कस्तूरी मुस्कराकर धीमे स्वर में बोली।

"वो बात नहीं।" बलबीर मुंह बनाकर बोला।

"तो क्या बात है।"

"मिसेज शर्मा की "और-और' कहने की बहुत बुरी आदत है। मेरी तो जान निकल जाती है।"

कस्तूरी हौले से हंस पड़ी।

"तुम हंस रही हो और यहां मिसेज शर्मा ने 'और-और' कह के मेरा बुरा हाल कर दिया है। इस मामले में तुम अच्छी हो, जितना खा लिया, उतना ही बहुत है-तुम्हारी तसल्ली हो जाती है। मिसेज शर्मा तो हद कर देती है।"

"मुझे तो मिसेज शर्मा ने कहा था कि बलबीर बहुत अच्छा है।"

"वो तो ठीक है।" बलबीर मुस्कराया, फिर सिर आगे करके आहिस्ता से बोला-"रात इंतजार करूं?"

"नहीं, सब तो घर में है।"

तभी चांदीलाल ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"ये क्या हो रहा है?"

"टाइम पूछ रहा था।" बलबीर तुरंत सीधा होते हुए बोला।

"तूने मेरे से तो कभी टाइम नहीं पूछा।"

"व..वो...!"

चांदीलाल बैठता हुआ कस्तूरी से बोला।

"बहू, रात को मेरी आंख खुली तो मुझे एसा लगा, जैसे तू घर में न हो।"

"मैं तो घर में ही थी! पीछे वाले कमरे में नींद ले रही थी।"

जबकि चांदीलाल की बात पर बलबीर हड़बड़ा उठा था।

"मैं चलता हू, फिर आऊंगा।"

"बैठ जा।" चांदीलाल बोला-"कभी मेरे से भी बात कर लिया कर। हमेशा बहू से ही बात करता...।"

"अभी काम है, फिर आऊंगा।"

"बहू बता रही थी कि तू मिसेज शर्मा को लेकर चंडीगढ़ था आज।"

"ह...हां!"

"कभी मेरे को भी चंडीगढ़ ले जाया कर।"

"आ...आपको!"

"हां, मैं भी चंडीगढ़ घूम लूंगा।"

"ल..ले चलूंगा।"

“कब?”

“अगले रविवार-चलता हूं, फिर आऊंगा।” कहकर बलबीर बाहर की तरफ बढ़ा।

“आता जाता रहा कर। जब तक तू दो-चार चक्कर नहीं लगा जाता, तब तक घर सूना-सूना लगता है।”

बलबीर बाहर निकल गया।

उल्लू का पट्ठा।” चांदीलाल बड़बड़ा उठा-”क्या कह रहा था?” उसने कस्तूरी को देखा।

“रात के लिये पूछ रहा था।”

“स्वाद लग गया है मुए को।”

“वो तो लगेगा ही।”

चांदीलाल ने कस्तूरी को देखा।

“क्यों लगेगा?”

“मैं हूं ही ऐसी।” कस्तूरी ने अंगड़ाई लेकर कहा,”जिसे राजा बनाऊं, वो मेरा दीवाना हो जाता है।”

चांदीलाल ने गहरी सांस ली और दूसरी तरफ देखने लगा।

“क्या हुआ?” कस्तूरी ने बांह नीचे की।

“राजा बनने की मेरी उम्र नहीं है। मेरे सामने क्यों अंगड़ाई लेती है।”

“डरता है साला।”

□□

शाम के सात बजे जुगल किशोर और चंदा लौटे।

ढलती शाम बता रही थी कि अंधेरा होने वाला है।

जुगल किशोर ने कवर में खड़ी कार के पास अपनी पैंतीस हजारी खड़ी की थी। दोनों नीचे उतरे और आगे बढ़कर सीढ़ियां चढ़ते हुए तीसरी मंजिल वाले फ्लैट में जा पहुंचे।

"तुम्हारी कार की डिग्गी में मेरा सूटकेस पड़ा है।" फ्लैट में पहुंचकर चंदा बोली।

"उसे कहीं फेंक देना। कार में फालतू सामान की जगह नहीं है।" जुगल किशोर बोला।

"फालतू सामान..।" चंदा उखड़ी, "सूटकेस में बयालीस लाख रुपया पड़ा है।"

जुगल किशोर गहरी सांस लेकर रह गया।

"सूटकेस को मैं आगे वाली सीट पर अपने पैरों के पास रख लूंगी।" चंदा ने कहा।

जुगल किशोर सिर हिलाकर रह गया।

"तुम कार खोल लोगे?"

"हां।" जुगल किशोर बोला, "मामूली काम है मेरे लिए।"

"अगर हम रातों रात रुपया लेकर दिल्ली की तरफ निकल जाएं तो ठीक रहेगा।" चंदा ने कहा।

"देवराज चौहान हम तक पहुंच सकता हैं उसने मेरी फिएट कार अच्छी तरह पहचान-देख ली होगी। करोड़ों रुपया गायब पाकर वो समझ जाएगा कि फिएट वाले ने उसका माल साफ किया है।"

"जो मरजी करो। मुझे तो अपनी मजदूरी से मतलब है।"

"तुम छोटे किले को भूल गई क्या, वहां नहीं चलना?"

"छोटे किले की पड़ी है तुम्हें। यहां न पंखा है न बिस्तर। बैठना कठिन हो रहा है और तुम्हें छोटे...।"

"धीरे बोलो।"

"कम-से-कम फ्लैट में लाइट तो जला लो।"

"अंधेरा ही रहने दो। लाइट जलाकर क्यों किसी को सतर्क करें कि यहां कोई रहता है।"

"तुम्हारे साथ रहना तो मुसीबत हैं"

□□

तब रात के साढ़े बारह बज रहे थे।

बैंक कालोनी में शांति छा चुकी थी।

जुगल किशोर और चंदा अभी-अभी उतरकर नीचे कार के पास आए थे। जगमोहन द्वारा कल बल्ब खराब कर दिए जाने की वजह से इधर अंधेरा था। जुगल किशोर ने देखा, देवराज चौहान के फ्लैट की लाइट बंद थी।

"कार का दरवाजा खोलो।" चंदा मुस्कराई।

जुगल किशोर दोनों कारों के बीच जा दुबका और चंद मिनटों में ही साइट से कवर उठाकर कार के पीछे वाले दरवाजे का शीशा गिराकर दरवाजा खोला तो नोटों की गड्डियां भरभराकर नीचे आ गिरीं।

"हे भगवान!" चंदा के होंठों से निकला, "इतने नोट!"

"ऐसे मौके पर भगवान को मत याद कर। वरना वो भी आ पहुंचेगा और हिस्सा मांग बैठेगा।"

उसके बाद चंदा नोटों की गड्डियों को उठा-उठाकर अपनी वाली कार के भीतर फेंकने लगी।

□□

जुगल किशोर कार के पीछे वाले हिस्से में जा पहुंचा और कवर थोड़ा सा उठाकर कार की डिग्गी खोलने लगा। पांच मिनट में डिग्गी खुल गई। जुगल किशोर ने फुर्ती से फिएट की डिक्की खोली और उस डिग्गी से नोटों की गड्डियां उठाकर इस डिग्गी में रखने लगा।

दो घंटे लगे। फिएट कार की डिग्गी और पीछे वाली सीट की सारी जगह नोटों की गड्डियां कार के भीतर पड़ी थी।

"बस।" जुगल किशोर बोला, "बाकी रहने दे। हमारी कार फुल हो चुकी है।"

"लेकिन अभी तो ढेर सारी नोटों की गड्डियां पड़ी हैं।"

"पड़ी रहने दे। हमारे पास जगह नहीं है।"

चंदा आगे बढ़ी और कार में से नोटों की दस-पंद्रह गड्डियां निकालकर फिएट में डालीं।

"ये क्या कर रही हो?"

"ये पंद्रह गड्डियां मेरी हैं। मैं बाद में ले लूंगी।" कहने के साथ ही चंदा ने आगे वाली सीट पर रखी चादरें उठाईं। उसमें रखी नाइलॉन की डोरी अलग रखी और चादरों को ठीक ढंग से नोटों की गड्डियों पर बिछाने लगी।

जुगल किशोर ने चादर बिछाने में चंदा का साथ दिया।

ये सारा काम धुप्प अंधेरे में हुआ था।

इस सारे काम से फारिग होने हुए तो तीन बज रहे थे।

"निकल लें।" चंदा बैचेनी से बोली।

"यहां पर कार स्टार्ट करना ठीक नहीं।"

"तो?"

"यहां से धक्का लगाकर कार को बीस-तीस फीट आगे ले जाते हैं। वहां कार स्टार्ट करेंगें।"

"ठीक है। धक्का कौन लगाएगा? मेरे बस का नहीं है।"

"मैं लगा लूंगा। तू स्टीयरिंग पर बैठ।" जुगल किशोर ने कहा और बगल में खड़ी कार का कवर ठीक से डाल दिया।

□□

तब तक चंदा फिएट की स्टेयरिंग सीट पर बैठ चुकी थी।

जुगल किशोर ने कार को धक्का दिया और कुछ आगे ले गया।

"चल हट।" जुगल किशोर कार का दरवाजा खोलता बोला।

चंदा बगल वाली सीट पर सरक गई।

जुगल किशोर स्टेयरिंग सीट पर बैठा। कार स्टार्ट की और आगे गेट की तरफ बढ़ा दी। गेट पर मौजूद चौकीदार शायद जाग रहा था। उसने कार की हैडलाइट रोशन होते ही गेट खोल दिया था।

कार बैंक कॉलोनी से बाहर निकली और सामने की सड़क यानि कि हाईवे पर आ गई।

□□

सुबह देवराज चौहान की आंख खुली तो सात बज रहे थे।

जगमोहन और चांदीलाल नींद में थे।

कस्तूरी की आंखें भी तभी ही खुली थी।

"मैं चाय बनाती हूं।" कस्तूरी ने कहा और किचन की तरफ बढ़ गई।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और दरवाजा खोलकर फ्लैट से बाहर आ गया। लापरवाही से इधर-उधर घूमते हुए शांत नजरों से बैंक की तरफ देखा। वो जानता था कि वहां से करोड़ों रुपया गायब है। यहां पुलिस ही पुलिस होनी थी।

इधर-उधर टहलता देवराज चौहान सिगरेट समाप्त करके फ्लैट में वापस जाने ही लगा कि एकाएक ही ठिठक गया। आंखें सिकुड़ीं। चेहरे पर अजीब से भाव आ ठहरे थे।

निगाहें कवर से ढकी कार के टायर पर थी।

कार के टायर के पास पांच सौ के नोटों की गड्डी पड़ी थी।

देवराज चौहान कई पलों तक अपलक-सा नोटों की गड्डी को देखता रह गया।

तभी फ्लैट के भीतर से कस्तूरी की आवाज आई।

"कहां हैं आप?चाय तैयार है।"

देवराज चौहान पलटा और वापस फ्लैट में पहुंचकर कार की चाबियां उठाईं।

"क्या हुआ?" कस्तूरी ने देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता देखकर पूछा।

"कुछ गड़बड़ है।"

"कैसी गड़बड़?"कस्तूरी के माथे पर बल पड़े।

देवराज चौहान चाबी लिए बाहर निकल गया।

कस्तूरी वहीं खड़ी रही। बाहर निकलने की चेष्टा न की। जबकि दिल धाड़-धाड़ बज रहा था कि कहीं कार में रखा करोड़ों रुपया कोई निकालकर न ले गया हो।

दो मिनट बाद ही देवराज चौहान वापस लौटा।

"क्या हुआ पप्पू भाई साहब? कुछ बताओ...।" कस्तूरी कह उठी।

"कार में रखा करोड़ों रुपया कोई निकालकर ले गया है और ये काम उसने किया है, जिसकी फिएट कार बाहर खड़ी थी। वो कार भी नहीं है जबकि रात सोने से पहले मैंने बाहर झांका था तो कार वहां खड़ी थी।"

कस्तूरी को सब कुछ घूमता सा लगा।

जगमोहन और चांदीलाल को उठाया गया।

इस बात का उन्हें भी पता चला।

"मेरा तो बुढ़ापा खराब हो गया।"

जबकि जगमोहन का चेहरा कठोर पड़ चुका था।

"कौन कर सकता है ये काम?" शब्दों को चबाकर जगमोहन ने पूछा।

"वो, जो शुरू से ही हम नजर रख रहा था। देख रहा था कि हम बैंक में डकैती कर रहे हैं। डकैती के करोड़ों रुपयों को कार में भरकर-कार पर कवर लगा दिया है।" देवराज चौहान शांत स्वर में बोला, "और ये सब देखकर उसने रुपया उड़ाने का प्रोग्राम बना लिया।"

"लेकिन वो है कौन, जो...।"

"वो ही फिएट वाला।"

"उसे ढूंढ़कर निकालूंगा मैं...!"

"वो अब हाथ नहीं आएगा जगमोहन।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया, "करोड़ों रुपया ले जाने वाला बेवकूफ नहीं होगा। उसने इस बात का पूरा इंतजाम किया होगा कि हम उस तक न पहुंच सकें।"

"कैसा इंतजाम?" जगमोहन की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी।

"हम खतरे में हैं।"

"कैसे?"

"जो रुपया ले गया है, उसे इस बात का डर अवश्य होगा कि हम उसे ढूंढ न लें। ऐसे में हो सकता है कि बैंक खुलने पर जब डकैती की खबर आम हो तो वो पुलिस को फोन कर दे कि बैंक डकैती वाले इस फ्लैट में हैं। उसके ऐसा करते ही हम पुलिस में उलझ जाएंगें और वो बच जाएगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम्हारा मतलब कि वो पुलिस को हमारी खबर करेगा?"

"कर सकता है। खुद को बचाने के लिए वो कुछ भी कर सकता है।"

"..ओह! लेकिन वो साला है कौन?" जगमोहन दांत भींचकर कह उठा।

"कोई भी हो। अब उस तक पहुंचना आसान नहीं।"

"वो फिएट वाला इसी बैंक कॉलोनी में रह रहा था। उसके बारे में पता करते हैं।"

"रहने दो जगमोहन, कोई फायदा नहीं। फिर भी तुम पता करना चाहते हो तो कर लेना, लेकिन पहले ये फ्लैट हमें छोड़ना होगा। वैसे भी अब फ्लैट पर रहने का कोई फायदा नहीं। खतरा ही है।" देवराज चौहान ने गंभीर स्वर में कहा, "कोई थैला ले आओ और कार में अभी कुछ रुपया पड़ा है, वो निकाल लाओ।"

"रुपया पड़ा है?"

"हां, फिएट जैसी छोटी कार में वो सारा रुपया नहीं आ सकता था। जितना आया, वो ले गए।"

□□

"वो अकेला था या दो था?" जगमोहन ने पूछा।

"पता नहीं।"

"दो थे।" कस्तूरी फीके स्वर में कह उठी।

'दो?" जगमोहन ने कस्तूरी को देखा।

"हां। एक लड़का, एक लड़की। कल मैंने उन्हें कार से निकलते देखा था। एक बार नजर पड़ी थी।"

"देखने में कैसे थे?" कोई पहचान के लिए निशानी?" जगमोहन ने पूछा।

"क्या बताऊं देखने में वो कैसे थे?" कस्तूरी भरे स्वर में बोली, "नोट लेकर मजे कर रहे होंगें कहीं।"

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"बाहर खड़ी कार में से नोट लाओ।" देवराज चौहान बोला।

"थैला दो।" जगमोहन ने कस्तूरी से कहा।

थकी-टूटी कस्तूरी उठ खड़ी हुई।

“मतलब कि अब काम खत्म?” चांदीलाल बोला।

“हां।” देवराज चौहान ने कहा, “यहां रहना खतरे से खाली नहीं हैं।”

“अब मुझे और कस्तूरी को नोट भी नहीं मिलेंगें, जो मिलने थे। बुढ़ापा ही खराब हो गया।”

“देखते हैं कि कार में कितने पड़े हैं। कुछ न कुछ तो मिलेगा ही।” देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

“सब कुछ बरबाद हो गया।” कस्तूरी भीतर वाले कमरे में थैला लेने चली गई।

□□

जगमोहन तीन चक्करों में कार में आगे पीछे पड़े नोटों को थैले में भरकर ले आया। उन्हें गिना गया। कुल मिलाकर वो सवा दो करोड़ रुपये थे।

“इन्हें देने की क्या जरूरत है।” जगमोहन बोला,”बचा ही क्या है, जो इन्हें दें।”

“वाह देवर जी।” कस्तूरी हाथ नचाकर कह उठी, “सवा दो करोड़ सामने पड़ा है और कहते हो कि बचा ही क्या है, जो इन्हें दें। अब तो हमें देने की तुम्हें जरूरत ही महसूस नहीं हो रही। दस दिन से जो चाय-रोटियां बनाकर खिला रही हूं, कम-से-कम उसकी इज्जत तो रख लेते और नहीं तो देवर-भाभी के रिश्ते पर ही ध्यान दे लेते।”

“म..मैंने तुम्हें तो कुछ नहीं कहा जो..।” जगमोहन ने नजरें चुराते हुए कहना चाहा।

देवराज चौहान के होंठों पर छोटी-सी मुस्कान आ ठहरी।

"सब कुछ कह दिया और कहते हो कुछ कहा नहीं, सुना पिताजी की औलाद।" कस्तूरी ने तीखे स्वर में चांदीलाल से कहा, "अपने छोटे सुपुत्र की बातें सुनीं। ये तो तुमसे भी ज्यादा कमीना है।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली और पांच कदम दूर कुर्सी पर जा बैठा।

"नुकसान हुआ तो तुम्हारा। फायदा होता तो वो भी तुम्हारा था। हम तो फुटकर लेने वाले हैं, हमें देकर विदा करो।"

"कस्तूरी ठीक कह रही है।" चांदीलाल ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा।

देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।

"इन दोनों को पचास-पचास लाख दे दो।"

"पचास-पचास लाख?" जगमोहन ने बल खाया।

"पंद्रह तो छोड़ ही रही हूं, जो उस रात बलबीर को राजा बनाने के तय हुए थे।" कस्तूरी कह उठी, "पचास लाख पे ऐसा मुंह फाड़ रहे हो, जैसे ये सारा पैसा मैं ले जा रही होऊं।"

जगमोहन के चेहरे पर असहमति छाई रही।

"दो इन्हें।"

"इन्हें दस-दस लाख दे देते..।"

"सुना पिताजी की औलाद।" कस्तूरी चांदीलाल से बोली, "दस-दस की बात कर रहा है।"

"करने दे। फैसला तो पप्पू भाई ने लेना है और ले भी लिया।" चांदीलाल उठकर नोटों के ढेर के पास जा पहुंचा,

"तेरा और अपना पचास-पचास मैं ही निकाल देता हूं। इतनी गिनती तो कर ही लेता हूं।"

"तुम इसमें से सूरमा को भी दोगे, तब हमारे पास क्या बचेगा?" जगमोहन बोला।

"उसे सिर्फ बीस लाख ही देंगें।"

"और गोलू?"

"वो भी सूरमा की सिरदर्दी है, हमारी नहीं।"

"उसे भी पांच दस दे देना।" कस्तूरी कह उठी, "बेचारा खुश हो जाएगा।"

"कोई जरूरत नहीं।" जगमोहन भड़का, "तुम अपना पैसा लो और जाओ।"

"धीरे बोलो देवर जी। मिसेज शर्मा आ गई तो तुमसे अपनी बहन का रिश्ता तय करके ही रहेगी।"

अगले एक घंटे में वो चारों एक-एक करके बाहर निकलते चले गए।

फ्लैट खाली हो गया।

□□

अभी सूरमा का खोखा नहीं खुला था।

देवराज चौहान उसके घर की गली के बाहर पहुंचा। कार रोककर बाहर निकला और नोटों वाला लिफाफा उठा लिया, जिसमें बीस लाख मौजूद था।

"यहां क्या करने आए हो?" जगमोहन ने पूछा।

"सूरमा को ये लिफाफा दे आऊं।"

जगमोहन होंठ भींचकर रह गया।

लिफाफा थामे देवराज चौहान गली में मौजूद सूरमा के घर पहुंचा।

सूरमा अभी नींद से ही उठा था।

देवराज चौहान को देखते ही चिंहुंक उठा।

"तुम?"

"ये रखो बीस लाख रुपये।" देवराज चौहान ने लिफाफा टेबल पर रखते हुए कहा, "बस ये ही हैं और कुछ भी नहीं मिलने वाला। गड़बड़ हो गई है, जो रुपये बचे, वो ही बांट दिए।"

"क्या हो गया?" सूरमा भी हक्का-बक्का था।

"कस्तूरी आकर बता देगी।"

"आकर, क्या वो आ रही है!"

"हां।"

"उसे कुछ दिया कि नहीं?"

"पचास लाख उसे दे दिया है।" देवराज चौहान ने कहा और बाहर आ गया।

सूरमा ठगा सा बैठा सामने पड़े लिफाफे को देखता रहा गया था।

देवराज चौहान कार में बैठा और कार आगे बढ़ा दी।

"अब कहां चलना है?"

"दिल्ली और वहां से मुम्बई।"

"इतनी मेहनत करके हाथ कुछ नहीं लगा?" जगमोहन का मूड उखड़ा हुआ था।

देवराज चौहान कुछ नहीं बोला।

"क्यों न हम उसे ढूंढ़ने की कोशिश करें, जो हमारे पैसे ले भागा है!"

"जीरकपुर या आस-पास रहना भी खतरे से खाली नहीं। यहां से निकल जाना ही बेहतर है।"

"कम-से-कम पता तो चले कि हमारा पैसा कौन ले उड़ा है?"

"मालूम हो जाएगा।"

"कैसे?"

"वो फिएट पहले से ही मेरी देखी हुई थी। देर-सवेर में याद आ जाएगा कि वो किसकी है?"

"अभी याद नहीं आ रहा ?"

"नहीं।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया।

उनकी कार वापस हाइवे पर आकर दिल्ली की तरफ दौड़ने लगी थी।

"गलती हमारी ही थी।" जगमोहन कह उठा।

"क्या?"

"उस रात बैंक से पैसे निकालने के बाद हमें रुकना ही नहीं चाहिए था। रुकने की वजह से ही गड़बड़ हुई।"

"अगर जरा भी आभास होता कि ऐसा कुछ हो जाएगा तो हम रुकते ही नहीं।"

"सारी मेहनत हमने की और अब नोटों का मजा कोई और ले रहा होगा।"

"अभी भी खैरियत है कि हम सही वक्त पर जीरकपुर से निकल रहे हैं। कुछ देर बाद बैंक खुलते ही हंगामा मच

जाना है कि करोड़ों रुपयों की बैंक डकैती हो गई है। तब शायद हम पर भी कोई मुसीबत आ जाती।"

जगमोहन गहरी सांस लेकर बाहर देखने लगा।

कार दिल्ली की तरफ दौड़ी जा रही थी।

□□

आधे घंटे बाद ही कस्तूरी आ पहुंची। उसने एक गठरी थाम रखी थी।

"ये पचास लाख रुपया है?" सूरमा ने गठरी की तरफ इशारा किया।

"हां। तेरे को कैसे पता?" कस्तूरी ने गंभीर स्वर में पूछा।

"पप्पू भाई साहब आए थे। मेरे को बीस लाख दे गए हैं। कह रहे थे कोई गड़बड़ हो गई है।"

"हां।" कहकर कस्तूरी ने गोद में उठा रखे बच्चो को चारपाई पर लिटा दिया।

"क्या?"

कस्तूरी ने सारी बात बताई।

"ओह। तो कार में से कोई और पैसे निकाल ले गया है।" सूरमा का मुंह लटक गया।

"फिर भी खैर मना कि मेरे को पचास और तेरे को बीस मिल गया।" कस्तूरी मुस्कराई।

"हां, हमारे लिए ये बहुत हैं, लेकिन अब चाचा की हार्डवेयर की दुकान का ख्याल छोड़ना होगा।"

कस्तूरी कुछ नहीं बोली।

"ये बीस लाख भी रख लेना।" सूरमा ने लिफाफे की तरफ इशारा किया।

"तू किधर जा रहा है?"

"खोखे पर। मेरे को रोज की तरफ आज का दिन भी सामान्य ढंग से बिताना है। किसी को मुझ पर जरा भी शक हो गया तो सारे मजे खराब हो जाएंगें। पुलिस वाले मुझे उठा ले जाएंगें, तेरी भी खैर नहीं।"

"ये बात है तो तू जा। खोखे पे रह।"

"नोटों का ध्यान रखना। इन्हें घर में रखकर बाजार मत चली जाना। चोरी हो जाएगी।"

"चिंता मत कर।" कस्तूरी मुस्कराई।

सूरमा भी मुस्करा पड़ा।

"रात बोतल और मुर्गा लाऊं?" सूरमा ने कहा।

"राजा बनेगा?" कस्तूरी अदा के साथ मुस्कराई।

सूरमा के चेहरे पर फैली मुस्कान गहरी हो गई।

"पूछता क्या है, ले आना। मुरगे को करारा करवा के लाना।"

"इन पैसों का क्या किया जाए?" सूरमा ने पूछा।

"पैसे भागे तो जा नहीं रहे, जो तू अभी से फैसला करने में लग रहा है। रोज की तरफ काम पे जा। आराम से दिन भर सोचता रहियो। इधर मैं भी सोचती हूं। सब नोट ठिकाने लग जाएंगें।"

"जीरकपुर में रहना ठीक नहीं होगा।"

"क्यों?" कस्तूरी पुनः मुस्काई।

"लोग सोचेगें नहीं कि पंचर लगाने वाले के पास इतने पैसे कहां से आ गए?"

"पक्का सोचेंगें।"

"यहां से अम्बाला निकल चलते हैं। वहां कोई दुकान कर लेंगें।"

"तू जा, रात को बात करना। अभी मैं बहुत थकी हुई हूं। आराम करने दे।"

"राजा बनाने के लिए रात को ताजा रहियो।"

"रात तो आने दे। इस तरह सिर पर खड़ा रहेगा तो ताजगी किधर से आएगी।"

सूरमा बाहर निकल गया।

कस्तूरी कई पलों तक वहीं बैठी खुले दरवाजे को देखती रही, फिर उठकर दरवाजा बंद किया ओर गठरी खोली।

बीच में नोटों की गड्डियों का ढेर लगा हुआ था। चांदीलाल ने अपने हाथों से गिनकर उसके पचास लाख डाले थे। उसे अभी विश्वास नहीं आ रहा था कि पचास लाख उनके पास हैं।"

पचास क्यों, सत्तर लाख हैं। उसके पास।

बीस लाख सूरमा वाले भी तो हैं।

कस्तूरी ने सूरमा वाला लिफाफा खोला।

उनमें नोटों की गड्डियां ठूंसी पड़ी थीं।

"सत्तर लाख?" कस्तूरी बड़बड़ा उठी, फिर कमीज के भीतर हाथ डालकर छातियों के पास रखे मोबाइल फोन को निकाला और नंबर मिलाने लगी। ये मोबाइल फोन उसने जगमोहन का खिसकाया था।

दूसरी तरफ घंटी बजने लगी।

फिर रिसीवर उठाया गया।

"हैलो।" बेसब्री से भरी आवाज कानों में पड़ी।

कस्तूरी के होंठों पर मुस्कान बिखर आई, आवाज सुनकर।

गोलू की आवाज थी ये।

"कैसा है मेरे राजा?" कस्तूरी शोख स्वर में कह उठी।

"मैं कब से तेरे फोन का इंतजार कर रहा था।" गोलू की आवाज कानों में पड़ी, "रोज सुबह नौ बजे तू फोन करती है, उसके बाद ही मैं काम पे जाता हूं।"

"बहुत बैचेन रहता है तू मेरे लिए।" कस्तूरी हंसी।

"तू तो मेरी जान है।" गोलू के गहरी सांस लेने की आवाज आई, "भला हो सुरमा का, जो साल भर से हर दोपहर लंच लेने के लिए मुझे तेरे पास भेजता रहा। वो न भेजता तो हमारा प्यार परवान कहां चढ़ता। मैंने तो कभी सोचा भी न था कि तेरे जैसी खूबसूरत चीज मेरे हाथ के नीचे आएगी।"

"ज्यादा हवा न दे।"

"सच कह रहा हूं।"

"फोन पर ही बातें करता रहेगा या आएगा भी।"

"आएगा। कहां आऊं, फ्लैट में। वहां तो सब होंगें।"

"वापस आ गई हूं मैं।"

"वापस! तो क्या काम खत्म हो गया?"

"सारी बात फोन पर ही पूछेगा क्या?"

"आऊं?"

"आ जा।"

"सूरमा?"

"खोखे पर गया।"

"मैं अभी आया।"

□□

बीस मिनट बाद ही गोलू कस्तूरी के पास था।

दोनों तबीयत से गले मिले।

"तेरे को बांहों में लेकर कितना आराम मिल रहा है।" गोलू बोला।

"बातें मत बना।" कस्तूरी उसे अलग करते हुए बोली, "सत्तर लाख हैं मेरे पास।"

"सत्तर लाख...!"गोलू ने गहरी सांस ली, "हे भगवान। दिखा।"

कस्तूरी ने दिखाया।

खुशी से गोलू ने कस्तूरी को बांहों में भींच लिया।

कस्तूरी उसे अलग करती हुई बोली।

"बार-बार चिपक मत।"

"लेकिन वहां हुआ क्या? काम जल्दी कैसे खत्म हो गया?" गोलू ने पूछा।

कस्तूरी ने बताया।

सुनकर गोलू ने कहा।

"हमें क्या कि कौन पैसे ले गया। हमारे पास तो सत्तर लाख आ गया।"

"अब क्या करना है?"

"तू बोल।"

"मौका अच्छा है। वक्त भी है, पैसा भी। मंजूर हो तो भाग चलें।"

"भाग ले।"

"अभी?"

"हां, अभी। पटियाला चलें तो ज्यादा ठीक रहेगा। वहां सारा पैसा सैट कर देंगें।"

"वहां क्या है?"

"मेरी बहन है उधर। चार भैंसे रखी हैं। दूध की डेयरी है। चुपचाप वहीं मस्ती से जिंदगी बिता देंगें। हम भी पचास-सौ भैंसे रखकर दूध की डेरी खेल लेंगें। किसी को पता ही नहीं चलेगा कि हम वहां हैं।"

"सूरमा तेरी तलाश में तेरी बहन के पास पटियाला आ सकता है।"

"उसे मैंने कभी बताया ही नहीं कि मेरी बहन पटियाला रहती है।"

"ठीक है, अभी चलते हैं।"

"पहले एक रात चंडीगढ़ रहेंगें, होटल में। मौज-मस्ती करेंगें। तू मेरे को राजा बनाइयो।" गोलू ने कहा और कस्तूरी को बांहों में भींच लिया।

"बस-बस अब छोड़। उधर चारपाई के नीचे सूटकेस रखा है, नोटों को उसमें डाल।"

"इस बच्चे का क्या करना है?" गोलू ने पूछा।

कस्तूरी ने बच्चे को देखा।

"तू बता क्या करें?"

"यहीं रहने देते हैं। बेचारे सूरमा का दिल लगा रहेगा। अपनी कोई निशानी तो सूरमा के पास छोड़ जा।"

"ठीक है। इसे यहीं छोड़ देते हैं।" कस्तूरी ने सिर हिलाया, "अब चलने की तैयारी कर।"

□□

बैंक में तूफान आया हुआ था।

बैंक खुलते ही सबको पता चला कि बैंक में डकैती हो गई है। हो-हल्ला मच गया। करोड़ों रुपया बैंक से गायब था। हो-हल्ला मचाने वालों में सोढ़ी भी शामिल था। क्या करता वो, अपने बच्चे को बचाने की खातिर सब कुछ करना पड़ा था, अब इस कोशिश में था कि पुलिस से बचा रहे।

बैंक डकैती की बात सुनकर जीरकपुर के और आस-पास के गांवों के लाग वहां इकट्ठे होने लगे। कुछ ही देर में पुलिस के सायरन गूंज उठे। वहां पुलिस वाले दिखाई देने लगे।

भीड़ बढती जा रही थी।

मौका पाकर बलबीर दौड़ा-दौड़ा फ्लैट में पहुंचा।

"भाभी-भाभी।"

दरवाजा खुला था। वो भीतर प्रवेश कर गया।

सारे कमरों का फेरा लगा आया।

परंतु वहां कोई भी नहीं था।

"शायद सब बैंक की तरफ गए होगें।" बलबीर बड़बड़ाते हुए फ्लैट से बाहर निकला।

"सुन बलबीर।"

बलबीर ठिठककर पलटा।

मिसेज शर्मा अपने फ्लैट से बाहर निकल रहीं थीं। उसे साड़ी पहने देखकर बलबीर की लार टपकने लगी। मिसेज शर्मा को साड़ी बहुत जंच रही थी।

"सुना है डकैती हो गई?" पास आकर मिसेज शर्मा ने कहा।

"हां।" बलबीर की निगाह ब्लाउज पर जा रही थी।

"सुना है करोड़ों रुपया ले गए डकैत।"

"हां।"

मिसेज शर्मा ने बलबीर को देखा तो उसकी नजरों को पहचानकर सकपका गई।

कहां देखता है?"

"इधर।"

"उस दिन चंडीगढ़ जाकर पेट नहीं भरा क्या?" मिसेज़ शर्मा फुसफुसाई।

"एक बार में क्या होता है।"

"कुछ नहीं होता?"

"नहीं, कुछ दिन तो हमें इकट्ठे रहना चाहिए।"

"पागल, तू मुझे घर से निकलवाएगा।"

"मेरा घर खाली है।"

"शर्मा जी को पता चल गया तो।"

"आप तो खामखाह घबरा रहीं हैं। कुछ नहीं पता चलता।" बलबीर ने दांत फाड़े।

मिसेज शर्मा ने उसे घूरा।

"तू अब बहुत शरारती हो गया है।"

"आपने ही तो शरारती बनाया है।"

"रात को शर्मा जी अपनी मां के पास अमृतसर जा रहे हैं।" मिसेज शर्मा ने धीमे स्वर में कहा।

"रात को?" बलबीर की आंखें चमकी।

"हां, तू आ जाना। रात का खाना मेरे साथ ही खाना।"

"दारु भी मिलेगी, खाने से पहले?"

"दारु भी मिलेगी और उतार भी दूंगी।" मिसेज शर्मा ने आह भरी, "तू अंधेरा होते ही आ जाना।"

"अब तो दिन निकालना भी मुश्किल होगा।"

"कस्तूरी आज सुबह ही पूरे परिवार के साथ नवां शहर गई है। कोई रिश्तेदार मर गया है।"

"बुरी खबर सुनाई।"

"जाते-जाते मुझे कह गई थी कि बलबीर से कह दूं कि घर की साफ-सफाई रखे और ध्यान रखे। तेरे लिए ही वो घर खुला छोड़कर गई है। समझ गया न?"

"मैं पूरा ध्यान रखूंगा। कब आएगी भाभी?"

"आठ-दस दिन तो लगेंगें ही।"

और शर्मा जी अमृतसर से कब वापस आएंगें?"

"चार दिन बाद।"

"चार दिन बहुत होते हैं। तुम कहो तो मैं बैंक से चार दिन की छुट्टी ले लेता हूं।"

"ज्यादा पास रहना भी ठीक नहीं होता। बस, रात को ही आया कर।" मिसेज शर्मा बोली, "ये बता, क्या बैंक में डकैती करने वाले पकड़े जाएंगें?"

"पता नहीं, मैं उधर जाता हूं। कोई नई खबर मिली तो बताने आऊंगा।"

“रात को एक बार ही आना। बार-बार आने की कोई जरूरत नहीं है।”

□□

सूरमा परेशान हो रहा था।

बारह बज रहे थे। गोलू नहीं आया था। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। गोलू को कहीं काम होता तो भी वह एक बार अवश्य आता था। बेशक मिनट भर के लिए आए।

परंतु आज गोलू पहुंचा ही नहीं।

गोलू के इंतजार में बैठा सूरमा ये भी सोचे जा रहा था कि सत्तर लाख का क्या करना है। उनसे क्या खरीदे, कहां-लगाए पैसे को?

दोपहर हो गई। दो बजे तो भूख सी लगी। पहले तो यही सोचा कि होटल से खा ले, फिर कस्तूरी का ध्यान आया कि उसने खाना बना रखा होगा। खाना भी खा आता है और कुछ देर कस्तूरी के साथ भी बिताएगा।

यही सोचकर वो घर पहुंचा।

कस्तूरी कहीं दिखाई न दी और बच्चा रोता मिला। सूरमा ने बच्चे को गोद में उठा लिया और कस्तूरी को तलाश करने लगा। पैसे को भी तलाशा, लेकिन कुछ भी नहीं मिला।

सूरमा के पैरों तले जमीन निकल गई।

तो क्या कस्तूरी पैसे लेकर भाग गई?

बच्चा उठाए सूरमा पड़ोस के घर पहुंचा। वहां कस्तूरी को पूछा।

"गोलू के साथ जाते देखा था उसे।" पड़ोस की औरत ने बताया।

"गोलू के साथ...!" सूरमा के होंठों से निकला।

"हां, साथ में एक सूटकेस भी उठा रखा था।"

सूरमा तुरंत घर पहुंचा और वहां रखे सूटकेस को तलाशा।

नहीं मिला।

सूरमा समझ गया कि कस्तूरी और गोलू नोटों के साथ उसे धोखा देकर भाग गए हैं।

सूरमा ने अपना माथा पकड़ लिया।

कस्तूरी और गोलू पर उसने अंधा विश्वास किया और वे उसे बरबाद करके भाग गए। वहीं बैठा सूरमा दुःख में डूबा रहा। समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। जिंदगी में पहली बार सत्तर लाख की सूरत देखी थी और वो भी हाथ से निकल गया। गोलू और कस्तूरी के चेहरे आंखों के सामने नाच उठे।

बांहों में फंसा बच्चा पुनः रोने लगा।

सूरमा ने बच्चे को देखा। कमीनी बच्चे को भी छोड़ गई।

सूरमा बच्चा उठाए वहां से निकला और पैदल ही चलता हुआ चांदीलाल के घर पहुंचा।

चांदीलाल बियर की बोतल खोले बैठा था।

"तू बच्चे को कब से खिलाने लगा?" चांदीलाल ने पूछा।

"बहुत बुरा हुआ!"

"क्या?"

"कस्तूरी और गोलू पैसा लेकर भाग गए और छोड़ गए।"

"ओह।" चांदीलाल ने गहरी सांस ली, "तो दोनों में पहले से ही खिचड़ी पक रही थी।"

"गलती मेरी थी।" सूरमा उखड़े स्वर में बोला।

"क्या?"

"मैं गोलू को हर रोज दोपहर का खाना लेने भेजा करता था।"

"तो तेरे को इतनी समझ नहीं कि अपनी औरत के पास दूसरे को बार-बार नहीं भेजते। देख लिया नतीजा।"

"पता नहीं गोलू ने ऐसा क्यों किया, वो तो बहुत शरीफ था।"

"वो शरीफ था, लेकिन तेरी वो तो शरीफ नहीं होगी। घुमा दिया उसने गोलू को।" चांदीलाल मुंह बनाकर उठा और एक गिलास ले आया। उसमें बियर डालकर सूरमा को दी, "ले, पी ले।"

सूरमा ने बच्चो को लिटाया और गिलास थाम लिया।

"अब क्या करेगा तू?"

"बच्चे को पालना है। कोई तो इंतजाम करना ही पड़ेगा। तब तक बच्चे को तू रख ले।"

"म..मैं!"

"इस दुःख की घड़ी में तू मेरा साथ नहीं देगा?"

"ठीक है, ठीक है। दो चार दिन तेरा साथ दूंगा और सुन जरूरत हो तो मेरे से लाख रुपया ले

जाना। वापस नहीं लूंगा। तेरे लिए इतना ही कर सकता हूं।" चांदीलाल कह उठा।

□□

जुगल किशोर की आंखें खुलीं। उस वक्त सुबह के नौ बज रहे थे। उसके कानों में कभी-कभार वाहनों के गुजरने की आवाज पड़ जाती थी। करीब डेढ़ सौ फीट दूर हाइवे था।

ये सफेदे के पेड़ों का झुरमुट था।

सत्तर-अस्सी पेड़ एक ही जगह पर घेरे में इस तरह मौजूद थे कि उनके आर-पार देखना संभव नहीं था। उन्ही पेड़ों के बीच करोड़ों रुपयों से भरी, ठूंसी, वो फिएट कार मौजूद थी। ये जगह जीरकपुर में ही आती थी। पास ही गंदे पानी का छोटा-सा तालाब था। शायद बरसात का पानी वहां इकट्ठा हो जाता था। आस-पास झाड़ियां भी थीं। दूर खेत नजर आ रहे थे। खेतों से इस तरफ देख पाना आसान नहीं था।

जुगल किशोर उठा। कपड़ों से लिपट आई घास को झाड़ा और कार की तरफ बढ़ा।

अगली वाली सीट पर चंदा उकडूं सी नींद में डूबी हुई थी। पीछे मौजूद नोटों की गड्डियों के ढेर पर चादर डाल रखी थी। सूर्य की गर्मी अब धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी।

जुगल किशोर ने खिड़की से हाथ भीतर करके उसे हिलाया।

"उठ।"

"क्यों?" नींद में ही वो बोली।

"क्योंकि मैं उठ गया हूं।"

चंदा ने कठिनता से आंखें खोलीं। सारी रात की जागी, दिन की रौशनी फैलने पर ही वो सो पाई थी।

"अब सूर्य भी निकल आया है।" जुगल किशोर ने कहा और आस-पास देखते हुए सिगरेट सुलगा ली।

चंदा सीधी होकर बैठी।

नजरें पीछे घुमाई।

कई पलों तक नोटों पर पड़ी चादर को देखती रही,फिर हाथ बढ़कर चादर का किनारा पकड़कर उसे ऊपर उठाया। नोटों की गड्डियों के दर्शन हुए। तभी जुगल किशोर का स्वर कानों में पड़ा।

"इसमें से पचास लाख तुम्हारे हैं।"

चंदा ने गरदन घुमाकर उसे देखा।

"पचास लाख के साथ लाख की पंद्रह गड्डियां वो भी हैं, जो मैंने उस कार से उठाकर इस कार में डाली थी। याद है या याद दिलाऊं?"

"अपना कमीनापन याद दिलाने की जरूरत नहीं।"

"और दस लाख तुमने रात का मुझे देना है।"

जुगल किशोर ने गहरी सांस ली और पुनः आस-पास देखा।

"खाने को कुछ नहीं है और भूख भी लग रही है।"

"ले आओ।"

"ले आऊं! तुम्हें दस लाख किस बात का दे रहा हूं।" जुगल किशोर ने उसे घूरा।

"मैं इन नोटों से वास्ता रखते काम ही करूंगी। तुम्हारे लिए रोटी सब्जी नहीं ढोने वाली।"

"तुम्हें भी तो भूख लगेगी।"

"लगेगी क्या, लग रही है। तुम लाओ। हम दोनों एक साथ बैठकर खाएंगे।"

"बेबकूफ समझ रखा है मुझे।"

"क्यों?" चंदा नीचे झुकी और पावों के पास पड़ी नायलोन की डोरी उठा ली।

"मैं खाने का सामान लेने जाऊं और पीछे से तुम करोंड़ों रुपयों से भरी कार लेकर भाग जाओ।"

चंदा ने नायलोन की रस्सी नीचे रखी और दरवाजा खोलकर कार से बाहर आ गई।

"तुम मुझे कमीनी समझते हो कि...।"

"तुम हो ही।"

चंदा गहरी सांस लेकर रह गई।

"हम दोनों के बीच बेकार का शक खड़ा हो गया है।"

"क्योंकि हमारा धंधा ही ऐसा है।"

चंदा ने जुगल किशोर को देखा।

"तो खाना-पीना कैसे होगा?"

"नोट खाओ और पेट भरो।" जुगल किशोर मुस्करा पड़ा, "किस्मत वाले नोट खाते हैं।"

"ये मजाक की बात नहीं है। हम दोनों में से एक को तो खाने-पीने का सामान लाना होगा।"

"दोनों भी, एक साथ खाने-पीने का सामाने लेने जा सकते हैं।"

"कार में भरा करोड़ों रुपया इस तरह अकेले छोड़कर नहीं जा सकती। भूखा रह लूंगी।"

"तुम्हारा है ही कितना। पचास सत्तर अस्सी लाख।"

"मेरे लिए इतना ही बहुत है।"

जुगल किशोर ने कश लेकर सिगरेट एक तरफ उछाली, फिर कहा।

"ज्यादा से ज्यादा दस बजे तक बात आम हो जाएगी कि बैंक में डकैती हो गई है। फिर हर तरफ पुलिस ही पुलिस होगी। सड़कों पर बैरियर लग जाएंगें। आते-जाते वाहनों की तलाशी होने लगेगी। जिस पर जरा भी शक होगा, उसे पकड़कर थाने पहुंचा दिया जाएगा। दो-तीन सड़कों पर पुलिस रूपी खतरा दौड़ता रहेगा।"

"देवराज चौहान क्या कर रहा होगा?" चंदा एकाएक बोली।

"अगर उसे पता चल गया होगा कि कार में से रुपया गायब है तो वो हमें तलाश कर रहा होगा।"

"मेरे ख्याल से वो हमें तलाश नहीं करेगा।" चंदा ने कहा।

"क्यों?" जुगल किशोर ने उसे देखा।

"क्योंकि बैंक के आस-पास पुलिस ही पुलिस होगी। हो सकता है पुलिस बैंक कॉलोनी में रहने वालों को भी चैक करे। ऐसे में उसे पता चल गया कि पैसा कोई और ले उड़ा है तो वो रुकेगा नहीं वहां।" चंदा ने कहा, "तब उसे पता चल जाएगा कि किसी और की नजर उस पर है। उसकी मौजूदगी के बारे में पुलिस को भी खबर की जा

सकती है। ऐसे में वो बैंक कॉलोनी से दूर निकल जाना ही ठीक समझेगा।"

जुगल किशोर ने कंधे उचकाए और वापस पेड़ की छाया में जा बैठा।

"तुम बैठ गए। खाने-पीने का कोई इंतजाम करो।"

"तुम करोगी। मैं तुम्हें नोटों के पास अकेला छोड़कर नहीं जा सकता।"

"तो बैठे रहो भूखे।"

जुगल किशोर ने पेड़ के तने से टेक लगाकर आंखें बंद कर ली।

चंदा वहीं खड़ी कई पलों तक जुगल किशोर को देखती रही। फिर पलटकर उसने कार का दरवाजा खोला और अपनी सीट के पैरों में पड़े छोटे से सूटकेस को उठाकर सीट पर रखा और उसे खोला। भीतर ब्यालीस लाख के नोटों की गड्डियां पड़ीं थीं।

चंदा ने साइड में हाथ डालकर वहां रखी रिवॉल्वर निकाली और अपने कपड़ों में छिपा ली। सूटकेस बंद करके वापस रखा और दरवाजा बंद करके इधर-उधर टहलने लगी।

चंदा की निगाह वहां बिखरे पत्थरों पर जाने लगी।

शीघ्र ही उसकी निगाह नदी के एक पत्थर पर जा टिकी, जो कि बेहद मजबूत था और तीन-चार किलो का भार होगा उसका। उसने जुगल किशोर को देखा। वो छाया में अभी भी आंखें बंद किए बैठा था।

चंदा ने आगे बढ़कर पत्थर उठाया और दोनों हाथ इस तरह पीठ पर बांध लिए कि जैसे वह टहल रही हो। इसी अंदाज में जुगल किशोर की तरफ बढ़ने लगी।

"इतनी गर्मी में तीन-चार दिन यहां बिताने कठिन हैं।" जुगल किशोर एकाएक आंखें खोलकर कह उठा।

"मैं बिता लूंगी।" सामान्य स्वर में कहते हुए चंदा ठिठकी।

"पुलिस से बचने और नोटों को अपना बनाने के लिए बिताने तो पड़ेंगे ही।" जुगल किशोर ने कहा। वो सोच भी नहीं सकता था कि चंदा ने पीठ पर बांधे हाथ में पत्थर थाम रखा है उसके लिए।

"तुम।" जुगल किशोर बोला, "जब खाना लेने जाओगी तो कार की चाबी साथ ले जाना। इससे तुम्हें तसल्ली रहेगी कि मैं नोटों से भरी कार लेकर भाग नहीं जाऊंगा।"

"तुम तो बिना चाबी के भी कार स्टार्ट कर सकते हो।" चंदा मुंह बनाकर बोला और आगे बढ़ी।

"सच में तुम घटिया हो।"

चंदा उसके पास पहुंचकर ठिठकी।

"तुम्हारी नजरें घटिया हैं, वरना मैं तुम्हें बढ़िया नजर आती। इतने पैसे पास होते हुए तुम शादी अवश्य कर लेते।"

"भाड़ में जा।" जुगल किशोर ने कहा और आंखें बंद कर ली।

यही पल जुगल किशोर के लिए भारी थे।

चंदा ने मौका नहीं गंवाया और बिजली की सी तेजी से पत्थर वाला हाथ आगे लहराया और जोरों से उसके माथे पर दे मारा। ये सब पल में हो गया।

"आ..ह...।" जुगल किशोर के होंठों से पीड़ा भरी कराह निकली। अगले ही पल उसने माथे पर हाथ रखे उठना चाहा।

चंदा का हाथ पुन' घूमा और पत्थर पुनः जुगल किशोर के माथे पर।

जुगल किशोर के होंठों से तीव्र चीख निकली और उठते-उठते वो वहीं लुढ़क गया। उसका माथा खून से भर गया। दोनों हाथों से उसने माथा-सिर थाम रखा था।

चंदा हाथ में पत्थर पकड़े, दांत भींचे जुगल किशोर को शेरनी की तरह घूरे जा रही थी।

अगले ही पल जुगल किशोर लुढ़कता हुआ नीचे गिर गया।

चंदा सावधानी से आगे बढ़ी। वो पुनः वार करने को तैयार थी परंतु जुगल किशोर बेहोश हो चुका था। उसका माथा खून से सना हुआ था।

चंदा ने पूरी तसल्ली की कि वो सच में बेहोश है।

उसके बाद उसने पत्थर दूर फेंका और कार से जाकर नाइलोन की डोरी ले आई। उस डोरी से उसने जुगल किशोर के हाथ-पांव सख्ती से बांधे कि होश में आने पर जुगल किशोर उसे खोल न सके।

इस सारे काम से फुरसत पाकर चंदा जहरीले अंदाज में हौले से हंस पड़ी।

"मेरे से पंगा लेता है हरामी। जानता नहीं अभी मुझे ठीक से। पंद्रह करोड़ में से मुझे पचास लाख दे रहा है। बाकी खुद खा जाना चाहता है। साला यहीं बंधा-बंधा मरेगा। ये सारे करोड़ मेरे हैं, सिर्फ मेरे। अमीर हो गई मैं।" चंदा देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। हंसती रही।

□□

सूरमा का मूड बहुत खराब था।

वो सत्तर लाख को भूल नहीं पा रहा था, जो कस्तूरी और गोलू ले उड़े थे। दोनों पर अपने से भी ज्यादा भरोसा था और उसे बुरी तरह धोखा दिया था दोनों ने। बच्चे को तो चांदीलाल के हवाले कर आया था। वो जानता था कि इन हालातों में कुछ दिन के लिए चांदीलाल बच्चे को संभाल लेगा।

वो वापस खोखे पर आकर बैठ गया था।

दो तीन पंचर लगावाने आए थे परंतु सूरमा का मन खराब था। काम नहीं किया।

शाम के पांच बज रहे थे। मरों की तरह पेड़ की छांव में कुर्सी पर अधमरा-सा बैठा था। तभी उसकी निगाह चंदा पर टिक गई। हाथ में बड़े-बड़े लिफाफे पकड़े इधर-उधर देखती परेशान-सी आगे बढ़ रही थी।

घुटनों तक लंबी स्कर्ट और सफेद कमीज पहन रखी थी। बोलों की लटें चेहरे पर आ रही थीं और चेहरा पसीने से भरा था। पास आती वो सूरमा के करीब से आगे निकलती चली गई।

सूरमा ने गहरी सांस ली और आंखें बंद कर ली। चंदा को देखकर उसे कस्तूरी की याद आ गई थी। वो भी ऐसी ही खूबसूरत थी, परंतु नंबरी हरामी निकली।

तभी कदमों की आहट पर सूरमा ने आंखें खोलीं।

चंदा लौटकर उसके पास ही आ खड़ी हुई थी।

"सुनो।" वो बोली,"मुझे आगे तक जाना है, यहां से कोई ऑटो नहीं मिल रहा।"

"किधर आगे तक?"

चंदा ने लिफाफा नीचे रखे और चंडीगढ़ की तरफ जाती सड़क की तरफ इशारा किया।

"उधर।"

"मैडम, उधर तो ये सड़क चंडीगढ़ तक जाती है। जगह का नाम भी तो होगा, जहां जाना है।"

चंदा उलझन में पड़ी खड़ी रही।

"वो उधर बैंक से पहले जाना है उसके पार?"

"बैंक के पार। वहां से दो किलोमीटर आगे।"

"उधर कोई ऑटो तो नहीं जाएगा।"

"ओह..! तो मैं कैसे जाऊं?"

"पैदल चली जाओ।"

"पैदल...नहीं थक जाऊंगी।"

"आई कैसे थी?"

"लिफ्ट लेकर।"

"तो यहां से लिफ्ट ले लो। हाथ दे दो, कोई गाड़ी रुक जाएगी।"

चंदा ने एक तरफ खड़े उसके रंग-बिरंगे स्कूटर को देखा।

"ये स्कूटर तुम्हारा है?"

"हां।"

"चलता है?"

"दौड़ता है, तुम्हें क्या?"

"तुम मुझे वहां तक छोड़ दो।"

"मैं!"सूरमा ने जली-भुनी निगाहों से उसे देखा, "क्यों, तुम मेरी क्या लगती हो जो...।"

"प्लीज चलो ना।" चंदा ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

सूरमा ने उसका हाथ हटा दिया।

"दोबारा हाथ मत रखना।"

"क्यों?"

"तुम सब हरामी होती हो। पहले हाथ रखती हो, फिर हाथ फेरती हो। उसके बाद राजा बनाओगी और लात मारकर भाग जाओगी।"

"म..मैंने ऐसा तो नहीं किया तुम्हारे साथ।"

"तुमने नहीं किया तो तुम्हारी जैसी दूसरी ने तो किया है। साली मेरा पैसा लेकर भाग गई।"

"कब?"

"आज ही। साली को रखवाली के लिए पैसों के पास ही बिठाकर गया था।"

"कितना?"

"सत्तर ला....हजार।"

"सत्तर हजार..ओह। बुरा हुआ तुम्हारे साथ। तुम मुझे वहां तक छोड़ दो। मै। तुम्हें पैसे दूंगी।"

"सत्तर हजार दोगी?"

“इतना तो नहीं है मेरे पास। मैं तुम्हें इतना दे दूंगी कि तुम नया स्कूटर ले सको।”

“नया स्कूटर-मतलब कि पच्चीस हजार।”

“हां, परंतु दूंगी कल, आज-अभी नहीं।”

“तुम जैसी पर विश्वास कौन करेगा?”

“कर ले।” चंदा ने पुनः कंधे पर हाथ मारा, “अभी भला जमाना खत्म नहीं हुआ।”

सूरमा ने चंदा को देखा।

चंदा मुस्कराई।

सूरमा इस बार उसकी मुस्कान पर शांत पड़ गया। वो उठा।

“चल।”

फिर सूरमा ने जैसे-तैसे स्कूटर स्टार्ट किया।

चंदा लिफाफे थामकर पीछे वाली सीट पर जा बैठी।

सूरमा ने थरथराता, रंग बिरंगा स्कूटर आगे बढ़ा दिया।

“आ-हा...।” चंदा बोली, “स्कूटर पर बैठने का भी अपना ही मजा है।”

“वहां पर तूने किधर जाना है?” बैंक पार करके आगे तो हर तरफ सुनसान हाईवे है।” सूरमा ने पूछा।

“आगे ही जगह।”

“वो ही तो पूछ रहा हूं कि कौन-सी जगह है?”

“ये तो मुझे भी नहीं मालूम, लेकिन वहां है जगह।”

“कमाल है।” सूरमा स्कूटर चलाता बोला, “वहां और कौन है तेरा?”

“मेरा..पति है। पति है वहां।”

"वो वहां सुनसान जगह पर क्या कर रहा है?"

"तुम सवाल बहुत पूछते हो।"

"ये सवाल नहीं है, बाते हैं। सुनसान जगह पर तुम्हें जाते देखकर हर कोई पूछेगा कि तुम वहां क्या करने जा रही हो?"

"वहां कार पर मेरा पति मौजूद है। तुम्हारे लिए इतना जान लेना ही बहुत है।"

स्कूटर बैंक के सामने निकला।

वहां कुछ पुलिस वाले दिखे।

दोनों ने चोर निगाहों से बैंक की तरफ देखा।

"यहां पुलिस क्यों है?" चंदा ने पूछा।

"बैंक में डकैती पड़ गई है।"

"डकैती। हे भगवान।" चंदा ने लंबी आवाज करके कहा और बांह सूरमा की कमर से लपेट ली। दूसरे हाथ में लिफाफे पकड़े हुए थे, "दो-चार लाख तो डकैत ले ही गए होंगें।"

"सुना है करोड़ों रुपया ले गए हैं।" सूरमा मन मारकर बोला।

"करोड़ों रुपया। सच?"

"हां।"

"फिर तो उनके मजे आ गए होंगें।"

"भगवान जाने किसके मजे आए हैं। मेहनत कोई करे और मजे कोई ले।"

"क्या कहा?"

"कुछ नहीं। तुमने कहां तक जाना है?"

"थोड़ा आगे।"

दस मिनट बाद चंदा कह उठी।

"बस, यहीं रोक दो।"

सूरमा ने स्कूटर रोका। ये सारी जगह सुनसान थी। सड़क पर तेज रफ्तार से वाहन निकल रहे थे। सूरमा ने हर तरफ निगाह मारी। तब तक लिफाफों को थामे चंदा स्कूटर से नीचे उतर आई।

"यहां तो कोई भी नहीं है।" सूरमा ने चंदा को देखा।

"मेरे पति कार के साथ यहीं पर थे। देर होती देखकर शायद मुझे ढूंढ़ने चले गए होंगें। अभी आ जाएंगें।"

"लेकिन तुम्हारे पति यहां खड़े कर क्या रहे थे?"

"गाड़ी गरम हो गई थी, उसे ठंडा करने के लिए यहीं खड़े हो गए तो मैं सामान खरीदने जीरकपुर चली गई।"

"कमाल है।" सूरमा ने मुंह बनाकर कहा, "मैं जाता हूं।"

"मैं आऊंगी कल। नए स्कूटर के लिए पैसे दूंगी।" चंदा ने मुस्कराकर कहा।

सूरमा ने चंदा को ऐसे देखा, जैसे वो पागल हो। फिर स्कूटर वापसी के लिए मोड़ दिया।

चंदा वहीं पर तब तक खड़ी रही, जब तक कि सूरमा वापस जाता दिखाई देता रहा। इस बीच सूरमा ने दो बार गरदन घुमाकर पीछे उसकी तरफ देखा था।

सूरमा निगाहों से ओझल हो गया।

लिफाफे थामे चंदा सड़क से नीचे कच्चे में उतरी और तेजी से आगे बढ़ गई।

□□

जुगल किशोर के होंठों से कराह निकली। उसके बाद पीड़ा भरी कई कराहें निकलीं। बंद पलकें कांपी और धीरे-धीरे आंखें खुल गईं।

सिर दर्द से फटा जा रहा था।

माथे पर खून जमा था। आंखों को पूरा खोलने में कठिनाई हो रही थी। गला खुश्क हो रहा था। उसी पल उसे एहसास हुआ कि उसके हाथ-पांव बंधे हुए थे।

सबसे पहले निगाह टांगों पर पड़ी।

नाइलोन की डोरी से पिंडलियां कस कर बांधी हुई थीं।

हाथ पीछे की तरफ करके बांधे हुए थे।

जुगल किशोर ने छटपटाकर बंधनों से आजाद होना चाहा, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। वो कई पलों तक पिंडलियों पर लिपटी नाइलोन की डोरी को देखता रहा।

पहचान गया था कि ये वही डोरी है, जो चंदा ने चादरों के साथ खरीदी थी। उस वक्त तो जुगल किशोर को लगा था कि बे-मतलब ही खरीदी है नाइलोन की डोरी।

परंतु अब ये बात स्पष्ट हो गई थी कि चंदा हर काम बहुत सोच-समझकर कर रही थी। उसने पहले से ही प्रोग्राम बना रखा कि इस मौके पर उसने गड़बड़ करनी है और उस पर काबू पाकर उसके हाथ-पांव बांध देने हैं। वो ही उसने किया भी। पहले पत्थर मारकर उसे बेहाश किया और फिर बांध दिया।

एकाएक उसे चंदा बेहद खतरनाक लगने लगी थी। दौलत को करीब पाकर वो और भी वहशी हो गई थी।

जुगल किशोर ने तो सोचा भी नहीं था कि चंदा इस हद तक पहुंच जाएगी।

जुगल किशोर ने बंधनों में खुद को असहज महसूस किया और इधर-उधर नजरें दौड़ाईं।

चंदा उसे कहीं भी दिखाई न दी।

सूखे गले को थूक से तर किया।

शाम हो चुकी थी। सूरज पश्चिम की तरफ झुक चुका था। चूंकि वो पेड़ों के झुरमुट में था, इसलिए गरमी का एहसास उसे कम हो रहा था। जुगल किशोर ने पुनः बंधनों को ढीला करने की चेष्टा की।

कोई फायदा न हुआ।

बंधन मजबूती से बांधे हुए थे।

जुगल किशोर की निगाह चंद कदमों की दूरी पर पेड़ों के झुरमुट में खड़ी कार पर जा टिकी। करोड़ों रुपयों से भरी हुई थी कार। सारा माल उसका था, परंतु चंदा के बीच में आ जाने से सब गड़बड़ा गया था।

चंदा के कहीं भी नजर न आने पर वो समझ गया कि चंदा जीरकपुर में खाने का सामान लेने गई होगी।

कुछ वक्त और बीता।

शाम का साया पूरी तरह फैल गया।

जुगल किशोर ने अंदाज लगाया कि पैंतालीस-पचास मिनट में अंधेरा फैलना शुरू हो जाएगा।

जुगल किशोर को अपने बंधे होने पर तरस आया कि एक लड़की के हाथों मात खा गया, परंतु अब कुछ नहीं हो सकता था। उसे मजबूती से बांधा हुआ था।

फिर कदमों की मध्यम सी आहट उसके कानों में पड़ी।

हाथ-पैर बंधे होने के कारण वो आहटों की तरफ, पीछे घूमकर नहीं देख सकता था।

चंद पलों के बाद ही चंदा लिफाफे थामे उसके सामने आ खड़ी हुई।

जुगल किशोर ने दांत भींचकर खा जाने वाली नजरों से उसे देखा।

चंदा गहरी सांस लेकर मुस्कराई और उसके सामने ही बैठ गई।

"तुम कुतिया हो।" जुगल किशोर गुर्राया।

"बहुत देर बाद पता चला तुम्हें।" चंदा हंसी।

"तुम जैसी हरामजादी के टुकड़े-टुकड़े कर देने चाहिए।"

"हाथ-पैर तो बंधे हुए हैं, कैसे करोगे?"

"घटिया औरत, मेरे हाथ पांव खोल।" जुगल किशोर का गुस्सा सातवें आसमान पर था।

"तेरे को खोलकर मैंने मुसीबत नहीं लेनी, तू ऐसे ही अच्छा लगता है प्यारे।"

"जलील औरत।"

"तेरे मुंह से गालियां मुझे फूलों की तरह लग रही हैं। दे-और दे।"

जुगल किशोर मौत से भरी नजरों से उसे देखता रहा।

"ये देख। तेरे लिए मैं क्या लाई हूं।" चंदा मुस्कराकर लिफाफे खोलती कह उठी, "चार पानी की बोतलें। खोने के लिए रोटी-सब्जी। ब्रेड-बटर-बिस्कुट। दो दिन तो निकल ही जाएंगें हमारे।"

"तूने पहले से ही सोच रखा था कि इस मौके पर मेरे को बांधेगी, तभी रस्सी खरीदी।"

चंदा ने मुस्कराकर सिर हिलाया, फिर बोली।

"मेरा मुन्ना अब समझदार हो गया है।"

"क्यों किया तूने ऐसा?"

"कार में रखी करोड़ों की दौलत की अकेली मालकिन बनने के लिए।" चंदा ने गहरी सांस ली।

"तो लालच ने तेरे दिमाग पर काबू पर लिया।" कड़वे स्वर में कह उठा जुगल किशोर।

"ये लालच नहीं, तरक्की का रास्ता है। हर कोई तरक्की करना चाहता है। मैंने जो भी किया अपने भविष्य को संवारने के लिए किया। तेरे को मेरा अहसानमंद होना चाहिए।"

"क्यों?" जुगल किशोर दांत किटकिटाए।

"मैंने तेरी जान नहीं ली। बेहोश करके हाथ-पांव बांधे है। उसूल से तो मुझे तेरी जान लेनी चाहिए थी।"

जुगल किशोर की मौत सी नजरें चंदा पर टिकी रहीं।

"क्या देखता है प्यारे।"

"तू बहुत घटिया-गंदी औरत है।"

"कह ले। जंगली शेर पिंजरे में बंद होगा तो गुर्राएगा ही। गुर्रा ले, गुर्रा ले।"

जुगल किशोर ने मजबूरी से भरी, सांस ली।

चंदा व्यंग भरी मुस्कान के साथ उसे देखती रही।

"एक बात कहूं?" जुगल किशोर बोला।

"दो कह।"

"दौलत तेरी न मेरी। ऊपरवाले ने छप्पर फाड़ा है, समझदार बन और आधी-आधी बांट ले। पंगा न ले।"

"तेरी ये समझदारी पहले कहां गई थी, जब तू मुझे सिर्फ पचास लाख रुपया मजदूरी दे रहा था।" चंदा ने कड़वे स्वर में कहा।

"तब की बात छोड़।"

"क्यों छोड़ूं? उस वक्त बाजी तेरे हाथ में थी और तू अपना डंडा घुमा रहा था। अब बाजी मेरे हाथ में है प्यारे और मेरा डंडा देख कि वो कैसे घूमता है। ये सारे नोट मेरे हैं सिर्फ मेरे हैं।" चंदा ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"पागलों वाली बात न कर।"

"तेरे को मैं पागल नजर आती हूं।"

"नोट इस वक्त खुले में हैं। तू इन्हें अकेली संभाल नहीं पाएगी। कहीं ले जा न सकेगी। पकड़ी जाएगी।"

"बहुत चिंता हो रही है मेरी।" कहर भरे स्वर में चंदा हंसी।

"तेरी नहीं, नोटों की चिंता है। सारे नोट डुबो देगी तू। पंद्रह-सत्रह करोड़ कम नहीं होते। आधे-आधे बांट ले। दोनों मजे करेंगें। कई क्लेश कट जाएंगें। जीना आसान हो जाएगा।"

"वाह...। तू तो मेरे जीवन की नैय्या को खेने में लग गया है।"चंदा व्यंग से कह उठी।

जुगल किशोर ने उसे घूरा।

"संभाल लेगी तू इतने रुपयों को अकेले?"

"प्यारे, मुझे तो ये भी कम लग रहे हैं और तू इन्हें संभाल लेने को पूछ रहा है।"

"क्या करेगी इतने नोटों का, रातों की नींद हराम हो जाएगी।"

"इन्हें अपने पास रखकर पति नाम का गधा खरीदूंगी, जो मेरे हाथ-पांव दबाएगा। मेरी सेवा करेगा। इस तरह आराम से जीवन बीत जाएगा। ये ही बढ़िया रास्ता है मेरे लिए।"

"बहुत शौक है तेरे को शादी का।"

"इसलिए कि शादी करके मैं चैन से एक तरफ बैठ..।"

"ठीक है मैं तेरे शादी करूंगा।"

"हूं?" हंस पड़ी चंदा।

"तूने कई बार कहा तो था शादी करने को।"

"पुरानी हो गई बात। मुझे शादी करने के लिए गधा चाहिए, तेरे जैसा चालाक गीदड़ नहीं।"

जुगल किशोर ने गहरी सांस ली, फिर कह उठा।

"सोच लेना तू। कोई जल्दी नहीं है। मेरे हाथ खोल।" स्वर में लापरवाही थी।

"क्यों?"

"भूख लगी है। सुबह से कुछ खाया नहीं।"

"तो इसमें हाथ खोलने की क्या जरूरत है?" चंदा हौंले से हंसी।

"क्या मतलब?"

"मैं तेरे को अपने हाथों से खिलाऊंगी, प्यार-प्यार से।"

जुगल किशोर ने खा जाने वाली नजरों से चंदा को देखा।

"नाराज हो गया।"

"बहुत उड़ रही है तू, तू...।"

"उड़ेगी क्यों नहीं। कॉकपिट पर मेरा कब्जा है।"

□□

सोढ़ी परेशान था।

देखने वाला यही समझता कि बैंक डकैती हो जाने की वजह से वो परेशान है। हकीकत में वो इसलिए परेशान था कि कहीं पुलिस को पता न चल जाए कि उसने डकैतों की सहायता की है।

सारा दिन पुलिस उससे तरह-तरह के सवाल पूछती रही।

वो समझदारी से जवाब देता रहा।

शाम तक सोढ़ी बुरी तरह परेशान हो गया था। पुलिस वालों के सवालों से कई बार उसे लगता कि पुलिस उस पर शक कर रही है, परंतु ऐसा कुछ नहीं था। मन-ही-मन वो चाहता था कि पुलिस का झंझट खत्म हो। डकैती की बात दब जाए।

जीरकपुर पुलिस के अलावा दोपहर को चंडीगढ़ की पुलिस भी आ गई थी।

उसे सुनने को मिला कि पुलिस वाले कह रहे हैं कि बैंक में डाका डालने वाले डकैती के बाद शनिवार को ही जीरकपुर से भागकर चंड़ीगढ़ जा पहुंचे थे। वहां मिली हार्डवेयर चाचा की कार में रिवॉल्वर और नोटों की गड्डियां

मिली थीं। गड्डियों की पहचान पुलिस ने करा ली थी बैंक से कि वो गड्डियां बैंक लूटे गए नोटों में से ही है।

यानी कि पुलिस को पूरा यकीन था कि बैंक लूटने वाले चंडीगढ़ की तरफ भाग गए हैं।

पुलिस की इस सोच पर सोढ़ी कुछ राहत मिली।

रात को दस बजे थका-हारा वापस घर पहुंचा।

बीबी घबराई हुई थी।

"आप ठीक तो हैं?"

"मुझे क्या होना है।" सोढ़ी उखड़ा सा बोला।

"मैं डर रही थी कि पुलिस ने डकैतों की सहायता करने के चक्कर में आपको पकड़ न लिया हो।"

"पुलिस को भला कैसे पता चलेगा कि मैंने ऐसा कुछ किया है।" सोढ़ी अनमने भाव से बोला।

"वो पुलिस वाला मिला, परमजीत सेठी?"

"नहीं, तुम खाना लगाओ। ताजी-ताजी बैंक डकैती हुई है, जाने कब पुलिस का बुलावा आ जाए।"

सोढ़ी हाथ-मुंह धोकर हटा ही था कि फोन की बेल बजी।

"हैलो।" सोढ़ी ने मुसीबत भरे अंदाज में रिसीवर उठाया।

"मैं देवराज चौहान का दोस्त जगमोहन बोल रहा हूं।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"अब क्या है?"

"सीधी तरह बात कर, रो क्यों रहा है? तू ठीक है न?"

"अभी तक तो ठीक हूं।"

"आगे भी रहेगा। पुलिस को कुछ मिला?"

"क्या मिलना है?"

"बैंक डकैती के नोट, करोड़ों रुपया?"

"वो तो तुम लोगों के पास है। पुलिस को भला कैसे मिल जाएंगें?" सोढ़ी ने उखड़े स्वर में कहा।

जगमोहन के गहरी सांस लेने का स्वर सोढ़ी को स्पष्ट सुनाई दिया।

"मतलब कि पुलिस को कुछ नहीं मिला।

"अजीब बात कर रहे...।"

उधर से जगमोहन ने फोन बंद कर दिया था।

सोढ़ी ने रिसीवर रखा और बड़बड़ा उठा।

"चैन हराम हो गया है मेरा। डकैती करने के बाद मेरे से पूछता है कि पुलिस को रुपया मिला, जबकि रुपया खुद दबा के रखा हुआ है। जाने ये परेशानी कब खत्म होगी।"

□□

उस रात सूरमा चांदीलाल के घर ही सोया। बच्चे की भी देखभाल की।

चांदीलाल पीकर टुन्न हुआ पड़ा था।

सूरमा ने ही बात शुरू की।

"तुमने वो पचास लाख कहां रखा है?"

चांदीलाल ने नशे से भरी लाल-लाल आंखों से उसे देखा।

"क्यों पूछता है?"

"यूं ही, मन में विचार आ गया।"

"पराई दौलत के लिए मन में विचार नहीं आने चाहिए।" चांदीलाल ने मुंह बनाया।

"कहां रखा है पैसा?"

"कुएं में। टोकरे में डालकर टोकरा कुंऐं में लटका दिया। अब बोल।"

"मैंने क्या बोलना है।" सूरमा उसके पास बैठता कह उठा, "मैं तो कह रहा था कि मेरे हाथ कुछ भी नहीं लगा।"

"लाख रुपया ले ले।"

"मैं सोच रहा था कि तुम्हारे पास जो पैसे हैं, उसे हम आधा-आधा कर लें।"

"वाह बेटा। माल मेरा और आधे-आधे की तू सोच रहा है।" चांदीलाल ने हाथ नचाया, "नीयत ठीक कर ले। लाख रुपया लेना है तो ले ले। हराम का माल नहीं, जो आधा-आधा कर लूं।"

"इतना कठोर न बन। आधा-आधा कर...।"

"कभी नहीं।"

'बहुत कमीना है तू।"

"वो तो हूं ही, फिर भी तेरे को एक लाख देने को कह रहा हूं। लाख रुपया कोई छोटी रकम नहीं होती।"

"वो कुंआ कहां, जहां तूने रुपये वाला टोकरा लटकाया हुआ है।"

"उस कुएं में झांकना भी मत।"

"क्यों?"

"बहुत गहरा है, गिर जाएगा। कुएं के भीतर एक शेर भी रहता है। वो तुझे भीतर खींच लेगा।"

सूरमा ने घूरकर चांदीलाल को देखा।

चांदीलाल ने नशे से भरे दांत फाड़े।

"मुझे आज पता चला कि तू कितना बड़ा कमीना है।" सूरमा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"वो तो हूं ही।"

"तेरा बेटा कोई नहीं है, जिसके सहारे तू अपना बुढ़ापा काटे। मुझे अपना बेटा बनाकर पास में रख ले। लगे हाथ ये पोता भी मिल जाएगा। तेरा नाम खानदान में दूर तक चलेगा।"

"कुऐं में लटका वो टोकरा है ना, उसमें मेरे दस-दस बेटे हैं, जो मेरे नाम को अगले पांच सौ साल तक चलाएंगें। तेरे को मेरे बुढ़ापे के बारे में फिक्र करने की जरूरत नहीं। बाल सफेद हैं तो क्या हुआ, हूं तो अभी मैं जवान ही।"

"आज तो पता चल गया कि तेरे से घटिया कोई दूसरा इस दुनियां में है ही नहीं।"

"पता चल गया तो उधर जा के सो जा। मेरा दिमाग क्यों खा रहा है।"

सूरमा ने सिगरेट सुलगाई और पांच कदम दूर कुर्सी पर जा बैठा।

"साला, तू धुआं बहुत फैलाता है।"

"तू नरक में जाएगा।"

"नरक में जाने से पहले मैं तेरे को एक सूट सिलवा देना चाहता हूं।"

"सूट!"

"बढ़िया वाला।"

“सूट पहनकर मैं पंचर लगाऊंगा और...।”

“बेवकूफ। सूट पहनकर तू मेरी शादी में जाएगा।”

“शादी, तेरी...।” सूरमा सकपकाया, “इस बुढ़ापे में!”

“इंसान को दो बार जवानी आती है। एक जवानी वो, जो भगवान देता है। दूसरी जवानी तब आती है, जब नोट आते हैं। असली जवानी तो नोटों वाली ही होती है, जो अब मेरे पे आई है।” चांदीलाल ने अपनी छाती ठोककर कहा, “अब वो जवानी कहती है कि मुझे फिर शादी कर लेनी चाहिए। बात पक्की हो गई है।”

“किससे?”

“उधर रामपुरा में, रिश्तेदारी में दूर की है कोई। विधवा है, पैंतालीस बरस की है और मुझे क्या चाहिए।”

“वो तो ठीक है, लेकिन तू शादी करके करेगा क्या? खामखाह पड़ोसियों को बढ़ावा देगा।”

“पड़ोसियों को बढ़ावा...ये क्या होता है?”

“पैंतालीस साल की औरत से तू शादी कर रहा है। पैंसठ का तू है। औरत के लायक तो तू रहा नहीं।”

“हाथ-पैर दबवा लूंगा। सिर दबवा लूंगा। घर-बार देखेगी। खाना बनाएगी। बढ़िया करेगी।”

“तेरी तो बढ़िया करेंगी। उसका क्या होगा, तेरे को बेकार देखकर वो पड़ोस में मर्द पर नजर डालेगी।”

चांदीलाल ने लाल-लाल आंखों से उसे देखा।

“ऐसे क्या देखता है।”

“इतना भी गया-गुजरा नहीं हूं कि आने वाली को पड़ोस में झांकना पड़े।”

"वो तू देख कि कितना दम-खम है तुझमें।" सूरमा ने मुंह बनाया, "देखा है उसे?"

"एक बार देखा था, तीन-चार साल हो गए।"

"कैसी है?"

"वैसी ही, जैसी औरत होती है। नींद ले ले और मुझे भी सोने दे। सुबह चार बजे उठकर भगवान का नाम लेना होता है।"

"मुझे पप्पू भाई साहब याद आ रहे हैं।" सूरमा बोला।

"बंदा बढ़िया था वो।"

"बढ़िया?"

"हां।" चांदीलाल ने सिर हिलाया, "पैसा कोई ले उड़ा, लेकिन हमें पैसा देकर अपनी जुबान पूरी की।"

"मैं तो बढ़िया उसे तब कहता, जब जाते-जाते करोड़ रुपया मुझे भी दे जाता।"

"तेरे को दे देता तो उसके पास कुछ बचता ही नहीं। जगमोहन तो हमें भी देने को मना कर रहा था।"

सूरमा ने चांदीलाल को देखा। चुप ही रहा।

"एक बात समझ में नहीं आती।" चांदीलाल ने कहा, "कौन हरामी गाड़ी से पैसा निकालकर ले गया?"

"कोई तो होगा।"

"मानना पड़ेगा उसे। खास तरह का ही हरामी होगा वो।"

सूरमा उठ खड़ा हुआ।

□□

हाथ पैर बंधे होने के कारण रात को ठीक से नींद नहीं ले पाया था जुगल किशोर। ऊपर से सिर की चोट। भोर के उजाले उसकी आंख खुली। पूरा जिस्म अकड़ रहा था। चंदा ने उसके हाथों को खोलना गंवारा न किया था। रात अपने हाथों से उसे खाना खिलाया। पानी पिलाया। अपने इरादों की बहुत पक्की लगी थी चंदा उसे।

जुगल किशोर ने नहीं सोचा था कि चंदा उसके साथ ऐसा कुछ करेगी। अगर उसे जरा भी महसूस हुआ होता तो चंदा को उसने कब का दफा कर देना था। उसने तो सहायक के तौर पर चंदा को साथ रखा था और चंदा ने उसकी रेल-पेल कर दी थी। उसे कुत्ते की तरह बांधकर एक डाल दिया था।

पांच कदम दूर घास पर चंदा सोई हुई थी।

नींद में वो खूबसूरत और मासूम लग रही थी।

उसे देखता जुगल किशोर सोचने लगा कि अगर एक बार उसके हाथ-पांव जाएं तो इसका गला काटकर सबसे पहले अलग करेगा, लेकिन वो जानता था कि उसे मौका नहीं मिलेगा।

जुगल किशोर की निगाह कार की तरफ उठी।

कुछ पल देखता रहा। आज पहली बार महसूस हुआ कि उसकी फिएट कार सच में बहुत पुरानी हो गई है। रंग भी फीका पड़ गया है। कई जगह से पेंट उखड़ा हुआ है। टायर घिसे पड़े हैं। कार स्वास्थ्य ऐसा भी नहीं लगता कि अब उसे दवा-दारू देकर दुरुस्त किया जा सके।

तभी चंदा ने करवट ली।

"उल्लू की पट्ठी, उठ जा। सुबह हो गई है।" जुगल किशोर ने कड़वे स्वर में कहा।

चंदा ने आंखें खोलीं और देखते हुए कहा।

"सुबह-सुबह तो भगवान का नाम लिया कर। कैसी भाषा बोलता है।"

"मेरी सुबह हुए एक घंटा हो गया। तेरी अब हुई है। सिगरेट सुलगाकर मेरे होंठों में फंसा।"

चंदा मुस्कराकर उठ बैठी।

"चिंता मत कर। पूरी सेवा करूंगी तेरी। मेजबान बनी हूं तो मेहमान को नाराज नहीं करूंगी।"

जुगल किशोर बुरा सा मुंह बनाकर रह गया।

चंदा ने सिगरेट सुलगाई और उसके होंठों में फंसाकर खड़े होते हुए अंगड़ाई ली।

"हाथ-पैर खोल दे मेरे। मैं भी सीधे कर लूं। उसके बाद बांध देना।" कहने के साथ ही होंठों में फंसी सिगरेट से कश लिया।

"तेरे जैसे कुत्ते बंधे ही अच्छे लगते हैं। खुल गए तो काटे बिना मानेंगें नहीं।"

"कुत्ते की बहुत पहचान है तेरे को।"

"हां।" चंदा ने जहरीली निगाहों से जुगल किशोर को देखा, "कुतियों को कुत्तों की बहुत पहचान होती है।"

"मेरी नहीं तो कम-से-कम अपनी तो इज्जत कर ले। क्यों अपने को कुतिया कहती है।"

इस बार चंदा मुस्कराकर रह गई।

"कहीं से चाय पिला दे।"

"तेरी मां बैठी है यहां चाय लेकर।"

"मैंने सोचा, तेरी बैठी होगी।" जुगल किशोर समझ गया कि चाय नहीं मिलने वाली।

तभी चंदा की निगाह कार के पीछे वाले पहिए पर पड़ी। वो कुछ दबा-सा लग रहा था। चंदा ने आगे बढ़कर पहिया चैक किया और फिर गरदन घुमाकर जुगल किशोर को देखती कह उठी।

"हवा कम है शायद।"

"कार की जान निकली जा रही है। करोड़ों रुपया भर रखा है और टायरों में जान नहीं।" जुगल किशोर हंसा, "जरा सोच, अगर कार का टायर बैठ गया तो तेरा क्या होगा? करोड़ों रुपयों का क्या होगा। मेरे को तूने बांध रखा है और खुद...।"

"जुबान बंद रख। मर नहीं गई मैं।" चंदा ने दांत किटकिटाकर उसे देखा, "बिगड़ी बातों को संवारना आता है मुझे।"

"मुझे संवारेगी। मेरे से फिर से दोस्ती करेगी क्या?"

"पैंट उतारकर तेरे पीछे वो डंडे लगाऊंगी कि याद रखेगा।" चंदा ने कड़ुवे स्वर में कहा, "तेरे को भूल चुकी हूं मैं। जैसे तू कभी मेरी जिंदगी में था ही नहीं। मैं सिर्फ नोटों के बारे में और अपने बारे में सोचती हूं।"

"कार का पहिया पूरी तरह बैठ गया तो क्या करेगी?" जुगल किशोर मुस्कराया।

चंदा ने खा जाने वाली निगाहों से उसे देखा।

"मेरी मान तो कार में बैठ। स्टार्ट कर और यहां से भाग...।"

"मुझे बेवकूफ समझता है क्या। मुझे फंसाना चाहता है। कच्ची नहीं हूं मैं। मुझे यहां से निकलने की कोई जल्दी नहीं है। मैं दस दिन भी यहां टिकी रह सकती हूं। कार का पहिया खराब हो गया तो उसका भी कोई इंतजाम कर लूंगी।"

"तू तो दस दिन यहां रह लेगी, लेकिन मैं तो यहां इतने दिन बंधा नहीं रह सकता। मर जाऊंगा।"

चंदा ने कपड़ों में फंसा रखी रिवॉल्वर निकाली और जुगल किशोर की तरफ कर दी।

जुगल किशोर एकाएक सतर्क नजर आने लगा।

"जब बंधनों से तंग आ जाए तो बता देना। गोली मारकर तेरे को सब तकलीफों से मुक्ति दे दूंगी।"

□□

अगला दिन सूरमा का शांत बीता।

खोखे पर बैठा रहा, परंतु काम कोई न किया। मन में कस्तूरी और गोली की दगाबाजी के साथ-साथ सत्तर लाख, हाथ से निकल जाने का दुःख था।

अगली रात भी चांदीलाल के घर पर ही रहा।

चांदीलाल उसे सूट सिला लेने पर जोर देता रहा।

उससे अगले दिन खोखे पर पहुंचा।

रोजमर्रा की तरह पेड़ के नीचे कुर्सी रखकर बैठ गया। काम-धाम करने का उसका कोई इरादा न लग रहा था।

बारह बज गए। इस बीच बावला दो बार उसे चाय दे गया था।

"गोलू कहां है?" दूसरी बार जब चाय लेकर बावला आया तो उसने पूछा, "दो-तीन दिन से दिखा नहीं।"

"मर गया।"

"मर गया।" बावला हड़बड़ाया।

"हां, मर गया। हरामी की औलाद मेरा बीस हजार लेकर भाग गया।" सूरमा ने कड़वे स्वर में कहा।

"क्या? गोलू बीस हजार लेकर भाग गया।"

"हां, वो...।"

"तेरे पास बीस हजार कहां से आया?" बावला पूछ बैठा।

सूरमा ने बावले को घूरा।

"क्यों?" क्या मेरे पास बीस हजार हो नहीं सकता क्या?"

"होता तो तुम मेरा डेढ़ सौ रुपया लौटा देते, जो महीना पहले तुमने मुझसे उधार लिया था।"

"याद है तेरे को, मैं तो समझा तू भूल गया।"

"नकद माल दिया था, भूलूंगा क्यों?" छटंकी भर बावला हाथ नचाकर कह उठा, "कब देगा डेढ़ सौ?"

"दे दूंगा। अब तू जा।"

बावला चला गया।

सूरमा ने बुझे मन से चाय पी।

तभी उसकी आंखें सिकुड़ीं और फौरन सीधा होकर बैठ गया।

उसने चंदा को देख लिया था, जो कि उस दिन की तरह सामने से आ रही थी। आज भी हाथ में दो-तीन लिफाफे थाम रखे थे। वो पास आती जा रही थी।

सूरमा की निगाह उस पर ही टिकी थी।

चंदा पास आ गई। मुस्कराई।

सूरमा उसे देखता रहा। मुस्कराया नहीं।

"पहचाना।" चंदा उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

"तुमने मुझे स्कूटर के पच्चीस हजार देने को कहा था।"

"लाई हूं।" चंदा ने कहा और एक लिफाफे में हाथ डालकर छोटा सा लिफाफा निकाला, "लो।"

"क्या है ये?" सूरमा ने लिफाफा थामा।

"पच्चीस हजार।"

"लगते तो नहीं।"

"हजार के नोट है।"

उलझन में फंसे सूरमा ने लिफाफा खोलकर भीतर झांका।

हजार के नोटों की झलक मिली तो उसने लिफाफा फौरन जेब में ठूंस लिया।

"कैसा रहा?" चंदा मुस्कराई।

"तुम्हारे यहां पैसों का पेड़ लगा है क्या?"

"हां, और चाहिए तो और दे दूंगी।"

सूरमा ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

"और दे दोगी?"

"हां।"

"कितने?"

"जितने तुम कहो।"

"पांच लाख कहूं तो पांच लाख दे दोगी?"

"दे दूंगी।" चंदा के होंठों पर मुस्कान थी।

सूरमा ने पहलू बदला।

"दूं?"

"दे।"

"एक कार के पहिए का पंचर लगाना है। मेरे साथ चल। ये काम करते ही पांच लाख तेरे।"

"एक पंचर और पांच लाख?" सूरमा का मुंह खुला रह गया।

"हां।"

"वो कार कोई खास है क्या?"

"बहुत ही खास। पांच लाख लेने के बाद उस कार के बारे में किसी को बताना नहीं होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो खास कार है। तुम देखकर ही समझ जाओगे।"

"ठीक है। वो कितनी भी खास हो, मुझे क्या?किसी को नहीं बताऊंगा। चलना कहां है?"

"वहीं, जहां तुम मुझे परसो शाम ले गए थे। पंचर का सामान ले लेना।"

"पांच लाख देना जरूर।"

"उसी वक्त दे दूंगी। मतलब कि अब तुम लौटोगे तो पांच लाख लेकर ही लौटोगे। मैंने तुम्हें परसो कहा था कि

अब आऊंगी तो स्कूटर के पैसे लेकर आऊंगी। आज लाई न पच्चीस हजार?"

अभी चलूं?"

"अभी चल। सामान ले ले। कार सामान से भरी पड़ी है। जैक ले लेना।"

सूरमा उठा और साथ ले जाने के लिए सामान खोखे से उठाने लगा।

□□

चंदा के कहने पर सूरमा ने स्कूटर सड़क से उतारकर एक पेड़ के सहारे खड़ा कर दिया था और स्कूटर से सामान उठाकर चंदा के पीछे-पीछे चलता कार के पास पहुंचा।

कार को देखते ही चौंका।

"इस कार को तो मैं जानता हूं।" सूरमा के होंठों से निकला।

"जानते हो?" चंदा ठिठककर पलटी।

"हां, ये कार वाला दो बार मेरे खोखे पर आया था। एक बार टायर पंचर था, एक बार हवा कम थी।"

"इतनी ही पहचान है तो फिर कोई बात नहीं।" चंदा मुस्कुराई, "पिछला पहिया पंचर है।"

सूरमा ने कार के भीतर निगाह मारी।

चादर बिछी हुई थी। नीचे क्या है, देख न पाया।

"कार का सामान बाहर निकालना होगा।" सूरमा बोला।

"सामान बाहर नहीं निकाला जा सकता।" चंदा बोली, "तुम्हें इसी तरह काम करना होगा।"

"ऐसे नहीं हो पाएगा।"

"क्यों?"

"कार में वजनदार सामान रखा हुआ है। नीचे कच्ची जमीन है, जैक से कार ऊपर नहीं उठ पाएगी और जैक नीचे कच्ची जमीन में धंस जाएगा।" सूरमा बोला, "कार को खाली करना ही होगा।"

चंदा होंठ भींचकर सूरमा को देखने लगी।

सूरमा ने चंदा को देखा।

"पागल औरत ने एक और मुसीबत गले में डाल ली।"

जुगल किशोर की आवाज पर सूरमा पलटा।

"तुमने भारी कर दी इसे यहां लाकर।" जुगल किशोर पुनः बोला, "इस बंदे के ख्यालात बहुत ऊंचे हैं। करोड़ों से कम तो यह सोचता ही नहीं। यहां से वापस जाकर ये क्या अपना मुंह रखेगा। अब तुमने अपने को और पैसे को खतरे में डाल लिया है।"

चंदा ने जुगल किशोर को देखा और कड़वे अंदाज में मुस्करा पड़ी।

"तू...!" हड़बड़ाकर बोला, "तू यहां। ये क्या, हाथ-पांव बंधे पड़े है!"

"उसे छोड़ो।" चंदा बोली, "तुम पंचर की तरफ ध्यान दो।"

"तुमने बांधा है इसे?" सूरमा ने चंदा को देखा।

"हां।" चंदा मुस्कराई।

"क्यों?"

"मुझे काट रहा था, लेकिन मैंने पहले ही इसे काट दिया।"

"समझा।" सूरमा ने विचार भरे ढंग से गरदन हिलाई।

"तुम पांच लाख की तरफ सोचो।"

उलझन में फंसा सूरमा कार के पास पहुंचा। मामला चैक किया फिर बोला।

"मैडम, कार का सामान बाहर निकालना जरूरी है। वरना जैक से कार नहीं उठ पाएगी। कच्ची मिट्टी में जैक ही धंस जाएगा। तुम सामान बाहर नहीं निकाल सकती तो मैं सामान बाहर निकाल देता हूं।"

"ऐसा करना जरूरी है?"

चंदा एकाएक आगे बढ़ी और कार का दरवाजा खोलकर चादर को बाहर खींच लिया।

भीतर निगाह पड़ते ही सूरमा की आंखें फैलती चली गईं।

चंदा की निगाह सूरमा पर ही थी।

"न...नोट-ट! इतने नोट...।"सूरमा की आवाज लड़खड़ा सी गई। वो उसी हालत में कार की पिछली सीट पर या भीतर ही इधर-उधर पहाड़ की तरह खड़ी नोटों की गड्डियों को देखता रहा।

"देख लिया।" चंदा ने कहा।

सूरमा की सांस अभी तक वहीं अटकी हुई थी।

"तुमने वापस जाकर किसी को बताना नहीं है नोटों की गड्डियों के बारे में। इसी के पांच लाख दे रही हूं तुम्हें।"

सूरमा ने हौले से सिर हिला दिया।

चंदा ने नीचे चादर बिछा दी।

"अब सारी गड्डियां निकालो और इन चादर पर रखना शुरू कर दो। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ काम करती हूं।"

सूरमा ने कठिनता से अपने पर काबू पाया।

किसी तरह संभाला और चंदा के साथ नोटों की गड्डियां बाहर निकालकर रखने लगा।

सूरमा कुछ बेचैन सा लग रहा था।

"मैडम।" सूरमा जुगल किशोर पर निगाह मारकर चंदा से बोला, "ये बैंक डकैती के रुपये तो नहीं?"

चंदा ठिठकी और सूरमा को देखने लगी।

सूरमा ने मुस्कराने की चेष्टा की।

"तुम क्या जानते हो बैंक डकैती के बारे में?"

"म..मैं।" सूरमा ने खुद को संभाला, "मैं क्या सारा जीरकपुर जानता है कि करोड़ों की डकैती हो गई है।"

चंदा चुप रही।

"बैंक डकैती के पैसे ही हैं ये?" सूरमा ने पुनः पूछा।

"हां।"

"ओह, फिर तो ये सोलह-सत्रह करोड़ होंगें।" सूरमा का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा था।

"पता नहीं।" चंदा ने लापरवाही से कहा, "तुम पंचर का काम जल्दी से निपटाओ।"

चंदा ओर सूरमा नोटों की गड्डियां उठा-उठाकर बाहर बिछी चादर पर रखते जा रहे थे।

जुगल किशोर गंभीर निगाहों से ये सब देख रहा था।

जबकि सूरमा के दिमाग में खलबली मची हुई थी।

□□

सूरमा और चंदा नोटों की गड्डियां उठाकर वापस कार में रख रहे थे।

शाम के साढ़े चार बज रहे थे।

दोनों ही पसीने से भरे हुए थे। करोड़ों रुपयों को निकालना और वापस रखना आसान काम नहीं थी। हालांकि कार डिग्गी वैसे ही बंद थी। वहां से नोट न निकाले गए थे।

सूरमा अब तक अपने पर काबू पा चुका था। संयत था। उसके मन में आ रहा था कि पूछे कि उन्होने पप्पू भाई साहब की कार में से नोट कैसे निकाल लिए। उन्हें नोटों का कैसे पता चला?

परंतु रह-रहकर सूरमा पूछने का विचार त्याग देता था।

ये बात पूछकर इनकी निगाहों में न आना चाहता था। इन्हें सतर्क न करना चाहता था। सीधी-सी बात थी कि बैंक डकैती के नोट अब उसके सामने थे। बार-बार वो ये ही सोच रहा था कि अगर पप्पू भाई साहब जीरकपुर में कहीं होते तो उन्हें नोटों के बारे में बता देता। वे सब संभाल लेते। साथ ही ये बात मस्तिष्क में उठ रही थी कि इन नोटों में से एक करोड़ से ज्यादा की रकम उसकी है, परंतु यहां के हालात देखकर उसे लग रहा था कि वो अपनी रकम नहीं ले पाएगा।

नोटों की सारी गड्डियां कार में आ गईं। दरवाजा बंद किया। चंदा ने पहले की तरह नोटों के ढेर पर चादर बिछा दी तो सूरमा कह उठा।

“इतने पैसे को लेकर खुले में रहना ठीक नहीं।”

चंदा ने चादर के नीचे से पांच लाख की गड्डियां निकाली और सूरमा की तरफ बढ़ाई।

“ये लो तुम्हारे पांच लाख।”

“किसी लिफाफे में ठूंस दो। यहां से स्कूटर तक तो ले जा सकूं, फिर स्कूटर की डिग्गी में रख दूंगा।” सूरमा ने मुस्कराकर चंदा को देखा।

चंदा आगे बढ़ी और एक लिफाफा खाली करके नोट उसमें भरने लगी।

“यहां जो भी तुमने देखा, वो किसी को बताना मत।” चंदा ने कहा।

“नहीं बताऊंगा।” सूरमा कहते हुए जुगल किशोर के पास पहुंचा, “मुझे तुम्हारी हालत पर तरस आ रहा है।”

“मुझे भी आ रहा है।” जुगल किशोर ने गहरी सांस ली।

“कैसे फंस गए इस मामले में?”

“यूं ही यार।” जुगल किशोर ने मुंह बनाया, “पता चला कि कोई बैंक में डकैती कर रहा है। मैंने उस पर नजर रखी और मौके पर उसके पास से रुपये उड़ा लिए और साथ में इस हरामजादी को रख लिया। पचास लाख देने का वादा किया और इस कुतिया ने ऐसा डंडा मुझ पर फेरा कि ये हाल हो गया।”

“ये साली सारी कुतिया ऐसी ही होती हैं।”

“सारी?”

“हां, मेरी कुतिया मेरा सारा माल लेकर मेरे ही दोस्त के साथ भाग गई। तीन दिन पहले की बात है। इसलिए मैं

तुम्हारा दुःख समझ सकता हूं। मुझे सच में हमदर्दी है तुम्हारे से।"

चार कदम दूर खड़ी चंदा के चेहरे पर जहरीली मुस्कान थी।

"सच्ची हमदर्दी है तो मेरे बंधन खोल दे।"

"ये काम मैं नहीं कर सकता। कोई और सेवा हो तो बताओ।"

"इसे समझाओ कि ये बहुत ज्यादा पैसा है। हम तीनों भी बांट लें तो कम नहीं रहेगा।" जुगल किशोर बोला।

"हम तीनों ?"

"हां।"

"मैं बीच में कहां से आ गया?"

"अब तो बीच में आ ही गए हो।"

"नहीं, मैं पंचर लगाने आया था। पांच लाख में पंचर लगा दिया। अब वापस जा रहा हूं।"

"और वापस जाकर पुलिस को यहां के बारे में बता दोगे?"

"मैं क्यों बताऊंगा?"

"इनाम पाने के लिए। पुलिस से वाहवाही लूटने के लिए।"

"मैं तेरे को खराब दिमाग वाला लगता हूं जो पुलिस के पास जाऊंगा। मुझे पांच लाख नहीं मिला क्या?"

"सिर्फ पांच..बहुत कम मिला। पंद्रह करोड़ से ज्यादा का माल है।"

सूरमा ने जुगल किशोर को देखा।

"तू पुलिस के पास जाकर सारा खेल बिगाड़ सकता...।"

"तू बार-बार मुझे पुलिस की याद क्यों दिला रहा है?"सूरमा ने होंठ सिकोड़कर कहा।

तब तक चंदा की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

पांच लाख की गड्डियों से भरे नोटों के दो लिफाफे उसके पैरों के पास ही पड़े थे।

"सुनो।" चंदा ने गंभीर स्वर में कहा, "मैं तुम्हें पांच लाख और दूंगी।"

सूरमा ने गरदन घुमाकर चंदा को देखा।

"मुझे क्या करना होगा?"

"कल दोपहर तक तुम्हें यहीं रहना होगा।" चंदा बोली।

"क्यों?" सूरमा के माथे पर बल पड़े।

"कल मुझे यहां से निकल जाना है नोटों से भरी कार लेकर और मैं नहीं चाहती कि तब तक तुम कोई फसाद कर दो। पुलिस को बता दो या दो-चार और को बता दो।" चंदा गंभीर स्वर में कह रही थी, "तुम्हें यहां बुलाना जरूरी था, क्योंकि पहिया ठीक कराना था। उसके बिना कार चल नहीं पाती।"

जुगल किशोर मुस्कराया।

"मेरा विश्वास करो।" सूरमा ने कहा, "मैं किसी को नहीं बताऊंगा।"

"तुम्हें कल तक यहां रहने में क्या समस्या है? कल तुम्हें दस लाख मिल जाएगें।"

"मैं न रहना चाहूं तो?"

"तुम्हें रहना ही पड़ेगा।" चंदा ने सख्त स्वर में कहते हुए रिवॉल्वर निकाल ली, "तुम यहां पर करोड़ों रुपया देख चुके हो। अब मैं तुम पर किसी तरह का भरोसा नहीं कर सकती।"

"अभी तो तुम मुझे पांच लाख देकर भेज रही थी।"

"वो वक्त निकल गया। गलती कर रही थी मैं। अब समझ में आया कि खुद को सुरक्षित रखना है तो तुम्हें कल तक रोक के रखना जरूरी है।"

सूरमा उसके हाथ में दबी रिवॉल्वर को देख रहा था।

चंदा का चेहरा कठोर हो चुका था।

सूरमा ने जुगल किशोर को देखा।

"ये ऐसी ही है।" जुगल किशोर मुस्कराकर बोला, "पता नहीं, कब क्या कर दे? मेरी हालत तो देख ही रहे हो।"

"ठीक है।" सूरमा ने गहरी सांस लेकर कहा, "कल तक मैं यहां रुक जाता हूं। तुम आज ही कार लेकर निकल जाओ तो बेहतर होगा। कल का इंतजार क्यों करती हो?"

"हर बीतते दिन के साथ पुलिस ढीली पड़ती जाएगी। मैं जल्दबाजी करके पुलिस के हाथों फंसना नहीं चाहती।"

सूरमा ने कुछ नहीं कहा।

"अब तुम उल्टा होकर लेट जाओ।"

"क्यों?"

"तुम्हारे हाथ-पांव बांधने हैं। मैं किसी तरह का रिस्क नहीं लेना चाहती।"

"मैं हाथ-पांव नहीं बंधवाऊंगा।" सूरमा उखड़ा, "शराफत से कहो तो कल तक यहां रह लेता...।"

"मेरे हाथ में देख रहे हो कि क्या है?" चंदा एकाएक विषैले स्वर में कह उठी।

सूरमा की निगाह पुनः उसके हाथ में दबे रिवॉल्वर पर गई।

"गोली चल गई तो तुम बच नहीं सकोगे। जो कह रही हूं, चुपचाप वो ही करो।"

"पेट के बल नीचे लेटो।" चंदा ने आदेश भरे स्वर में कहा।

न चाहते हुए भी सूरमा पेट के बल नीचे लेट गया।

पास बंधा पड़ा जुगल किशोर व्यंग से बोला।

"बेटा, तेरे साथ तो ये बहुत शराफत से पेश आ रही है। मेरे हाथ-पांव बांधने के लिए तो इसने मेरा सिर फाड़ दिया था।"

"हिलना मत।" चंदा ने कठोर स्वर में कहा, "वरना गोली मार दूगी।"

सूरमा में हिम्मत ही कहां थी कि रिवॉल्वर के सामने कुछ कर सके।

चंदा सावधानी से आगे बढ़ी, पास पहुंची।

जुगल किशोर खा जाने वाली निगाहों से चंदा को देखे जा रहा था।

चंदा ने जुगल किशोर के पास पड़ी, बची हुई नाइलोन की रस्सी उठाई।

इसी पल जुगल किशोर ने अपनी बंधी दोनों टांगें पूरी शक्ति के साथ घुमाते हुए ऊपर की तरफ की, जो कि चंदा के कूल्हों से जा टकराई।

अचानक वार हुआ था।

चंदा के पांव उखड़े और लड़खड़ाती हुई नीचे जा गिरी।

"उठ।" जुगल किशोर गला फाड़कर सूरमा से बोला, "दबा दे, साली की गरदन।"

सूरमा ने सिर उठाकर जुगल किशोर को देखा।

"मेरे को क्या देखता है हरामी के, जल्दी से झपट उसके ऊपर, वो उठ रही...।"

सूरमा हड़बड़ाकर जल्दी से उठा और तीन कदम दूर खड़ी होती चंदा पर झपट पड़ा। तब चंदा खड़े होते हुए कपड़ों में फंसा रिवॉल्वर निकाल रही थी कि सूरमा के टकराने पर उसके होंठों से तीखी चीख निकली और रिवॉल्वर निकलकर दूर जा गिरी। इधर सूरमा था कि उससे ऐसा चिपटा, फिर नहीं छोड़ा।

"साली को मौका मत देना।" जुगल किशोर चिल्लाया, "ले आ इसे मेरे पास।"

सूरमा चंदा को लिए नीचे गिर पड़ा।

"दबा दे गरदन इसकी। इसे खींचकर एक बार मेरे पास ले आ, फिर...।"

हड़बड़ाए से सूरमा ने देर न लगाई और चंदा को बांह से पकड़े खींचता हुआ जुगल किशोर के पास ले आया। जुगल किशोर ने फौरन चंदा को टांगों के नीचे दबा लिया।

"साली-कुतिया।" जुगल किशोर गुर्राया, "सूरमा, बांध दे इसके हाथ-पांव।"

"छोड़ मुझे।" चंदा तड़पी।

"चुप साली, वरना दांत तोड़ दूंगा।" जुगल किशोर पुनः गुर्रा उठा।

घबराया सा सूरमा जल्दी से रस्सी उठाकर चंदा के हाथ-पांव बांधने लगा। चंदा ने तड़पकर आजाद होना चाहा, परंतु जुगल किशोर ने टांगों के नीचे उसे मजबूती से दबा रखा था।

सूरमा ने जैसे-तैसे चंदा के हाथ-पांव बांधे।

इतने में ही वो हांफने लगा था।

"शाबाश।"जुगल किशोर खुश नजर आ रहा था, "तूने तो कमाल कर दिया।"

सूरमा की सांसें अब संयत होने लगी थी।

"खोल मुझे। इस साली को तो मैं देखता हूं।" जुगल किशोर ने चंदा को घूरा।

"मैं तेरे को नहीं छोडूंगी।" चंदा गुर्रा उठी।

"पहले तूने कौन-सी कसर छोड़ रखी थी।" जुगल किशोर ने कड़वे स्वर में कहा, "मैं तेरा भला कर रहा था। मजदूरी के पचास लाख दे रहा था। तेरे को अपने छोटे किले में रखा और तूने मेरे पे ही डंडा फेर दिया। अब बताता हूं, तेरे को।"

सूरमा पास ही बैठ गया और सिगरेट सुलगा ली।

"सिगरेट बाद में पीना। पहले मेरे हाथ-पांव खोल। आज तीसरा दिन है, बंधा पड़ा हूं।"

"सांस तो लेने दे।"

"सांस! तूने किया ही क्या है?"

"इसे बांधा है।"

"तो क्या हो गया? पहले कभी गाय या घोड़ी को नहीं बांधा, जो...।"

"बिगड़ी हुई घोड़ी को नहीं बांधा। आज पहली बार बांधा है।"

"नखरे मत दिखा, खोल मुझे। सारा शरीर सुन्न पड़ा है।" जुगल किशोर ने मुंह बनाया।

सूरमा कश लेता जुगल किशोर को देखने लगा।

"क्या देखता है?"

"मैं क्यों खोलूं तुझे?"

"क्या मतलब?" जुगल किशोर चौंका।

"मैंने तेरे को खोला तो तू मेरा गला काट देगा।" सूरमा मुस्कराया, "नहीं खोलूंगा तुझे।"

"मजाक मत कर। हम तो दोस्त हैं। सगे भाइयों की तरह रहेंगें अब।"

"अब!" सूरमा ने दांत फाड़े, "अब क्या खास हो गया जो हम सगे भाई बन गए?"

"सामने करोड़ों रुपया पड़ा है और वो हम दोनों का है, आधा-आधा। मिल बांटकर खाएंगें।"

"आधा-आधा, मैंने तेरे हाथ-पांव खोल दिए तो तू मुझे आधा क्यों देगा...?"

"मैं..."

"पहले मेरी बात सुन। तेरे को एक नई बात बताता हूं।" सूरमा ने चंदा को देखा, "और तेरे को भी।"

"मेरे हाथ-पांव खोल दे।" चंदा प्यार से बोली, "सच में मेरी गलती थी, जो मैं तेरे को बांधने...।"

"पहले मेरी बात सुन रामप्यारी।" सूरमा के चेहरे पर मुस्कान थी।

जुगल किशोर और चंदा उसे देखने लगे।

"जानते हो वो बैंक डकैती किसने की थी?" सूरमा बोला।

"देवराज चौहान ने।" जुगल किशोर ने कहा।

"कौन देवराज चौहान?"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान।"

"वो डकैती पप्पू भाई साहब ने की थी और साथ में मैं भी था।" सूरमा छाती फुलाकर बोला।

"तुम थे?" जुगल किशोर के होंठों से निकला।

"हां डैडी जी, पप्पू भाई साहब के साथ मैं था इस काम में। उनके सारे काम तो मैंने ही निपटाये है कि डकैती की जा सके। तुम्हें अब समझ भी जाना चाहिए कि क्यों मैं तुमसे करोड़ों की बातें कर रहा था।"

"क्यों?" जुगल किशोर के माथे पर बल उभरे।

"क्योंकि पप्पू भाई साहब मुझे डकैती के बाद एक करोड़ से ज्यादा की रकम देने वाले थे।" सूरमा एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ बोला, "तो ऐसे में मुंह से करोड़ों की बात ही निकलेगी।"

"झूठ बोल रहे हो तुम।" चंदा बोली।

"क्यों झूठ बोलूंगा।" सूरमा हाथ नचाकर बोला, "तुम दोनों के हाथ-पांव बंधे हुए हैं। मुझे तुम दोनों का क्या डर जो झूठ बोलूं। मैं तो सच कह रहा हूं। एक करोड़ से ऊपर की रकम मुझे मिलनी थी, अगर तुम लोग बैंक कालोनी में खड़ी कार से माल न उड़ा ले जाते।"

सूरमा की बातें दोनों को हैरान कर रहीं थीं।

"चुप क्यों हो गए, कुछ तो बोलो।" सूरमा ने मुंह बनाकर कहा।

"पहले तेरी बात हजम तो कर लूँ।" जुगल किशोर बोला, "एक सिगरेट तो जला दे।"

"जला तो मैं दूं, कश कैसे लेगा। मैं तेरे को कश लगवाने की नौकरगिरी तो करने से रहा।"

"मेरे होंठों में फंसा देना।"

सूरमा ने सिगरेट सुलगाकर जुगल किशोर के होंठों में फंसा दी।

"तुम लोगों ने सारा मामला गड़बड़ कर दिया। वो पप्पू भाई साहब।"

"डकैती करने वाला देवराज चौहान था।" जुगल किशोर ने टोका।

"वो पप्पू भाई साहब था।"

"देवराज चौहान था। मैं उसे पुराना जानता..।"

"मैं भी पप्पू भाई साहब को पुराना जानता हूं। पंचर लगाता हूं तो क्या हुआ, पहचान बहुत है मेरी।"

जुगल किशोर सूरमा को घूरने लगा।

"ऐसे क्या देखता है?"

"और कौन-कौन लोग थे डकैती मे?"

"सब थे। पप्पू भाई साहब, जगमोहन, कस्तूरी, चांदीलाल।"

जुगल किशोर को पूरा विश्वास हो गया कि ये देवराज चौहान को ही पप्पू भाई साहब कह रहा था।

"सुन लिया...।" जुगल किशोर ने खा जाने वाली नजरों से चंदा को देखा, "गलती से तुम किसे यहां ले आई। जिन लोगों ने डकैती की थी तुम उन्हें ही ले आई। अपना गला खुद ही कसाई के हाथ में दे दिया।"

चंदा भी अब तक हालातों को समझ चुकी थी।

"मुझे क्या पता था कि...।"

"अगर तुम लालच में न आती। मेरे हाथ-पांव न बांधती तो इस नई मुसीबत से बची रहती।"

"मुझसे गलती हो गई।"

"मुझे क्या कहती है, जाकर अपनी मां से कह। सारा रुपया मिट्टी में मिला दिया।"

"मिट्टी में क्यों?"

"हमारे हाथ से तो गया। अब तो समझ में आ गया कि औरतें सिर से पैर तक मूर्ख होती हैं।"

"डैडी साब।" सूरमा ने दांत फाड़कर टोका, "ऐसा मत कहो, ये औरतें तो दुनियां को बेच कर खा जाएं।"

"औरतों की बात छोड़।" जुगल किशोर मुस्करा कर बोला, "अब तू क्या करेगा?"

"क्या मतलब?"

"पंद्रह-सत्रह करोड़ रुपया पूरा तो तू खा नहीं सकता। इतना खाना भी ठीक नहीं।"

"हां।" सूरमा ने सिर हिलाया, "ये ज्यादा तो है। मेरे पास तो रखने की जगह नहीं है।"

"तो मेरा भाई बन जा। पांच-पांच तीनों बांट लेते...।"

"कभी नहीं। भाई बनते ही तुमने मेरी गर्दन काट देनी है। मैं तो तुम्हें...।"

"सुन।" चंदा ने मुस्करा कर टोका।

"हां।"

"मैं कैसी लगती हूं।" चंदा ने अदा के साथ कहा।

"तू अच्छी है, तभी तो मैं तुझे अपने स्कूटर पर बिठाकर, पंचर लगाने तुझे यहां ले आया।"

"मुझे अपने छोटे किले में रखेगा?"

जुगल किशोर ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

"छोटा किला, वो क्या होता है?" सूरमा ने अजीब से स्वर में पूछा, "कहां है मेरा छोटा किला?"

"तेरे को नहीं पता?" चंदा मुस्कराई।

"नहीं।"

"वहां है।"

"कहां?"

"वहां।" चंदा ने आंख से इशारा किया।

"वहां कहां, मुंह से बोल, भगवान ने जुबान भी तो दे रखी है तेरे को।" सूरमा झुंझलाया।

"जुबान के साथ भगवान ने औरतों को शर्म भी तो दी है। अब कैसे कहूं।"

“किले का शर्म से क्या वास्ता।” सूरमा ने जुगल किशोर को देखा, “तू जानता है छोटे किले को?”

“नहीं।”

“ये औरत पागल है।” सूरमा ने जैसे अपना फैसला सुनाया।

“मैं नहीं तुम पागल हो, जो मेरी बात नहीं समझ रहे।”

“मुझे नहीं समझनी।” सूरमा उठता हुआ बोला, “मैं तो अपनी तैयारी करूं।”

“कैसी तैयारी?” जुगल किशोर ने कहा, “पंद्रह करोड़ बहुत ज्यादा होता...।”

“मैं जानता हूं। सारा हजम नहीं कर पाऊंगा मैं।” सूरमा ने दांत फाड़े, “मिल बांट कर खाना ही ठीक होता है। तुम दोनों बंधे रहोगे और मैं पांच करोड़ यहां से ले जाऊंगा।”

“बाकी का दस?”

“तुम दोनों बांट लेना।”

“तो हमें खोल।”

“ऐसे नहीं डैडी साब। मैं स्कूटर की डिग्गी में नोट भर कर ले जाता रहूंगा। सारी रात इसी काम पर लगा रहूंगा। आशा है कि सुबह तक अपना पांच ठिकाने पहुंचा दूंगा। आखिरी फेरे में जाते-जाते तुम दोनों के हाथ-पांव खोल दूंगा। उसके बाद आपस में जो भी करते रहना, मुझे क्या।”

सूरमा पेड़ों की तरफ बढ़ गया।

जुगल किशोर और चंदा की नजरें मिलीं।

“तेरी वजह से ये सब हुआ है।”

"हां।" चंदा ने अफसोस भरे स्वर में कहा, "गलती मानती हूं अपनी।"

"पुलिस वालों को भी साथ ले आती। सारा मामला ही खत्म हो जाता।"

"बार-बार तीखी बातें मत कहो।" चंदा बोली, "एक बात बता।"

जुगल किशोर ने उसे देखा।

"ये क्या सच में पांच करोड़ ले जाने के बाद, हमारे हाथ-पांव खोल देगा। क्या हम पांच-पांच करोड़ आपस में बांट लेंगें?"

"भाड़ में जा। मुझसे क्या पूछती है, अपने यार से पूछ जिसे साथ ले आई है।" जला-भुना जुगल किशोर बोला।

"वो मेरा यार नहीं है।" चंदा झल्लाई, "पंचर वाला है।"

"अभी तो उसके छोटे किले में रहने को तैयार हो गई थी।"

"छोटे किले में रहने से कोई यारी नहीं हो जाती।"

"साली।" उसे घूरता जुगल किशोर बड़बड़ा उठा, "नम्बरी हरामी है।"

तब तक सूरमा स्कूटर को ढकेलता वहां ले आया था। स्कूटर को उसने कार के पास खड़ा किया और दोनों को देखकर दांत फाड़े फिर स्कूटर की छोटी सी डिग्गी खोली और कार से हजार-हजार की गड्डियां निकाल कर डिग्गी में रखने लगा और दोनों से बोला।

"वापस पहुंच कर मैं गड्डियां गिन लूंगा। इससे पता चल जाएगा कि कितनी बार डिग्गी भरूं कि पांच करोड़ मेरे पास पहुंच जाएगा। अगले चक्कर में बताऊंगा कि मुझे कितने चक्कर यहां के लगाने होंगें।"

"अपना पांच करोड़ लेने के बाद मुझे खोल दोगे ना?" चंदा मुंह लटका कर कह उठी।

"तब तो तू जो कहेगी, वो ही खोल दूंगा, पहले पांच करोड़ तो दबा लेने दे।"

जुगल किशोर गहरी सांस लेकर रह गया।

□□

दिन का उजाला फैल चुका था।

सूरमा की हालत थकान से बुरी हो रही थी। बीती शाम से ही वो नोटों की गड्डियां ले जाने में लगा हुआ था। स्कूटर की डिग्गी में हजार-हजार की गड्डियां भरता और घर जाकर डिग्गी खाली कर आता। इस दौरान खाना-पीना सब भूल चुका था।

डिग्गी में एक बार में पचपन-साठ लाख रुपया आता था।

और अब उसका आखिरी फेरा था। उसका पांच करोड़ पूरा हो जाना था।

जुगल किशोर और चंदा वैसे ही बंधे पड़े थे। रात में जब सूरमा डिग्गी भरे के जाता तो वे कुछ नींद ले लेते। जब आता तो उनकी आंख पुनः खुल जाती।

अब सुबह के छः बज रहे थे।

सूरमा ने आखिरी बार डिग्गी भरी नोटो की गड्डियों से।

फिर डिग्गी बंद करके उन दोनों को देखा। मुस्कराया। आंखों में थकान और नींद भरी हुई थी।

"मेरा काम हो गया। पांच करोड़ पूरा हो गया। दस-बीस लाख ऊपर ही होगा, पांच करोड़ से, ऊपर का पैसा किसी मंदिर में दान कर दूंगा या उससे गरीबों का भला करूंगा।" सूरमा बोला।

"बहुत बड़ा दानी बन गया तू।" जुगल किशोर कड़वे स्वर में बोला।

"नोट आ जाए ता इंसान अपने आप ही दानी बन जाता है। मैं भी बन गया।" सूरमा बोला।

"खोल हमें।"

"खोलता हूं।" सूरमा ने चेहरे पर एकाएक गंभीरता लाकर कहा, "पता चला है कि पप्पू भाई साहब अम्बाला में हैं।"

"अम्बाला में?" जुगल किशोर के होंठों से निकला।

"हां। एक घंटा लगेगा, वो यहां आ जाएंगे।"

"क्या मतलब-क्या तुम देवराज चौहान को, मेरा मतलब है कि पप्पू भाई साहब को बुलाने जा रहे हो?"

"नहीं। अभी मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं।" सूरमा बोला, "अगर तुम दोनों में किसी ने भी मेरे साथ गड़बड़ की या मेरे से मिलने की कोशिश की तो मैं पप्पू भाई साहब को तुम दोनों के बारे में बता दूंगा। वैसे भी वो अम्बाला में इसलिए टिके हुए हैं कि पैसा ले जाने वालों की कोई खबर पा सकें और जीरकपुर पहुंच जाएं।"

जुगल किशोर ने सूरमा को घूरा।

"मेरे सामने हवा में गोलियां मत चला, ये काम तो मैं करता हूं।"

"तो?"

"तेरे से हमें कोई मतलब नहीं। हमें खोल, तू जा। बात खत्म। हमारे लिए पांच-पांच करोड़ ही बहुत हैं।"

सूरमा ने चंदा को देखा।

"जुगल ठीक कह रहा है।" चंदा बोल पड़ी, "हमें तेरे से क्या मतलब?"

"मतलब रख के देखना।" सूरमा ने अपनी आवाज को खतरनाक बनाकर कहा और आगे बढ़कर उनके बंधन खोले।

जुगल किशोर ने राहत की सांस ली।

पांच दिन से बंधा पड़ा था। शरीर अकड़ गया था। पीड़ा कर रहा था।

"चलता हूं।" सूरमा ने अभी भी अपनी आवाज में खतरनाक भाव भरे हुए थे, "नाम याद रखना-सूरमा। कभी जिंदगी से तंग आ जाओ तो जीरकपुर में मेरे पास चले आना।" सूरमा कहने के साथ ही पलटा और स्कूटर को स्टार्ट करके उस पर बैठा और टूटे-फूटे जंगली रास्ते से बचता सामने दिखाई दे रहे हाइवे की तरफ बढ़ा, "भाग ले बेटे सूरमा।" सूरमा बड़बड़ा उठा, "ये दोनों ही बहुत हरामी हैं। तेरी गरदन पकड़ ली तो कोई कुत्ता भी तेरे को बचाने नहीं आएगा।"

चंद पलों के बाद ही हाइवे पर सूरमा स्कूटर पर, जीरकपुर की तरफ दौड़ा जा रहा था।

इस सारे झमेले में पांच करोड़ उसे मिल गए थे जो कि मौज-मस्ती से जिंदगी बिताने के लिए बहुत थे। बच्चे को भी शान से पढ़ा-लिखाकर बड़ा कर देगा। मन ही मन सोच रहा था कि कस्तूरी और गोलू भाग गए तो अच्छा ही हुआ, वरना आज उन्हें भी पांच करोड़ में से हिस्सा देना पड़ता। कस्तूरी तो पैसे का सत्यानाश ही कर देती। मुरगे और दारु में कम से कम एक करोड़ तो उसने बरबाद कर ही देना था।

खुश था सूरमा।

पांच करोड़ हाथ में आ गया।

जीवन सफल हो गया।

□□

पंद्रह बीस मिनट लगे जुगल किशोर को अपनी हालत ठीक करने में। इतनी ही हालत ठीक हुई कि थोड़ा-बहुत चहल कदमी कर पाता। उठने के लिए उसे चंदा का सहारा लेना पड़ा था।

चंदा ने बांह पकड़कर उसे खड़ा किया था।

जुगल किशोर ने खा जाने वाली निगाहों से उसे देखा।

"देख लिया अपने अनाड़ीपन का नतीजा।" जुगल किशोर कड़वे स्वर में बोला, "खामखाह एक और हिस्सेदार को पकड़ लाई जीरकपुर से। ले गया वो अपने हिस्से के पांच करोड़...।"

"कह तो दिया कि गलती हो गई।" चंदा झल्लाई।

"औरतों को तभी रुपये-पैसे से पीछे रखते हैं। पता नहीं चलता कब मामले का सत्यानाश कर दें।"

"मेरे लिए इतना ही बहुत है।" चंदा बोली।

"कितना?"

"पांच करोड़।"

"पहले क्यों सारा हड़पने पर लगी थी।" जुगल किशोर ने दांत भींचकर कहा।

"तब मुझे लगता था कि मैं हजम कर लूंगी।"

"अब क्या पेट खराब हो गया?"

"इतना पैसा मुझ अकेली के लिए ले जाना आसान नहीं है।"

"मेरे ख्याल में तो पांच करोड़ भी ज्यादा है तुम्हारे लिए। एक करोड़ संभाल लो, यही बहुत है।"

चंदा ने जुगल किशोर को घूरा।

"अगर तुम्हारे मन में बेईमानी आ रही है तो मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

"मैं तो तुम्हें सलाह दे रहा हूं कि पांच करोड़ तुम संभाल न सकोगी।"

"अपनी फिक्र करो। मेरे बारे में तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं।" चंदा ने तीखे स्वर में कहा।

"मेरे को क्या-कुंए में गिर।"

"तू गिर, मैं क्यों गिरूं। मेरा पांच करोड़ निकाल कर अलग कर, तो मैं जाऊं।"

"साली।" जुगल किशोर बड़बड़ा उठा, "पांच हजार की औकात नहीं है और पांच करोड़ की बात कर रही है।" जुगल किशोर को इस बात का भारी अफसोस हो रहा था कि तब क्यों चंदा नाम की मुसीबत को अपने साथ रख लिया। न ही उसकी खूबसूरती पर फिदा होता और ना ही

फंसाने के लिए दाना डालता। साली मुफ्त का पांच करोड़ ले जा रही है।

"इस तरह क्या घूर रहा है?" चंदा कह उठी।

जुगल किशोर एकाएक मुस्करा कर बोला।

"तू बहुत खूबसूरत है।"

"सच।" चंदा ने दांत फाड़े, "छोटे किले में चलें?"

"किले के सारे कमरे बुक हो चुके हैं। तू अपने नोट गिन और खिसक ले। राम-राम।"

उसके बाद जुगल किशोर और चंदा अपने-अपने नोट संभालने में लग गए।

"तू मुझे बहुत याद आएगा।" चंदा बोली, "तू जैसा भी है, बंदा अच्छा है।"

जुगल किशोर के पास जवाब देने को वक्त ही कहां था। वो तो नोटों में गुम हो चुका था।

□□

सोढ़ी ने अब थोड़ी-थोड़ी चैन की सांस लेनी शुरु की थी। अब पुलिस का दबाव और पूछताछ कम हो गई थी। कल सिर्फ दो बार ही पुलिस वाले आए थे। सोढ़ी को पूरी आशा थी कि अगले एक-दो दिन में पुलिस बैंक डकैती के मामले को ठंडे बस्ते डालना शुरु कर देगी। वैसे भी पुलिस का सारा ध्यान चंडीगढ़ की तरफ था। क्योंकि डकैती में डकैतों ने जिस कार का इस्तेमाल किया था, वो चंडीगढ़ में खड़ी मिली थी। उस कार में रिवॉल्वर के साथ बैंक से लूटी नोटों की गड्डियां भी मिली थीं।

रोजमर्रा की तरह आज भी सोढ़ी बैंक पहुंचकर अपने काम में व्यस्त हो गया था।

मन ही मन सोढ़ी खुश था कि पुलिस ने उस पर किसी तरह का शक नहीं किया। सोढ़ी के लिए सबसे बड़ी राहत की बात ये ही थी।

दिन के ग्यारह बजे रहे थे। बलबीर ने केबिन में प्रवेश किया।

"आपने मुझे बुलाया सर?" बलवीर ने पूछा।

"हां।" सोढ़ी टेबल पर पड़ी फाइल उठाकर उसे देता हुआ बोला, "ये सक्सेना को दे दो।"

"जी।" बलवीर ने फाइल थामते हुए कहा, "सर, आज कुछ काम था। दो बजे मुझे छुट्टी चाहिए।"

"क्यों?"

"चंडीगढ़ जाना है, मिसेज शर्मा को लेकर।" बलवीर मुस्कराया।

"दो दिन पहले भी तुम मिसेज शर्मा को चंडीगढ़ लेकर गए थे।" सोढ़ी ने उसे घूरा।

"जी सर। तब सूट खरीद कर सिलाई के लिए दिया था, आज सूट मिल जाएगा।"

"तुम आजकल काम की तरफ ध्यान नहीं दे रहे।"

बलवीर चुप खड़ा रहा।

"जाओ। सक्सेना को फाइल देकर आओ।"

बलवीर फौरन बाहर निकल गया।

तभी फोन की बेल हुई। सोढ़ी ने रिसीवर उठाया।

"यस, सोढ़ी स्पीकिंग।"

"सोढ़ी।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी, "मैं बोल रहा हूं, पहचाना?"

"तुम?"

"देवराज चौहान का साथी।"

सोढ़ी के चेहरे पर उसी पल उखड़े भाव आ गए।

"फोन क्यों किया?"

"सब ठीक है न?"

"हां, सब ठीक है। तुम्हें मेरी चिंता करने की क्या जरूरत पड़ गई?"

"यूं ही। तुम्हारा ध्यान आया तो सोचा फोन कर लूं। पैसा मिला क्या?"

"पैसा?"

"वो तो तुम लोग ले गए थे। तुम लोगों के पास है।" सोढ़ी ने जले-भुने स्वर में कहा।

"हमारे पास।"

"तुम पागल तो नहीं हो।" सोढ़ी ने झल्लाकर कहा, "डकैती करके तुम पैसा ले गए और अब फोन करके मुझसे पूछते रहते हो कि पैसा मिला कि नहीं।"

"तो क्या हर्ज है जो पूछ लिया?" जगमोहन के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

"पागल की औलाद, वो सारा पैसा तुम लोगों के पास है फिर फोन करके क्यों पूछते हो कि...।"

"इसका मतलब पैसा नहीं मिला।"

"फिर वही बात।" सोढ़ी भड़का, "तुम पागल तो नहीं हो। तुम..।"

उधर से जगमोहन ने रिसीवर रख दिया था।

तभी बलबीर ने भीतर प्रवेश किया।

"उल्लू का पट्ठा।" सोढ़ी ने गुस्से से रिसीवर रखा।

"क्या हुआ सर?"

"पागल है साला।" सोढ़ी माथे पर आई पसीने की बूंदें साफ करता कह उठा।

"क्या कहता है?"

"पागल क्या कहेगा, पागलों वाली बात ही कहेगा।" सोढ़ी भिन्नाया, "बैंक में खाता खोला नहीं और हर दो दिन बाद खाते में जमा पैसे को पूछने लगता है कि मेरा बैलेंस कितना है।"

"फिर तो फोन करने वाला सच में पागल है सर।"

सोढ़ी ने बलवीर को घूरा।

"और तुम-तुम मिसेज शर्मा को चंडीगढ़ ले जाना कम कर दो। शर्मा बहुत गुस्से वाला है। समझ गए ना तुम कि मैं क्या कहना चाहता हूं।"

स..समझ गया सर।"

"मैंने भी मिसेज शर्मा को कभी चार-पांच सूट सिलवा कर दिए थे।"

"क..क्या?" बलवीर बौखला कर, आंखें फाड़े सोढ़ी को देखने लगा था।

-समाप्त-